[redacted]

कॉपीराइट © लता जगतानी 2009 प्रकाशित 2009 द्वारा

7/16, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली 110 002

बिक्री केंद्र:
इलाहाबाद, बेंगलुरु, चंडीगढ़ चेन्नई, हैदराबाद, जयपुर, काठमांडू कोलकाता, मुंबई

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा प्रसारित नहीं किया जा सकता है। लेखक इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार का दावा करता है। टाइपसेटिंग: माइंडवेज़ डिज़ाइन, 1410 चिरंजीव टॉवर, 43 नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110 019 भारत में मुद्रित, सौरभ प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-16, सेक्टर-IV, नोएडा 201 301

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

□□□□□□□□□□

□□□□□□□□

□□□□□□□□□□□□

□□□ – I

□□□□ □□ □□□□□□□

1. □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□
2. □□□□□□
3. □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□
4. □□□□□□ □□□□
5. □□□□□□□-□□□□□□□□
6. □□□□□□□, □□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□
7. □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□
8. □□/□□□□□□□ □□

□□□ – II

□□□□□□□□□ □□ □□□□

1 □□□□□□

2. □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□

3. □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□

4. □□□□□□□□ □□ □□□□□□: □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□

5. □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□

6. □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□

7. □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□

8. □□□□□ □□□□□□□□□□

9. 6 □□□□□□ 2009 □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□

□□□ – III

□□□□□□□□

1. □□ □□□□□□□□□

2. □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□

3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]

[illegible] –IV

[illegible]

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]

[illegible] – V

[illegible]

1. [illegible] 26/11 [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible] – [illegible]
4. [illegible] – [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]

[illegible] – VI [illegible]

1. [illegible] – [illegible]
2. [illegible]?
3. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धन्यवाद

कई लोगों के पूरे दिल से दिए गए समर्थन के बिना यह किताब लिखना नामुमकिन था। मेरे पति मानेक प्रेमचंद अक्सर मुझे बेहतरीन सलाह और खुशबूदार चाय पिलाते थे। जब मैंने उनसे पूछा कि 26/11 पर लिखी किताब में वे क्या पढ़ना चाहेंगे, तो उनका तुरंत जवाब था, 'घटनाओं का चरण-दर-चरण विस्तृत विवरण। राय मायने रखती हैं, लेकिन तथ्य पवित्र होते हैं।' यही किताब के पहले भाग का मुख्य विषय था। यह उम्मीद से कहीं ज़्यादा मुश्किल था, क्योंकि हर दिन नए तथ्य सामने आ रहे थे, जिनमें से कुछ विरोधाभासी भी थे। सच्चाई तक पहुँचने के लिए उन तथ्यों की छानबीन करते हुए, मुझे अक्सर जासूस जैसा महसूस होता था। मानेक की बदौलत, मैंने उन भयानक तीन दिनों और रातों में घटी घटनाओं को हूबहू चित्रित करने की कोशिश की है। उन्होंने अपना दृष्टिकोण भी साझा किया है, जो छठे भाग में शामिल है।
मेरे माता-पिता, केशोदास और मीरा मदनानी, जो हमेशा मेरी मदद करते हैं, मुझे अपने अखबारों और पत्रिकाओं की कतरनें लाते रहते थे - हमेशा की तरह उनका बहुत-बहुत धन्यवाद। कई दोस्तों ने मुझे अपने शोध से प्राप्त डेटा ईमेल किया - उन सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।
मुंबई अपराध शाखा के संयुक्त पुलिस आयुक्त श्री राकेश मारिया से मेरी मुलाकात ज्ञानवर्धक और सहायक दोनों रही। उन्होंने और उनके समर्पित सहायकों ने मुझे खंड दो के आंकड़ों के लिए आवश्यक आधारभूत जानकारी प्रदान की। ईश्वर उन सभी को आशीर्वाद दें। उनकी सतर्कता के कारण ही मुंबई सुरक्षित है। वे हमारे पूर्ण समर्थन और शुभकामनाओं के पात्र हैं। पाकिस्तान के प्रमुख समाचार पत्र डॉन में इरफान हुसैन के लेख छपे, जिन्हें पढ़कर मैं दंग रह गया। 26/11 के बाद उनके विश्लेषण को पढ़ने के बाद, मेरा मन हुआ कि मैं श्रीलंका में उनके घर जाकर उन्हें दोनों हाथों से सलाम करूँ। शुरुआती महीनों में पाकिस्तान का रुख था, 'क्यों न, भारत ने यह सारा नाटक सिर्फ पाकिस्तान को बदनाम करने के लिए रचा है!' वहीं इरफान हुसैन ने अपनी विशिष्ट तटस्थता से स्पष्ट कर दिया कि यह बात सच से कोसों दूर थी, और वास्तव में उंगली पाकिस्तान की ओर ही उठी थी। कुछ गिने-चुने पाकिस्तानी

लोगों में इरफान हुसैन का एक अलग ही स्थान था। उनकी अनुमति से, मैंने उनके कुछ बहुमूल्य विचारों को पांचवें खंड में प्रकाशित किया है।
इसी प्रकार, वीर संघवी की सशक्त कलम और स्पष्ट बुद्धि को भी यहाँ स्थान मिला है। उन्होंने मुझे हिंदुस्तान टाइम्स से अपने उत्कृष्ट लेखों को उद्धृत करने की अनुमति भी दी।
दिनेश हुकमानी का भी धन्यवाद जिन्होंने अपनी अप्रकाशित पुस्तक 'आतंक का साक्षी' के एक गहन शोध अध्याय का उपयोग करने की अनुमति दी। यह अध्याय अमूल्य जानकारी प्रदान करता है और हमले में भारतीय षड्यंत्रकारियों की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डालता है। मैं अथक परिश्रम करने वाले एम.वी. कामथ का भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे अपने लेखन का उपयोग करने की अनुमति दी। एम.वी. कामथ की कलम तलवार से भी अधिक शक्तिशाली है, इस पुस्तक में उनके सहयोग के लिए उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद। इसी प्रकार, एचटी कैफे में प्रकाशित उनके उत्कृष्ट लेख के उपयोग के लिए मैं विक्रम भट्ट का भी आभारी हूं।
मुंबई के समाचार पत्रों, टीवी चैनलों और इंटरनेट पर मौजूद जिम्मेदार वेबसाइटों का भी धन्यवाद जिन्होंने पुस्तक की महत्वपूर्ण सामग्री को संकलित करने में मेरी मदद की।
मैं हरीश मेलवानी को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने पहले दिन से ही मेरे 26/11 प्रोजेक्ट पर विश्वास किया और मुझे इस पर पूरी लगन से काम करने के लिए प्रोत्साहित किया।
अंत में, रूपा एंड कंपनी के मेहरा परिवार को मेरे काम को स्वीकार करने के लिए और उनकी टीम को, विशेष रूप से संपादकीय विभाग की सुमाना को, मेरी पांडुलिपि को संवारने और उसे उत्कृष्ट बनाने के लिए धन्यवाद।
उन सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रस्तावना

24 दिसंबर 2008 को, मैंने ताज महल होटल का दोबारा दौरा किया; मेरा पिछला दौरा 26 नवंबर को हुआ था जब मैं दुबई से आए अपने पुराने दोस्तों से मिलने गया था जो वहाँ ठहरे हुए थे। शाम 5:00 बजे नूतन और मैं ताज महल टावर में स्थित उसके कमरे की अठारहवीं मंजिल की बालकनी में खड़े होकर पुराने गेटवे ऑफ इंडिया की भव्यता को निहार रहे थे। सौभाग्य से, हम दोनों रात 9:30 बजे से पहले ताज महल से निकल गए थे, जब आतंकवादी हमले शुरू हुए थे।
अब, लगभग एक महीने बाद, मुझे आतंकी हमलों का कोई प्रत्यक्ष निशान नहीं दिखाई दिया। लॉबी में लगी एम.एफ. हुसैन की पेंटिंग बिल्कुल सही सलामत थी, दीवारें और फर्नीचर एकदम साफ-सुथरे थे। ताज होटल के कर्मचारी, जो मेहमानों के चेक-इन और पत्रकारों को जानकारी देने में व्यस्त थे, ने मुझे ताज महल होटल द्वारा पुनः खुलने के उपलक्ष्य में आमंत्रित लोगों को वितरित किए गए कार्ड की एक प्रति देने के लिए कुछ समय निकाला।
झरने के सामने ग्रेनाइट की एक स्मारक शिला खड़ी थी जिस पर उन इकत्तीस पीड़ितों के नाम खुदे हुए थे जिन्होंने आतंकवादी हमलों के दौरान ताज (ताज महल होटल) में अपनी जान गंवाई थी। यही सूची उस स्मारक कार्ड पर भी छपी थी जो मुझे अभी मिला था। भूतल को छोड़कर, जो खुला था, हेरिटेज ताज पूरी तरह से मरम्मत के काम के लिए बंद था। ऐतिहासिक इमारत की सीढ़ियों पर जाने की अनुमति नहीं थी, कांच के दो दरवाजे बंद थे और उनके सामने, सावधानी से, सजाए हुए क्रिसमस ट्री रखे गए थे। हर चीज़ शांत सुंदरता से जगमगा रही थी; कहीं भी गोलियों के निशान नहीं थे। अगर आपको हमलों के बारे में जानकारी न होती, तो तबाही के एक महीने से भी कम समय बाद ताज में घूमते हुए आपको इसका एहसास भी नहीं होता।
होटल से बाहर निकलकर मैं लियोपोल्ड कैफे की ओर चल पड़ा। कैफे खचाखच भरा हुआ था और लोग धैर्यपूर्वक बाहर टेबल मिलने का इंतज़ार कर रहे थे। यहाँ कैश काउंटर पर एक टिन का डिब्बा रखा था जिसमें दो मृत वेटरों की तस्वीरें थीं, जिनके परिजनों को सहानुभूतिपूर्ण दान की उम्मीद थी। इसके अलावा, शोक

नेक इरादे वाले फोन करने वालों ने हमसे ऐसे सवाल पूछे जिनके हमारे पास कोई जवाब नहीं थे, जिससे हमारा तनाव और बढ़ गया। हमने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और कहा, 'अगर मुझे बाद में आपसे ये कहने का मौका न मिले, तो मैं अभी कहना चाहती हूँ...' दुख की बात है कि कई पीड़ितों को अपने प्रियजनों से दोबारा बात करने का मौका कभी नहीं मिलेगा।
रात लंबी और अंधेरी होती चली गई। पांच आतंकी हमलों के ठिकानों में से तीन हमारे घर के बहुत करीब एक चाप पर स्थित थे, यह जानकर काफी दुख हुआ; फिर यह खबर सुनकर और भी बुरा लगा कि तीन बेहतरीन पुलिस अधिकारी हेमंत करकरे, विजय सालस्कर और अशोक कामटे मारे गए थे।
दौड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार होकर, हमने कुछ घंटों के लिए सोने की कोशिश की, लेकिन सोते समय भी हमें धमाकों और गोलियों की आवाजें सुनाई देती रहीं। जब मैं जागा, तो मुझे खतरे का आभास हुआ।
और फिर, ऐसा हो गया।
अचानक, मुझे डर नहीं लगा। मैं तरोताजा, सतर्क और तैयार महसूस कर रहा था। अपनी अचानक आई निडरता के कारण, मैंने पाया कि आतंकवादियों ने मेरे मन में अपनी लड़ाई हार ली थी। वे मुझे पराजित नहीं कर पाएंगे।
मैंने घटनाक्रम को अपनी आँखों से देखा। एक आतंकवादी मारा गया; दूसरा चमत्कारिक रूप से जीवित पकड़ा गया। बहुत कुछ घट रहा था। फिर मैंने अपने नाइकी के जूते पहने और ताज महल होटल क्षेत्र की अपनी लगातार तीन सूर्योदय यात्राओं में से पहली यात्रा शुरू की।
तीनों सुबह जब मैं ताज महल के पास गया, तो मुझे धुआं दिखाई दिया, कभी सफेद तो कभी काला। मैंने अपने मोबाइल से तस्वीरें और वीडियो लिए, सुरक्षाकर्मियों, दमकलकर्मियों और वहां मौजूद प्रत्यक्षदर्शियों से बात की। उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने हेरिटेज बिल्डिंग से, नॉर्थकोट प्रवेश द्वार के सामने से एक महिला की चीखें सुनी थीं, 'कृपया मदद करें, मदद करें!' और फिर, सुबह 7:00 बजे से पहले चीखें बंद हो गईं।
लड़ाई जारी थी और कोलाबा में कर्फ्यू लगा दिया गया था। मैंने उन तीन दिनों में 2008 के पूरे साल से ज़्यादा टीवी देखा। आखिरकार, जब आतंक खत्म हुआ, तो उस भयावहता, उस सदमे ने मुझे जकड़ लिया, इतनी सारी खूबसूरत जिंदगियों का बर्बाद होना और इस सब की नाइंसाफी। इतने सारे घर टूट गए, इतने सारे सपने

चकनाचूर हो गए और इतना नुकसान हुआ। इस पागलपन को रोकने के लिए और कितना नरसंहार होना पड़ेगा?
ताजमहल के स्मारक कार्ड को देखते हुए, महात्मा गांधी के उन ज्ञानवर्धक शब्दों को पढ़कर मुझे किसी तरह सुकून मिला, जो कार्ड पर उद्धृत थे, 'शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं आती। यह अदम्य इच्छाशक्ति से आती है।'

भाग – I

हमले की संरचना

□□□□□□ □□□□□ □□ 26/11 □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□

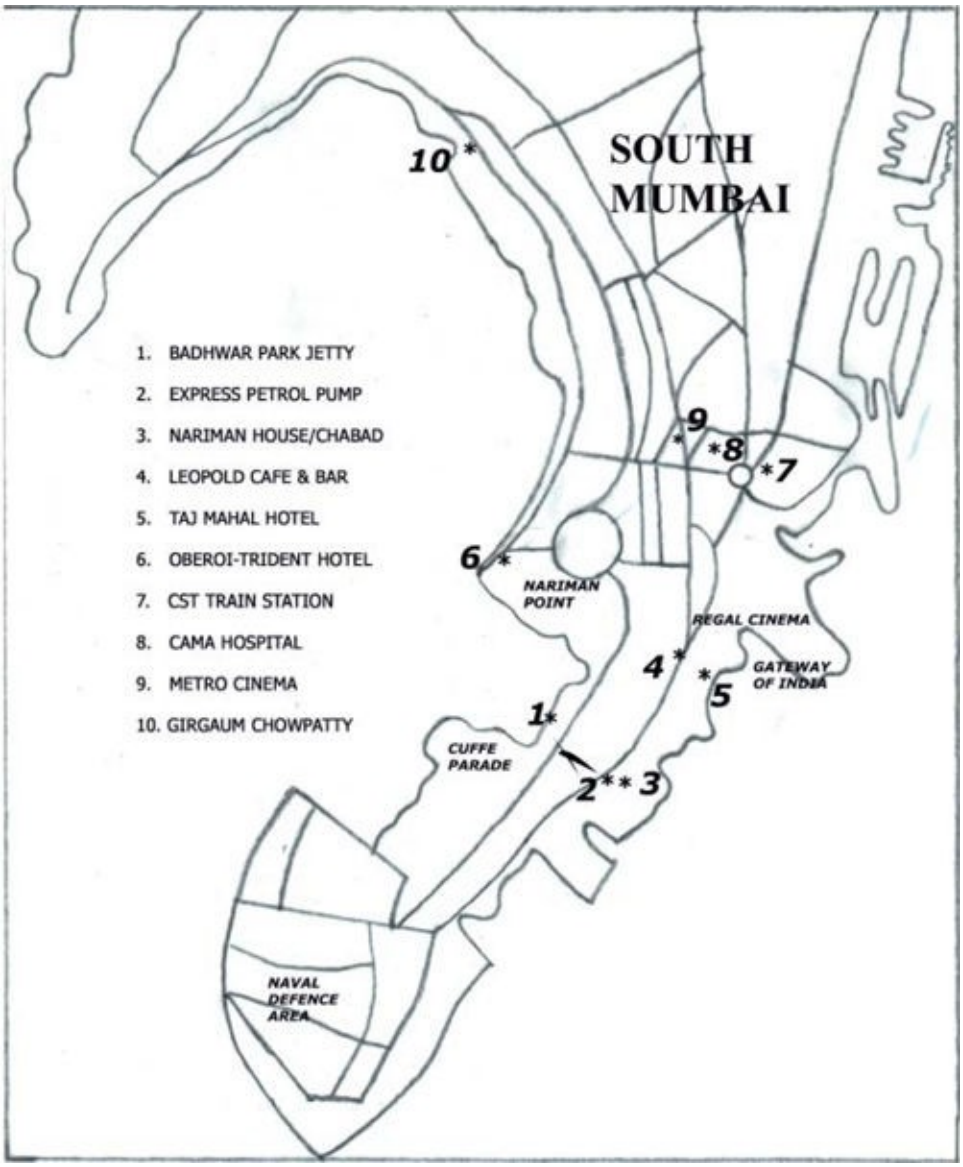
SOUTH MUMBAI
1. BADHWAR PARK JETTY
2. EXPRESS PETROL PUMP
3. NARIMAN HOUSE/CHABAD
4. LEOPOLD CAFE & BAR
5. TAJ MAHAL HOTEL
6. OBEROI-TRIDENT HOTEL
7. CST TRAIN STATION
8. CAMA HOSPITAL
9. METRO CINEMA
10. GIRGAUM CHOWPATTY
NARIMAN POINT
REGAL CINEMA
GATEWAY OF INDIA
CUFFE PARADE
NAVAL DEFENCE AREA

[illegible]

Shukriya, aye kabr tak pahunchane wale, shukriya, Ab akele hi chaley jayengae, is manzil se hum.

– Chakbast

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

था) को पाकिस्तान में फिर से रंगा गया और उसका नाम बदलकर माशाल्लाह रख दिया गया।
दूसरी ओर, अल-हुसैनी नामक नाव समुद्र में पलट गई थी। जाहिर है, नाव को जानबूझकर पलटाया गया था क्योंकि यह पाकिस्तान में लश्कर-ए-तैबा से सीधा संपर्क स्थापित करती थी।
कुछ विचार
लखवी को मिशन पर जा रहे पैदल सैनिकों के साथ जाने की प्रेरणा कहाँ से मिली? उनकी उपस्थिति लश्कर-ए-तैबा के लिए इस घातक मिशन के महत्व को रेखांकित करती है; अन्यथा, संगठन में कई पायदान नीचे के इन युवा रंगरूटों के साथ एक वरिष्ठ पदाधिकारी का जाना अनुचित और अनावश्यक होता। यह भी आभास होता है कि उनकी उपस्थिति से, लश्कर-ए-तैबा द्वारा इन हताश, गरीब भगोड़ों को दिया गया वह प्रतीकात्मक अभिभावकीय बंधन (उन्हें 'चाचा' कहकर पुकारने को कहा गया था) अंतिम क्षण में किसी भी तरह के पीछे हटने से रोकने में सहायक होगा। इस समय, कराची का क्षितिज आँखों से ओझल होते देख उनमें से कोई भी डर सकता था। उनमें से प्रत्येक, मारे जाने की उच्च संभावना से अवगत होने के साथ-साथ, यह भी जानता था कि वे फिर कभी अपने घर नहीं देख पाएंगे। लश्कर-ए-तैबा ने ऑपरेशन को पहले ही सितंबर से नवंबर तक टाल दिया था, इस बार मिशन को योजना के अनुसार ही पूरा करना था। वे इसे और आगे नहीं टाल सकते थे। लखवी इस बार किसी भी तरह की बाधा न आने देने के लिए उत्सुक थे।
हमलावर दस्ते को 26 नवंबर 2008 को मुंबई पहुंचना था, जो अमेरिका में थैंक्सगिविंग की छुट्टी से एक दिन पहले था। संयोग से, IC 814 विमान का अपहरण भी इसी तरह 24 दिसंबर 1999 को हुआ था, जो अमेरिका में क्रिसमस की छुट्टी से एक दिन पहले था। आतंकी साजिश के सरगना यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि नुकसान का असर लंबे समय तक बना रहे, क्योंकि छुट्टी के दिन मदद मिलने में देरी होती है। इसके अलावा, पाकिस्तानी साजिशकर्ता, जो वर्षों से कश्मीर पर नज़र रखे हुए थे, इस बात से भली-भांति परिचित थे कि यह हमला कश्मीर में चल रहे चुनावों को बाधित करने के लिए किया गया था। एक समय पर किया गया आतंकी हमला उनके मिशन के लिए चमत्कारिक साबित होता और वहां की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को पटरी से उतार देता।
जब चाचा उनके साथ थे, तो उनकी स्नेहपूर्ण उपस्थिति ने उनका मनोबल बढ़ाया; साथ ही, इसने चतुराई से उनके विचारों को घर के सुख-सुविधाओं की ओर भटकने से

भी रोका। एक ओर भरपूर देखभाल और दूसरी ओर अन्य धर्मों के प्रति धार्मिक असहिष्णुता का दोहरा अनुभव उन्हें मुंबई के घातक मिशन को अंजाम देने से ठीक पहले बखूबी मिला दिया गया था।
जीवन में असफल हो चुके नौजवानों को 'पवित्र लोगों की सेना' में शामिल इन धनी व्यक्तियों द्वारा सुधारा नहीं गया; बल्कि उन्होंने दान के पैसों का इस्तेमाल इन नाकाम लोगों को मारने और मारे जाने का प्रशिक्षण देने में किया। उन्होंने उन्हें जीवन के नहीं, मृत्यु के मार्ग पर धकेल दिया। इन भ्रमित और छोटे-मोटे अपराधियों को उनकी कमजोरी का फायदा उठाकर बेरहमी से निशाना बनाया गया और फिर इन लोगों को रिमोट-कंट्रोल्ड रोबोट की तरह इस्तेमाल किया गया।
इन गुमराह लोगों में से नौ तो अपनी बीसियों में ही मर गए—जीवन के सुखों का एक अंश भी चखे बिना—लेकिन उनके वरिष्ठ प्रशिक्षक अभी भी जीवित हैं, और दूसरों को मौत के गले लगाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं ताकि वे अपनी शैतानी योजनाओं को जारी रख सकें। जो लोग इस्लाम के प्रति उनके कट्टरपंथी दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं, वे जीने के लायक नहीं हैं—बात बस इतनी सी है। वे भ्रमित और आसानी से प्रभावित होने वाले दिमागों में जिस कट्टरपंथी इस्लाम का प्रसार कर रहे हैं, उसमें खुद के लिए ऐसे ही साहसी अभियानों का कोई जिक्र नहीं है।
वे अपने धर्म के लिए जान देने की बजाय बेहतर तरीके से जानते हैं।

कुबेर

मनुष्य के जीवन में एक ज्वार आता है, जो सही समय पर पकड़ने पर भाग्य की ओर ले जाता है; यदि इसे छोड़ दिया जाए, तो जीवन भर की यात्रा उथलेपन और दुखों में ही सिमट जाती है।
– विलियम शेक्सपियर
दस आतंकवादियों से लदा अल-हुसैनी जहाज भारतीय तट की ओर बढ़ रहा था, और एक ऐसी स्थिति में आ गया जब उसके पास प्रतीक्षा करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। 23 नवंबर 2008 को दोपहर लगभग 3:00 बजे, उसकी प्रतीक्षा का अंततः फल मिला: एक भारतीय जहाज, कुबेर, कच्छ में भारत-पाकिस्तान सीमा के पास, जाखौ के आसपास पाकिस्तानी जलक्षेत्र में आ गया था।
25 मीटर लंबी और 118 हॉर्सपावर इंजन वाली 'कुबेर' मछली पकड़ने वाली नाव थी, जो पोरबंदर के विनोद मसानी की थी। यह नाव 2004 में भी पाकिस्तानी अधिकारियों के साथ विवाद में पड़ चुकी थी, जब अंतरराष्ट्रीय सीमा रेखा पार करने के आरोप में पाकिस्तानी समुद्री एजेंसी ने इसे जब्त कर लिया था। बाद में इस नाव को ग्यारह अन्य नावों और कई भारतीय मछुआरों के साथ एक काफिले में छोड़ दिया गया था। इस बार, 'कुबेर' 14 नवंबर 2008 को मुंबई से रवाना हुई थी, जिसमें रमेश नागजी सोलंकी, बलवंत प्रभु टंडेल, मुकेश अंबु राठौड़, नानू लालुभाई राठौड़ और इसके कप्तान अमरसिंह नारायण सोलंकी सहित पांच नाविक सवार थे।
संकट में होने का नाटक करते हुए अल-हुसैनी ने सफेद झंडा फहराया, जिससे कुबेर का ध्यान आकर्षित हुआ और वह मदद के लिए आगे बढ़ा। कुबेर के चालक दल से पाकिस्तानी चालक दल की मदद करने का अनुरोध किया गया क्योंकि उन्होंने दावा किया था कि उनके इंजन का बेल्ट टूट गया है। इसके तुरंत बाद, दस लोग कुबेर में कूद गए और उसे अगवा कर लिया। उन्होंने कुबेर के पांच चालक दल सदस्यों में से चार को अल-हुसैनी में स्थानांतरित कर दिया, लेकिन कप्तान और नाविक अमरसिंह सोलंकी को अगवा किए गए जहाज पर ही रखा। स्थानांतरित किए गए चारों नाविकों को बाद में अल-हुसैनी पर सवार लश्कर-ए-तैबा के लोगों ने मार डाला; बाद में अल-हुसैनी को चारों शवों के साथ डुबो दिया गया। जाहिर

□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□, □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ 13 □□□□□□ 2009 □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□-□□□□ □□ □□-□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□; □□□□□□, □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□, □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ 26 □□□□□□ 2009 □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□, '□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ (□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□) □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□... □□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□'

□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□-□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□

□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□-□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□:

□□□□	□□□□
Fahadullah + Saquib + Muheeb	□□□□□ 6:00 □□□□ □□ 8:00 □□□□ □□
□□□□ + □□□□□□□ + □□□□	□□□□□ 8:00 □□□□ □□ 10:00 □□□□ □□
□□□□□□□□□ + □□□□□□□□□□ + □□□□	□□□□□ 10:00 □□□□ □□ □□□□□□ 12:00 □□□□ □□
Fahadullah	□□□□□□ 12:00 □□□□ □□ □□□□□□ 2:00 □□□□

	□□
□□□	□□□□□ 2:00 □□□ □□ □□□ 4:00 □□□ □□
□□□□□□□□	□□□ 4:00 □□□ □□ □□□ 6:00 □□□ □□
Fahadullah	□□□ 6:00 □□□ □□ □□□ 8:00 □□□ □□
□□□	□□□ 8:00 □□□ □□ □□□ 10:00 □□□ □□
□□□□□□□□	□□□ 10:00 □□□ □□ □□□ □□□ 12:00 □□□ □□
Fahadullah	□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ 2:00 □□□ □□
□□□	□□□□ 2:00 □□□ □□ 4:00 □□□ □□
□□□□□□□□	□□□□ 4:00 □□□ □□ □□□□ 6:00 □□□ □□[6]

□□□□□□ □□ □□□□□, □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□

□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□-□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□

□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□ 300 □□□□□□□ □□□ (556 □□□) □□□, □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□, □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□

□□□, □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□, □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□ '□□□□□□' (□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□) □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□, □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□, '□□□□□ □□□ □□□□□-□-□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□, "□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□, □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□" (□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□, □□

तुम अपनी बकरी खा लो)। यह सोलंकी को मारने का सांकेतिक संदेश था। इस्माइल और शोएब ने उसका गला काटकर उसकी हत्या कर दी और उसके शव को इंजन रूम में फेंक दिया।' बाद में उसका शव कुबेर जहाज पर मिला, मुंह पर पट्टी बंधी थी, हाथ पीछे बंधे थे, चेहरा नीचे की ओर था और गला कटा हुआ था। बाद में, कसाब ने मुंबई पुलिस को सूचित किया कि पाकिस्तानी हैंडलर लश्कर-ए-तैबा का पदाधिकारी मुज़म्मिल था।
अमरसिंह सोलंकी का रिकॉर्ड भी कुबेर गिरोह की तरह साफ नहीं है, इसलिए उसकी संलिप्तता भी संदेह के घेरे में है, हालांकि इसकी संभावना कम ही लगती है। संभव है कि उसने इस समूह को भाड़े के तस्करों का गिरोह समझ लिया हो; अतीत में उसे डीजल और केरोसिन की तस्करी करते हुए पकड़ा गया था। उसे 2001 और 2003 में पाकिस्तान द्वारा गिरफ्तार किया गया था और वहां तीन साल की जेल हुई थी। फिर, 2006 में उसे पाकिस्तानी जलक्षेत्र में घुसपैठ करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया और छह महीने की जेल हुई। दरअसल, पूछताछ के दौरान, कसाब ने सोलंकी के खिलाफ संदेह की पुष्टि करते हुए कहा कि आतंकवादियों ने 'कुबेर में हथियार और गोला-बारूद उतारे और शांतिपूर्वक रवाना हो गए।' इसके अलावा, यह संदिग्ध तथ्य कि सोलंकी ने 20 नवंबर 2008 के बाद से कुबेर के मालिक या बंदरगाह अधिकारियों से कोई संपर्क नहीं किया था, उनके लिए स्थिति को और भी जटिल बना देता है। चूंकि ट्रॉलर को 22 नवंबर 2008 को अगवा कर लिया गया था, इसलिए 20 नवंबर से 22 नवंबर की दोपहर तक उनकी अनुपस्थिति पर सवाल बने हुए हैं। कुबेर में आई-कॉम एम-45 श्रृंखला का वीएचएफ सैटेलाइट लगा हुआ था, इसलिए वह संकटकालीन संदेश भेज सकते थे, जब तक कि ट्रॉलर को 20 नवंबर को ही अगवा न कर लिया गया हो। हालांकि उनके शोक संतप्त बेटे ने स्वाभाविक रूप से प्रेस में अपने पिता की निर्दोषता का बचाव किया है, फिर भी कप्तान की भूमिका पर प्रश्नचिह्न बने हुए हैं। यह संभव है कि पाकिस्तान में अपनी कैद के दौरान, सोलंकी ने पाकिस्तानी माफिया के कुछ सदस्यों से दोस्ती कर ली हो। कुबेर मामले में एक और संदिग्ध खोज यह है कि ट्रॉलर पर चांदी की पन्नी पर हशीश के अंश भी पाए गए हैं। क्या ट्रॉलर पर कोई नशे में था या कुबेर के जरिए नशीले पदार्थों की तस्करी की जा रही थी और उन्हें भारत लाया जा रहा था? क्या सोलंकी नशीले पदार्थों की तस्करी करने वाले गिरोह का हिस्सा था और उसकी इच्छा के विरुद्ध इस आतंकवादी अभियान में उसका इस्तेमाल किया गया था?

सोलंकी का खून बहने से मृत शरीर कुबेर जहाज से बरामद किया गया। कुछ दिनों बाद, गुजरात में तटरक्षक बल को चार नाविकों के शव मिले। कुछ अपुष्ट रिपोर्टों के अनुसार, उनके शव सिर कटे हुए पाए गए थे।
कुबेर जैसी छोटी नाव इतनी लंबी यात्रा कैसे कर पाई? इसमें ईंधन कहाँ भरा गया? इसका जवाब तब स्पष्ट हो गया जब पता चला कि अल-हुसैनी के संचालकों ने कुबेर में पंद्रह बैरल डीजल उतारा था, जिसमें से आठ बैरल अप्रयुक्त डीजल पाकिस्तान से मुंबई तक कुबेर के साथ ही लाया गया था।
इसके बाद आतंकवादी अपनी चार समुद्री मील की यात्रा के अंतिम चरण के लिए हवा से भरी नाव में सवार होने की तैयारी करने लगे। ज़ाहिर है, वे कुबेर जहाज़ पर नहीं पहुँचना चाहते थे क्योंकि उसके दोबारा दिखने से लोगों में जिज्ञासा और ध्यान आकर्षित हो जाता। एक समय उन्होंने एक और नाव को अपनी ओर आते देखा और उसे नौसैनिक गश्ती दल समझकर उन्होंने अपने हथियार और गोला- बारूद उठाए और जल्दी से कुबेर जहाज़ छोड़कर नीले और पीले रंग की हवा से भरी जेमिनी नाव में सवार हो गए। कसाब के अनुसार, 'सैटेलाइट फ़ोन और जीपीएस मेरे पास थे। लेकिन जैसे ही हम नाव को पानी में उतार रहे थे, एक और मछली पकड़ने वाली नाव हमारे बहुत करीब आ गई। हम डर गए और हमें लगा कि कहीं वह भारतीय नौसेना न हो। हमने जल्दी से अपना सामान नाव पर लादा और मुंबई की ओर चल पड़े। हड़बड़ी में मैं इस्माइल का सैटेलाइट फ़ोन और जीपीएस भारतीय ट्रॉलर पर ही भूल गया। यात्रा के आधे रास्ते में, इस्माइल को अचानक सैटेलाइट फ़ोन और जीपीएस याद आ गया।' हमने विचार किया कि क्या हमें इसे वापस लाने के लिए लौटना चाहिए, लेकिन फिर हमने ऐसा न करने का फैसला किया और मुंबई की ओर बढ़ते रहे।
कुबेर से बिना किसी की नज़र में आए भागने की हड़बड़ी में वे घबरा गए और यहाँ तक कि ट्रॉलर के ताले खोलकर उसे डुबाना भी भूल गए।
छोटी नाव में सवार होकर उन्होंने जल्दी ही चार समुद्री मील की दूरी तय कर ली; रात 8:30 बजे वे दक्षिण मुंबई के बडवार पार्क स्थित मछुआरों के घाट पर पहुँच गए। यह 26 नवंबर 2008 की रात थी।
मुंबई के निवासियों के लिए यह लंबे समय में सबसे लंबी रात थी।
टीम के लिए दिन और तारीख दोनों ही भाग्यशाली रहे: अधिकांश लोग क्रिकेट मैच का सीधा प्रसारण देखने के लिए अपने घरों के अंदर थे। क्रिकेट भारत के लिए उतना ही जुनून है जितना पाकिस्तान के लिए। भारत बनाम इंग्लैंड का क्रिकेट

मैच प्रसारित हो रहा था। अन्य शामों में मछुआरे समुद्र तट के किनारे घाट पर इकट्ठा होते हैं और समुद्र को देखते हुए आपस में बातें करते हैं; लेकिन क्रिकेट मैच के कारण कई लोग अपने घरों के अंदर थे और भारत की जीत के लिए बेसब्री से दुआ कर रहे थे। अगर उस शाम मैच न होता, तो बडवार पार्क में खून-खराबा हो सकता था – लेकिन इससे शायद सीएसटी और अन्य स्थानों पर जानमाल का नुकसान कम या न के बराबर होता। तब हालात बिल्कुल अलग हो सकते थे।
क्रिकेट मैच के बावजूद, कुछ गवाहों ने उस समूह को आते देखा। एक गवाह तो उनसे आमने-सामने भी मिला। भरत तमोरे ने बताया, “बुधवार रात करीब 9:30 बजे, मेरी मुलाकात दस युवकों से हुई जो एक पीली स्पीडबोट से किनारे पर बड़े- बड़े स्कूल बैग और भारी कैरी बैग उतार रहे थे। जब मैंने उनसे पूछताछ की, तो उन्होंने कहा कि वे छात्र हैं। एक और कुली (पोर्टर), जो नाव में सो रहा था, ने भी आवाज लगाई और लड़कों ने जवाब दिया, ‘हमें टेंशन मत दो, हम पहले ही टेंशन में हैं।’ उनके चेहरे इतने कठोर और भावहीन थे कि मैं स्तब्ध रह गया। उन दस लड़कों में से आठ, जिन्होंने स्पोर्ट्स शूज़ पहने हुए थे, फिर चार-चार के समूहों में बंट गए और सड़क पर अलग-अलग दिशाओं में चले गए।” बाद में, जब तमोरे अपने कार्यस्थल, ताज महल होटल में ड्यूटी पर गए, तो उन्हें पता चला कि होटल पर आतंकवादियों ने कब्जा कर लिया है। उसी क्षण उन्हें याद आया कि इससे पहले उनका सामना उन्हीं लोगों से उनके घर के पास हुआ था।
पैंतीस वर्षीय अनीता वोडेयार पेशे से कूड़ा बीनने वाली हैं; वह कचरा इकट्ठा करके उसे बेचती हैं। “26 नवंबर को मैं रात करीब 8:30 बजे ताजी हवा लेने के लिए घाट पर गई थी। मैंने देखा कि एक हवा भरी छोटी नाव घाट की ओर आ रही है। मुझे यह अजीब लगा क्योंकि इस तरह की नावों का इस्तेमाल मछुआरे नहीं करते। मैंने देखा कि छह युवक, जिनके कंधों पर दो-दो थैले थे, घाट पर उतरे। मैंने उनसे पूछा कि वे कौन हैं; उन्होंने मुझे अपने काम से मतलब रखने को कहा और सड़क की ओर चल दिए। उनमें से दो बडवार पार्क की ओर दाहिनी ओर मुड़ गए और बाकी बाईं ओर।. . . मुझे नहीं पता कि बाकी लोग किसी दूसरी नाव से आए थे या नहीं।”
लेकिन अगर हम पुलिस के निष्कर्षों पर टिके रहें, तो आतंकवादियों के उतरने के बाद, उनमें से दो ने छोटी नाव को ओबेरॉय-ट्राइडेंट क्षेत्र की ओर मोड़ दिया; कसाब और इस्माइल खान ने सीएसटी के लिए टैक्सी ली, बाकी चार ने ताज और

[illegible], [illegible]

[illegible]:

1. [illegible], 45
2. [illegible], 20
3. Crew member Natvar Lalubhai Rathod, 23
4. [illegible], 36
5. Skipper and navigator Amarsinh Narayan Solanki, 38.

[illegible] 22 [illegible] 2008 [illegible], [illegible] ([illegible], [illegible], [illegible])[illegible]

[illegible]

• [illegible], [illegible] ([illegible]) [illegible]

• [illegible], [illegible]

• [illegible] 26 [illegible]; [illegible] 1 [illegible], '[illegible], [illegible], [illegible]

को। लेकिन जिस बात ने हमें सबसे ज्यादा शक दिलाया, वह यह थी कि नाव बिना एक भी लाइट जलाए बहुत तेज गति से चल रही थी। हमें पूरा यकीन है कि नाव में सवार लोग आतंकवादी थे।' जब नाव पास आई, तो मछुआरों ने शोर मचाया और चीखते- चिल्लाते हुए और गालियां देते हुए उसकी ओर दौड़ पड़े। हमें विरोध में उनकी ओर दौड़ते देख नाव धीमी हो गई, यू-टर्न लिया और रात के अंधेरे में तेजी से निकल गई।
• इलाके के मछुआरों का मानना है कि आतंकवादियों ने पूरी कार्रवाई की सफलता की जांच करने के लिए पहले से ही पूर्वाभ्यास किया होगा। उनका दृढ़ विश्वास है कि आतंकवादियों का आगमन जानबूझकर क्रिकेट मैच के सीधे प्रसारण के समय किया गया था, ताकि समुदाय के लोग समुद्र के किनारे बैठने के बजाय घर के अंदर टीवी देख रहे हों। यदि यह अनुमान सही है, तो इस भयावह ऑपरेशन की योजना किसी अनुभवी और कुशल आईएसआई अधिकारी द्वारा बनाई गई प्रतीत होती है, जिसे वर्षों का प्रशिक्षण प्राप्त है।
• कुछ समाचार पत्रों में छपी खबरों से पता चलता है कि कुछ स्थानीय लोगों ने आतंकवादियों को बडवार पार्क क्षेत्र में जाने के लिए inflatable dinghy (हवा से भरी नाव) उपलब्ध कराने की व्यवस्था की थी, लेकिन इसकी अभी तक पुष्टि नहीं हुई है; फिलहाल, स्थानीय स्तर पर इसका कोई समर्थन स्थापित नहीं हुआ है।
• एक और सवाल – हमले से चालीस दिन पहले तटीय पुलिस को वहाँ से हटने का आदेश क्यों दिया गया, और फिर उनकी जगह स्थानीय पुलिस को क्यों तैनात किया गया? नाम न छापने की शर्त पर एक तटीय पुलिस अधिकारी ने कहा, ‘जब तटीय पुलिस का गठन विशेष रूप से तट की निगरानी के लिए किया गया था, तो मुझे नहीं पता कि हमें समुद्र के रास्ते शहर पर संभावित आतंकवादी हमले की खुफिया जानकारी होने के बावजूद अत्यधिक संवेदनशील क्षेत्रों में गश्त करने से क्यों रोका गया।’ मुंबई पुलिस के अतिरिक्त आयुक्त डॉ. के. वेंकटेशम ने यह बताने से इनकार कर दिया कि उन्होंने वह आदेश क्यों जारी किया जो इतना विनाशकारी साबित हुआ। चूंकि यह राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा एक महत्वपूर्ण निर्णय था, तो उनकी रिपोर्ट की जांच क्यों नहीं की जा रही है? निश्चित रूप से, उन्होंने कुछ आधारों पर इस बदलाव को उचित ठहराया होगा, तटीय गश्ती दल को वापस बुलाने के कुछ कारण बताए होंगे, या यह सिर्फ एक व्यक्ति की मनमानी है?

क्या समुद्र में इन लोगों को रोकने में हुई विफलता के लिए अंततः पुलिस, तटरक्षक बल या सीमा शुल्क विभाग जिम्मेदार थे? क्या वे सभी दोषी थे? निश्चित रूप से, सरकार को इस गंभीर चूक के बारे में जनता को जवाब देना होगा।
• ट्रॉलर दस दिनों में घर लौट आते हैं, इसलिए जब 24 नवंबर 2008 को कुबेर वापस नहीं लौटा, तो मत्स्य विभाग को सूचित किया गया। 24 नवंबर और 26 नवंबर के बीच क्या हुआ? क्या कोई खोज अभियान भेजा गया था? यदि भेजा गया था, तो वे ट्रॉलर को देखने से कैसे चूक गए?
• इसके अतिरिक्त, कफ परेड और बडवार पार्क के मछुआरे अधिकारियों को क्षेत्र में घुसपैठ और खतरों के बारे में चेतावनी देते रहे थे। सरकार ने उनकी बात को गंभीरता से क्यों नहीं लिया, उनकी चेतावनियों के बाद कोई जांच क्यों नहीं की गई?
• मच्छीमार नगर के मछुआरों, जिन्हें कुली कहा जाता है, से अब मुंबई के छब्बीस पुलिस थानों में पुलिस को सूचना देने में मदद करने के लिए कहा गया है। अब उनका इरादा उस क्षेत्र से संचालित होने वाली 500 मछली पकड़ने वाली नावों के मालिकों को स्मार्ट कार्ड जारी करने का है।
• तटीय क्षेत्रों के सरकारी कुप्रबंधन से मछुआरे काफी परेशान हैं। मछीमार कॉलोनी के मछुआरों के नेता दामोदर टंडेल ने कहा, 'राज्य सरकार का मत्स्य विभाग फर्जी राशन कार्डों के आधार पर बांग्लादेशियों को मछली पकड़ने के लाइसेंस जारी करता है। ये बांग्लादेशी पाकिस्तानी जलक्षेत्र से आते हैं और कुछ एजेंट नियमित रूप से उन्हें तीन साल के लिए वैध मछली पकड़ने के लाइसेंस दिलवाने में मदद करते हैं। राज्य मत्स्य विभाग रिश्वत के जरिए लगभग 4 करोड़ रुपये वसूलता है।'
• रहस्यमय सात टूथब्रशों के अलावा, कंबलों का एक और रहस्य है। पुलिस को कुबेर जहाज पर पंद्रह कंबल मिले, जिससे यह अटकलें लगाई गईं कि पांच और आतंकवादी मुंबई आए थे और गायब हो गए थे। हालांकि, पुलिस जांच के दौरान, कसाब ने खुलासा किया कि उनमें से पंद्रह कराची से अल-हुसैनी जहाज पर सवार हुए थे, लेकिन उनमें से केवल दस ही कुबेर जहाज पर सवार हुए थे। सभी पंद्रह कंबल एक ही थैले में थे, और चूंकि पूरा थैला कुबेर जहाज पर स्थानांतरित कर दिया गया था, इसलिए पांच अतिरिक्त कंबल ट्रॉलर से बरामद किए गए।

• सबसे महत्वपूर्ण बात, उनका क्या हुआ? बाकी पांच को मिशन से क्यों हटा दिया गया? वे कौन थे? क्या वे किसी दूसरे घाट से मुंबई पहुँचने के लिए किसी दूसरी नाव में सवार हुए? या फिर वे डर गए और घर लौट गए? अगर वे पहुँच जाते, तो क्या उनसे किसी ऐसे स्थान पर हमला करने की उम्मीद की जा रही थी जिसे आखिरी समय में उनकी योजनाओं से पूरी तरह हटा दिया गया था? उनकी शुरुआती रेकी में बीएसई बिल्डिंग, मैरियट और लैंड्स एंड शामिल थे। क्या वे स्थान उनकी योजना में थे और क्या आखिरी समय में मन बदलने के कारण उन्हें हटा दिया गया?
सभी जानकारियों से ऐसा प्रतीत होता है कि आतंकवादियों को मुंबई पहुंचने में कुछ घंटों की देरी हुई; देरी का एक कारण यह था कि कराची से मुंबई आते समय वे उस सबसे छोटे समुद्री मार्ग से भटक गए थे जो उनके जीपीएस सिस्टम (जिसका विस्तृत विवरण कुबेर जहाज से बरामद फाइल में है) पर अंकित था। ऐसा कैसे हुआ? देरी के दो कारण हो सकते हैं: या तो अमरसिंह सोलंकी ने जानबूझकर उनके मिशन को विफल करने के लिए लंबा मार्ग चुना, या रास्ते में कहीं कप्तान ने विरोध किया और आतंकवादियों की बात मानने से इनकार कर दिया, जिसके बाद उनके पास उसे गोली मारने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा, और फिर उन्हें खुद ही मुंबई की ओर बढ़ना पड़ा। कप्तान की तरह भारतीय जलक्षेत्र और मार्गों से परिचित और अनुभवी न होने के कारण (पहले की गई रेकी के बावजूद) उन्हें अधिक समय लगा और देरी हुई। उनका शाम 6:30 बजे का आगमन रात 8:30 बजे तक टल गया।
• 5 फरवरी 2009 को, कुबेर पर छूटे कपड़ों पर मिले डीएनए का मिलान आतंकवादियों के डीएनए नमूनों से हुआ, जिससे यह पुख्ता सबूत मिला कि आतंकवादी समूह कुबेर के जरिए ही शहर में आया था। इसके अलावा, ट्रॉलर से बरामद सैटेलाइट फोन और जीपीएस मैप मुंबई में नवंबर में हुए आतंकी हमलों से जुड़े सबसे महत्वपूर्ण सबूतों में से हैं। भारतीय खुफिया एजेंसियों ने सैटेलाइट फोन के रिकॉर्ड की जांच करके उन स्थानों का पता लगाया जहां से जहाज पर कॉल किए गए थे। कुबेर, सैटेलाइट फोन और मोबाइल फोन की ट्रांसक्रिप्ट और गिरफ्तार आतंकवादी कसाब आज भारत के पास मौजूद सबसे महत्वपूर्ण सबूत हैं। तटरक्षक बल की गश्त और तुकाराम ओम्बले की बहादुरी दो ऐसे अप्रत्याशित कारक थे जिन्होंने पाकिस्तान के घातक कट्टरपंथियों की योजनाओं को विफल कर दिया।

इस दस्तावेज़ में कुबेर जहाज़ पर मिली विभिन्न वस्तुओं की सूची दी गई है, जिनका विस्तृत विवरण तीसरे खंड में साक्ष्यों के साथ एक अलग अध्याय में दिया गया है। ये दस्तावेज़ पाकिस्तान को यह स्वीकार करने के लिए आवश्यक प्रमाण प्रदान करते हैं कि घातक, गुप्त अभियान की योजना बनाई गई थी और इसे आईएसआई पदाधिकारियों की सहायता से कुछ शरारती तत्वों द्वारा अंजाम दिया गया था। पाकिस्तान ने यह स्वीकारोक्ति बहुत विलंब के बाद, अनिच्छा से 12 फरवरी 2009 को की। पाकिस्तानी गृह मंत्री रहमान मलिक ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में घोषणा की कि उनकी सरकार मानती है कि आतंकवादी पाकिस्तानी नागरिक थे। हालांकि, उन्होंने कहा कि उन्हें पता चला है कि उस सुबह दस नहीं बल्कि नौ आतंकवादी भारत के लिए रवाना हुए थे।

[illegible]

Kya surma-bharee aankhon se aansoo nahin girte,

Kya mehndi lage haathon se, maatam nahin hota.

– Riyaaz

([illegible]?)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बेरोजगार युवा। वे लियो के फर्नीचर की तरह ही इसका अभिन्न अंग हैं। लोग यहाँ सिर्फ सड़क को निहारने के लिए बैठते हैं या कभी-कभी जिज्ञासावश, साथ बैठे अन्य लोगों को देखते हैं। हर जगह दर्पण लगे हैं, आप बिना देखे देख सकते हैं, और दूसरे भी देख सकते हैं। लियोपोल्ड के इस अराजक माहौल में एक अनोखा तरीका है, जो जीवन को वास्तव में अच्छा महसूस कराने की अनूठी क्षमता रखता है। हालाँकि लियो की स्थापना 1871 में हुई थी, लेकिन अपने पहले प्यार की तरह, यह बीते हुए कल की झलक लिए हुए है, जिसे हम अनजाने में ही पसंद करने लगते हैं।
कोलाबा पुलिस स्टेशन के ठीक सामने स्थित, लियोपोल्ड के सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति ग्रेगरी डेविड रॉबर्ट्स हैं, जिन्होंने अपनी बेस्टसेलर पुस्तक, शांताराम में लियोपोल्ड को अमर कर दिया।
नीचे के हिस्से में दो चौड़े प्रवेश द्वार हैं जो लगभग सीधे सड़क पर खुलते हैं – अगर आप सड़क पर हैं, तो लियो के अंदर जाने के लिए आपको बस एक कदम आगे बढ़ाना होगा। यहाँ का माहौल और खाना स्वच्छ, स्वादिष्ट और किफायती है, और सेवा भी ध्यानपूर्वक और कुशल है।
जी हां, यह आधिकारिक है – अगर आप लियो के यहां नहीं गए हैं, तो आप मुंबई नहीं गए हैं।
अन्य दिनों की तरह ही, 26 नवंबर 2008 को भी रेस्तरां सुबह नाश्ते के लिए जल्दी खुल गया। न तो उसके नियमित ग्राहकों को और न ही मालिकों को इस बात का जरा भी अंदाजा था कि महज चौदह घंटे बाद उसके कुछ ग्राहक एके-47 की गोलियों से छलनी होकर मृत पड़े होंगे; कि टूटे हुए कांच, मेजें और कुर्सियाँ हर जगह बिखरी होंगी; और भोजनालय से खून धीरे-धीरे सड़क पर रिस रहा होगा।
रात करीब 9:00 बजे, चार आतंकवादियों ने बडवार पार्क के सामने, मच्छीमार नगर के बाहर एक टैक्सी रोकी। वे टैक्सी में बैठ गए और ड्राइवर को ताज महल होटल ले जाने को कहा। चारों में से एक ने चुपके से बत्तीस वर्षीय टैक्सी चालक किशोरबंद फुलचंद की सीट के नीचे बम रख दिया। रीगल सिनेमा के पास ट्रैफिक जाम के कारण टैक्सी थोड़ी देर रुकी, लेकिन थोड़ी देर बाद लियोज़ के ठीक सामने आकर रुकी, जहाँ चार आतंकवादियों में से दो, अट्ठाईस वर्षीय नज़ीर और इक्कीस वर्षीय शोएब, दोनों पंजाबी पाकिस्तानी, अपने हथियारों और गोला-बारूद को अपने बैकपैक और बैग में छिपाकर टैक्सी से उतरे। बाकी दो आगे गए और लियोज़ से कुछ ही मिनट की दूरी पर स्थित ताज महल होटल के पास टैक्सी

‘मैं ऊपर टीवी पर मैच देख रहा था... तभी मुझे एक ज़ोरदार धमाका सुनाई दिया और मैंने instinctively नीचे झुककर गोलीबारी बंद होने का इंतज़ार किया,’ मालिक फरहाद जेहानी ने बताया। अब उनके रेस्टोरेंट में शीशे, दरवाज़े, खंभों और दीवारों पर तीस से ज़्यादा गोलियों के निशान साफ दिखाई देते हैं। उनके दो वेटर, हिदायतुल्लाह और पीरपाशा, दोनों मुस्लिम थे, मारे गए लोगों में शामिल थे। लियोज़ में पूरी घटना एक मिनट से भी कम समय में घटी।
लियो और उसके आसपास के इलाकों में कुल हताहतों की संख्या – 9
1. काजी हिदायतुल्ला, 24, लियोपोल्ड वेटर
2. पीरपाशा एम. शेख, 42 वर्ष, लियोपोल्ड में वेटर
3. मलयश बनर्जी, 27, रांची से
4. Gaurav B. Jain, 25
5. Gopalkrishna P.K. 45
6. शाहबुद्दीन एस. खान, 46
7. कमल एन. मोटवानी, 38 वर्ष,
8. Bechand Ramprasad Gupta, 45
9. सुभाष वाघेला, 44
कुछ रिपोर्टों में कहा गया है कि लियोपोल्ड में दो विदेशियों की भी जान गई थी; हालांकि, जनवरी 2009 के पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, कैफे में किसी भी विदेशी की मौत का कोई रिकॉर्ड नहीं है। ऐसा लगता है कि श्रीमान और श्रीमती श्मिट ने लियोपोल्ड में भोजन किया और फिर सीएसटी गए, जहां उन्हें गोली मार दी गई। रेलवे अधिकारियों ने उनके नाम उन लोगों की सूची में शामिल किए हैं जिन्हें भारी मुआवजा दिया जाना है, लेकिन यह संभावना नहीं है कि वे उन पीड़ितों के नाम शामिल करेंगे जो वहां नहीं मारे गए थे। छब्बीस वर्षीय मीता असरानी की तरह, जिन्होंने सीएसटी जाने से पहले लियोपोल्ड में भोजन किया था, उन्होंने भी वहीं भोजन किया और सीएसटी के लिए रवाना हुए, जहां उन तीनों की हत्या कर दी गई।
कई विरोधाभासी बयान सामने आए – एक प्रत्यक्षदर्शी ने दावा किया कि आतंकवादी रेस्तरां के काउंटर पर खड़े थे जब उन्होंने गोलीबारी शुरू की। कुल मिलाकर, अधिकांश लोग इस बात से सहमत हैं कि दोनों आतंकवादियों ने कैफे के बाहर से गोली चलाई और गोली चलाते हुए अंदर भागे, और उसके बगल वाले निकास से निकलकर उस गली में भाग गए जो उसे ताज महल होटल से जोड़ती है।

ऑस्ट्रेलियाई हेलीकॉप्टर पायलट स्टीव स्मिथ लगातार दूसरी रात लियो के रेस्तरां में थे; वे अपनी प्रेमिका के साथ ऊपरी मंजिल पर थे जब उन्होंने गोलियों की आवाज सुनी। उन्होंने बताया कि उन्होंने देखा कि कैसे एक आदमी ने अपनी पत्नी की रक्षा के लिए अपना शरीर उसके ऊपर डाल दिया। जैसे ही उन्होंने गोलियों की आवाज सुनी, उन्होंने अपनी प्रेमिका और कुछ अन्य लोगों को एक स्टोररूम में धकेल दिया और फिर ऊपरी मंजिल के प्रवेश द्वार को बंद कर दिया। उन्होंने बताया कि उस रात वे लियो के तीस ग्राहकों की जान बचाने में सफल रहे। कुछ लोग इससे असहमत हैं, उनका दावा है कि बंदूकधारी एक दरवाजे से गोली चलाते हुए दूसरे दरवाजे से निकल गए, उन्होंने मेजेनाइन मंजिल पर चढ़ने का प्रयास नहीं किया।
शहाबुद्दीन न तो लियोज़ में खाने वाला था और न ही कर्मचारी; वास्तव में, वह लियोज़ के अंदर भी नहीं था। वह लियोज़ के बाहर सड़क पर था जब गोलियों ने उसके शरीर के ऊपरी हिस्से को छलनी कर दिया। जब मैंने लियोज़ के पास एक दुकान मालिक का साक्षात्कार लिया (उसने अपना नाम किताब में प्रकाशित न करने का अनुरोध किया) तो उसने मुझे भयावह विवरण और गोली मारकर मारे गए शहाबुद्दीन की तस्वीरें भी दीं। उसके व्याकुल परिवार का दुख और गोलियों से छलनी, अब सिले हुए उसके शरीर की तस्वीरें सब मौजूद थीं, लेकिन मैंने उन्हें किताब में शामिल न करना ही बेहतर समझा क्योंकि वे बहुत विचलित करने वाले दृश्य थे। मेरे सूचना देने वाले ने मुझे बताया, 'इन तस्वीरों को देखने के बाद तीन दिनों तक मैं न खा सका और न सो सका।' बिहार से आया वह बेचारा पैंतालीस वर्षीय मुस्लिम प्रवासी, जो एक स्वतंत्र दर्जी था और सात बच्चों का पालन-पोषण करता था, एक दर्जी की दुकान पर जा रहा था जब उसकी हत्या कर दी गई। यह एक भयानक दृश्य था।
रांची निवासी 27 वर्षीय इंजीनियर मलयेश बनर्जी अपने माता-पिता की इकलौती संतान थे। कुछ ही दिनों बाद, 6 दिसंबर को उनकी शादी होने वाली थी। उनकी प्रेमिका से उनका सात साल का प्रेम संबंध था। उसी दिन, वह कुछ दोस्तों के साथ भोजन कर रहे थे, तभी उन पर गोली चला दी गई। उनके मित्र गौरव जैन भी उनके साथ मारे गए। सहकर्मी केतन पारेख ने कहा कि यह बहुत दुखद है कि मलयेश को कार्यालय से निकलने के बीस मिनट के भीतर ही गोली मार दी गई। उनके माता-पिता का दिल टूट गया था। शोकग्रस्त पिता अपने बेटे की चिता को अग्नि देने में

असमर्थ थे, इसलिए अंततः उनके चाचा ने उनकी जगह ली और अंतिम संस्कार संपन्न कराया। उनकी मंगेतर सदमे में बताई जा रही हैं।
एक अन्य होने वाले दूल्हे, काज़ी हिदायतुल्लाह, जो लियोपोल्ड में वेटर का काम करते थे, भी 15 दिसंबर को अपनी शादी का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। संभवतः उनकी सर्विंग ट्रे ही सड़क पर गिर गई जब वे गिरे।
पीरपाशा महबूब शेख तीस साल पहले कर्नाटक के गुलबर्गा जिले से मुंबई आए थे। उन्हें लियोपोल्ड कैफे में नौकरी मिल गई और तब से वे वहीं काम कर रहे थे। उनकी भी गोली मारकर हत्या कर दी गई। वे अपने पीछे पांच बच्चे और एक आश्रित मां छोड़ गए हैं। उनके एक बच्चे ने दुख और गुस्से से कहा, 'हम हिंदुओं के साथ रहते हैं। कुरान में यह कहीं नहीं लिखा है कि इस्लाम के नाम पर किसको भी मार दो या औरों के मजहब को मिटा दो।' उनकी विधवा हुसैनीबी ने धीरे से कहा, 'अब हम क्या सोचें? जो हमारा ख्याल रखने वाला था, वह चला गया।' लियोपोल्ड कैफे में पीरपाशा लगभग 10,000 रुपये प्रति माह कमाते थे। लाखों रुपये की अनुग्रह राशि मिलने के बावजूद, वे इस बात को लेकर असमंजस में हैं कि इससे उन्हें जीवनयापन में कैसे मदद मिलेगी।
सुभाष वाघेला के परिवार की लियोपोल्ड और ताज महल होटल को जोड़ने वाली गली में कुछ दुकानें हैं; गोलियों की आवाज सुनते ही उन्होंने खुद को अपने घर में बंद कर लिया था, लेकिन दुर्भाग्य से उनके भाई सुभाष वाघेला की उस समय मौत हो गई जब वह अपनी दुकान का शटर गिराने गए थे।
ताज महल होटल में बंधक बनाए गए एक व्यक्ति के प्रत्यक्षदर्शी बयान में, लियोपोल्ड और ताज महल होटल के बीच उसके दोस्त के ड्राइवर की हत्या का जिक्र है। संभव है कि वह बेचन्द रामप्रसाद गुप्ता का जिक्र कर रहा हो, क्योंकि वही एकमात्र व्यक्ति है जिसका हुलिया उसके द्वारा दिए गए विवरण से मेल खाता है।
दिल्ली के एक कॉलेज के छात्र कुणाल ठकराल और शांतनु खन्ना लियोज़ में प्रवेश करने के तुरंत बाद गोलीबारी में घायल हो गए। ठकराल बताते हैं, “मेरे पैर में छर्रे के लगभग इक्कीस टुकड़े घुस गए और बहुत खून बह रहा था। शांतनु ने मुझे नीचे खींच लिया और बचाव के लिए हमारे सामने एक मेज खींच ली।” उनके चारों ओर शव गिर रहे थे और फिर अचानक सब कुछ रुक गया। एक पुलिसकर्मी ने ठकराल को टैक्सी में बिठाया जो उन्हें अस्पताल ले गई।

शांतनु लंगड़ाते हुए दूसरी टैक्सी तक पहुंचे और रास्ते में उन्होंने एक अजनबी से मिनरल वाटर की बोतल मांगी जो उन्हें तुरंत मिल गई। अलग-अलग अस्पतालों में उनका मुफ्त इलाज हुआ, जिससे उन्हें राहत मिली। घर लौटने पर दोनों को 50,000 रुपये का मुआवजा मिला। उस रात की घटनाओं से विचलित ठकराल कहते हैं, “मैंने इतनी अच्छाई देखी है कि मेरे लिए इससे निपटना आसान हो गया है। मेरे पास आभारी होने के लिए बहुत कुछ है। मैं बस जिंदा रहने के लिए शुक्रगुजार हूं।”
भारी तबाही के बावजूद, तीन दिन की घेराबंदी समाप्त होते ही लियोपोल्ड फिर से सक्रिय हो गया। लियोपोल्ड को रविवार, 30 नवंबर 2008 को जनता के लिए खोल दिया गया।
हालांकि, लियोपोल्ड ने कुछ बेहद मुश्किल दौर देखे। जेहानी ने बताया, 'पहले दिन पुलिस आई, लेकिन ताज होटल में जो कुछ हो रहा था, उसमें वे व्यस्त हो गए। दूसरे दिन वे आए और खून के नमूने, AK-47 की खाली गोलियां, क्षतिग्रस्त मोबाइल फोन, यहां तक कि बर्तनों के नमूने भी ले गए। फिर हमने पूरा शनिवार सफाई में ही बिताया।' उनके भाई फरहान ने बताया कि पुलिस उन्हें फोन करके कैफे खोलने के लिए कहती थी ताकि पुलिस अपनी जांच कर सके और इन अनियमित घटनाओं के कारण वे कुछ दिनों तक सो नहीं पाए। 'अब भी मुझे नींद नहीं आती। रात में मुझे वह खट-खट की आवाज सुनाई देती है।'
जब मैंने लियो के रेस्तरां का दौरा किया, तो यह 22 दिसंबर 2008 को दोपहर के दो बजे का समय था। जीवंत भोजनालय के बाहर लोग अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे, अपनी बारी के लिए कतार में खड़े थे, गोलियों से छलनी उस जगह पर भोजन करने के लिए बेचैन थे जो कोलाबा कॉजवे का 'खुशहाल स्थान' बना हुआ है।
वेटर अब भी मुस्कुराते हैं, लेकिन अब कैशियर के काउंटर पर एक टिन का डिब्बा रखा है। उस पर दो तस्वीरें हैं, ताकि जो कोई भी मारे गए दो वेटरों के परिवारों के लिए थोड़ी सी राशि दान करना चाहे, वह कर सके।
इसी बीच, एसबीआई से मृत्यु दावा प्राप्त करने वाला पहला परिवार लियोपोल्ड हमले का शिकार हुए पी.के. गोपालकृष्णन का था, जो स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के कॉर्पोरेट कार्यालय, नरीमन प्वाइंट के एजीएम थे। अधिकांश बैंकों ने आतंकी हमलों के पीड़ितों के परिवारों के लिए प्रक्रिया को सरल बना दिया था ताकि उनके दावों का शीघ्र निपटारा किया जा सके। गृह मंत्री पी. चिदंबरम ने बीमा

कंपनियों से सख्ती से अनुरोध किया था कि वे सभी आतंकी पीड़ितों को 31 दिसंबर 2008 तक भुगतान कर दें।
कुछ विचार
आतंकवादियों ने लियोपोल्ड जैसे मध्यम कीमत वाले, किफायती भोजनालय को ही निशाना क्यों बनाया? क्या लियोपोल्ड की प्रसिद्धि ही उसका निशाना बनी? अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मशहूर यह भोजनालय विदेशियों का पसंदीदा अड्डा है। इस पर हमला होना तय था और इससे मीडिया का ध्यान ज़रूर आकर्षित होता। मीडिया के भूखे आतंकवादी दुनिया को तबाह और दहला देने के लिए मशहूर जगहों की तलाश करते हैं। लियोपोल्ड उनके लिए बिल्कुल सही जगह थी।
इस दुर्भावनापूर्ण हमले का उद्देश्य भारत में पर्यटन और व्यापार जगत के भरोसे को कमज़ोर करना और भारत को आर्थिक रूप से नुकसान पहुँचाना था। इसके अलावा, चूंकि यह भोजनालय कोलाबा पुलिस स्टेशन के ठीक सामने स्थित है, इसलिए इस हमले ने पुलिस को अन्य कार्यों में व्यस्त रखने का काम किया, ठीक उसी समय जब ताज महल होटल पर मुख्य हमला शुरू होने वाला था।
एक घायल पीड़ित ने बताया कि दोनों आतंकवादी उनके बगल वाली मेज पर बैठे, वहीं खाना खाया और बिल का भुगतान भी कर दिया, फिर अचानक अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। इस रिपोर्ट को रेस्तरां के मैनेजर एरिक एंथोनी ने खारिज कर दिया, जो उस समय ड्यूटी पर थे और रेस्तरां के प्रवेश द्वार पर खड़े होकर अपना काम कर रहे थे: “वे रात 9:40 बजे आए – हमारे कैफे में सबसे व्यस्त समय होता है, और गोलीबारी शुरू कर दी, सबसे पहले उन्होंने कांच का पैनल गिरा दिया। मुझे लगा कि आसपास कोई बम धमाका हुआ है। मुझे यह समझने में थोड़ा समय लगा कि ये वही दो आदमी थे जिन्हें मैंने कुछ देर पहले कैफे के बाहर खड़े देखा था।” उन्होंने दोनों युवकों को “मजबूत और गठीले शरीर वाले, भारी बैग लिए हुए” बताया… वे तबाही मचाते हुए बेफिक्र होकर टहल रहे थे, यह किसी हॉलीवुड फिल्म जैसा था… वे हथियारों को ऐसे चला रहे थे जैसे वे खिलौने हों… और जैसे ही वे मुड़े, उन्होंने चारों ओर गोलियां बरसा दीं, जिससे आसपास खड़े लोग मारे गए…” वे कैफे के अंदर भी नहीं गए, यह सब कुछ गेट के बाहर से ही घटित हुआ।
क्या ये लोग अतिआत्मविश्वासी थे? ऐसा प्रतीत होता है कि आतंकवादियों को यह आभास कराया गया था कि वे अगले दिन पाकिस्तान वापस लौट जाएंगे और मानव बंधकों को ढाल बनाकर वे ऐसा करने में सफल हो जाएंगे।

□□□□□□□□□□, □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□

नरिमन हाउस

मैं जिस भी दिशा में उड़ूँ, वह नरक है; मैं स्वयं नरक हूँ।
– जॉन मिल्टन
नरीमन हाउस हमले की खबर सुनकर भारतीय स्तब्ध रह गए। भारत में यहूदी समुदाय बहुत छोटा है; विभाजन के समय, भारत में 28,000 यहूदी थे, जिनमें से एक गांधीजी के डॉक्टर डेविड अरुलकर थे। अब, एक अरब से अधिक भारतीयों की आबादी में केवल 15,000 यहूदी बचे हैं, जिनमें से मात्र 4,000-5,000 मुंबई में रहते हैं। अन्य समुदायों की संख्या में वृद्धि हुई है, जबकि यहूदी समुदाय की संख्या घट गई है। चूंकि भारतीय संविधान भी यहूदी समुदाय को अल्पसंख्यक के रूप में मान्यता नहीं देता है, इसलिए अधिकांश भारतीय यहूदियों में इज़राइल में प्रवास करने की इच्छा दिखाई देती है। यह समुदाय हाशिए पर रहता है और अल्पसंख्यक अधिकारों से संबंधित संसदीय बहसों में कभी भी शामिल नहीं होता है। 26/11 से पहले, भारत में यहूदियों पर कोई हमला नहीं हुआ था। वे अपने त्योहारों और परंपराओं को शांतिपूर्वक, बिना किसी शोर-शराबे के मनाते हैं।
भारतीय, जिनमें भारतीय मुसलमान भी शामिल हैं, इन्हें बिना किसी आपत्ति के स्वीकार करते हैं।
मैं जिन इकलौते भारतीय यहूदियों को अच्छी तरह जानता था, वे कवि निस्सिम इजेकील थे, जो मुंबई विश्वविद्यालय में एम.ए. की कक्षाओं में हमें व्याख्यान देते थे। वे अपनी पतलून के ऊपर रंगीन और लंबे भारतीय कुर्ते पहनते थे, उनकी आवाज़ मधुर और लगभग संगीतमय होती थी, और वे अक्सर आत्म-व्यंग्य करते थे। वे अक्सर नीरस विषयों में भी अपने व्यंग्यात्मक टिप्पणियों से जान डाल देते थे। इजेकील के यहूदी समुदाय के लोग न तो सड़कों पर विरोध प्रदर्शन करते हैं और न ही रोजगार या शिक्षा के लिए किसी विशेष सहायता की मांग करते हैं। संक्षेप में, भारतीय यहूदियों का व्यवहार अनुकरणीय है।
नरिमन हाउस की इमारत कोलाबा के भीड़भाड़ वाले और बदनाम इलाके में स्थित है; गली इतनी संकरी है कि वहां से गाड़ियां नहीं गुजर सकतीं; इसके बाहर की

सड़क ज्यादातर मजदूरों, चपरासियों, छोटे-मोटे कारखाने के कामगारों, स्कूल की वर्दी पहने घर लौटते बच्चों या साधारण कर्मचारियों से भरी रहती है जो किसी तरह अपना गुजारा चला रहे हैं। केंद्र के ठीक सामने एक हेयर कटिंग सैलून है जिसमें दो लाल रंग के सार्वजनिक फोन लगे हैं (यह सैलून एक खुले पीसीओ के रूप में भी काम करता है); ठीक उसके सामने चौबीसों घंटे खुली रहने वाली रेक्स बेकरी है, जिसकी चिमनी से धुआं निकलता रहता है। हालांकि, इमारत के पीछे का इलाका काफी साफ-सुथरा और मध्यमवर्गीय है; इमारतों का वातावरण बेहतर है और ज्यादातर यहां विभिन्न समुदायों के लोग रहते हैं, जिनमें व्यापारी और सेवानिवृत्त नागरिक शामिल हैं। यहां सभी धर्म बिना किसी भेदभाव के सह-अस्तित्व में हैं, सिख, हिंदू, पारसी, मुस्लिम और ईसाई पड़ोसी हैं।
इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि 26/11 के आतंकी हमलों से पहले, इन निवासियों में से लगभग किसी को भी अपने घरों के इतने करीब एक यहूदी केंद्र के अस्तित्व के बारे में पता भी नहीं था।
पिछले पांच वर्षों से, नरिमन हाउस में रूढ़िवादी यहूदियों के लिए चाबाद-लुबाविच केंद्र स्थित है। इससे पहले, यह खंबाटा परिवार की एक जर्जर इमारत थी, जो पारसी धर्मावलंबी हैं। इस्राइलियों ने उनके साथ समझौता किया और इमारत का पुनर्निर्माण करके उसे आधुनिक रूप दिया, जिसके बाद उन्होंने मुंबई में पहले चाबाद केंद्र का उद्घाटन किया। पांच मंजिला नरिमन हाउस में प्रत्येक मंजिल पर 1,200 वर्ग फुट का फ्लैट है। पूरी भूतल पार्किंग के लिए है, पहली और दूसरी मंजिल पर रसोईघर, नौकरों के क्वार्टर और भंडारगृह आदि हैं। तीसरी मंजिल पर रब्बी और उनका परिवार रहता है। चौथी और पांचवीं मंजिलें केवल यहूदी पर्यटकों के लिए अतिथि गृह के रूप में उपयोग की जाती थीं।
2003 में, चौबीस वर्षीय रब्बी गैब्रियल होल्ट्ज़बर्ग भारत आए और इस चाबाद हाउस के पहले प्रमुख बने। होल्ट्ज़बर्ग परिवार यहाँ बस गया, सभी यहूदी प्रार्थनाओं, त्योहारों और परंपराओं का पालन किया, आस-पास के लोगों से दोस्ती की और अपने मेहमानों का स्वागत किया, जो अक्सर बैकपैकिंग करने वाले यहूदी छात्र होते थे, जिन्हें घर से दूर एक ऐसा घर पाकर राहत मिली जहाँ उन्हें कोषेर भोजन मिलने का आश्वासन दिया जा सकता था।

लगभग 26 नवंबर को, होल्ट्ज़बर्ग परिवार ने चिकन और अन्य खाद्य पदार्थों के दो क्रेट मंगवाए थे। उनका छोटा बेटा मोशे शनिवार, 30 नवंबर को दो साल का हो रहा था, उसके लिए जन्मदिन की पार्टी की योजना बनाई गई थी। इसके अलावा, होल्ट्ज़बर्ग परिवार सोमवार, 2 दिसंबर को भारत से जा रहा था, इसलिए संभव है कि वे अपनी अनुपस्थिति में सेंटर में पर्याप्त सामान छोड़कर जाना चाहते थे। 26 तारीख को, जब रात 9:40 बजे हमला शुरू हुआ, तब होल्ट्ज़बर्ग परिवार सेंटर में मेहमानों के साथ डिनर कर रहा था।
26 नवंबर 2008 की रात 9:40 बजे से 28 नवंबर 2008 की रात 9:00 बजे के बीच, चाबाद हाउस एक धार्मिक संस्था से, जहाँ पवित्र प्रार्थनाएँ की जाती थीं, क्रूर हत्यारों के आतंक का अड्डा बन गया। 26 नवंबर से, कोलाबा के बदनाम इलाके में स्थित यह साधारण और गुमनाम इमारत दुनिया भर के लोगों के सदमे और आक्रोश का केंद्र बन गई।
नन्हा मोशे अपना दूसरा जन्मदिन अपने माता-पिता के साथ नहीं मना पाएगा। नरिमन हाउस और उसके आसपास कुल हताहतों की संख्या – 10
चाबाद-लुबाविच केंद्र और उसके आसपास दस लोग मारे गए। इनमें से तीन की मौत नरिमन हाउस के पास हुई, जबकि सात की मौत इमारत के अंदर हुई।
इमारत के अंदर गोली मारकर मारे गए सात लोगों में से छह विदेशी यहूदी थे, सातवां पीड़ित एनएसजी कमांडो था:
1. Havildar Gajendra Singh Bisht, 36, NSG Defence forces
2. रब्बी गेवरियल होल्त्ज़बर्ग, 29, यूएस/इज़राइली पासपोर्ट
3. रब्बी बेंटज़ियन क्रोमिन, 28 वर्ष, अमेरिकी/इजरायली पासपोर्ट धारक
4. रब्बी लेबिश टिटेलबाम, 37 वर्ष, अमेरिकी/इजरायली पासपोर्ट धारक
5. रिवका होचलिट्ज़बर्ग, 28 वर्ष, इज़राइली पासपोर्ट धारक
6. योचेवेद ओरपाज़, 62 वर्ष, इज़राइली पासपोर्ट धारक
7. नोर्मा राबिनोविच, 50 वर्ष, मैक्सिकन पासपोर्ट

3

इस हमले के परिणामस्वरूप आसपास के इलाके में जिन तीन लोगों की जान गई, वे ये थे:
8. Harishbhai Gohil, 35, Indian, Colaba resident
9. सलीम अली हरहरवाला, 62, भारतीय, कोलाबा निवासी
10. महज़बीन सलीम हरहरवाला, 57, भारतीय, कोलाबा निवासी।

भारत के राष्ट्रपति द्वारा हवलदार गजेंद्र सिंह बिष्ट को अशोक चक्र से सम्मानित किया गया। सरकार द्वारा जारी बयान में सैनिक के वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन किया गया है।
4073611 हवलदार गजेंद्र सिंह पैराशूट रेजिमेंट/51 स्पेशल एक्शन ग्रुप (मरणोपरांत) 27 नवंबर 2008 की रात को, हवलदार गजेंद्र सिंह मुंबई के नरीमन हाउस में आतंकवादियों से बंधकों को छुड़ाने के अभियान में अपनी टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। ऊपरी मंजिल को खाली कराने के बाद, वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ आतंकवादियों ने घात लगा रखी थी। जैसे ही वे करीब पहुँचे, आतंकवादियों ने उन पर ग्रेनेड फेंका जिससे वे घायल हो गए। फिर भी, उन्होंने शत्रुतापूर्ण गोलीबारी के बीच खुद को खतरे में डालकर लगातार गोलीबारी जारी रखी और आतंकवादियों की ओर बढ़ते रहे। इस दौरान, उन्होंने एक आतंकवादी को घायल कर दिया और दूसरे को एक कमरे में पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। वे अपनी चोटों के कारण शहीद होने तक मुठभेड़ में डटे रहे। हवलदार गजेंद्र सिंह ने घोर विपरीत परिस्थितियों में असाधारण साहस का प्रदर्शन किया और आतंकवादियों से लड़ते हुए राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। तीन दिनों के दौरान चलाए गए सभी अभियानों में नरिमन हाउस ऑपरेशन सबसे पेचीदा था, क्योंकि इमारत में केवल एक ही प्रवेश द्वार था जिसकी सुरक्षा आतंकवादियों द्वारा की जा रही थी, जिससे निर्दोष लोगों की जान को नुकसान पहुंचाए बिना इमारत में प्रवेश करना लगभग असंभव था; इसलिए हवाई मार्ग से बम गिराना आवश्यक हो गया। दुर्भाग्य से, बुद्धिमान और कुशल गजेंद्र सिंह ने इस ऑपरेशन के दौरान अपनी जान गंवा दी।
अखबारों, टेलीविजन चैनलों और इंटरनेट पर आतंकवादियों की क्रूरता की कई तस्वीरें और रिपोर्ट प्रकाशित हुईं; कुछ रिपोर्टों में बताया गया कि पीड़ितों को मारे जाने से पहले यौन रूप से अपमानित किया गया था। जांच दल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, 'नरिमन हाउस में रब्बी और उनकी पत्नी के साथ भी यौन उत्पीड़न किया गया और उनके जननांगों को क्षत-विक्षत कर दिया गया।' उनके अपमान और दुर्व्यवहार ने केंद्र में मौजूद आतंकवादियों की क्रूर प्रकृति को स्पष्ट रूप से दर्शाया। इसके अलावा, ब्रिटेन के स्काई न्यूज को इजरायल की अति-रूढ़िवादी पुनर्वास सेवा ज़ाका के अध्यक्ष ने बताया कि शिशु मोशे को भी पीटा गया था क्योंकि उसकी पीठ पर गहरे घाव थे।

मुंबई हमला उदारवादी दुनिया पर एक व्यापक हमला था, जिसके मुख्य निशाने भारत, अमेरिका, ब्रिटेन और इज़राइल थे। इज़राइली पीड़ितों के साथ हुई क्रूरता यहूदी लोगों के लिए एक स्पष्ट संदेश है कि इस्लामी कट्टरपंथी उन्हें दुनिया में कहीं भी ढूंढें, उनका शिकार करेंगे, उन्हें अपमानित करेंगे और मार डालेंगे। इतनी छोटी, साधारण सी इमारत को हुआ भारी नुकसान कोई संयोग नहीं था, बल्कि यह उस गुप्त योजना का हिस्सा था जिसे हमले से कम से कम एक साल पहले रचा गया था। इज़राइली रक्षा मंत्री की टिप्पणी बिल्कुल सटीक थी - यह इज़राइल राज्य के खिलाफ एक 'शत्रु कार्रवाई' थी।
कई मायनों में, नरीमन हाउस पर हमला अतीत की घटना की याद दिलाता है। सन् 1975 में, आठ बम और गोला-बारूद से लैस आतंकवादी मिस्र से समुद्र के रास्ते लेबनान के लिए रवाना हुए, जहाँ वे जहाज से उतरकर रबर की नावों में सवार होकर तेल अवीव पहुँचे। वहाँ उन्होंने होटल सेवॉय पर हमला किया और लोगों को बंधक बना लिया। छह घंटे तक चली गोलीबारी में आठ बंधक और सभी आठ आतंकवादी मारे गए। इसी तरह, 26 नवंबर 2008 को मुंबई हमलों में, कम से कम दस आतंकवादी पाकिस्तान के कराची के अजीजाबाद से अल-फौज नामक एक नाव में सवार होकर निकले। बाद में, वे अल-हुसैनी नामक नाव में सवार हुए, फिर उन्होंने एक भारतीय मछली पकड़ने वाली नाव, कुबेर का अपहरण कर लिया, और अंत में, मुंबई के पास पहुँचकर, वे एक रबर की नाव में सवार हो गए और 26 नवंबर 2008 की रात 8:30 बजे मुंबई के बडवार पार्क इलाके में पहुँचे।
रिपोर्ट्स के मुताबिक, नरीमन हाउस के दो आतंकवादी, बाबर इमरान और नासिर, रात 9:50 बजे पैदल चलकर यहूदी केंद्र पहुंचे। उनके पहुंचने में देरी हैरान करने वाली है क्योंकि आराम से टहलने में भी नरीमन हाउस तक पहुंचने में दस मिनट से ज्यादा समय नहीं लगता; फिर दो सख्त प्रशिक्षण प्राप्त आतंकवादी एक घंटे बीस मिनट बाद वहां क्यों पहुंचे?
अपने इकबालिया बयान में कसाब ने पुलिस को बताया कि अलग होने से ठीक पहले, नेता इस्माइल खान ने नरीमन हाउस के आतंकवादियों को इस बात पर जोर दिया था कि यहूदी केंद्र पर उनका मिशन अत्यंत महत्वपूर्ण है, किसी भी परिस्थिति में उन्हें जरा सी भी चूक नहीं होने देनी है। इसकी पुष्टि फहीम अंसारी (उत्तर प्रदेश में पहले हुए एक हमले में गिरफ्तार लश्कर-ए-तैबा का एक अन्य आतंकवादी) ने भी की, जिसने स्वीकार किया कि उसने खुद मुंबई के नरीमन हाउस की रेकी की थी। नवंबर में हुए हमले के तुरंत बाद, भारतीय खुफिया एजेंसियों

ने स्वीकार किया कि उन्हें चार महीने पहले ताज होटल, ट्राइडेंट होटल, जे.डब्ल्यू. मैरियट होटल और लियोपोल्ड कैफे पर समुद्री मार्ग से संभावित हमले की सूचना मिली थी। हालांकि, उन्हें भी नरीमन हाउस पर हमले की जानकारी नहीं थी। फहीम अंसारी की तरह, उनके मुखबिरों ने भी पुलिस की कड़ी पूछताछ के बावजूद यह जानकारी छिपाकर रखी होगी।
हालांकि, यह काफी हद तक संभव है कि इस्माइल खान और इमरान बाबर दोनों संयुक्त रूप से मुंबई आतंकी मिशन का नेतृत्व कर रहे थे। अभिषेक शरण की 1 दिसंबर 2008 की रिपोर्ट से भी पता चलता है कि इमरान बाबर ही अन्य आतंकवादियों को निर्देश दे रहा था, 'हथौड़े के गोले फेंको!', 'कमांडो को धीमा करने के लिए कमरे में आग लगा दो!', 'अपनी गोलीबारी वहीं केंद्रित करो!' यहां तक कि एक सूचना एवं रक्षा अधिकारी ने भी कहा, 'यह संदिग्ध, जो घर में एक अन्य साथी के साथ मारा गया... फिदायीन टीम का नेता था... इस व्यक्ति ने एनएसजी, मरीन कमांडो और बंधकों के खिलाफ सामरिक युद्धाभ्यास और सशस्त्र कार्रवाई में आठ साथियों का नेतृत्व किया... यही वह व्यक्ति था जिसने कमांडो टीमों के खिलाफ अपने आदमियों द्वारा अपनाए जाने वाले आक्रामक और रक्षात्मक उपायों पर निर्देश जारी किए थे।'
सवाल अब भी बना हुआ है – जब होल्ट्ज़बर्ग परिवार ने केंद्र में इतनी खामोशी बरती थी, तो इस यहूदी केंद्र के बारे में खबर भारत से पाकिस्तान तक कैसे पहुंची? कुछ लोग दबी आवाज़ में कहते हैं कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि यह केंद्र इजरायली खुफिया एजेंसी का अड्डा था, जबकि अन्य का मानना है कि केंद्र के अस्तित्व मात्र से ही कुछ स्थानीय एसआईएमआई/लश्कर-ए-तैबा के वफादार नाराज हो गए थे, जिन्होंने तुरंत यह जानकारी पाकिस्तान को दे दी। क्या उन दस पाकिस्तानी आतंकवादियों को स्थानीय स्तर पर कोई समर्थन प्राप्त था? भारत में लगभग सभी का मानना है कि इतनी परिष्कृत और सुनियोजित कार्रवाई भारतीय जमीनी समर्थन के बिना संभव नहीं थी। यही कड़वी सच्चाई है। यदि आतंकवाद के खिलाफ इस जंग को ईमानदारी से जीतना है, तो भारतीयों से मिलने वाली स्थानीय खुफिया जानकारी, जमीनी रसद और परिचालन सहायता की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। जब तक उनके एक घंटे के लापता होने का कारण स्पष्ट नहीं हो जाता, तब तक इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि इन दोनों आतंकवादियों ने अपनी कार्रवाई शुरू करने से पहले कुछ भारतीय सह-साजिशकर्ताओं से मुलाकात की हो।

अजीबोगरीब कहानियां चल रही हैं; एक कहानी यह है कि आतंकवादियों ने भारी मात्रा में मांस खरीदा था। कोलाबा बाजार के एक निवासी ने कहा, 'नरिमन हाउस में घुसने से पहले, उन्होंने (आतंकवादियों ने) कम से कम तीन दिन तक चलने लायक पर्याप्त भोजन खरीद लिया था।' एक अन्य ने कहा, 'उन्होंने कोलाबा की दो दुकानों से लगभग दो क्रेट चिकन और 25,000 रुपये की शराब खरीदी थी।' अब, हालांकि यह बात नरिमन हाउस पहुंचने में हुई देरी का कारण बता सकती है, लेकिन यह पूरी तरह से अविश्वसनीय है। घातक युद्ध में प्रशिक्षित दो गुरिल्ला कमांडो के लिए अपने हमले शुरू करने से पहले किराने का सामान खरीदने के लिए रुकना सरासर मूर्खता या हद से ज्यादा आत्मविश्वास होगा। क्या हम सच में यह मान लें कि सुरक्षा बलों को रोके रखते हुए वे खाना बनाने की स्थिति में होंगे? या, क्या उन्होंने किसी यहूदी महिला को अपने लिए खाना बनाने के लिए मजबूर करने की योजना बनाई थी? यहूदियों के प्रति उनकी घृणा को देखते हुए, यह भी असंभव लगता है; यहां तक कि भारतीय हिरासत में भी, शुरुआत में, कसाब ने हिंदुओं के हाथों से खाना लेने से इनकार कर दिया था। इसके अलावा, यह सोचना हास्यास्पद है कि आतंकवादी दुश्मन के इलाके में बम फेंकते और गोलीबारी करते समय शराब का सेवन करेंगे। अपनी जान बचाने के लिए उन्हें शराब से दूर रहना चाहिए, क्योंकि उन्हें यथासंभव सतर्क और चौकस रहना आवश्यक था।
पेट्रोल स्टेशन पर उनके देर से पहुंचने का कारण भी एक रहस्य है। मैंने खुद कुछ दिनों बाद, उसी समय, जेटी से उसी रास्ते से यात्रा की; मैंने वही रास्ता लिया जो हर पैदल यात्री लेता है, यानी एक सीधा पैदल मार्ग जो बडवार पार्क को कोलाबा कॉज़वे से जोड़ता है। इस रास्ते से नरीमन हाउस भी सीधे दिखाई देता है; मुझे जेटी से नरीमन हाउस तक पहुंचने में आराम से छह मिनट लगे; अगर हम उन दोनों को कुछ मिनट का अतिरिक्त समय भी दे दें, क्योंकि वे शायद अतिरिक्त सावधानी बरत रहे थे और उनके पास हथियार थे, तो भी उन्हें पंद्रह मिनट से अधिक समय नहीं लग सकता था। उनकी इतनी देर तक अनुपस्थिति का क्या कारण हो सकता है? क्या वे कहीं भोजन के लिए रुके थे, या किसी से मिलने गए थे, ताकि अपने मिशन के लिए कुछ ज़रूरी सामान ले सकें? क्या वे रास्ता भटक गए थे? कई विवरणों के अनुसार, ऐसा लगता है कि वे नरीमन हाउस से पूरी तरह परिचित थे, इसलिए यह संभावना कम है; इस बात की प्रबल संभावना है कि वे पहले चाबाद सेंटर में रुके थे। पुलिस इसकी भी जांच कर रही है। मुंबई पुलिस से

मिली जानकारी के अनुसार, जिसने लश्कर-ए-तैबा के स्लीपर सेल के पांच सदस्यों की जांच की थी, नवंबर में हुए ऑपरेशन से पहले 2008 में छह लोग आए थे। यह भी संदेह है कि बाबर इमरान और अबू उमर दोनों इन्हीं छह लोगों में शामिल थे।
राम यादव नरीमन हाउस के बाहर स्थित 'एक्सप्रेस पेट्रोलियम' पेट्रोल पंप पर ड्यूटी पर थे। पेट्रोल भरवाने के लिए गाड़ियों की लंबी लाइन लगी हुई थी, इसलिए स्टेशन के कर्मचारियों ने आसपास हो रही घटनाओं पर ध्यान नहीं दिया। इमरान बाबर और नासिर नाम के ये दोनों लोग स्टेशन पर खड़ी कुछ गाड़ियों के पीछे छिपकर गए और वहां बम रख दिया। फिर वे नरीमन हाउस की ओर बढ़ गए। उसी पट्टी पर स्थित लियोपोल्ड पेट्रोल पंप के मैनेजर ने पहला धमाका सुनकर कर्मचारियों को घर जाने को कहा और खुद को मुख्य कार्यालय में बंद कर लिया। वे बताते हैं,
मैंने पर्दे खींच दिए और मजबूत स्टील की मेज के पीछे छिप गया। मुझे बस यही आभास हो रहा था कि अभी और भी बुरा होना बाकी है। और मैं गलत नहीं था। रात करीब 10.45 बजे, मेरे छिपने के लगभग आधे घंटे बाद, एक जोरदार धमाका हुआ। धमाका इतना ज़ोरदार था कि मैं पीठ के बल गिर पड़ा। धमाके के प्रभाव से मेज का धातु का ढांचा टेढ़ा-मेढ़ा हो गया। दफ्तर की खिड़की चकनाचूर हो गई। पर्दों ने कांच के टुकड़ों को दफ्तर में वापस उड़ने से रोक दिया, वरना मैं बुरी तरह घायल हो जाता। पेट्रोल स्टेशन को ढकने वाली छत का कुछ भी नहीं बचा था। दूर खड़ी लगभग पाँच कारों का भी कुछ नहीं बचा था। दरअसल, परिसर की दीवार का भी कुछ नहीं बचा था। आग लगने के डर से मैं तुरंत बाहर भागा। कोलाबा की मुख्य सड़क पर कई लोग इधर-उधर भाग रहे थे।
उनका मकसद नरिमन हाउस के सुरक्षा गार्ड का ध्यान भटकाकर उसे ड्यूटी से हटाना था ताकि वे आसानी से नरिमन हाउस में घुस सकें। सौभाग्य से पेट्रोल पंप पर रखा बम भूमिगत पेट्रोल भंडार की ओर लक्षित नहीं था और केवल पेट्रोल पंप की चारदीवारी और वहां खड़ी कुछ कारों को ही नुकसान पहुंचा पाया। आतंकवादियों का मुख्य निशाना यहूदी चाबाद केंद्र था। सौभाग्य से, विस्फोट से कुछ ही मिनट पहले सुरक्षा गार्ड चाय पीने के लिए बाहर गया था। उस चाय ने उसकी जान बचा ली।
कोलाबा में विवादित शिवसेना का दबदबा कायम रहा। रात 9:30 बजे, दो बच्चों के पिता, 57 वर्षीय शिवसैनिक विजय सर्वे, नरीमन हाउस के ठीक सामने अपने

कार्यालय में थे। उनके साथ लगभग बीस शिवसैनिक कार्यालय में मौजूद थे। कुछ देर बाद, उन्होंने गोलियों की आवाज सुनी और इसे नौसेना द्वारा दिसंबर में होने वाले नौसेना सप्ताह की तैयारियों के दौरान किए जाने वाले अभ्यास समझकर नजरअंदाज कर दिया। लेकिन जल्द ही, उन्हें एहसास हुआ कि ऐसा नहीं था और वे बाहर भागे। उन्होंने देखा कि पेट्रोल पंप और नरीमन हाउस पर हमला हो रहा है। सर्वे ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आसपास की इमारतों से लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने में मदद की। उन्होंने घर-घर जाकर उन घरों से लोगों को निकाला जिन पर हमला हो सकता था। एडवर्ड फर्नांडीस ने कहा, 'मेरा परिवार नरीमन हाउस के ठीक बगल में स्थित घर में था और मैं अंदर नहीं जा सका। सर्वे अंदर गए और मेरी पत्नी, मां और चार महीने के बच्चे को लेकर बाहर आए।' उन्होंने इलाके को खाली कराने में भी मदद की। उन्होंने इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण काम किया, जिसे वे वर्षों से बखूबी जानते थे। एनएसजी एक उचित क्षेत्र-मानचित्र चाहती थी जिसमें कानूनी और अवैध दोनों प्रकार की संरचनाएं शामिल हों ताकि वे पूरे क्षेत्र को अच्छी तरह से कवर कर सकें। सर्वे ने मानचित्र बनाने में उनकी मदद की क्योंकि वह उस क्षेत्र को दूसरों से बेहतर जानता था, क्योंकि वह गलियों और छतों से पतंग उड़ाते हुए बड़ा हुआ था। उसे कृतज्ञता के पत्रों की बाढ़ आ गई जिसमें कहा गया था कि उनका अस्तित्व उनकी मदद और हस्तक्षेप के कारण ही कायम है। अब उन्हें विजय सर्वे के नाम से नहीं जाना जाता, बल्कि उन्हें 'कोलाबा के एनएसजी कमांडर' के रूप में जाना जाता है।
नरिमन हाउस के आसपास कई अन्य रहस्य भी हैं। पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि क्या हमले से काफी पहले, कुछ आतंकवादी मलेशियाई छात्रों के रूप में वहां मेहमान बनकर रुके थे। चूंकि यह गेस्ट हाउस केवल यहूदियों के लिए था, तो क्या इन लोगों ने वहां रहने के लिए यहूदी होने का नाटक किया था? टाइम्स ऑफ इंडिया ने रिपोर्ट किया: 'पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि नरिमन हाउस के कमरे गैर-यहूदियों को कैसे दिए गए। पुलिस ने सत्यापन के लिए सभी रिकॉर्ड बुक ले ली हैं।' अगर वे गोरे रंग के एंग्लो-सैक्सन बैकपैकर होते तो उनके लिए वहां रहना निश्चित रूप से आसान होता। इस संभावना को तब बल मिलता है जब बडवार पार्क के चश्मदीदों ने भी इन लोगों को 'गोरे रंग का' बताया। यहां तक कि आतंकवादियों से मुठभेड़ करने वाले पुलिस अधिकारी ने भी कहा, 'मैं कल रात देर से इमारत में गया, मुझे यह देखकर झटका लगा कि वे गोरे

थे।' मुझे उम्मीद थी कि वे हमारे जैसे दिखेंगे। बीबीसी ने यह भी बताया कि एक भारतीय ने उनसे कहा, 'वे भारतीय नहीं दिख रहे थे, वे विदेशियों जैसे दिख रहे थे।' मुझे लगा कि उनमें से एक के बाल सुनहरे थे। दूसरे का हेयरस्टाइल 'पंकिश' था।
नरिमन हाउस के निवासियों में से एक, 53 वर्षीय डेविड बियाल्का, सो रहे थे जब उन्होंने एक धमाके की आवाज सुनी; वे पांचवीं मंजिल पर स्थित बाथरूम की ओर भागे, बाथरूम की खिड़की से बाहर निकले और पानी के पाइपों से फिसलते हुए, एक एयर कंडीशनर से दूसरे पर कूदते हुए नीचे की मंजिल तक पहुंचे। वे वहां से बच निकलने में भाग्यशाली रहे, लेकिन क्रोधित भीड़ ने उन्हें आतंकवादी समझकर उन पर हमला कर दिया और उन्हें पुलिस स्टेशन के हवाले कर दिया। बियाल्का को सड़क पर मौजूद भीड़ ने पीटा और कोलाबा पुलिस स्टेशन ले जाया गया। पुलिस ने अपने तेजतर्रार पुलिसकर्मी विजय सालस्कर को बुलाया। विजय सालस्कर पहुंचे, उनसे लंबी पूछताछ की, इजरायली दूतावास को फोन किया, उनकी प्रामाणिकता की पुष्टि की और फिर पुलिस से बियाल्का को रिहा करने का अनुरोध किया क्योंकि वे एक वास्तविक इजरायली नागरिक थे। दुर्भाग्य से, अगले ही घंटे में, सालस्कर को कामा अस्पताल के बाहर गोली मार दी गई। हालांकि, केंद्र में हालात खराब थे। एक पुरुष और एक महिला की चीखें सुनाई दीं और इमारत के बाहर एक ग्रेनेड फेंका गया। ग्रेनेड हमले में, इलाके में रहने वाले एक भारतीय हरीशभाई गोहिल अपने एक दोस्त से बातचीत कर रहे थे तभी उनकी मौत हो गई। उनके दोस्त को जांघ में गोली लगी और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया।
भाग्य के एक दुखद मोड़ में, फरीदून कोर्ट के निवासी एक बुजुर्ग मुस्लिम दंपति, श्री और श्रीमती हरहरवाला को उनके बेटे ने सड़क के पार कोलाबा कोर्ट में एक खाली फ्लैट में स्थानांतरित कर दिया; हालांकि यह इमारत नरीमन हाउस से अधिक दूरी पर थी, दुर्भाग्य से, यह दृश्यता के बहुत करीब थी; वे चौथी मंजिल पर गए, बत्ती जलाई; आतंकवादियों ने उन्हें शीशे के माध्यम से देखा और दंपति को गोली मारकर हत्या कर दी।
इस इलाके के निवासियों ने इतना तनाव झेला कि ऑपरेशन खत्म होने के बाद, उनमें से सौ लोग आर्ट ऑफ लिविंग कोर्स में सांत्वना पाने के लिए पहुंचे। विश्राम में सहायक व्यायामों और परामर्श ने उन्हें नई ऊर्जा प्रदान की है।

ज़ाकिर, एक मुस्लिम युवक, जो चाबाद हाउस में होल्ट्ज़बर्ग परिवार का कर्मचारी भी था, और चौवालीस वर्षीय सैंड्रा, दोनों आतंकवादियों के पास पहुँच गए। ज़ाकिर ने कहा, 'हमने चेहरा नहीं देखा, बस बड़ी बंदूक देखी।' वे दो फ्रिज के बीच छिप गए। आतंकवादियों को लगा कि विस्फोट में दोनों मारे गए हैं।
चौवालीस वर्षीय सैंड्रा सैमुअल एक अलमारी में छिपी हुई थीं; वह पांच साल से उस केंद्र में काम कर रही थीं। अचानक, जब उन्होंने मोशे के रोने की आवाज़ सुनी, तो वह ऊपर गईं और बच्चे को उसके माता-पिता के शवों के पास पाया। उन्होंने कहा, 'मेरा पहला ख्याल हमेशा बच्चे के बारे में ही था... आज भी मैं सोचती हूँ कि मुझे बच्चे को भेज देना चाहिए था और रब्बी और उनकी पत्नी के लिए कुछ करना चाहिए था...' मोशे को देखते ही उन्होंने उसे पकड़ा और नीचे भागकर इमारत से बाहर निकल गईं। उन्होंने आगे कहा, 'मुझे इसके बुरे सपने आते हैं। मैं फ्रिज और फ्रिज के पास काम करने वाले एक अन्य कर्मचारी के बीच बैठी थी। हम कुछ करना चाहते थे लेकिन कुछ नहीं कर सके।'
यह रिवका का इस दुनिया में आखिरी दिन था, और रोमेल रोड्रिग्स बताते हैं, '26 नवंबर को रिवका ज़ोराबी की बेकरी में गई और उनसे कहा कि वह अगले दिन सुबह एक खास तरह की यहूदी रोटी, महेक, बनाने आएंगी ताकि वह इज़राइल से आए अपने कुछ दोस्तों को परोस सकें। वहीं, रब्बी ने कई तरह के व्यंजन बनाने के लिए करीब 100 किलो चिकन खरीदा।... जाते समय, रिवका ने मुझे एक प्यारी सी मुस्कान के साथ अलविदा कहा, जो आज भी मेरे मन में बसी हुई है,' ज़ोराबी ने आँखों में आँसू लिए कहा। वह अब कभी उस मुस्कान या चेहरे को नहीं देख पाएंगे। हमले के बाद, रिवका ने दिल्ली में एक इज़राइली अधिकारी को मदद के लिए गुहार लगाते हुए कई बार फोन किया, लेकिन मदद पहुँचने से पहले ही उनकी हत्या कर दी गई। आतंकवादियों ने पहले रिवका और योचेवेद ओरपाज़ को सुरक्षित रास्ता मिलने पर नुकसान न पहुँचाने का वादा किया था; इज़राइली भारतीय अधिकारियों से मदद नहीं ले पाए। इसके बाद आतंकवादियों ने शेष दो बंधकों को भी मार डाला।
27 नवंबर 2008 को शाम 6:59 बजे पुलिस के पास आतंकवादियों के बीच हुई बातचीत की रिकॉर्डिंग है। ऑपरेशन शुरू हुए बीस घंटे बीत चुके थे और नरीमन हाउस में मौजूद आतंकवादी थके हुए थे। इस रिकॉर्डिंग से पता चलता है कि ये दोनों बंदूकधारी पाकिस्तान में बैठे अपने आकाओं पर पूरी तरह निर्भर थे।

उस समय तक एनएसजी कमांडो ने नरीमन हाउस को घेर लिया था, फिर भी ये दोनों हर कदम पर पांच साल के बच्चों की तरह व्यवहार कर रहे थे और हर बात के लिए अनुमति मांग रहे थे।
तीसरे खंड के एक अलग अध्याय में इन बातचीत के चौदह प्रतिलेख दिए गए हैं, जो बंधकों को अमानवीय और व्यक्तित्वहीन बनाने के सचेत प्रयास को उजागर करते हैं। आतंकवादी और उनके संचालक बंधकों का जिक्र करते समय उनके नाम या सर्वनाम का भी प्रयोग करने से बचते हैं। यह स्पष्ट संकेत है कि बंधकों को कभी भी जीवित नहीं रहने दिया जाएगा।
इस ऑपरेशन की बेरहमी और निर्ममता दोनों के बीच हुई एक बेहद स्पष्ट बातचीत में सामने आती है, जिसमें हैंडलर इमरान बाबर को दूसरे कमरे में बंधे हुए बाकी दो बंधकों को मारने के तरीके के बारे में विस्तृत लेकिन भयावह निर्देश देता है।
निर्देशकर्ता ने उन्हें दूसरे कमरे में जाने, एक महिला को जगाने, उसके बंधन खोलने, उसे खड़ा करने और उसके सिर में गोली मारने का निर्देश दिया। निर्देश यह था कि महिला को खिड़की के पास इस तरह खड़ा किया जाए कि गोली सीधे उसके सिर से होकर दूसरी तरफ से निकल जाए और नरिमन हाउस से बाहर चली जाए। पाकिस्तान के निर्देशकर्ता ने कहा, 'पिस्तौल को उसके सिर के पीछे रखो और दीवार से दूर खड़े हो जाओ ताकि गोली टकराकर तुम्हें न लगे।' इमरान असमंजस में था (यह जानते हुए कि बंधक की जान ही उसकी अपनी जान है), लेकिन उसे दृढ़ता से कहा गया, 'उसे अभी मार डालो।' आश्चर्य होता है कि जब उन्हें केवल एक को मारने के लिए कहा गया था, तो उन्होंने दोनों को क्यों मार डाला। और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या किसी बंधक को जगाकर मारना, जबकि उसे सोते समय मारना कहीं अधिक आसान था, एक क्रूर आनंद के अलावा और कुछ हो सकता है? यह वह आनंद है जो आतंक फैलाने से उन लोगों को मिलता है जो खुद को ईश्वर-प्रेमी समझते हैं। वास्तव में, यह शुद्ध बुराई है।
पचास वर्षीय मैक्सिकन यहूदी महिला, नोर्मा श्वार्ट्ज़ब्लाट राबिनोविच को भी इजरायली अधिकारियों को फोन करके भारतीय सेना को नरीमन हाउस पर हमला न करने का आदेश देने के लिए कहा गया था। बताया जाता है कि मारे जाने से पहले उन्होंने कहा था, 'उन्होंने सबको गोली मार दी है।' यह स्पष्ट है कि वह केंद्र में मारी जाने वाली अंतिम बंधक थीं।

बाद में इजरायली शव परीक्षणकर्ताओं ने खुलासा किया कि ओर्पाज़, टिटेलबाम और क्रोमन की हत्या संभवतः आतंकवादियों ने पहली ही रात को कर दी थी, क्योंकि उनके शव बहुत अधिक सड़ चुके थे।
आतंकवादियों के लिए हालात बद से बदतर होते चले गए, जब तक कि एनएसजी ने उन्हें मार गिराया।
आतंकवादियों ने कुल मिलाकर दो बम धमाके किए। एक बम एक्सप्रेस पेट्रोल स्टेशन के पास बाहर फटा, और दूसरा बम नरिमन हाउस के परिसर में फटा। प्रवेश द्वार पर बिखरा मलबा विस्फोट का प्रमाण है, जैसा कि फरवरी 2009 में ली गई मेरी तस्वीरों में दिखता है।
नरीमन हाउस में आतंकवादियों की मानसिकता को समझने के लिए, इमरान की इंडिया टीवी के साथ हुई निर्मम टेलीफोन बातचीत को सुनना होगा, जो http://in.youtube.com/watch?r=CJwiZSPMBU&feature=related पर उपलब्ध है। वह शांत और निर्भीक लग रहा था; हालांकि, चौबीस घंटे से भी कम समय में, स्थिति बदल गई, वह सब कुछ दांव पर लगाने को तैयार था, और उसने पाकिस्तानी हैंडलर से यह भी पूछा कि क्या उसे आत्मसमर्पण कर देना चाहिए। शायद इसी समय प्रेस ने बाहर उसका सफेद रुमाल देखा। इंडिया टीवी के वरिष्ठ संवाददाता मनीष प्रसाद ने कहा, 'हमने किसी को सफेद रुमाल लहराते देखा। इससे पहले कि हम कुछ समझ पाते, वे हम पर गोलियां चला रहे थे।' पाकिस्तान को भेजे गए ट्रांसक्रिप्ट से पता चलता है कि सफेद रुमाल लहराने के बाद गोलियां क्यों चलीं; उसे कहफा ने कहा था कि डटे रहो: 'भाई, तुम्हें लड़ना होगा। यह इस्लाम की प्रतिष्ठा का सवाल है।' एनएसजी कमांडो की निकटता से घबराकर इमरान हार मानने ही वाला था, तभी कहफा ने कुरान की आयतों से उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। 'लड़ो ताकि तुम्हारी लड़ाई एक मिसाल बन जाए।'
एक रिपोर्ट के अनुसार, नरीमन हाउस के दोनों आतंकवादियों को उनके संरक्षकों द्वारा घर वापसी की गारंटी दी गई थी। एक अपराध शाखा अधिकारी ने बताया, 'पाकिस्तान में उनके संरक्षकों ने उनसे कहा था कि अगर वे यहूदियों को बंधक बनाते हैं, तो दुनिया भर का यहूदी समुदाय भारत पर बातचीत के लिए दबाव डालेगा। वे बातचीत के जरिए भारत से बाहर निकल सकते हैं।'
सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन गुप्त सूचनाओं ने एनएसजी को आतंकवादियों को घेरने में मदद की। उनके द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे सैट फोन और उनके कब्जे में मौजूद जीएसएम मोबाइल फोन निगरानी में थे, जिससे उन्हें

वास्तविक समय में उनकी गतिविधियों की जानकारी मिलती थी। खुफिया एजेंसियों ने उनकी बातचीत सुनी और यह जानकारी एनएसजी और स्थानीय पुलिस को दी। परिणामस्वरूप, पुलिस आतंकवादियों से एक कदम आगे रही। वास्तव में, यह अपनी तरह का पहला ऑपरेशन है जिसमें दुश्मन की योजनाओं की जानकारी वास्तविक समय में मिली। करकरे की मृत्यु के बाद, 'आतंकवादियों को उनके आकाओं द्वारा दी गई हर एक जानकारी सुनी गई और उस पर कार्रवाई की गई।'
1 दिसंबर 2008 की शाम को, काला घोड़ा सिनेगॉग में एक समारोह के बाद, आठ मृत यहूदी विदेशियों (दो यहूदी पीड़ितों की मौत अन्य स्थानों पर हुई थी) को एक विशेष इजरायली वायु सेना के विमान से मुंबई से रवाना किया गया। हमले में बचे यहूदी लोग पुलिस की अनुमति से केंद्र लौट आए थे ताकि वे अपना सामान इकट्ठा कर सकें और अपनी यहूदी परंपराओं के अनुसार घर की पूरी तरह से सफाई कर सकें। इसके अलावा, इजरायली सरकार के अनुरोध का सम्मान करते हुए, भारतीय सरकार ने आठों लोगों में से किसी का भी पोस्टमार्टम नहीं किया, क्योंकि उनकी परंपरा में पोस्टमार्टम की अनुमति नहीं है।
इस बीच, यहूदी समुदाय ने चाबाद केंद्र को उसी स्थान पर फिर से बनाने का संकल्प लिया और इसके लिए उन्होंने तीन दिन की घेराबंदी समाप्त होते ही चाबाद ऑफ मुंबई रिलीफ फंड की स्थापना की। 1 दिसंबर 2008 तक उनकी वेबसाइट पर 10 लाख डॉलर से अधिक का दान प्राप्त हो चुका था। रब्बी गैब्रियल के माता-पिता और भाई फरवरी में दो सप्ताह के लिए मुंबई आए थे और चाबाद हाउस के पुनर्निर्माण के लिए भारतीयों से दान मांग रहे थे। रब्बी ने कहा, 'हमारे अनुमान के अनुसार, इसे बेहतर सुरक्षा के साथ फिर से शुरू करने के लिए हमें कम से कम 20 लाख डॉलर (लगभग 10 करोड़ रुपये) की आवश्यकता होगी।' हालांकि, रब्बी गैब्रियल के भाई, जिनका नाम भी उनके भतीजे की तरह मोशे है, ने भारतीय सरकार की कड़ी आलोचना की। उन्होंने शिकायत करते हुए कहा, 'अभी तक हमें किसी से कोई जवाब नहीं मिला है। भारतीय सरकार की ओर से न तो कोई माफी है, न कोई समर्थन, न कोई बयान, न कोई फोन कॉल।' हालांकि, पिता ने भारतीय व्यवसायी रश्मी मेहता के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होंने उनके बेटे और बहू के शवों को संभालने में मदद की और यह सुनिश्चित किया कि शवों का पोस्टमार्टम न किया जाए।
कुछ टिप्पणियां

निःसंदेह, नरीमन हाउस इस हमले की कुंजी है; पूरी साजिश का पर्दाफाश करने के लिए गहन जांच आवश्यक है। क्या वे पाकिस्तानी सरकार, ओसामा बिन लादेन, दाऊद इब्राहिम या तालिबान के इशारे पर काम कर रहे थे; क्या संगठन को सऊदी अरब के नागरिकों द्वारा गुप्त रूप से वित्त पोषित किया जा रहा था; क्या इसमें कुछ भारतीय समर्थक या मुख्य साजिशकर्ता शामिल थे; मुंबई में हुए इस हमले को पूरी तरह समझने के लिए इन सभी सवालों के जवाब जरूरी हैं। असली दुश्मन की पहचान करने में जितना अधिक समय लगेगा, खतरा उतना ही बढ़ता जाएगा। हालांकि नरीमन हाउस हमले में जानमाल का नुकसान कम हुआ, लेकिन यह सबसे महत्वपूर्ण हमला है।
नरीमन हाउस में एनएसजी के ऑपरेशन की मीडिया द्वारा पल-पल की लाइव रिपोर्टिंग का दुखद परिणाम हवलदार गजेंद्र सिंह की जान के रूप में सामने आया है। एनएसजी का कहना है कि मीडिया ने उनके ऑपरेशन में बाधा डाली और उन्हें इस बात पर आपत्ति है कि आतंकवादियों की नजरों से दूर गुप्त गतिविधियां भी टीवी चैनलों द्वारा कमांडो की स्थिति के दृश्यों के प्रसारण के कारण उनके आकाओं की नजरों में आ गईं। बल ऑपरेशन के लाइव प्रसारण से नाराज है। सवाल उठ रहे हैं कि हवलदार गजेंद्र सिंह वहां एक आतंकवादी की गोली का शिकार क्यों हुए। एक एनएसजी अधिकारी ने कहा, 'टीवी ने हमारे कमांडो को हेलीकॉप्टर से इमारत की छत पर उतरते हुए दिखाया। जब तक हमारे जवान उतरे और पोजीशन लेने लगे, आतंकवादी पहले से ही उनका इंतजार कर रहे थे और उन्होंने गोलीबारी शुरू कर दी।'
अपने तमाम प्रयासों के बावजूद, आतंकी हमले के साजिशकर्ता अमेरिका, इज़राइल और भारत के 26/11 के बाद के संबंधों को बिगाड़ने में नाकाम रहे हैं। बल्कि, तीनों देश और भी करीब आ गए हैं।
आतंकवादियों का मिशन संख्यात्मक दृष्टि से भी विफल रहा। उनका घोषित लक्ष्य 5,000 लोगों को मारना था, जबकि वे केवल 170 निर्दोष लोगों को गोली मारकर या जलाकर मारने में सफल रहे।
वे भारतीय हिंदुओं और भारतीय मुसलमानों को अलग करने में भी विफल रहे। कसाब की गिरफ्तारी और उसके कबूलनामे ने आखिरकार पाकिस्तान का असली चेहरा बेनकाब कर दिया है। उसके कबूलनामे से पता चलता है कि भारत में विद्यमान प्राकृतिक शांति को अक्सर पाकिस्तान द्वारा सुनियोजित हमलों के जरिए कृत्रिम रूप से नष्ट किया जाता रहा है, जिसने बड़े पैमाने पर हताश, दूरस्थ

नियंत्रण वाले इस्लामी कट्टरपंथियों को पैदा करने की कला में महारत हासिल कर ली है।
इस हमले से यह भी साबित हो गया कि इसकी उत्पत्ति न तो हिंदू थी और न ही भारतीय, क्योंकि भारतीयों ने कभी यहूदियों से नफरत नहीं की है।

ओबेरॉय-ट्राइडेंट

मैं जागता हूँ और अंधेरे का आभास महसूस करता हूँ, दिन का नहीं। क्या घंटे, ओह क्या काले घंटे हमने बिताए हैं।
– जेरार्ड मैनली हॉपकिंस
शुक्रवार, 28 नवंबर 2008 को, भारत के प्रधानमंत्री के मुंबई के ओबेरॉय-ट्राइडेंट होटल में आने की उम्मीद थी। किसी भी विशेष अतिथि के आगमन से कुछ दिन पहले होटल की कड़ी सुरक्षा जांच की जाती है। 26/11 हमलों से कुछ घंटे पहले, केंद्रीय खुफिया एजेंसी ने होटल को सुरक्षा मंजूरी दे दी थी। गृह मंत्रालय के जयंत पाटिल ने पत्रकारों को बताया, '26 नवंबर की सुबह, खुफिया एजेंसी और रॉ ने प्रधानमंत्री के 28 नवंबर को होटल दौरे के लिए सुरक्षा व्यवस्था को मंजूरी दे दी थी।'
भारतीय प्रधानमंत्री जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति के दौरे के लिए निर्धारित कड़े मानकों को पूरा करने के कुछ ही घंटों बाद, 880 कमरों वाले ओबेरॉय-ट्राइडेंट होटल पर कम से कम दो पाकिस्तानी आतंकवादियों, फहदुल्लाह (जिसके दाहिने हाथ में उंगलियां नहीं थीं, लेकिन वह एके-47 चलाने में माहिर था) और उसके साथी अबू रहमान ने हमला कर दिया। इन दोनों ने चौंतीस लोगों को गोली मार दी, कुछ लोगों को बंधक बना लिया और गोलीबारी, ग्रेनेड फेंकने और आग लगाने के दौरान होटल के कई हिस्सों को भारी नुकसान पहुंचाया।
क्या उनके साथ और भी लोग थे? इंडिया अब्रॉड न्यूज़ सर्विस ने 27 नवंबर 2008 को, ठीक अगले दिन, रिपोर्ट किया कि 'महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख ने कहा कि अगर स्थिति ऐसी हुई तो आतंकवाद विरोधी अभियान रात भर और सुबह तक जारी रहेंगे। देशमुख ने पत्रकारों को बताया कि बुधवार रात को बीस से बाईस आतंकवादियों ने हमला किया था। उनमें से सात मारे गए थे, लेकिन तेरह अभी भी अंदर छिपे हुए थे।' बाद में, इस बयान को खारिज कर दिया गया और पुलिस और सरकार ने केवल दस आतंकवादियों की संख्या बताई। क्या यह मुंबई की सड़कों पर सांप्रदायिक दंगों और रक्तपात को रोकने का प्रयास था? हालांकि, 26/11 को ओबेरॉय-ट्राइडेंट में हुए उस क्रूर और खूनी नरसंहार में कुछ सकारात्मक बातें भी सामने आई हैं।

□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□; □□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□ 450 □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□, □□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□, □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□, □□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□□□, □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□, □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□, □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ 21 □□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□, □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ **28** □□□□□ **2008** □□ □□□□□ **3** □□□ □□□□□□□ □□□□

□□□□□□□-□□□□□□□□□□: □□□ □□□□□ – 34

□□□□□□□ – 25; □□□□□□□ – 9

□□□□□□ □□□□□□ (60 □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□) – 5; □□□□□□□ (18 □□□□ □□ □□ □□□ □□) – 1;

□□□□□□□□ – 10

No.	Names	Age	Status Nationality
1.	Jasmine Kaur Bhurji	21	Reception staff, Indian
2.	Sanjay Surve	42	Lobby staff, Indian

No.	Names	Age	Status Nationality
3.	Ami V. Thakur	24	Reception staff, Indian
4.	Neeta Gaikwad	23	Systems-staff, Indian
5.	Maibam Bimolchandra	29	Housekeeping staff, Indian
6.	Jorden Fernandes	22	F&B staff, Indian
7.	Shankar Chemburkar	50	Bell Capt. staff, Indian
8.	S. S. Bhosale	25	Security staff, Indian
9.	Wilson Mandalik	27	Security staff, Indian
10.	Kanubhai Patel	76	Guest, Indian
11.	Ajit Chhabria	42	Guest, Indian
12.	Monica Chhabria	35	Guest, Indian
13.	Mohit Harjani	37	Guest, Indian
14.	Lavina Harjani	36	Guest, Indian
15.	Sunil Parekh	45	Guest, Indian
16.	Reshma Parekh	42	Guest, Indian
17.	Sanjay Agarwal	48	Guest, Indian
18.	Reeta Agarwal	42	Guest, Indian
19.	Pankaj Shah	60	Guest, Indian
20.	Uma Rathi Garg	44	Guest, Indian
21.	Ravidas V	60	Guest, Indian
22.	Ashok Kapur	57	Guest, Indian
23.	Anand S. Bhatt	60	Guest, Indian
24.	Rohinton Baji Mallu	48	Guest, Indian
25.	Farokh Dinshaw	52	Guest, Indian
26.	Naomi Scherr	13	Guest, USA
27.	Allan Scherr	58	Guest, USA
28.	Sandeep Jeswani	43	Guest, USA
29.	Mourad Amersey	49	Guest, France
30.	Loumia Hiridjee	45	Guest, France
31.	Antonio di Lorenzo	63	Guest, Italy
32.	Jina Kanmani	27	Staff, Thailand
33.	Lo Hwei Yen	28	Guest, Singapore
34.	Hisashi Tsuda	38	Guest, Japan

बडवार पार्क में दस में से आठ आतंकवादी नाव से उतर गए, जबकि पीछे रह गए आखिरी दो आतंकवादी नाव को लेकर ओबेरॉय-ट्राइडेंट होटल के सामने वाले समुद्र तट तक गए। वे किनारे पर उतरे और कुछ मिनट चलकर ट्राइडेंट होटल की लॉबी में पहुँच गए।
यहां मारे गए कई पीड़ितों को शुरुआती कुछ घंटों के दौरान गोली मारी गई थी। फहादुल्लाह और अब्दुल रहमान लगभग रात 9:40 बजे अपनी बंदूकें लहराते हुए लॉबी में दाखिल हुए, यह एक वास्तविक जीवन का दृश्य था जो किसी क्राइम फिल्म से लिया गया लग रहा था।
रिसेप्शनिस्ट जैस्मीन भुरजी और बेल कैप्टन शंकर चेम्बुरकर की मौत हो गई, साथ ही दो संविदा सुरक्षाकर्मी एस.एस. भोसले और विल्सन मंडलिक भी मारे गए। इन होटलों में तीन बम धमाके हुए। एक बम ट्राइडेंट होटल की लॉबी में रखा था; जब पुलिस पहुंची, तो उन्हें लावारिस बैग दिखाया गया; पुलिस कांस्टेबल ने बैग उठाया, उसे लेकर होटल से बाहर भागा और पास के फूलों की क्यारी में फेंक दिया, जहां वह फट गया। दूसरा बम ओबेरॉय होटल के टिफिन रेस्टोरेंट में मिला; तीसरा बम ट्राइडेंट होटल की पांचवीं मंजिल पर फटा।
तीस वर्षीय मैबम बिमोलचंद्र मणिपुर के इम्फाल निवासी थे; होटल की लॉबी में ही तीन गोलियां उनके शरीर को भेद गईं। मरने से कुछ दिन पहले ही उन्होंने अपने माता-पिता से बात की थी। उनके व्याकुल पिता ने बताया कि उनके बेटे ने कभी मुंबई में काम करने की इच्छा नहीं जताई थी और वास्तव में, उसने उनसे वादा किया था कि वह उनके लिए घर बनवाएगा; लेकिन अब सब कुछ खत्म हो गया। उनके अंतिम संस्कार में सैकड़ों लोग पारंपरिक पोशाक में शामिल हुए; बिमोलचंद्र कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे, वे राष्ट्रीय हैंडबॉल चैंपियन रह चुके थे और उन्होंने अक्सर राष्ट्रीय चैंपियनशिप में मणिपुर का प्रतिनिधित्व किया था।
दो बच्चों के पिता, जापानी नागरिक हिसाशी त्सुडा, मुंबई में व्यावसायिक यात्रा पर थे। साउथ वेल्स के एलन जोन्स समेत तीन अन्य लोगों के साथ लिफ्ट में मौजूद त्सुडा दुर्भाग्यवश गोली का शिकार हो गए। जोन्स ने बीबीसी को बताया, “हम लिफ्ट से लॉबी तक गए और दरवाजा खुलते ही धमाकों की आवाज सुनी। लिफ्ट में मौजूद चार लोगों में से एक जापानी व्यक्ति को उसी क्षण गोली लगी और वह घायल हो गया।” घायल व्यक्ति का शरीर लिफ्ट के दरवाजों में फंस गया था। जोन्स ने कहा, “मैंने घबराकर ‘दरवाजा बंद करो’ बटन दबाया, लेकिन दरवाजा

बंद करने के लिए मुझे गोली लगे व्यक्ति का पैर हटाना पड़ा।” त्सुडा को सुरक्षित अंदर ले जाने के बाद वे अपने कमरों में चले गए। जोन्स बच गए; होटल में अभी-अभी चेक-इन करने वाले त्सुडा को गोलियों से छलनी कर दिया गया और वे इतने भाग्यशाली नहीं रहे। उनके पैर, सीने और पेट में गोलियां लगी थीं। ओबेरॉय-ट्राइडेंट हमला, जो रात करीब 9:40 बजे शुरू हुआ, लियोपोल्ड और नरिमन हाउस पर हुए हमलों के साथ समन्वित था। इस भयावह ओबेरॉय-ट्राइडेंट ऑपरेशन में हताहतों की संख्या दूसरी सबसे अधिक थी, जिसमें नौ विदेशियों सहित चौंतीस लोग मारे गए। कई पीड़ितों को ओबेरॉय होटल के विभिन्न रेस्तरां में भोजन करते समय गोली मार दी गई, जिनमें से सबसे अधिक हताहत होटल के टिफिन रेस्तरां में भोजन करने वाले थे।
एक अखबार की रिपोर्ट में कुछ प्रत्यक्षदर्शियों के बयान दिए गए: “बुधवार को कंधार रेस्तरां खाने वालों से खचाखच भरा हुआ था,” रेस्तरां के प्रबंधक ने कहा। “जब हमने पहली बार गोलियों की आवाज सुनी तो हम हैरान रह गए क्योंकि वे शादी के जुलूसों में इस्तेमाल होने वाले पटाखों जैसी नहीं थीं। तभी मैंने होटल की लॉबी में दो आतंकवादियों को देखा। दोनों टिफिन की ओर बढ़ गए थे, जो हमसे एक मंजिल नीचे है।” प्रबंधक और बारटेंडर ने मेहमानों को निकालने के लिए अलग-अलग टीमें बनाईं। “तब तक आतंकवादी ओबेरॉय स्पा पहुँच चुके थे। मैंने स्पा से कंधार की ओर जाने वाले दरवाजे को बंद करने के लिए सर्विस ट्रॉली का इस्तेमाल किया। हमने मेहमानों को तहखाने से होते हुए कर्मचारी निकास द्वार से होटल से बाहर निकाला। बाकी लोगों को निचली लॉबी में ले जाया गया जहाँ हमने उनके लिए टैक्सी बुलाईं… एक अन्य कर्मचारी ने अपने पीछे गोलियों की आवाज सुनी, वह 8 मेहमानों को उन्नीसवीं मंजिल पर ले गई जहाँ उसने उन्हें एक सर्विस कॉरिडोर में छिपा दिया। वहाँ उसने उन्हें धुएं से बचाने के लिए उनके चेहरे ढकने के लिए गीले तौलिए दिए…” दो वेटरों को एक मेहमान ने रेस्तरां में वापस बुलाया, जो कुछ महत्वपूर्ण कागजात पीछे छोड़ गया था। दोनों को आतंकवादियों ने रेस्तरां में ही पकड़ लिया और कागजात जलाने का आदेश दिया। एक वेटर हिचकिचाया; इसकी कीमत उसे अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। दूसरे को आतंकवादियों ने बंधक और मार्गदर्शक बना लिया, लेकिन वह ध्यान भटकाने में कामयाब रहा और लॉबी में ले जाने वाली शटल लिफ्ट में घुस गया। टिफिन में, मेहमान मेजों के नीचे छिपने लगे या सीधे रसोई में भागने लगे।... कई लोग आतंकवादियों द्वारा मारे गए।... उस समय पच्चीस

स्पेनिश मेहमान होटल में चेक-इन कर रहे थे। उन सभी को सुरक्षित निकाल लिया गया।... एक अन्य कर्मचारी, जोसेफ जॉय पुलिथर, इंडिया जोन्स में काम कर रहे थे जब उन्होंने कांच टूटने की आवाज सुनी, उन्होंने इसे आग समझकर दरवाजे बंद कर दिए, और जब उन्होंने एक बूढ़ी महिला को देखा तो उन्होंने उसे छिपने के लिए चिल्लाया; 'आतंकवादियों ने हमारी आवाज सुन ली और लगभग तुरंत हमारी दिशा में गोलियां चलाईं।' हमने किसी तरह उस महिला को अंदर खींच लिया और उसे जल्दी से नीचे जाने के लिए कहा। जॉय के बाएं पैर में गोली लगी थी, फिर भी उसने कई मेहमानों को स्टाफ के निकास द्वार तक पहुंचने में मदद की। बॉम्बे अस्पताल जाते समय, उसने बताया, 'मैंने एक लड़की का शव देखा जो मेरे साथ काम करती थी। कंधार से मेरा एक दोस्त मर गया। एक युवा प्रशिक्षु भी मर गया जिसे मैं जानता था...' लेकिन उसे पता था कि क्या करना है, 'मैंने सोचा नहीं, मैंने बस काम किया।'
नरिमन हाउस के आतंकवादियों से अलग नहीं, ओबेरॉय-ट्राइडेंट के आतंकवादी भी क्रूर थे, जिन्होंने कई पीड़ितों को मारने से पहले उन्हें अपमानित किया। कुछ लोगों को कपड़े उतारने के लिए कहा गया या अन्य तरीकों से अपमानित और नीचा दिखाया गया, ऐसी अपुष्ट रिपोर्टें हैं। दोनों आतंकवादी (संभवतः कुछ अन्य लोग भी इस ऑपरेशन में शामिल थे) सबसे पहले ट्राइडेंट की लॉबी में घुसे। लॉबी में बावन वर्षीय लोकप्रिय कराटे प्रशिक्षक फारोख दिनशॉ मौजूद थे, जिनका बुधवार का दिन हमेशा उनके पूर्व छात्र और मित्र देव बुलचंदानी के साथ तय रहता था। वे हमेशा ताज महल होटल के सी लाउंज में रात के खाने के लिए मिलते थे, लेकिन कुछ हफ्तों से उन्होंने अपना स्थान बदलकर ट्राइडेंट की लॉबी में स्थित कैफे सिनो कर लिया था। फारोख प्रवेश द्वार की ओर मुंह करके बैठे थे और देव की पीठ प्रवेश द्वार की ओर थी, तभी उन्हें गोलियों की आवाज सुनाई दी। देव ने फारोख की ओर ऐसे देखा जैसे पूछ रहे हों, 'चलो भागते हैं', लेकिन फारोख शांत थे और उन्होंने आवाजों को नजरअंदाज कर दिया। तभी, देव के कान के पास से कुछ तेज़ी से गुज़रा, उसे लगा जैसे कान गर्म हो गया हो, और तुरंत ही उसने देखा कि उनके चारों ओर कांच बिखर रहा है। वे जल्दी से एक मेज़ के नीचे छिप गए, लेकिन फारोख को चोट लग गई। देव को पहले लगा कि फारोख नाटक कर रहा है, तभी उसने 'आह!' कहा। फारोख ने उसका हाथ पकड़ लिया, और जब देव ने देखा कि उसका हाथ खून से लथपथ है, तो वह समझ गया कि यह कोई मज़ाक नहीं है। इसी बीच, आतंकवादी ओबेरॉय होटल की ओर सीढ़ियों से ऊपर भाग गए थे।

देव घायल शिक्षक को होटल से बाहर खींचकर पुलिस की गाड़ी में बिठाकर अस्पताल ले गया। दो बार ऑपरेशन होने के बावजूद, फारोख को बचाया नहीं जा सका और अगले दिन दोपहर को उनका निधन हो गया। जब मैंने देव बुलचंदानी से पूछा कि वे अपने मित्र, मार्गदर्शक और दार्शनिक के इस दुखद निधन से कैसे उबर रहे हैं, तो उन्होंने कहा कि शुरुआत में उन्हें मुश्किल हुई, लेकिन अब उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया है। उनमें बदले की भावना नहीं है, लेकिन वे निश्चित रूप से मानते हैं कि पुलिस को ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए वर्तमान से बेहतर सुसज्जित होना चाहिए। अविवाहित फारुख की कराटे सहायक श्वेता दुग्गल के रूप में एक मित्र थी, जिसने मुझे बताया कि गोलियां उसके जिगर और तिल्ली को भेद गई थीं, और हालांकि उसे लगभग तुरंत अस्पताल ले जाया गया था, ऑपरेशन से रक्तस्राव को रोका नहीं जा सका।
श्वेता और मैं, दोनों उसी मेज पर बैठे थे जहाँ वे दोनों कराटे कक्षाओं से पहले गुरुवार को बैठते थे। तभी मुझे बड़े दुख के साथ पता चला कि जिस परिवार को उन्होंने कानूनी तौर पर त्याग दिया था, वही परिवार अब उनके रिश्तेदार होने के नाते अपने 'अधिकार' माँगने के लिए फिर से सामने आ गया है। श्वेता, इस अचानक हुए दुख से उबरने की कोशिश कर रही है और उनकी इच्छाओं का सम्मान करने की कोशिश कर रही है, न कि उनके परिवार की। श्वेता ने कहा, 'उन्हें सौ साल जीने की उम्मीद थी, इसलिए उन्होंने कभी वसीयत नहीं बनाई।' ओबेरॉय-ट्राइडेंट हमले का सबसे भयावह पहलू यह था कि होटल में भोजन कर रहे लोगों और निवासियों को सीढ़ियाँ चढ़ने और फिर कतार में खड़े होने के लिए मजबूर किया गया, जिसके बाद उन पर बार-बार गोलियाँ चलाई गईं। यह नाज़ी शासन की याद दिलाता है।
दोनों ने दो महिलाओं को बंधक बना लिया था, दोनों विदेशी नागरिक थीं। पैंतालीस मिनट के एक साक्षात्कार में, खूबसूरत 28 वर्षीय सिंगापुर की वकील लो ह्वेई येन के शोक संतप्त पति माइकल पुहैन्द्रन ने बताया कि हमले के दौरान उनकी पत्नी कितनी शांत थीं। मुंबई में व्यावसायिक यात्रा पर आई लो की सबसे बड़ी चिंता, हमले के बावजूद, यह थी कि माइकल शांत रहें और घबराएं नहीं। उन्होंने कई बार बात की और लो ने संकट का बहादुरी से सामना किया, बेहद स्थिर स्वर में बोलते हुए। लेकिन, अंत में, उन्होंने लो की आवाज़ में घबराहट महसूस की जब उन्होंने कहा, 'कृपया उन्हें (बचाव दल को) जल्दी आने के लिए कहें।' 'आई लव यू', ये उनके बीच कहे गए आखिरी शब्द थे।

हंसमुख स्वभाव वाली लो, काइली मिनोग की बहुत बड़ी प्रशंसक थीं। व्यावसायिक यात्रा पर मुंबई जाने से एक रात पहले, दोनों ने सिंगापुर में काइली के लाइव प्रदर्शन में भाग लिया था। उनका शव होटल की उन्नीसवीं मंजिल पर मिला।
बाद में पता चला कि बंधक बनाए जाने के बाद, उसने आतंकवादियों की ओर से अपने पति को फोन किया और उससे कहा कि वह सिंगापुर के अधिकारियों से कहे कि वे भारतीय सरकार को उनके अभियानों के खिलाफ कार्रवाई न करने के लिए कहें, अन्यथा वे उसे मार डालेंगे। सिंगापुर सरकार ने यह संदेश भारत के उच्च सरकारी अधिकारियों तक पहुँचा दिया।
लो की हत्या करने की बात आने पर, इस घातक जोड़ी के मन में कुछ शंकाएँ थीं। उन्हें एक कॉल आया, जिसे इंटरसेप्ट कर लिया गया और अब वह भारत द्वारा पाकिस्तान को भेजे गए दस्तावेज़ में शामिल है। यह कॉल 27 नवंबर 2008 को सुबह 03:53 बजे किया गया था।
कॉलर: भाई अब्दुल, मीडिया आपके इस कृत्य की तुलना 9/11 से कर रहा है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी शहीद हो गए हैं।
अब्दुल रहमान: हम दसवीं/ग्यारहवीं मंजिल पर हैं। हमारे पास पांच बंधक हैं।
दूसरा कॉलर (काफा): मीडिया द्वारा सब कुछ रिकॉर्ड किया जा रहा है। जितना हो सके उतना नुकसान पहुंचाओ। लड़ते रहो। जिंदा मत पकड़े जाना।
कॉल करने वाला: दो मुसलमानों को छोड़कर सभी बंधकों को मार डालो। अपना फोन चालू रखो ताकि हमें गोलीबारी की आवाज सुनाई दे।
फहादुल्लाह: हमारे पास तीन विदेशी हैं, जिनमें महिलाएं भी शामिल हैं।
सिंगापुर और चीन से।
फोन करने वाला: उन्हें मार डालो।
(फहदुल्लाह और अब्दुल रहमान बंधकों को एक पंक्ति में खड़े होने का निर्देश देते हुए और दोनों मुसलमानों को एक तरफ हटने के लिए कहते हुए सुनाई देते हैं। गोलियों की आवाज। पृष्ठभूमि में जयकारे की आवाजें। काफा ने ज़रार को टेलीफोन सौंप दिया।)
ज़ारार: फ़हद, नीचे जाने का रास्ता ढूंढो।
यह स्पष्ट है कि फहादुल्लाह ने थाईलैंड की महिला को चीनी लड़की समझ लिया था; पूरे 26/11 ऑपरेशन में किसी भी चीनी नागरिक की हत्या नहीं हुई थी।
सुश्री लो को सिर और पेट में गोली लगी थी।

ओबेरॉय होटल में मारे गए पहले लोगों में फ्रांसीसी मुस्लिम दंपति लूमिया हिरिदजी और मुराद अमरसे भी शामिल थे। जब वे होटल में घुसे, तो आतंकवादी दूर से अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे; वे लोगों से उनका धर्म नहीं पूछ रहे थे, वे सामने दिख रहे हर इंसान को गोली मार रहे थे। फ्रांसीसी मुस्लिम दंपति उनके शुरुआती शिकारों में से थे। हालांकि, बाद में, बंधकों को पकड़ने के बाद, उन्होंने उनसे पूछा कि वे कहां से हैं। दंपति ने जवाब दिया कि वे तुर्की से हैं, और उन्हें जाने दिया गया। हमलों में बाल-बाल बचने के बाद, दंपति ने तुरंत समाचार चैनलों को यह बात बताई। इससे इस बात का और सबूत मिला कि हमले का हिंदू धर्म से कोई संबंध नहीं था, और यह कट्टरपंथी इस्लामिस्टों का एक समूह था।
तेरह वर्षीय अमेरिकी स्कूली छात्रा नाओमी शेर और उनके पिता एलन शेर को ओबेरॉय-ट्राइडेंट मिसाइल हमले में मार गिराया गया। वे दोनों 17 नवंबर से भारत में ध्यान करने आए एक समूह का हिस्सा थे। उनकी यात्रा सुखद रही थी और वे चार दिनों में वर्जीनिया स्थित अपने घर लौटने के लिए उत्सुक थे। दुर्भाग्यवश, ओबेरॉय-ट्राइडेंट मिसाइल हमले में जान गंवाने वाली नाओमी एकमात्र नाबालिग थीं।
इस्पात इंडस्ट्रीज के कार्यकारी निदेशक विनोद गर्ग की पत्नी उमा गर्ग हमले के समय अपने परिवार के साथ ओबेरॉय होटल में मौजूद थीं। दुख की बात है कि वे तो बच गए, लेकिन उमा ने अपनी जान गंवा दी।
कंधार होटल के खाद्य एवं पेय पदार्थ विभाग के बाईस वर्षीय कर्मचारी जॉर्डन ग्रेगरी फर्नांडेस की हत्या इसलिए कर दी गई क्योंकि जब आतंकवादियों ने उनसे होटल की लॉबी तक पहुंचने के लिए निकटतम लिफ्ट का रास्ता बताने को कहा तो वह हिचकिचाए।
संदीप जेसवानी, जो अपने माता-पिता का इकलौता बेटा था, कुछ दोस्तों के साथ खाना खा रहा था जब उससे पहचान पत्र दिखाने को कहा गया। उसने अपना अमेरिकी पासपोर्ट दिखाया। उसे गोली मार दी गई।
दुबई में रहने के बाद मुंबई के कोलाबा में वापस बस चुके मोहित और लवीना हरजानी, साथ ही मोनिका और अजीत छाबरिया भी दुर्भाग्यपूर्ण टिफिन रेस्तरां में पहले ही दिन मारे गए।
कल्पना नम आँखों से याद करते हुए बताती हैं, “पंकज शाह की मृत्यु से कुछ दिन पहले, उन्होंने मुझे अपनी कार से फोन किया और मुझे अपना एक पसंदीदा

गाना सुनाया – ‘अभी ना जाओ छोड़ कर, कि दिल अभी भरा नहीं’।” पंकज उन लोगों में शामिल थे जिन्हें कतार में खड़ा करके मार डाला गया। उनके मित्र अपूर्वा पारिख सौभाग्य से बच गए, लेकिन उनके बयान से हमें पता चलता है कि क्या हुआ था।
अपूर्वा पारिख की कहानी मुझे उनके बेटे रोहन पारिख द्वारा ईमेल के माध्यम से बताई गई, यहाँ कुछ अंश दिए गए हैं:
ईश्वर की कृपा से मेरे पिता शुक्रवार को ओबेरॉय होटल से दो (मामूली) गोली लगने के घावों के साथ बच गए और अब तेजी से स्वस्थ हो रहे हैं। हालांकि, उस दुर्भाग्यपूर्ण रात उन्होंने अपने दो सबसे अच्छे दोस्तों को खो दिया, जिनके साथ वे भोजन कर रहे थे।
ये दोनों मेरे लिए पिता समान थे। हमने कई अन्य मित्रों और सहकर्मियों को भी खो दिया, और अपने प्यारे शहर को युद्ध क्षेत्र में तब्दील होते और घुटनों पर आते देखा।
बुधवार की रात करीब 10 बजे मेरे पिता और उनके दो दोस्त ओबेरॉय होटल की पहली मंजिल पर स्थित भारतीय रेस्तरां में खाना खाने पहुंचे। वे अभी ठीक से बैठे भी नहीं थे कि होटल की लॉबी में गोलियों की आवाज सुनाई दी। एके-47 राइफलों, ग्रेनेड और प्लास्टिक विस्फोटकों से लैस आतंकवादी होटल में घुस आए थे और भूतल पर स्थित रेस्तरां में मौजूद सभी लोगों को मार रहे थे। स्थिति को भांपते हुए, जिस रेस्तरां में मेरे पिता थे, उसके कर्मचारियों ने उनसे रसोई के रास्ते जल्दी से बाहर निकलने को कहा। जैसे ही मेहमान रसोई में भागने लगे, एक आतंकवादी रेस्तरां में घुस आया और वहां मौजूद हर किसी पर गोलियां चलाने लगा। उस समय मेरे पिता रसोई में थे और अपने दो दोस्तों के साथ आग से बचने के लिए बने निकास द्वार की ओर भागे। वे मुश्किल से कुछ सीढ़ियां ही उतरे थे कि आतंकवादियों ने उन्हें दोनों तरफ से घेर लिया। आतंकवादियों ने लगभग बीस लोगों को इकट्ठा किया और उन्हें अठारहवीं मंजिल तक जाने वाली सीढ़ियों से चढ़ने के लिए मजबूर किया। अठारहवीं मंजिल पर पहुँचकर उन्होंने बंधकों को एक दीवार के सामने कतार में खड़ा कर दिया। एक आतंकवादी ऊपर जाने वाली सीढ़ी पर और दूसरा नीचे आने वाली सीढ़ी पर तैनात हो गया। फिर, होलोकॉस्ट के किसी दृश्य की तरह, उन्होंने एक साथ लोगों पर गोलियाँ चला दीं। मेरे पिता कतार के बीच में थे और उनके दोनों ओर उनके दो दोस्त खड़े थे। सहज बुद्धि या सूझबूझ से, गोलीबारी शुरू होते ही वे झुक गए।

एक गोली उनकी गर्दन को छूकर निकल गई और वे ज़मीन पर गिर पड़े, उनके दोनों दोस्त और कई अन्य शव उन पर गिरने लगे। आतंकवादियों ने काम पूरा करने के लिए शवों के ढेर पर गोलियों की एक और बौछार कर दी। इस बार एक गोली मेरे पिता के कूल्हे के पिछले हिस्से में लगी। लगभग दोहरी कमर के बल झुके हुए, ऊपर पड़े शवों के भार से कुचले हुए और विभिन्न शवों से बहते खून की धारा में दम घुटते हुए, मेरे पिता दस मिनट तक संघर्ष करते रहे, जब तक कि आतंकवादी वहाँ से चले नहीं गए। जब आखिरकार उन्होंने हिम्मत जुटाकर अपने हाथ हिलाए, तो पाया कि कमरे में चार और लोग ज़िंदा बचे हुए थे। वे एक-दूसरे से स्पर्श के ज़रिए बात कर रहे थे क्योंकि वे आवाज़ निकालने से बहुत डर रहे थे। मेरे पिता ने बस इतना हिलाया कि उन्हें सांस लेने की जगह मिल सके और फिर शांत लेट गए। ज़िंदा बचे हुए लोग बारह घंटे से ज़्यादा समय तक लाशों के ढेर में चुपचाप लेटे रहे, हिलने से बहुत डरे हुए थे। उन्हें होटल के दूसरे हिस्सों में लगातार गोलियों और हथगोले के धमाके सुनाई दे रहे थे। उन्हें डर था कि कोई भी आवाज़ आतंकवादियों को वापस बुला लेगी।
लगभग बारह घंटे बाद, आतंकवादी एक कैमरा और टॉर्च लेकर लौटे और हँसते-हँसते उन्होंने उस चीज़ का वीडियो बनाया जिसे वे लाशों का ढेर समझ रहे थे। फिर वे नीचे की मंज़िल पर गए, जहाँ उन्होंने विस्फोटक लगा दिए। उनके जाने के बाद, मेरे पिता ने फैसला किया कि विस्फोटकों के कारण वहाँ रहना बहुत जोखिम भरा है। बाकी तीन बचे लोगों के साथ, वे सीढ़ियों से नीचे उतरे, जहाँ उन्हें एक बड़ा एचवीएसी प्लांट रूम मिला और उन्होंने उसमें शरण लेने का फैसला किया। घेराबंदी का बाकी समय वे इसी कमरे में छिपे रहे और खिड़की से एक अस्थायी झंडा लहराकर बाहरी दुनिया का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करते रहे। जीवित रहने के लिए वे एयर कंडीशनिंग यूनिट से गंदा पानी पीते रहे। आखिरकार, शुक्रवार की सुबह, इमारत पर धावा बोल रही एक कमांडो बचाव टीम ने उन्हें देख लिया और उन्हें सुरक्षित निकालकर अस्पताल ले जाया गया।
2 दिसंबर 2008 की इकोनॉमिक टाइम्स की रिपोर्ट से इस कहानी की पुष्टि होती है, जिसमें कुछ अन्य विवरण भी दिए गए थे। पारिख ने अखबार को बताया कि समूह पर गोली चलाने के बाद,
अगले ही पल, मैं लाशों के नीचे दबा हुआ था, कमर से दुबका हुआ, साँस नहीं ले पा रहा था, मेरे ऊपर से खून बह रहा था, जिससे मेरा दम घुट रहा था – मैंने बचने की सारी उम्मीद छोड़ दी थी। उसे कूल्हे में गोली लगी थी। आतंकवादियों

द्वारा दो महिलाओं (जिन्हें बाद में गोली मार दी गई) को ले जाने के बाद, वह कुछ घंटों तक चुपचाप वहीं पड़ा रहा और धीरे-धीरे उसे एहसास हुआ कि उसके दोस्त मर चुके हैं। अगले कुछ घंटों में, उसे एहसास हुआ कि उनमें से चार लोग जीवित हैं, 'और हम एक-दूसरे को छूकर बात कर रहे थे क्योंकि हमें डर था कि हमारी आवाजें सुनी जा सकती हैं और यही एक सहारा था जो हम एक-दूसरे को दे सकते थे। अगली सुबह किसी समय, तीन-चार आतंकवादी, जिनकी आवाजें पहले दो से अलग थीं, हमें फिल्माने के लिए कैमरा लेकर वापस आए।' पारिख इन चार जीवित बचे लोगों में से एक था। अन्य थे एचएसबीसी के कार्यकारी सिद्धार्थ त्यागी, और किर्लोस्कर एंटरप्राइज में काम करने वाले अमरदीप सेठी और केतन देसाई। हालांकि उन्होंने लगभग चौबीस घंटे एक साथ बिताए—पहले लाशों के बीच, और बाद में एक एसी प्लांट रूम के अंदर—वे पकड़े जाने के डर से मुश्किल से ही बोले, और वो भी फुसफुसाते हुए। उन्होंने एसी यूनिट से पानी पिया और उसी जगह पर शौच किया। पारिख ने कहा, 'वहाँ हमें अच्छी हवा मिली। लेकिन साथ ही साथ हमें अपने ही कूड़े की बदबू भी आई।'
शुक्रवार की सुबह करीब 11:00 बजे समूह को आखिरकार बचा लिया गया। पारिख ने कहा कि हालांकि वे घायल हो गए थे, लेकिन 'दर्द से कहीं ज्यादा सदमा था'। रेडिफ पर एक अन्य लेख में खुलासा हुआ कि बंधकों के समूह की हत्या से ठीक पहले, प्रख्यात भारतीय वकील आनंद भट्ट ने आतंकवादियों को ऐसा करने से रोकने का प्रयास किया था, यह कहते हुए कि वे सभी निर्दोष थे। आतंकवादियों में से एक ने गोधरा दंगों और बाबरी मस्जिद का जिक्र किया और तुरंत निशाना साधकर भट्ट और अन्य बंधकों को गोली मार दी।
पत्रकार तरुण तेजपाल के अनुसार, रोहिंटन मालू ओबेरॉय हत्याकांड में मारे गए लोगों में से एक थे। ‘रोहिंटन मालू को दो काम करते हुए गोली मारी गई, जिनका वे भरपूर आनंद लेते थे। अच्छा खाना खाना और नए विचारों पर चर्चा करना। वह कंधार स्थित ट्राइडेंट ओबेरॉय रेस्तरां में भोजन कर रहे 13 लोगों में से एक थे, जिन्हें बंधक बनाकर सर्विस सीढ़ियों पर ले जाया गया था।... कट्टरता की पराकाष्ठा पर, आधुनिक तकनीक और मध्ययुगीन जोश के विरोधाभास का प्रदर्शन करते हुए—एक हाथ में AK-47 और दूसरे हाथ में मोबाइल फोन लिए—हत्यारों ने अपने अंगरक्षकों से पूछा, ‘उड़ा दें?’ अंगरक्षक ने कहा, ‘उड़ा दो!’ ‘सात गोलियों से छलनी 48 वर्षीय पारसी का शव पहचान से परे था; उनकी पहचान उनकी उंगली में पहनी अंगूठी से हुई।’

मधु कपूर अपने पति अशोक कपूर, जो एक बैंक के गैर-कार्यकारी अध्यक्ष हैं, के साथ भोजन कर रही थीं, तभी उन पर हमला हुआ। सौभाग्य से, मधु एक स्पेनिश दंपति के साथ होटल से भाग निकलीं। अशोक कपूर आतंकवादियों की गोलियों का शिकार हो गए।
रीता और संजय अग्रवाल नवविवाहित थे और ओबेरॉय-ट्राइडेंट रेस्तरां में भोजन करने गए थे। यह खुशहाल जोड़े का आखिरी रात्रिभोज था, जिसके बाद उनकी गोली मारकर हत्या कर दी गई।
जब मेरी मुलाकात क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया (CCI) के सीईओ कंवलजीत (बोनी) राजपाल से हुई, तो उन्होंने बताया कि CCI को गहरा सदमा लगा है। क्लब ने एक-दो नहीं, बल्कि चौदह सदस्यों को खो दिया है। उन्होंने मुझे बताया कि CCI के कोषाध्यक्ष श्री सेवनती पारेख ने अपने बेटे और बहू सुनील और रेशमा पारेख को खो दिया है। क्लब द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में शोक संतप्त पिता ने कहा, “मैंने सोचा था कि जीवन मेरे लिए अच्छा रहा है – एक खुशहाल परिवार, क्लब की सदस्यता और बुढ़ापे के लिए कुछ पैसे। लेकिन ये सब उलट गया... जब उनकी मृत्यु हुई, तो वे एक सुरक्षित स्थान पर थे और आनंद ले रहे थे। वे न तो हत्यारों को जानते थे और न ही वे। मैं पूछता हूं, क्यों, क्यों, और इसका कोई जवाब नहीं है।” उस रात CCI द्वारा अपने 14 सदस्यों को खोने के उपलक्ष्य में आयोजित शोक सभा में वे फूट-फूट कर रो पड़े। उस रात ओबेरॉय-ट्राइडेंट में जान गंवाने वाले अन्य क्लब सदस्यों में विशिंदास, नीलम और गुंजन नारंग, संजय और रीता अग्रवाल, अजीत और मोनिका छाब्रिया, रोहिंटन मालू, आनंद भट्ट, हेमंत करकरे, फारोख दिनशॉ और पंकज शाह शामिल थे। सीसीआई ने इसे 'शब्दों से परे एक त्रासदी' बताया।
महात्मा गांधी की पोती उषा गोकानी ओबेरॉय होटल में थीं, लेकिन बिल चुकाने के बाद वे छुट्टे पैसे का इंतज़ार कर रही थीं, तभी उन्हें गोलियों की आवाज़ सुनाई दी। होटल के कर्मचारियों ने उन्हें एक सुरक्षित निकास से होते हुए रीगल रूम तक पहुंचाया और फिर सड़क के दूसरी ओर स्थित इनॉक्स मल्टीप्लेक्स में ले गए।
ओबेरॉय-ट्राइडेंट में हुई 34 मौतों में से 10 कर्मचारी थे। इनमें 2 संविदा सुरक्षा कर्मचारी भी शामिल थे। ओबेरॉय-ट्राइडेंट द्वारा मुझे ईमेल से भेजी गई दस पन्नों की विज्ञप्ति में बताया गया है कि इतने कर्मचारियों ने अपनी जान क्यों गंवाई। वे होटल के मेहमानों की मदद के लिए

अपनी जान जोखिम में डाल रहे थे। चाहे वे लॉबी में हों, ओपियम डेन में हों, इंडिया जोन्स में हों, फ्रैंगिपानी में हों, टिफिन में हों, बेव्यू में हों या कंधार में हों, इन कर्मचारियों ने अपनी जान जोखिम में डालकर अपने मेहमानों को ट्राइडेंट के तहखाने में स्थित रीगल रूम के पिछले निकास द्वार तक पहुंचाया। कई कर्मचारी घायल हुए और कुछ अन्य पीड़ितों की सहायता के लिए अस्पतालों में ही रुके रहे, जिनमें ताज महल होटल के लोग भी शामिल थे। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि ओबेरॉय समूह के अध्यक्ष पी.आर.एस. ओबेरॉय ने अपने कर्मचारियों से कहा, 'आप सभी टीम सदस्यों को कर्तव्य के प्रति निस्वार्थ समर्पण के लिए हार्दिक धन्यवाद। आपने बहुत अच्छा काम किया है। आपने कई लोगों की जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली है।' ओबेरॉय ग्रुप की सच्ची भावना के अनुरूप, आपने अतिथियों को स्वयं से पहले रखा। अनेक कठिनाइयों के बावजूद, हमने 450 अतिथियों को सुरक्षित निकाल लिया। यदि आपके साहस और सूझबूझ का प्रदर्शन न होता, तो हताहतों की संख्या कहीं अधिक हो सकती थी।
अगर इस ऑपरेशन को सफल माना जाए तो इसका श्रेय इस बात को जाता है कि ऑपरेशन के दौरान राजनीतिक हस्तक्षेप न के बराबर या न के बराबर ही रहा। सिंगापुर के सुरक्षा विश्लेषक आचार्य का मानना है कि इससे बेहतर प्रबंधन संभव नहीं था, क्योंकि प्रत्येक होटल में इतने सारे कमरे थे, जिनमें से प्रत्येक कमरा आतंकवादियों के छिपने की संभावित जगह थी। यह भी बताया गया है कि ओबेरॉय होटल में कुछ मेहमानों को मानव ढाल के रूप में भी इस्तेमाल किया गया था। आतंकवादी भारी हथियारों से लैस थे और उनका घातक मिशन बेहद प्रेरित था, इसके बावजूद इतने सारे मेहमानों, भोजन करने वालों और होटल कर्मचारियों का मौत से बच निकलना वाकई उल्लेखनीय है।
ऑपरेशन के बाद बचे श्री जोनाथन एर्लिच ने ऑपरेशन शुरू होने के कुछ ही घंटों के भीतर अपने साथ घटी घटनाओं का ब्योरा दिया। व्यापारिक यात्रा पर भारत आए वे ट्राइडेंट होटल में ठहरे हुए थे। उनका दिन व्यस्त और थका देने वाला था, इसलिए उन्होंने ओबेरॉय होटल की लॉबी में अकेले ही जल्दी से खाना खा लिया। वे अपने कमरे में लौट ही रहे थे कि उनके सहकर्मी एलेक्स चैंबरलिन ने उन्हें एक संदेश भेजा जिसमें उन्हें अपने एक दोस्त के साथ ओबेरॉय होटल की लॉबी में ड्रिंक के लिए बुलाया गया था। एर्लिच मान गए, लेकिन उन्होंने अपना इरादा बदल दिया और कमरे में ही रुक गए, क्योंकि उन्हें अगली सुबह 7:00

बजे की फ्लाइट लेनी थी। उन्होंने लाइट बंद की, बिस्तर में लेट गए और सो गए। बाद में उन्होंने इस फैसले को अपना 'भाग्यशाली जीवनरक्षक फैसला नंबर 1' कहा। एक घंटे बाद, किसी ने दरवाजा खटखटाया और घंटी बजाई। उन्होंने इसे नजरअंदाज कर दिया। इसे उन्होंने 'भाग्यशाली जीवनरक्षक फैसला नंबर 2' कहा। जल्द ही, उन्होंने एक बहुत तेज धमाके की आवाज सुनी और महसूस भी किया। उसने खिड़की से बाहर देखा तो उसे धूसर धुएँ का एक बादल उठता हुआ दिखाई दिया। उसे लगा कि कुछ बहुत बुरा हुआ है, और तभी उसे एक और ज़ोरदार धमाका सुनाई दिया जिससे होटल हिल गया। उसने अपना दरवाज़ा खोला तो बाहर लोग दिखाई दिए, और किसी को 'बम' चिल्लाते हुए सुना। इसके बाद उसने बिजली की तेज़ी से कार्रवाई की।
उसने अपना सामान पैक किया, बाहर हॉल में लौटा, आपातकालीन निकास की ओर भागा और अठारह मंज़िलें नीचे दौड़ पड़ा। नीचे आते समय उसने अपने दोस्त मार्क को फोन किया, उसे सारी घटना बताई और मुंबई से अपने जाने का इंतज़ाम करने को कहा। लॉबी में पहुँचते ही उसने भीड़ देखी। कोई कुछ नहीं कर रहा था, होटल का कोई कर्मचारी या सुरक्षाकर्मी आसपास नहीं था। वह सुनसान लॉबी में दाखिल हुआ। सबसे पहले उसने खून से लथपथ एक प्लास्टिक बैग और रिसेप्शन एरिया की ओर जाते खून के धब्बे देखे। वह आगे बढ़ा और हर जगह टूटे हुए कांच देखे। आपातकालीन निकास देखकर वह उसकी ओर दौड़ा। वह एक अंधेरी, सुनसान गली में निकला। लगभग 100 मीटर दूर, उसने कुछ सुरक्षा गार्डों को देखा। वे चिल्लाए और उसे भागने के लिए कहा, और वह भागा! वह मुख्य सड़क पर पहुँचा और चिल्लाया, 'एयरपोर्ट! एयरपोर्ट!' होटल के एक रसोइए ने उसे और उसके बैग को पकड़ा और एक टैक्सी में धकेल दिया। टैक्सी सुनसान सड़कों पर तेज़ी से दौड़ी और एक घंटे में एयरपोर्ट पहुँच गई। वह घबराया हुआ था लेकिन सुरक्षित था। हालांकि, उनके सहकर्मी एलेक्स और उनके दोस्त को बंधक बना लिया गया और उन्हें होटल की छत पर ले जाया गया। उस भयावह घटना के दौरान, एलेक्स किसी तरह भाग निकलने में कामयाब रहे (वह एक खुले दरवाजे से निकलकर छिप गए), लेकिन उनके दोस्त इतने भाग्यशाली नहीं थे।
एर्लिच को बाद में पता चला कि आतंकवादियों ने सबसे पहले पश्चिमी मेहमानों के नाम और कमरे के नंबर हासिल किए। फिर वे उन्हें ढूंढने के लिए उन्हीं कमरों में गए। एर्लिच कमरा नंबर 1820 में थे। उन्होंने लिखा, 'मैं अपनी

पूरी जिंदगी की बचत दांव पर लगा सकता हूं कि मेरे दरवाजे पर दस्तक देने वाले वही लोग थे,' और अंत में उन्होंने लिखा,
मुंबई के दयालु लोगों का शुक्रिया जिन्होंने आज रात मेरी मदद की। होटल के बेहद दयालु स्टाफ का, उस रसोइए का, मेरे कैब ड्राइवर का, जो लगातार "आराम करो", "आराम करो", "मैं तुम्हारी मदद करूंगा" कहता रहा, और जिसने मुझे तब कैब में ही रोके रखा जब हम एक भयंकर ट्रैफिक जाम में फंस गए थे और मैं उतरकर पैदल चलना चाहता था। और ट्रैफिक में फंसे उन लोगों का भी, जिन्होंने मेरे कैब ड्राइवर से यह सुनकर कि मैं ओबेरॉय होटल से आ रहा हूँ, सचमुच अपनी जान जोखिम में डालकर ट्रैफिक रोक दिया और हमें आगे जाने दिया (मुंबई गए लोग ही इस भाव को सही मायने में समझ सकते हैं)। मुंबई एक दुखद रूप से सुंदर जगह है। अविश्वसनीय रूप से उदास। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि यहाँ के निवासी किसी दुखी लेकिन बेहद भावुक ईश्वर की संतान हैं। मैं एक विमान में बैठा हूँ (फर्स्ट क्लास में अपग्रेड किया गया... देखा, मैंने कहा था ना कि मैं भाग्यशाली हूँ)। अभी-अभी मैंने अपने जीवन का सबसे स्वादिष्ट कॉर्नफ्लेक्स खाया है... लेकिन इससे पहले कि मैं अपनी बात समाप्त करूँ, मैं यह कहना चाहता हूँ कि ऐसा करने वाले लोगों में आत्मा नहीं है। उनमें दिल नहीं है। वे तो बस बुराई का जीता-जागता रूप हैं और उन्हें केवल मारना और कत्ल करना आता है। हम सबको यह समझना होगा। आज रात उनका पहला निशाना अमेरिकी थे। क्यों? क्योंकि वे उन सभी मूल्यों से डरते हैं जिनके लिए अमेरिका जाना जाता है। वे आशा, परिवर्तन, स्वतंत्रता और शांति से डरते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि वे आज रात बिना एक पल भी हिचकिचाए मुझे और मेरे बच्चों को बिल्कुल करीब से गोली मार देते। हममें से ज्यादातर लोग यह बात जानते हैं, लेकिन कभी-कभी हम टालमटोल करते हैं। हम टालमटोल नहीं कर सकते। कभी नहीं। मैं जानता हूँ कि मैं वापस जाना चाहता हूँ। कुछ फूल चढ़ाना चाहता हूँ। इन लोगों को गले लगाना चाहता हूँ। धन्यवाद कहना चाहता हूँ।
जब पाकिस्तानी हमलावरों के हाथ से ऑपरेशन फिसलने लगा, तब वे होटल के कमरा नंबर 1856 में थे। इसी समय भारतीय कमांडो इक्कीसवीं मंजिल से अठारहवीं मंजिल की ओर उतरने लगे। आतंकवादियों के लिए हालात बिगड़ते जा रहे थे और उन्हें एहसास हो गया था कि अब समय उनके पक्ष में नहीं है। उनका ऑपरेशन मनचाहा परिणाम हासिल करने में विफल रहा था। दरअसल, ऑपरेशन के दौरान उनमें

से एक को गिरफ्तार भी कर लिया गया था, जबकि सबसे पहले उनके नेता को मार गिराया गया।
इन इंटरसेप्ट्स ने पुलिस और एनएसजी को आतंकवादियों से एक कदम आगे रहने में मदद की। कामते, सालस्कर और करकरे की हत्या के तुरंत बाद इंटरसेप्ट्स शुरू हो गए। पुलिस ने बंधकों का नाटक करके होटल से भागने की आतंकवादियों की योजना को भी नाकाम कर दिया। पुलिस ने एनएसजी को सूचना देकर उनकी हर चाल पर लगाम कस दी। आतंकवादी बीच-बीच में मोबाइल फोन पर बात कर रहे थे और इन कॉलों को इंटरसेप्ट कर लिया गया। इस तरह इन दोनों को घेरकर मार गिराया गया। ध्यान यात्रा पर मुंबई आई अमेरिकी नागरिक आंद्रेना वरागोना और उनकी सहेली लिंडा रैग्सडेल भी बेहद भाग्यशाली रहीं। तैंतालीस वर्षीय आंद्रेना नौ बार मैराथन दौड़ चुकी हैं और वे अपनी जान बचने का श्रेय अपनी फिटनेस को देती हैं। आंद्रेना कहती हैं, 'शारीरिक और मानसिक रूप से फिट रहने की इच्छा ही अनुशासन लाती है। मुझे गोलियां लगीं, लेकिन मैं आज जीवित हूं और तेजी से ठीक हो रही हूं। यह कोई चमत्कार नहीं है... यह इसलिए है क्योंकि मैं खुद को फिट रखती हूं।' दोनों टिफिन रेस्टोरेंट में खाना खा रही थीं, तभी उन्होंने दो लोगों को खिड़की से टिफिन में घुसते देखा और फिर गोलियां चलने लगीं। वे झट से मेज के नीचे छिप गईं। लेकिन वे घायल हो गईं। आंद्रेना के दाहिने हाथ, पेट और दाहिने पैर में गोलियां लगीं, जबकि लिंडा के बाएं पैर में चोट आई। उसी रात 11:00 बजे उन्हें बॉम्बे अस्पताल ले जाया गया और उनका इलाज किया गया। आंद्रेइना के पति सैंटोस लोपेज़ अमेरिका में थे, और उन्हें अपनी पत्नी से संपर्क होने के बाद ही राहत मिली। उन्होंने प्रशंसा करते हुए कहा, "वह बहुत साहसी हैं और उन्होंने मुझसे चिंता न करने को कहा।" मॉन्ट्रियल के कनाडाई अभिनेता माइकल रूडर ओबेरॉय होटल में घायल हो गए थे, लेकिन उन्होंने अपूर्वा पारिख की तरह ही मरने का नाटक किया। “जब मैं यह देखने के लिए मुड़ा कि क्या हो रहा है, तो मुझे हाथ, पेट और पैर में गोली लगी; मैं कुर्सी से गिर गया और मैंने अपनी सफेद कमीज को लाल होते देखा। मैं वहीं पड़ा रहा और मरने का नाटक करता रहा।” उनके दो दोस्त उनके बगल में मृत पड़े थे, और उन्हें पता था कि उन्हें बाहर निकलना होगा। वह एक निकास की ओर रेंगने लगे, चारों ओर धुआं ही धुआं था, लेकिन किसी तरह वह रसोई तक पहुंचने में कामयाब रहे, जहां से वह लंगड़ाते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरे और फिर होटल से बाहर निकल गए। उन्हें एक टैक्सी में बिठाया गया जो उन्हें बॉम्बे

अस्पताल ले गई। वह एक ध्यान समूह के साथ मुंबई आए थे। उनके हाथ और पैर से दो-दो गोलियां निकाल दी गई हैं, और तीसरी गोली, जो उनके पेट में थी, के लिए एक और ऑपरेशन निर्धारित किया गया है।
एनएसजी कमांडो ए.के. सिंह और पी.वी. मनीष को ओबेरॉय-ट्राइडेंट ऑपरेशन के दौरान उनकी वीरता के लिए भारत के राष्ट्रपति द्वारा शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया। महेश ने बताया कि कैसे उन्होंने दो आतंकवादियों को मार गिराया:

24

दिल्ली में तैनात एनएसजी कमांडो को आपातकालीन कॉल मिली। हमें तुरंत हवाई अड्डे ले जाया गया और जल्द ही मैं मुंबई की अपनी पहली यात्रा पर था। सुबह 8:00 बजे, एक हेलीकॉप्टर ने हमें ट्राइडेंट होटल की छत पर उतारा। हमने सबसे ऊपरी मंजिल से नीचे उतरते हुए एक-एक कमरे की तलाशी शुरू की। हम हर दरवाजे पर दस्तक देते, अगर कोई जवाब नहीं मिलता, तो हम उसे तोड़ देते। कुछ कमरों में, हमें कोने में दुबके हुए डरे हुए विदेशी मिले। पहले तो उन्हें लगा कि हम आतंकवादी हैं और उन्होंने गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'हमें मत मारो!' जब हमने उन्हें बताया कि हम कमांडो हैं, तो कुछ महिलाएं राहत की सांस लेकर रो पड़ीं। हम अत्यंत सावधानी से एक-एक मंजिल की तलाशी लेते गए। जब हम चौदहवीं मंजिल पर पहुंचे, तो वहां कुछ अजीब सा महसूस हुआ। हमें सहज रूप से लगा कि यहां कुछ गड़बड़ है। बहुत सन्नाटा था। जिन कमरों पर हमने दस्तक दी, वे खाली थे। फिर कमरा नंबर 203 आया। हमने दस्तक दी, कोई जवाब नहीं मिला। जैसे ही हमने दरवाजा तोड़ा, गोलियों की बौछार ने हमारा स्वागत किया।
होटल का सुरक्षा गार्ड मृत पाया गया। एनएसजी कमांडो ए.के. सिंह और मैं जवाबी हमले के लिए अंदर घुसे। मेरी नजर के कोने से मुझे बाथरूम में हलचल और एक एके-47 की नली दिखाई दी। मैंने उस पर तब तक गोलियां चलाईं जब तक वह बेजान होकर गिर नहीं गया। दूसरा आतंकवादी डरा हुआ लग रहा था। सिंह की सटीक गोलीबारी से उसकी ट्रिगर उंगली घायल हो गई थी। जब मैंने उसे हमारी ओर ग्रेनेड फेंकते देखा, तो मैंने तुरंत प्रतिक्रिया दी, गोली चलाई और उसे मार गिराया। इसके बाद हम नीचे कूद गए और ग्रेनेड फट गया। मेरे सिर पर छर्रे लगे। हालांकि मैंने हेलमेट पहना हुआ था, लेकिन विस्फोट का प्रभाव इतना जोरदार था कि मेरा अमेरिकी हेलमेट फट गया और छर्रे मेरे सिर में धंस गए। मैं बेहोश हो गया। चार दिन बाद, जब मैं बॉम्बे अस्पताल में जागा, तो मेरा

हाथ और पैर सुन्न हो चुके थे। मैं लकवाग्रस्त हो गया था। डॉक्टर ने कहा कि मुझे ठीक होने में छह महीने लग सकते हैं।
इसके बाद, पत्रकार राहुल सिंह लिखते हैं,
दूसरा आतंकवादी गोलीबारी से बचने के लिए चुपके से निकलने की कोशिश कर रहा था, लेकिन वह कमांडो के सामने आ गया। कमांडो ने सोचा कि वह उन्हीं में से एक है, क्योंकि उसने भी वैसी ही वर्दी पहनी हुई थी। फिर उसने गोलीबारी शुरू कर दी, जब तक कि उसके पैरों में गोली नहीं लग गई... उसने पलटवार नहीं किया। इसके बजाय वह ब्लैक कैट्स को उकसाकर उनसे गलती करवाने की कोशिश कर रहा था। हिंदी में गाली देते हुए आतंकवादी चिल्लाया, 'दम है तो सामने आकर मारो'। एक कमांडो ने जवाब दिया, 'कायर, तू अब तक चूहे की तरह छिपा रहा है। थोड़ी हिम्मत दिखा और बाहर क्यों नहीं आता?' दोनों में से किसी ने भी उसकी बात नहीं मानी... जब दिन निकला तो वह ढांचा दिखाई दिया जिसके पीछे आतंकवादी छिपा था। ब्लैक कैट्स ने उस पर गोलियां चलाईं और तब तक गोलियां चलाते रहे जब तक उन्हें यकीन नहीं हो गया कि इस तरह के हमले में कोई बच नहीं सकता। आतंकवादी बच नहीं पाया।
विश्लेषण
26/11 ऑपरेशन के दौरान हुई चूक के लिए भारतीय अधिकारियों की कड़ी आलोचना की गई है। इज़राइल ने भी ताज महल होटल, ओबेरॉय-ट्राइडेंट और नरीमन हाउस पर समय से पहले हमला करने के लिए उनकी आलोचना की है। खुफिया अभियानों की विफलता को भी उजागर किया गया है।
इजरायली अधिकारी यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि नरिमन हाउस में मारे गए लोग कमांडो द्वारा इमारत पर धावा बोलने के दौरान मारे गए थे या उनकी हत्या बहुत पहले ही कर दी गई थी।
हालांकि हमारी सुरक्षा व्यवस्था संतोषजनक नहीं है, फिर भी यह कहना ज़रूरी है कि हताहत होना और परिणामस्वरूप ऐसी आलोचना होना अपरिहार्य था। ओबेरॉय-ट्राइडेंट ऑपरेशन में देरी का एक कारण यह था कि आतंकवादी एनएसजी कमांडो की वर्दी में थे। नतीजतन, असली कमांडो को यह साबित करना पड़ा कि वे किसी आतंकवादी से निपट रहे हैं, न कि अपने ही किसी साथी से। सिंगापुर में राजनीतिक हिंसा और आतंकवाद अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय केंद्र में रणनीतिक परियोजनाओं के प्रबंधक श्री आचार्य ने कहा: 'अधिकारियों ने हताहतों की संख्या कम करने के लिए निश्चित रूप से प्रयास किए, लेकिन

बंदूकधारियों की योजना सीधी-सादी थी - मारना। वे बातचीत करने नहीं आए थे। यह फिदायीन हमलों या जिन्हें 'आत्मसमर्पण न करने' वाले हमले कहा जाता है, की खासियत है। इसी स्थिति के कारण भारतीय अधिकारियों के लिए यह अनुमान लगाना मुश्किल हो गया कि अगला कदम क्या होगा।'
अमेरिकी सुरक्षा विशेषज्ञ, अमेरिकी सैनिकों की जान जाने से नाराज़ होकर, इस बात पर ज़ोर दे रहे थे कि भारतीय सैनिकों के पास आंसू गैस, मास्क, लेज़र-निशाने वाली बंदूकें और स्टन ग्रेनेड जैसे मानक उपकरण नहीं थे। जहाँ इज़राइली मानते थे कि भारतीय सुरक्षाकर्मी नरीमन हाउस में बहुत जल्दबाज़ी में घुस गए थे, वहीं अमेरिकी मानते हैं कि भारतीय सुरक्षाकर्मी बहुत धीमे थे। ज़ाहिर है, बाद में सही साबित होना किसी के लिए भी आसान होता है। इसके बावजूद, कई मायनों में, भारतीय सुरक्षा उन आतंकवादियों की चुनौती का सामना करने में बुरी तरह नाकाम रही, जिन्हें मारने या मरने के निर्देश मानने के लिए प्रशिक्षित किया गया था। उनके प्रशिक्षक मौतों पर उसी तरह खुशी मना रहे थे जैसे क्रिकेट प्रशंसक अपनी टीम के लिए खुशी मनाते हैं। फिर दो आतंकवादी, मानो नरसंहार से संतुष्ट न हुए हों, बाद में तस्वीरें लेने के लिए वापस लौटे। उन्हें सचमुच विश्वास था कि वे सही रास्ते पर हैं। पोस्टस्क्रिप्ट: ओबेरॉय-ट्राइडेंट ने हमले के एक महीने के भीतर ही 550 कमरों वाले ट्राइडेंट होटल को फिर से खोल दिया। ट्राइडेंट होटल्स के अध्यक्ष रतन केसवानी ने होटल के पुनः खुलने की घोषणा करते हुए एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए गर्व से कहा, 'रविवार को जब हमारे मेहमान होटल में प्रवेश करेंगे, तो उन्हें हमले का जरा सा भी निशान नहीं मिलना चाहिए। यही हमारा उद्देश्य था, और हमने इसे हासिल कर लिया है।' ओबेरॉय के कार्यकारी उपाध्यक्ष देवेंद्र भरमा ने प्रेस को बताया कि इस भव्य होटल को शीघ्रता से फिर से खोलने के लिए 350 कर्मचारियों और ठेकेदारों ने तीन सप्ताह तक दिन-रात अथक परिश्रम किया। 22 दिसंबर 2008 को होटल के पुनः खुलने के अवसर पर विभिन्न धर्मों के लोगों ने प्रार्थना की। होटल को 30-40 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ, जिसमें से लगभग 25 करोड़ रुपये का भुगतान न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी ने बीमा कवर के तहत तुरंत कर दिया। फिर भी, ओबेरॉय समूह ने 'ओबेरॉय केयर फंड' की स्थापना की है, जो हमलों में जान गंवाने वाले कर्मचारियों के परिवारों के लिए दान स्वीकार करेगा। 5 मार्च 2009 तक, इस उद्देश्य के लिए 38 लाख रुपये से अधिक का दान प्राप्त हो चुका था।

सीएसटी, कामा अस्पताल, मेट्रो सिनेमा और चौपाटी

जो व्यक्ति अपने जीवन और अपने साथी प्राणियों के जीवन को अर्थहीन समझता है, वह न केवल दुखी है बल्कि जीवन जीने के योग्य भी नहीं है।
– अल्बर्ट आइंस्टीन
Utth gayee hain saamne se kaisi kaisi sooraten,
Roiye kis kis ke liye, kis kis ka maatam karen.
– Aatish
आँखों के सामने इतने सारे चेहरे छीन लिए गए, किसके लिए रोना चाहिए, किसके लिए शोक मनाना चाहिए?
इस्माइल खान और अजमल कसाब समेत दस आतंकवादियों के मुंबई पहुँचने के बाद, वे एक-दूसरे को गले लगाने लगे। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानो कॉलेज के कुछ दोस्त समुद्री यात्रा के बाद बिछड़ रहे हों। लेकिन असल में, वे जानते थे कि यह न सिर्फ एक-दूसरे से, बल्कि जीवन से भी उनका आखिरी आलिंगन था। इस 'आखिरी आलिंगन' में एक तरह की अंतिम परिणति का भाव था, क्योंकि इतने भयानक और घातक हमलों के बाद बचने का खतरा इतना कम था कि उनमें आशा की कोई गुंजाइश नहीं बची थी। उनका मिशन था 'मारो या मरो', और वे जानते थे कि अपने प्रशिक्षकों के आश्वासनों और कठिन व थका देने वाले प्रशिक्षण के बावजूद, उनमें से कुछ ही बच पाएंगे।
वे चार टीमों में बंट गए - एक टीम लियोपोल्ड को तहस-नहस करने के बाद ताज होटल के लिए रवाना हुई, एक ओबेरॉय-ट्राइडेंट के लिए, एक नरीमन हाउस के लिए और आखिरी, 'वीटीएस टीम' (जिसमें टीम लीडर इस्माइल खान और उनके साथ अजमल कसाब शामिल थे), सीएसटी की ओर रवाना हुई, जिसे लोकप्रिय रूप से वीटी (विक्टोरिया टर्मिनस) स्टेशन कहा जाता है।
सुदूर उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत का मूल निवासी होने के बावजूद, इस्माइल खान भारत से अनजान नहीं था। वह जाली दस्तावेजों के साथ भारत आया था और कुछ साल भारतीय कश्मीर में बिताए थे, जहाँ वह आतंकवादी गतिविधियों में शामिल

था। उसकी उच्च 'सफलता दर' लश्कर-ए-तैबा के सरगनाओं को प्रसन्न करती थी। साथ ही, वह भारत-विरोधी भी था। वह इस तरह के 'मारो या मरो' मिशन के लिए पूरी तरह से उपयुक्त था। जहाँ आठ आतंकवादियों को एक साथ प्रशिक्षित किया गया था, वहीं फहदुल्लाह (ओबेरॉय-ट्राइडेंट मिशन का) और इस्माइल खान बाद में शामिल हुए थे, और लगभग अंतिम चरण में बाकी लोगों से अलग हो गए थे। इस्माइल ने आते ही शीर्ष पर अपनी जगह बना ली थी।
भारत की 85 प्रतिशत हिंदू आबादी के साथ सहजता से घुलमिल जाने के लिए, उन दस लोगों को हिंदुओं की तरह व्यवहार करने के लिए कहा गया था। कुबेर जहाज पर सवार इस्माइल खान ने केसरिया और लाल रंग के दस पवित्र धागे निकाले और उनमें से प्रत्येक को एक-एक दिया। उन्होंने इन हिंदू धागों को अपनी दाहिनी कलाई पर बांध लिया। वे चाहते थे कि शुरुआती चरण यथासंभव शांतिपूर्ण रहे - इसमें उस घाट से लेकर अंतिम पांच लक्षित स्थानों तक की दूरी तय करना भी शामिल था, जहां वे उतरे थे। कसाब के पास एक फर्जी छात्र पहचान पत्र था जिसमें उसका नाम बेंगलुरु के समीर दिनेश चौधरी के रूप में दर्ज था; इस्माइल खान के पास भी ऐसा ही एक फर्जी छात्र पहचान पत्र था जिसमें नाम नरेश वर्मा था और पता हैदराबाद का बताया गया था। उन्होंने हिंदू नाम अपनाए, फैशनेबल कपड़े पहने - जैसे भारतीय सिनेमा के सितारे फिल्मों में पहनते हैं - उन्होंने हिंदू धार्मिक धागे बांधे और दाढ़ी नहीं रखी। यह वेश सूक्ष्म लेकिन उपयुक्त था।
जब इस्माइल खान और कसाब जेटी से चलकर बडवार पार्क के बाहर सड़क पर पहुँचे, तब तक यह तय हो चुका था कि वे रात करीब 9:40 बजे हमला शुरू करेंगे, क्योंकि रास्ते में उन्हें ट्रैफिक जाम का सामना करना पड़ सकता था। वे एक घंटे में आसानी से अपने गंतव्य तक पहुँच सकते थे, जिससे उन्हें देरी के लिए पर्याप्त समय मिल गया। इस्माइल खान और अजमल कसाब ने पंद्रह मिनट तक टैक्सी का इंतजार किया और आखिरकार उन्हें MH-01-G779 नंबर प्लेट वाली एक टैक्सी मिल गई।
टैक्सी ड्राइवर ने उन्हें मुंबई के दो सलीके से कपड़े पहने हुए लोग समझा। इस्माइल खान ने टैक्सी का बायां दरवाज़ा खोला और ड्राइवर के बगल में बैठ गया। कसाब ड्राइवर की नज़र से बचने के लिए उसके ठीक पीछे तिरछे में बैठ गया। इस्माइल ने ड्राइवर से उन्हें वीटी स्टेशन ले जाने के लिए कहा और फिर

उससे बातचीत शुरू कर दी। उसका काम ड्राइवर का ध्यान कसाब से हटाना था, जो चुपके से ड्राइवर की सीट के नीचे टाइम बम लगा रहा था।
28 वर्षीय टैक्सी ड्राइवर, जिसे किसी बात का शक नहीं था, अपने हत्यारों से दोस्ताना अंदाज़ में बातचीत करता रहा। इन पाकिस्तानी लोगों को साथी मुसलमानों को नुकसान न पहुँचाने के लिए कहा गया था, लेकिन ऐसा लगता नहीं कि उनमें से किसी ने भी उसके साथ बिताए पच्चीस मिनटों में एक बार भी ड्राइवर का नाम पूछने की ज़हमत उठाई हो। दरअसल, वह उत्तर प्रदेश का रहने वाला था और उसका नाम मोहम्मद उमर था; वह एक मुसलमान था जो अपनी पत्नी मौमीना खातून और तीन छोटे बच्चों - छह साल के अरबाज़, तीन साल के फैसल और अठारह महीने के अफ़ज़ल - का पालन-पोषण करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा था। दरअसल, उस दिन उसका काम पर जाने का मन नहीं था, लेकिन ईद के लिए कुछ पैसे कमाने की चाह में वह टैक्सी चलाने के लिए मजबूर हो गया। अगर उन्होंने पूछा होता, तो उन्हें पता चल जाता कि उसके छोटे बच्चे हैं, एक आश्रित पिता और दो छोटे भाई-बहन हैं। वह टैक्सी चलाकर ईमानदारी से कमाई करने की कोशिश कर रहा था। लेकिन मोहम्मद उमर के लिए दुर्भाग्य से, उन्होंने नहीं पूछा। उसके पीछे, एक अन्य मोहम्मद ने चुपचाप ड्राइवर की सीट के नीचे आरडीएक्स से भरा बम रख दिया, जिसकी टिक-टिक की आवाज सुनाई नहीं दी और बाद में वह फट गया, जिससे उसकी और कई अन्य लोगों की जान चली गई। वह इस संवेदनहीन नरसंहार में मरने वाला अकेला मुसलमान नहीं था। उस रात कई मुसलमान मारे गए। वास्तव में, उन तीन दिनों में मरने वाले अधिकांश मुसलमान—जो उन हमलों में जान गंवाने वाले कुल लोगों के लगभग 20 प्रतिशत हैं—इस्माइल खान और अजमल कसाब की इस सनकी जोड़ी के शिकार थे।
इस टैक्सी में बम उनके सीएसटी पहुंचने से काफी पहले ही लगा दिया गया था। दोनों ने टैक्सी ड्राइवर को किराया दिया और उतर गए। मोहम्मद उमर, जो एक निर्दोष ड्राइवर था, उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसकी सीट के नीचे कोई जानलेवा बम रखा हुआ है। वह अगले यात्री का इंतजार कर रहा था, क्योंकि उसे लंबी दूरी का यात्री चाहिए था, जैसा कि उसके पेशे में ज्यादातर लोग करते हैं। रात भी काफी हो चुकी थी और घर लौटने का समय भी नजदीक आ रहा था। हैदराबाद के 57 वर्षीय वकील लक्ष्मण नारायण गोयल हुसैन सागर एक्सप्रेस ट्रेन से चूक गए थे, जिस पर उन्हें सवार होना था। गोयल ने अगले दिन, 27 नवंबर 2008 को उसी ट्रेन से यात्रा करने का फैसला किया। उन्होंने अपनी

बहन के घर रात बिताने का भी फैसला किया; इसलिए वे सीएसटी से बाहर निकले और मोहम्मद की टैक्सी रोकी। चार बेटियों के पिता गोयल मोहम्मद की टैक्सी की पिछली सीट पर बैठ गए। मोहम्मद को यह जानकर खुशी हुई कि गोयल उपनगरों की यात्रा करना चाहते हैं, क्योंकि टैक्सी चालक लंबी दूरी के यात्रियों का स्वागत करते हैं। रात लगभग 10:35 बजे, लगभग एक घंटे और लगभग 20 किलोमीटर बाद, जब टैक्सी हवाई अड्डे के पास विले पार्ले में थी, अचानक एक भीषण विस्फोट में फट गई - जिसमें यात्री और ड्राइवर दोनों की मौत हो गई। विस्फोट के बाद टैक्सी कई फीट हवा में उछल गई, और दोनों निर्दोष व्यक्ति टुकड़ों में बिखर गए।
मोहम्मद उमर का शव इतनी बेरहमी से क्षत-विक्षत था कि पुलिस ने शुरू में उसे एक शव की जगह दो शव समझ लिया था। गोयल का शव इतना बुरी तरह से क्षत-विक्षत और विकृत था कि उसकी पहचान केवल उसकी जेब से मिले कुछ दस्तावेजों की मदद से ही हो सकी। उनके क्षत-विक्षत अवशेषों ने कई जिंदगियों को तबाह कर दिया है। एक मुस्लिम और एक हिंदू, दोनों भारतीय, अपनी लंबी, अंतिम यात्रा के दौरान एक साथ नष्ट होने के लिए नियत थे।
सीएसटी
लश्कर-ए-तैबा (जिसका शाब्दिक अर्थ 'पवित्रों की सेना' है) के दो सदस्य, कसाब और इस्माइल खान, जो कथित तौर पर भारतीय 'काफिरों' के खिलाफ एक पवित्र युद्ध छेड़े हुए थे, ने एक नहीं बल्कि चौबीस मुसलमानों को एक घंटे से भी कम समय में मार डाला। इन चौबीस निर्दोषों में से छह का नाम मोहम्मद अजमल अमीर कसाब के नाम से मिलता-जुलता था, यानी उनका नाम भी 'मोहम्मद' था।
बोरी बंदर क्षेत्र में स्थित छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (सीएसटी), जिसका नाम एक महान मराठा योद्धा के नाम पर रखा गया है, न केवल एक व्यस्त स्थान है बल्कि गोथिक वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना भी है, जिसका समृद्ध विरासत और ऐतिहासिक महत्व है। यहां दर्जनों विशाल गार्गोयल मूर्तियां मुंह खोले हुए दिखाई देती हैं - ये वास्तव में वर्षा जल निकासी के लिए नालियां हैं। यहीं से ब्रिटिश भारत में पहली ट्रेनें 1853 में चली थीं। आकार और बारीकियों के साथ-साथ अपने ऐतिहासिक महत्व के कारण यह स्थान विस्मयकारी है। जब इसे हर साल 15 अगस्त और 26 जनवरी जैसे महत्वपूर्ण दिनों पर रोशन किया जाता है, तो यह बेहद खूबसूरत लगता है। मेरे पति मानेक और मैं अतीत में संयमित उत्साह के साथ स्टेशन के आसपास घूमे हैं, ऊपरी मंजिल पर स्थित

प्रथम श्रेणी के भोजनालय में सस्ते भोजन का आनंद लिया है और मासिक पास धारकों के रूप में यहीं से पुणे जाने वाली ट्रेनों में सवार हुए हैं। उन दिनों, हम शाम 5:00 बजे प्रसारित होने वाले डेक्कन क्वीन के दीवाने थे, जिसे उसके प्रशंसक (जिनमें हम भी शामिल थे) प्यार से क्वीन कहते थे या फिर भावहीन मासिक पास धारक इसे बस 'डीक्यू' कह देते थे।
यह एक विशाल टर्मिनल है जिसके विशाल मेहराबों के नीचे से प्रतिदिन हजारों यात्री गुजरते हैं। यह न केवल मध्य उपनगरों से आने वाली ट्रेनों के लिए एक महत्वपूर्ण चौकी है, बल्कि यह कई ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाली ट्रेनों के लिए भी एक रेलवे स्टेशन के रूप में कार्य करता है। इस प्रकार, यह दैनिक यात्रियों और लंबी दूरी के यात्रियों दोनों को ढोता है। महत्व के मामले में, यह मुंबई के लिए वही है जो न्यूयॉर्क के लिए ग्रैंड सेंट्रल स्टेशन है; केवल सीएसटी (CST) अधिक यात्रियों और भीड़ को सेवा प्रदान करता है। अंदर, कॉनकोर्स यात्रियों और उनके सामान के लिए एक विशाल प्रतीक्षा कक्ष जैसा है। यह प्रतीक्षा कक्ष आधिकारिक तौर पर द्वितीय श्रेणी के टिकट धारकों के लिए आरक्षित है, लेकिन बुकिंग काउंटरों पर, इधर-उधर बैठे हुए, या स्टेशन के अंदर-बाहर भागते हुए सैकड़ों लोग हमेशा मौजूद रहते हैं। प्लेटफॉर्म पर लाल कमीज पहने कुलियों की संख्या ही सौ से अधिक होती है - यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन सी ट्रेन आने वाली है या जाने वाली है। भारतीय परंपरा के अनुसार, लोग अक्सर अपने प्रियजनों को विदा करने के लिए साथ जाते हैं; आस-पास के लोग सस्ते भोजन का आनंद लेने के लिए सीएसटी स्टेशन जाते हैं। हममें से कुछ लोग, जो स्थानीय रूप से अनुपलब्ध समाचार पत्र या देश भर की पत्रिकाएँ खरीदने के शौकीन हैं, उनके लिए यहाँ के कई कियोस्क एक शानदार दावत पेश करते हैं। महिलाएं, पुरुष और बच्चे अपनी ट्रेनों का इंतजार करते हैं, कभी-कभी फर्श पर सो जाते हैं क्योंकि 'प्रतीक्षा कक्ष' में स्लीपर उपलब्ध नहीं हैं। आसपास कई प्लास्टिक की कुर्सियाँ हैं, लेकिन वे हमेशा आवश्यकता से कम होती हैं। इसलिए अगर किसी को बैठना हो तो उसे ज़मीन पर उकड़ू बैठना पड़ता है, जो कि बहुत से लोग करते हैं, अन्यथा वे कठोर शरीर वाले सामान को कामचलाऊ कुर्सी के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। भारतीय रिवाज़ के मुताबिक, बहुत से लोग शिकायत करते हैं, हालांकि बहुत कम लोग ही अपनी शिकायतों को लिखकर बताते हैं।

यह वह स्थान था और ये थे आतंकवादियों के लक्षित शिकार – बच्चों वाले परिवार, दोस्त, रोज़ाना आने-जाने वाले लोग, जिनमें से अधिकतर निहत्थे और थके हुए थे। आरोपपत्र से यह समझा जा सकता है कि इन हत्यारों के सीएसटी में कदम रखते ही क्या हुआ। संक्षिप्त सारांश:
आतंकी आरोपी मोहम्मद अजमल कसाब उर्फ मोहम्मद आमिर कसाब ने बडवार पार्क से सीएसटी रेलवे स्टेशन के बीच यात्रा करते समय टैक्सी में लगभग 8 किलोग्राम आरडीएक्स से भरा एक आईपीडी (IED) लगाया, जो मुंबई के विले पार्ले (पूर्व) स्थित सिटी स्वान क्लब के सामने वेस्टर्न एक्सप्रेसवे पर फट गया। विस्फोट इतना भीषण था कि टैक्सी के टुकड़े-टुकड़े होने के साथ-साथ टैक्सी चालक और एक यात्री (जो पेशे से वकील थे) के शव भी उड़कर घटनास्थल से कुछ दूरी पर जा गिरे। ये दोनों सीएसटी रेलवे स्टेशन पर टैक्सी से उतरे। मोहम्मद अजमल कसाब सीएसटी रेलवे स्टेशन के पास शौचालय में चला गया। इसी दौरान इस्माइल खान ने अपने साथ ले जा रहे आईपीडी को सीएसटी स्टेशन परिसर में लगा दिया। इसके बाद, इन दोनों आरोपी आतंकवादियों ने बेरहमी और अंधाधुंध तरीके से एके-47 असॉल्ट राइफलों से गोलीबारी शुरू कर दी और मुख्य हॉल में इंतजार कर रहे असहाय और अनजान यात्रियों पर घातक हथगोले फेंके, जिसके परिणामस्वरूप निर्दोष महिलाओं, वरिष्ठ नागरिकों, बच्चों आदि का नरसंहार हुआ। खून-खराबा जारी रखते हुए, इन दोनों ने अंधाधुंध फायरिंग जारी रखी और घातक रूप से हैंडग्रेनेड का इस्तेमाल करते हुए पुलिस अधिकारियों, कांस्टेबलों और होम गार्डों पर हमला किया, जिन्होंने उनके नापाक मंसूबों को नाकाम करने का बहादुरी भरा प्रयास किया। इसके बाद ये दोनों निर्दयी आतंकवादी लोकल लाइन के प्लेटफार्मों की ओर बढ़े और अंधाधुंध फायरिंग जारी रखी। प्राइवेट इन्वेस्टिगेटर शशांक शिंदे के नेतृत्व में बहादुर पुलिस अधिकारियों और कर्मियों द्वारा पीछा किए जाने पर, इन दोनों आतंकवादियों को रेलवे स्टेशन परिसर से बाहर प्लेटफार्म नंबर 1 से सटे फुट ओवरब्रिज/पैदल यात्री सीढ़ियों पर धकेल दिया गया।
आरोपपत्र में आगे कहा गया है कि ये हताहत, 'टैक्सी में बम विस्फोट के कारण मारे गए दो लोगों, मोहम्मद उमर और लक्ष्मण नारायण गोयल के अलावा' थे।
खान और कसाब द्वारा मारे गए लोगों की सूची निम्नलिखित है। सीएसटी/सीएएमए/मेट्रो/चौपाटी: कुल हताहतों की संख्या – 74
कोड: CH – कामा अस्पताल; CST – सीएसटी स्टेशन; SP – सुरक्षाकर्मी

□□□□□□□□□□□□□ – 15, □□□□□□□ – 59

□□□□□□□ – 58; □□□□ – 4, □□□□□□□ – 54, □□□□□□□ 4 □□□□□□□ □□□□□ □□□

□□□□ – 13; □□□□ – 9, □□□□□□□ – 4;

□□□□□□□ – 2; □□□□ – 1; □□□□□□□ – 1;

□□□□□□□ – 1; □□□□ – 1;

No.	Name	Age	Resident of, Misc info
1.	Ambadas R. Pawar	27	Mumbai, CST, SP-Railway staff
2.	Shashank C. Shinde	44	Mumbai, CST, SP-Railway staff
3.	Murlidhar Chowdhary	45	Mumbai, CST, SP-Railway staff
7.	Sunil Thackeray	30	Mumbai, CST
8.	Vinod Gupta	32	Mumbai, CST
9.	Chandulal Tandel	50	Mumbai, CST
10.	Prakash Mandal	26	Mumbai, CST
11.	Poonam B. Navadia	22	Mumbai, CST
12.	Rahimatulla Ibrahim	63	Mumbai, CST
13.	Fatima Rehmat Shaikh	65	Mumbai, CST
14.	Shoiab Shaikh Ahmed	30	Mumbai, CST
15.	Mishrilal Maurya	40	Mumbai, CST
16.	Shivshankar Gupta	38	Mumbai, CST
17.	Mufti Narul Ansul	31	Mumbai, CST
18.	Sheshbai B. Haratmol	65	Mumbai, CST
19.	Mufti Mohammed Malik	45	Mumbai, CST
20.	Afreez Kureshi	7	Mumbai, CST
21.	Shirish Chari	44	Mumbai, CST
22.	Mitu Asrani	26	Mumbai, CST
23.	Nathoni P. Yadav	42	Mumbai, CST
24.	Ashfar Ali Shaikh	21	Mumbai, CST
25.	Malappa S. Sakhare	40	Mumbai, CST
26.	Mohammad Hanif Ansari	34	Mumbai, CST
27.	Murtaza S. Ansari	15	Mumbai, CST
28.	Sarfaraz Ansari	17	Mumbai, CST
29.	Abbas Ansari	55	Mumbai, CST
30.	Rakhila Ansari	40	Mumbai, CST
31.	Mohammed Iliyas Ansari	40	Mumbai, CST
32.	Mastan Qureshi	40	Mumbai, CST
33.	Nitesh Sharma	15	Mumbai, CST

No.	Name	Age	Resident of, Misc info
34.	Anish Prabhu	35	Kanyakumari, CST
35.	Murugan	55	Kanyakumari, CST
36.	Upendra B.Yadav	35	Gujarat, CST
37.	Mstr. Akash Yadav	5	Gujarat, CST
38.	Mstr. Aditya Yadav	4	Gujarat, CST
39.	Amina Shaikh	20	Andhra Pradesh, CST
40.	Aijazbhai Dalal	39	Solapur, CST
41.	Aziz Nabilal Rampure	35	Solapur, CST
42.	Mohammed H. Shaikh	32	Bihar, CST
43.	Avdesh Pandit	25	Bihar, CST
44.	Mohammed A. Ali	19	Bihar, CST
45.	Ayub Yakub Kureshi	51	Vardha, CST
46.	Meera N. Chatterjee	67	Bengal, CST
47.	Hasibul R.Shaikh	18	Bengal, CST
48.	Jaykumar Nadar	33	Tamil Nadu, CST
49.	Manohar Sahani	30	Uttar Pradesh, CST
50.	Rajendra B. Prasad,	30	Uttar Pradesh, CST
51.	Mstr. Raju J.Chitekar	8	Buldana, CST
52.	Deepali Chitekar	10	Buldana, CST
53.	Unknown,	55	–, CST
54.	Unknown	35	–, CST
55.	Mr Michael Stuart Moss	73	Canada, CST
56.	Jurgan Rudolf Schmidt	68	Germany, CST
57.	Daphne, Schneider Schmidt	50	Germany, CST
58.	Brett Taylor	49	Australia, CST
Cama Hospital			
59.	Hemant Karkare	54	Mumbai, CH, SP
60.	Ashok Rao Kamte	47	Mumbai, CH, SP,

No.	Name	Age	Resident of, Misc info
61.	Vijay Sahdev Salaskar	51	Mumbai, CH, SP
62.	Prakash P. More.	40	Mumbai, CH, SP
63.	Bapurao S. Dhurgude	45	Mumbai, CH, SP
64.	Balwant C. Bhosale	40	Mumbai, CH, SP
65.	Yogesh Shivaji Patil	25	Mumbai, CH, SP
66.	Vijay Madukar Khandekar	34	Mumbai, CH, SP
67.	Jaywant Hanumant Patil	30	Mumbai, CH, SP
68.	Baban Ughade	55	Mumbai, CH, watchman
69.	Bhanudev Narkar	48	Mumbai, CH, watchman
70.	Bhagwan G. Shinde	40	Mumbai, CH
71.	Thakur Waghela	33	Mumbai, CH
Metro Cinema			
72.	Arun Raghunath Chitte	36	Mumbai, Metro, SP
73.	Surendra Kumar Binduram	30	Bihar, Metro
Chowpatty			
74.	Tukaram Gopal Ombale	54	Mumbai, CH, SP

[illegible]

अपनी दुकान बंद करने की कोशिश कर रहे चायवाले पर हमला किया था। बने ने अपने निकॉन कैमरे से दोनों की तस्वीरें खींचनी शुरू कर दीं, उस समय तक किसी की नजर उन पर नहीं पड़ी थी, लेकिन उन्होंने अपनी जान को बड़ा खतरा मोल लिया था। इसके बाद ये दोनों हत्यारे स्टेशन के दूसरे हिस्से की ओर चले गए, जहां रोजाना आने-जाने वाली लोकल ट्रेनें चलती हैं।
इस समय तक, लोकल ट्रेनों का सेक्शन यात्रियों से खाली हो चुका था; रेलवे उद्घोषक विष्णु ज़ेंदे की समय पर की गई घोषणा के कारण ऐसा संभव हो पाया, जिन्होंने यात्रियों से स्टेशन से जल्दी निकलने का अनुरोध किया था। उन्होंने यात्रियों को पीछे के गेट से जल्दी स्टेशन से बाहर निकलने की चेतावनी देकर अनगिनत जानें बचाईं। ज़ेंदे की मदद जी.एस. तिवारी और शेखर पेशवे ने की, जिन्होंने गत्ते की चादर बिछाकर सामने का शीशा ढक दिया ताकि ज़ेंदे दिखाई न दें। तिवारी ने केबिन की बत्तियाँ बंद कर दीं। 'जब मैं बत्तियाँ बंद कर रहा था, तभी एक आतंकवादी ने मुझे देख लिया और मेरी तरफ गोली चला दी। गोली शीशे को भेदते हुए एक लकड़ी की अलमारी में जा लगी। मुझे आशंका थी कि वे केबिन में घुस सकते हैं, इसलिए मैंने कुर्सियों और जो कुछ भी मेरे पास था, उससे दरवाज़ा बंद कर दिया।'
ज़ेंडे याद करते हुए कहते हैं, 'स्वचालित बंदूकों की आवाज़ अभी भी मेरे कानों में गूंजती है।'
वास्तव में, उन तीनों ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया और अपनी कहानी सुनाने के लिए जीवित भी रहे।
और, यहाँ उन लोगों की कहानियाँ हैं जो मारे गए या घायल हुए। वे सीएसटी में घटी घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी थे:
1. उत्तर प्रदेश के तीस वर्षीय मजदूर मनोहर साहनी अपने तीन सहकर्मियों के साथ सीएसटी पर ट्रेन से घर लौटने के लिए मौजूद थे। उनकी हत्या कर दी गई और शव इतना दयनीय था कि सोलापुर के हीरेमठ परिवार ने शव को अपने 28 वर्षीय बेटे मालियाय्या का समझकर उस पर दावा किया। हीरेमठ परिवार मुंबई घूमने आया था, लेकिन उनके बेटे ने बाकी लोगों के जाने के बाद भी वहीं रुकने का फैसला किया था। हमले होने पर वे चिंतित हो गए और 3 दिसंबर को मुंबई लौट आए, जहां उन्होंने गलती से शव को अपने बेटे का समझ लिया और उस पर दावा किया। अगले दिन, 4 दिसंबर 2008 को, उन्होंने वर्ली में उनका अंतिम संस्कार किया और उनका दाह संस्कार कर दिया गया। दाह संस्कार के एक दिन बाद, यानी 5

दिसंबर को, साहनी परिवार अपने बेटे का शव लेने पहुंचा। कुछ गड़बड़ महसूस करते हुए, पुलिस ने दाह संस्कार किए गए व्यक्ति का सामान बाहर निकाला, जिसे केवल साहनी परिवार ही पहचान सका। हीरेमठ परिवार को अपनी गलती का एहसास हुआ, जो अनजाने में ही गंभीर गलती थी। साहनी परिवार को भी इसका एहसास हुआ और उन्होंने हीरेमठ परिवार के खिलाफ कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई। हीरेमठ परिवार ने साहनी परिवार को अपने बेटे की अस्थियां सौंप दीं और सोलापुर लौट गए, इस उम्मीद में कि उन्हें अपने लापता बेटे मलियाय्या से कोई संदेश मिलेगा।
2. प्रकाश मंडल चेन्नई जा रहे थे, जहाँ वे आजीविका कमाना चाहते थे। लेकिन एक गोली उन्हें लग गई और मुंबई में उनके सात साल के जीवन का अंत हो गया। उनके भाई अशोक ने बताया कि दोनों दिहाड़ी मजदूर थे; गोली प्रकाश को लगी। उन्होंने शोक व्यक्त करते हुए कहा, 'आज उनका दिन नहीं था।' प्रकाश अपनी पत्नी और बेटी के साथ रहते थे, जो शव को लेकर बिहार स्थित अपने गाँव में अंतिम संस्कार करने के लिए रवाना हो गईं।
3. ऑटो रिक्शा चालक मिश्री लाल अपनी बहन और बहनोई को महानगरी एक्सप्रेस से विदा करने के लिए सीएसटी स्टेशन गए थे। ऑटो रिक्शा चालक के सीने में तीन गोलियां लगीं। उनकी बहन भाग्यशाली रहीं; उन्हें केवल पैर में गोली लगी। मिश्री मुंबई से काफी तंग आ चुके थे। उनके शोक संतप्त भाई शैलेश ने कहा, 'वह मुंबई छोड़ना चाहते थे।'
4. निज़ामाबाद की रहने वाली बीस वर्षीय मुस्लिम युवती अमीना बेगम, जिनकी हाल ही में शादी हुई थी, अपने स्वास्थ्य को सुधारने के लिए एक यात्रा पर निकली थीं। वह अपने माता-पिता, भाई और भतीजी के साथ सीएसटी स्टेशन पर थीं। वे प्रसिद्ध हाजी अली दरगाह के दर्शन करने गए थे; सात महीने पहले शादी के बाद से ही उनकी तबीयत खराब थी। उन्होंने उस दरगाह का दौरा किया था जिसके बारे में माना जाता है कि उसमें उपचार की आध्यात्मिक शक्तियां हैं। उन्होंने एक तांत्रिक से भी मुलाकात की थी, इस उम्मीद में कि इससे उनके स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। वे स्टेशन पर देर से पहुंचे और जिस ट्रेन से उन्हें लौटना था, देवगिरी एक्सप्रेस, वह छूट गई। उन्होंने बाद वाली ट्रेन, तपोवन एक्सप्रेस, लेने का फैसला किया और ट्रेन के प्लेटफॉर्म पर आने तक प्रतीक्षा कक्ष में बैठे रहे। जैसे ही गोलीबारी शुरू हुई, अमीना के सिर में गोली लगी जब वह खड़ी हुईं और अपने पिता और

परिवार के सदस्यों को अपने शरीर को नीचे झुकाने के लिए चिल्लाने और चेतावनी देने की कोशिश कर रही थीं। वह उन्हें गोलियों से बचाना चाहती थीं, लेकिन दुर्भाग्य से, उनके इस निस्वार्थ प्रयास की कीमत उन्हें अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। उसे जबड़े, सीने और पेट में फिर से गोली मारी गई। उसने अपनी माँ से पानी के लिए फुसफुसाया, लेकिन कुछ ही पलों में उसकी मृत्यु हो गई। अमीना के पिता अब्दुल रशीद को भी गोली लगी, लेकिन वे बच गए। परिवार के अन्य सदस्यों में से कोई भी घायल नहीं हुआ। 'अमीना ने ऐसा क्या गुनाह किया था कि उसे इस तरह की मौत मिली? इस्लाम कभी किसी की जान लेने की शिक्षा नहीं देता,' उसके पिता ने रोते हुए कहा।
5. पचास वर्ष से अधिक उम्र की दादी, हरकबाई लालजी सोलंकी ने अपना पूरा जीवन सीएसटी में सफाईकर्मी के रूप में काम करते हुए बिताया था; हालांकि, हाल ही में उन्हें जमादार के पद पर पदोन्नत किया गया था। अपने परिवार के लिए, वह एक सहारा थीं, जिन पर वे हमेशा भरोसा कर सकते थे। विधवा होने के बावजूद, वह मुख्य हॉल में सफाई कर रही थीं जब एक गोली उनके पेट में जा लगी। उनके बेटे और पोते-पोतियों को उनकी केवल प्यारी यादें ही याद हैं। उनकी छोटी पोती रेखा, जो अपनी दादी से बहुत प्यार करती थी, ने कहा, 'हम चाहते हैं कि उस आतंकवादी को हमारे हवाले कर दिया जाए। हम जानते हैं कि उसे कैसे तड़पाना है। उसका चेहरा और मेरी दादी का चेहरा; जब हम सोने की कोशिश करते हैं तो हमें बस यही दिखाई देता है।'
6. चारकोप की निवासी मीतू असरानी उस शाम बहुत उत्साहित थीं। उनकी मुलाकात एक अमेरिकी चैट-फ्रेंड से होने वाली थी, जो संयोगवश मुंबई घूमने आई हुई थीं। वे दोनों सिर्फ इंटरनेट के जरिए ही एक-दूसरे को जानती थीं। मीतू जल्द ही बालाजी टेलीफिल्म्स में क्रिएटिव एसोसिएट के रूप में शामिल होने की उम्मीद कर रही थीं। उन्होंने दिन भर घर पर आराम किया और टीवी पर फिल्म देखी, फिर कोलाबा के लियोपोल्ड कैफे के लिए रवाना हुईं, जहां उनकी मुलाकात अपनी इंटरनेट फ्रेंड, 45 वर्षीय अमेरिकी महिला पर्यटक लीन से हुई। मीतू ने लीन को भारत में अपनी छुट्टियां प्लान करने में मदद की थी। दोनों ने खूब हंसी-मजाक किया और जल्द ही जाने का समय हो गया। मीतू घर वापस जाने वाली ट्रेन पकड़ने के लिए सीएसटी की ओर चल पड़ीं। गोली लगने वालों में वह सबसे पहले थीं। जीवन भर खुश रहने वाली मीतू अपने पीछे शोकग्रस्त माता-पिता और भाई को छोड़ गई हैं। उनके पिता अर्जुन और भाई सुनील, मीतू के पार्थिव शरीर

को श्मशान घाट तक ले गए, दोनों ही दुख और सदमे से जूझ रहे थे। इस त्रासदी ने उन्हें पूरी तरह से झकझोर दिया था।
7. सुनील ठाकरे और सलमा दोनों ही घर से भागे हुए थे। सलमा पश्चिम बंगाल में अपनी क्रूर सौतेली माँ से भाग गई थीं। फिर दुर्भाग्यवश उनकी शादी एक दुर्व्यवहार करने वाले व्यक्ति से हो गई, उन्होंने उसे छोड़ दिया और सीएसटी के बाहर अपने बच्चों के साथ बेसहारा जीवन बिताने लगीं। सुनील भी घर से भागे थे, और जब दोनों मिले तो उनका आपस में गहरा रिश्ता बन गया। वह सीएसटी के प्रवेश द्वार के पास फुटपाथ पर अपनी अनौपचारिक दुकान चलाते थे, जहाँ वे 10 रुपये में ऑमलेट-पाव और 20 रुपये में भुर्जी-पाव बेचते थे। बच्चे उनसे खुश थे, लेकिन एक-दूसरे पर पूरा भरोसा होने के बावजूद, इस प्यार करने वाले जोड़े ने कभी भी शादी के बंधन में बंधने से परहेज नहीं किया। बच्चों की खातिर, सलमा ने सुनील का उपनाम अपना लिया। सलमा कहती हैं, 'उन्हें दो गोलियां लगीं। एक उनकी गर्दन में और दूसरी उनके सिर में।' वह शोक व्यक्त करते हुए कहती हैं, '26 नवंबर की रात मुझे नहीं लगता कि उन्हें पता था कि गोलियां कहाँ से आ रही थीं, कौन गोली चला रहा था और क्यों। लेकिन सुनील ने अपना धंधा नहीं छोड़ा।' वह अपने सामान्य स्थान से काम कर रहा था, और उसके पूरे धंधे की जिम्मेदारी उसके कंधों पर थी। उसने अपने लिए एक रिक्शा खरीदने के लिए पैसे बचाए थे, उसने कहा।
सरकार ने शव सौंपते समय उन्हें केवल 15,000 रुपये दिए। घोषित 5 लाख रुपये का मुआवजा उन्हें नहीं दिया जा सकता क्योंकि उनकी शादी कानूनी रूप से नहीं हुई थी। यह इस तथ्य के बावजूद है कि बच्चों के स्कूल रिकॉर्ड में सुनील ठाकरे को पिता बताया गया है। उनके परिवार के किसी भी सदस्य को उनके ठिकाने का पता नहीं था, इसलिए कोई भी दावेदार सामने नहीं आया है। सलमा के पास न तो किराए के लिए और न ही अन्य खर्चों के लिए पैसे बचे हैं। उनके बच्चे एक ईसाई छात्रावास में हैं और वह अपने पहले वाले छोटे से किराए के घर का किराया देने में असमर्थ होने के कारण सड़कों पर वापस जाने के लिए मजबूर हो गई हैं। उम्मीद है कि सरकार इस मामले को कानूनी रूप देने के बजाय करुणा दिखाएगी और एक माँ को सम्मानजनक जीवन जीने का विकल्प देगी - कुछ ऐसा जिसके लिए सुनील जीवित होते तो प्रयास करते। उनके दोनों बच्चे दस साल से कम उम्र के हैं।
8. विनोद गुप्ता, बत्तीस वर्षीय, उस रात अपनी मां के साथ सीएसटी पर थे।
दोनों को गोलियां लगीं। मालती देवी गुप्ता को पैर, हाथ और पीठ में चार

गोलियां लगी हैं, लेकिन अब उन्हें इन घावों का कोई दुख नहीं है। हालांकि, वह अपने बेटे विनोद की मौत पर रो रही हैं। उस शाम दोनों पटना जाने वाली ट्रेन का इंतजार कर रहे थे, तभी दो पाकिस्तानी बंदूकधारियों ने गोलीबारी शुरू कर दी। ‘तुरंत ही मेरे बेटे ने चिल्लाकर कहा, “चलो भागते हैं” और मुझे खींचकर सुरक्षित जगह ले जाने की कोशिश की। इसी दौरान उसकी छाती में गोली लगी और वह तुरंत गिर पड़ा। मुझे भी कई गोलियां लगीं। जब मेरा बेटा ही नहीं रहा तो जीने का क्या फायदा? उसकी पत्नी और दो छोटे बच्चे उसके बिना कैसे गुजारा करेंगे?’
9. नफीसा बेगम की छह वर्षीय बेटी अफरीन की मौके पर ही मौत हो गई। खुद अस्पताल में भर्ती नफीसा बेगम अफरीन को याद करके लगातार रो रही हैं। उनकी औरंगाबाद जाने वाली ट्रेन छूट गई थी और वे दूसरी ट्रेन का इंतजार कर रहे थे। इसी बीच नफीसा के पति यात्रा के लिए कुछ खाने-पीने का सामान खरीदने बाहर गए थे, तभी गोलीबारी शुरू हो गई। नफीसा बेगम की मौके पर ही मौत हो गई। नफीसा बेगम के पैर में गोली लगी है और वे अभी भी इलाज करा रही हैं।
ए.एच. व्हीलर की किताबों की दुकानें यात्रियों के लिए ट्रेन में चढ़ने से पहले आखिरी समय में किताब या पत्रिका खरीदने का एक बहुत लोकप्रिय स्थान है। 50 वर्षीय चंदूलाल टंडेल, जो इसी दुकान पर काम करते थे, गोलीबारी शुरू होने पर बचने की कोशिश करते समय गोली लगने से मारे गए। गोलीबारी शुरू होने से ठीक पहले उन्होंने अपने परिवार को फोन किया था।
10. अंसारी परिवार (जिसका उपनाम भारतीय आतंकवादी फहीम अंसारी के समान है, जिसने इस रक्तपात के लिए सीएसटी के नक्शे और वीडियो भेजे थे) को उस रात असहनीय त्रासदी का सामना करना पड़ा। अंधाधुंध गोलीबारी में इस मुस्लिम परिवार ने एक नहीं बल्कि छह सदस्यों को खो दिया। एक ही रात में, तेरह वर्षीय अफ़रोज़ अंसारी ने सीएसटी में अपने माता-पिता, बहनोई, चाचा और दो चचेरे भाइयों को खो दिया। सौभाग्य से, उनका एक तीस वर्षीय बड़ा भाई है और एक घनिष्ठ परिवार होने के कारण, अफ़रोज़ अपने माता-पिता के स्नेह और देखभाल से पूरी तरह वंचित नहीं रहेगा।
परिवार के मुखिया मोहम्मद मुस्तकिन ने यहां पत्रकारों से कहा, ‘मुझे खबर मिली है कि बुधवार रात को गोलियां लगने से मेरे बेटे, बेटी, चाचा, चाची और दो भतीजों की मौत हो गई। मुंबई-हावड़ा मेल छूट जाने के बाद वे मुंबई में अपने आवास पर लौट रहे थे, तभी वीटी के पास आतंकवादियों ने उन पर गोलियां

चलाईं।’ वे फूट-फूटकर बोले, ‘अगर उनकी ट्रेन न छूटी होती तो...’ मुंबई में पेशे से दर्जी रहे परिवार के मृतकों में मुस्तकिन के बेटे आरिफ अंसारी (बत्तीस वर्ष), बेटी मुर्तजा (सत्रह वर्ष), चाचा अब्बास अंसारी (साठ वर्ष), चाची अकेला खातून (पचपन वर्ष), भतीजे इलियास (चालीस वर्ष) और सरफराज (उन्नीस वर्ष) शामिल थे। उन्होंने बताया कि दो अन्य भतीजों को भी गोली लगी थी। वे 9 दिसंबर को बकरीद मनाने के लिए पटना स्थित अपने घर लौट रहे थे। तेरह वर्षीय अफ़रोज़, जिसने उस दिन अपने माता-पिता को खोने के साथ-साथ गर्दन में गोली लगने से भी घायल हो गया था, ईद के दिन अस्पताल के बिस्तर पर लेटा हुआ था। मुंबईवासियों के लिए काम करने वाली संस्था 'आई लव मुंबई' ने उसे वह चीज़ भेंट की जिसकी उसे बहुत चाह थी और जिसके लिए वह तरस रहा था - एक कंप्यूटर। संस्था ने उसकी आंखों की बीमारी के लिए कॉर्नियल ट्रांसप्लांट की ज़िम्मेदारी भी ली है।
उनके इस भयावह नुकसान की कल्पना मात्र ही की जा सकती है। परिवार के छह सदस्यों की मौत दिल दहला देने वाली है, खासकर तब जब इसका एकमात्र औचित्य धार्मिक चरमपंथ हो।
11. इक्कीस वर्षीय अशफर अली को गोली कहाँ लगी थी, इस बारे में कुछ भ्रम की स्थिति थी। हालांकि, पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, उनकी मृत्यु सीएसटी में हुई थी। दिहाड़ी मजदूर अशफर पश्चिम बंगाल के रहने वाले थे।
12. वापी के कंप्यूटर इंजीनियर उपेंद्र यादव की भी सीएसटी पर गोली मारकर हत्या कर दी गई। हमले में जीवित बची सबसे छोटी पीड़िता उनकी तीन महीने की बच्ची शीतल यादव थी। उसके शरीर पर कई चोटें आई थीं। बाद में, उसकी मां सुनीता यादव अपने पति और बेटी के लिए रोईं, लेकिन मां और बच्ची को अलग रखा गया। लंबे समय तक उन्हें पता ही नहीं चला कि उनके पति अब इस दुनिया में नहीं हैं। वे अपने गृहनगर बनारस जाने के लिए सीएसटी पर थे, तभी एक हैंडग्रेनेड ने सब कुछ खत्म कर दिया। उपेंद्र की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि सुनीता को सीने में गंभीर चोटें आईं। नन्ही शीतल के हाथों, सीने, पैरों और गर्दन से खून बहने लगा, और बाकी सभी छर्रे निकाल दिए गए, लेकिन गर्दन में फंसा छर्रा अभी भी मौजूद है। सीने में चोट लगने के बावजूद, सुनीता अपनी बेटी को दूध पिलाने की जिद कर रही थी, इसलिए डॉक्टरों को दूध निकालकर चम्मच से बच्ची को मां का दूध पिलाना पड़ा। सुनीता अपने पति की अनुपस्थिति में विलाप करती रही और बार-बार यही पूछती रही, 'वह मुझसे मिलने

क्यों नहीं आए?' मैं अभी अपने पति से मिलना चाहती हूँ। बाद में, जब वह पूरी तरह से ठीक हो गई, तब उसे अपने पति की मृत्यु की सूचना मिली।
जले पर नमक छिड़कते हुए, सुनीता के पति का भाई पुलिस के पास पहुंचा, अपने भाई (सुनीता के पति) के मृत्यु दावे के तौर पर जारी किया गया 50,000 रुपये का चेक लेकर फरार हो गया। हालांकि, वह इसे भुना नहीं पाएगा क्योंकि यह सुनीता के नाम पर जारी किया गया है। उसने उपेंद्र का मृत्यु प्रमाण पत्र भी हासिल कर लिया है, ताकि वह परिवार के करीबी सदस्यों को दी जा रही 5 लाख रुपये की अनुग्रह राशि पर दावा कर सके। सौभाग्य से, 'आई लव मुंबई' ने यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी ली है कि यह पैसा केवल उसकी पत्नी को ही मिले। इस बीच, सुनीता के सामने एक लंबा सफर है और वह अपने छोटे बच्चे का पालन-पोषण करने के लिए नौकरी ढूंढने की उम्मीद कर रही है। उसके ससुराल वाले उसकी पोती में दिलचस्पी नहीं रखते क्योंकि वह एक लड़की है।
13. प्रवासी मजदूर जनार्दन चिटेकर के दो बच्चे भी मारे गए। वे दिवाली की छुट्टियों में पहली बार अपने पिता से मिलने महाराष्ट्र के बुलढाणा से मुंबई आए थे। उनके पिता उन्हें घर वापसी के लिए स्टेशन छोड़ने गए थे। राजू और दीपाली चिटेकर की उम्र केवल दस और आठ वर्ष थी। उन्हें मुंबई की जगमगाती रोशनी और चहल-पहल बहुत पसंद थी। 26 नवंबर 2008 को उन्हें ट्रेन में चढ़ना था। उनके चाचा भी उनके साथ घर जा रहे थे। जब गोलीबारी शुरू हुई, जनार्दन, जो अभी-अभी स्टेशन से निकले थे, दौड़कर वापस आए। पहले तो उन्हें अपने बच्चे नहीं मिले। बाद में उन्हें सेंट जॉर्ज अस्पताल के फर्श पर उनके शव मिले। बच्चों की खुशी एक क्रूर अंत में बदल गई। दोनों दिहाड़ी मजदूरों के माता- पिता का दुख असहनीय है। वे रोते हुए कहते हैं कि न पैसा, न समय, न ही किसी भी तरह की मदद उनके दर्द को कम कर सकती है।
14. कोलकाता की यात्रा की बेसब्री से इंतज़ार कर रही पूनम नवादिया की हत्या कर दी गई, जबकि उनके कपड़ा व्यापारी पति गंभीर रूप से घायल हो गए। उनके पति अपनी पत्नी की मृत्यु पर शोक मना रहे हैं। वह अपने पीछे तीन और तीन साल के दो बच्चों को छोड़ गई हैं, जिनकी देखभाल का जिम्मा उनके पति को सौंपा गया है।
15. आरपीएफ के हेड-कांस्टेबल एम.एल. चौधरी को सीएसटी पर गोली मार दी गई।
उनकी पत्नी को गहरा सदमा लगा। वे अपनी बेटी प्रियंका को अच्छी शिक्षा

दिलाना चाहते थे, लेकिन उनकी असामयिक मृत्यु के कारण प्रियंका की शिक्षा अधूरी रह गई है।
16. विजय कुमार शर्मा अपने किशोर बेटे नितेश शर्मा के साथ सीएसटी गए थे, ताकि अपनी पत्नी और बेटी को विदा कर सकें जो मथुरा में एक शादी में शामिल होने जा रही थीं। दोनों ने एक-दूसरे को अलविदा कहा और प्लेटफॉर्म नंबर 1 की ओर चल पड़े, ताकि लोकल ट्रेन से अपने घर मानखुर्द जा सकें। नितेश की जान चली गई।
17. संतोष सिंह की पत्नी पूनम सिंह और छह वर्षीय बेटा सचिन दोनों बुरी तरह घायल हो गए। उनकी पत्नी का व्यवहार बहुत तनावपूर्ण था और वे लगातार रो रही थीं। उनके पेट का ऑपरेशन करना पड़ा, लेकिन पीठ में खून का थक्का जमने के कारण उनके हाथ-पैर लकवाग्रस्त हो गए। पूनम और उनके बच्चों को उसी शाम आज़मगढ़ जाने वाली ट्रेन में सवार होना था, ताकि वे अपने चाचा के अंतिम संस्कार में शामिल हो सकें। बेटे के तीन ऑपरेशन के बाद ठीक होने की उम्मीद थी, लेकिन संतोष को अपनी पत्नी की हालत की सबसे ज्यादा चिंता थी। 'मुझे नहीं पता कि मैं उनकी कितनी मदद कर पाऊंगा।' वे पवई में एक सोसाइटी मैनेजर के रूप में काम करते हुए 6,000 रुपये कमाते हैं और उन्हें चार बच्चों की देखभाल करनी है।
18. रेलवे पुलिस के वरिष्ठ निरीक्षक शशांक शिंदे सीएसटी से निकलने ही वाले थे कि उन्होंने गोलियों की आवाज सुनी। आतंकवादियों ने उन पर हथगोले फेंके। उन्होंने जवाबी फायरिंग की, लेकिन उनकी सर्विस रिवॉल्वर उनकी एके- 47 राइफलों का मुकाबला नहीं कर सकी। फिर भी, उनके इस साहसिक प्रयास का दोनों आतंकवादियों पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि वे सीएसटी से भागने पर विवश हो गए। उन्होंने पीछे से उन पर हमला किया और उन्हें चार गोलियां लगीं, जिससे गोली लगने के कुछ ही मिनटों के भीतर उनकी मृत्यु हो गई। रेल मंत्री ने मृत्यु के मुंह में वीरता दिखाने के लिए उनके परिवार को 10 लाख रुपये की राशि प्रदान की।
19. उपनगरीय ट्रेनों के प्लेटफॉर्म नंबर 1 से रवाना होने के दौरान गोलीबारी देखते ही रेलवे पुलिसकर्मी आदिक राव हरकत में आ गए। उन्होंने कहा, ‘मैंने यात्रियों की भीड़ को जल्दी से हटने के लिए कहा और इंस्पेक्टर शिंदे को आतंकवादी की ओर इशारा किया। लगभग उसी समय आतंकवादी ने मुझे देखा और गोली चला दी।’ पेट में गोली लगने से हुए तेज दर्द से कराहते हुए

उन्होंने कहा, ‘लेकिन मैं अपने बच्चों के बारे में सोचने की कोशिश करता हूं और इससे मुझे शांति मिलती है।’
20. हमले की खबर फैलते ही सरकारी रेलवे पुलिस (जीआरपी) के अधिकांश जवान स्टेशन से भागने लगे। जुल्लू के पास बंदूक नहीं थी, लेकिन सबके सामने बहादुरी से अपने एक साथी के पास जाकर उसने कुर्सी फेंककर दोनों का ध्यान दूसरी ओर भटका दिया। उसने अपने साथी की राइफल छीनकर दोनों पर गोली चला दी। रेलवे ने उनकी वीरता के सम्मान में उन्हें 10 लाख रुपये का पुरस्कार दिया है।
21. मुंबई के उपनगर भायंदर के रहने वाले 32 वर्षीय जगन बोकाडे, जो एक निजी कार्गो कंपनी के सीएसटी कार्यालय में ऑपरेशन मैनेजर थे, अपने डेस्क की ओर जा रहे थे तभी उन्होंने अपने पीछे गोलियों की आवाज सुनी। ‘गोलीबारी मेरे पीछे, लगभग पांच फीट की दूरी पर हुई। मैं गिर पड़ा लेकिन सूझबूझ से एक खंभे के पीछे छिप गया।’ वह गोलियों से बच गए लेकिन गंभीर चोटों के कारण छह महीने तक बिस्तर पर पड़े रहे और एक साल में ही ठीक हो पाएंगे।
22. वरिष्ठ निरीक्षक आरपीएफ, खिरातकर जैसे ही घर पहुंचे, उन्हें हमले की खबर मिली। वे तुरंत सीएसटी लौट आए और अपनी राइफल से बीस राउंड गोलियां चलाईं। वहां मौजूद अन्य पुलिसकर्मियों के साथ मिलकर उन्होंने सीएसटी पर आतंकवादियों की गतिविधियों को नियंत्रित कर लिया। उनका दावा है कि वे आतंकवादियों को निश्चित रूप से घायल कर सकते थे, लेकिन चूंकि हर जगह यात्री मौजूद थे, इसलिए उन्हें गोली चलाते समय अत्यधिक सावधानी बरतनी पड़ी। रेल मंत्री ने उनकी वीरता के लिए ड्यूटी से बाहर रहे पुलिसकर्मी को 5 लाख रुपये का पुरस्कार दिया।
रेलवे ने सीएसटी पर मारे गए बावन यात्रियों और छह रेलवे कर्मचारियों के परिवारों को 10 लाख रुपये प्रति परिवार के अनुग्रह राशि के रूप में देने की घोषणा की है। पीड़ितों के परिवारों को रेलवे दावा न्यायाधिकरण के माध्यम से 4 लाख रुपये प्रति परिवार का मुआवजा भी मिलेगा।
अस्पताल का बिस्तर
आरोप पत्र में दोनों के सीएसटी से भागने के बाद उनके द्वारा की गई कार्रवाइयों का विस्तृत विवरण दिया गया है। मैं उद्धृत करता हूँ: गोलीबारी और हथगोले फेंकते हुए, वे सीमा पार करके टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग और अंजुमन इस्लाम स्कूल से सटी एक गली में घुस गए। पार्किंग स्थल

की ओर ले गए। उन्होंने मेट्रो जंक्शन पर जमा भीड़ पर पुलिस वाहन से अंधाधुंध फायरिंग की।
इस गोलीबारी में एक पुलिसकर्मी समेत दो लोगों की मौत हो गई। एक राहगीर गंभीर रूप से घायल हो गया।
इसके अलावा, पुलिस की क्वालिस गाड़ी चुराने के आरोपी ये दोनों आतंकवादी मुंबई के बैरिस्टर रजनी पटेल मार्ग स्थित उषा मेहता स्क्वायर के पास मित्तल टावर के 'बी-विंग' के सामने पहुंचे। इस दौरान, दोनों आरोपियों द्वारा अगवा की गई क्वालिस पुलिस जीप का एक पिछला टायर और टायर ट्यूब पंचर हो गया और गाड़ी डगमगाने लगी। मजबूर होकर क्वालिस गाड़ी को छोड़कर, दोनों आतंकवादियों ने बल प्रयोग और धमकी के जरिए विपरीत दिशा से आ रही एक स्कोडा कार (नंबर MH-02-JP-1276) को अगवा कर लिया। स्कोडा कार के चालक और दो अन्य यात्रियों को जबरन बाहर निकाल दिया गया और फिर दोनों आतंकवादी इसी स्कोडा कार में बैठकर आगे बढ़ गए। पुलिस की क्वालिस गाड़ी को छोड़ते ही, उन्होंने वाहन के पिछले हिस्से में असहाय पड़े पुलिस नायक अरुण जाधव को गंभीर रूप से घायल कर दिया; उन्होंने पुलिस वाहन में लगे वायरलेस सेट को उठाकर पुलिस नियंत्रण कक्ष को घटना की सूचना दी। इस सूचना के आधार पर, पुलिस नियंत्रण कक्ष ने तुरंत सभी पुलिस थानों के सभी पुलिस वाहनों और मोबाइल वैन को एक अलर्ट वायरलेस संदेश भेजा, जिसमें अपहृत वाहन में आतंकवादियों की गतिविधियों का विवरण दिया गया था। तत्परता और असाधारण साहस का परिचय देते हुए, डॉ. डी.बी. मार्ग पुलिस स्टेशन से एक पुलिस दल कैफे आइडियल के सामने, पैदल पुल के नीचे, एन.एस. पुरंदारे मार्ग, नॉर्थ लेन, गिरगाँव चौपाटी, मुंबई पहुंचा और नाकाबंदी कर नाकाबंदी का आयोजन किया। इस नाकाबंदी के परिणामस्वरूप एन.एस. पुरंदारे मार्ग पर उत्तर की ओर जाने वाली लेन पर यातायात पूरी तरह से ठप हो गया।
जैसे ही आरोपी आतंकवादी अगवा की गई स्कोडा कार में नाकाबंदी स्थल पर पहुँचे, पुलिस दल ने उन्हें कार की हेडलाइट बंद करने का आदेश दिया। हालांकि, आतंकवादियों ने पुलिस दल को गुमराह करने के इरादे से स्कोडा कार की विंडस्क्रीन पर पानी का छिड़काव चालू कर दिया, जिससे पुलिस दल को कार के अंदर बैठे लोगों को ठीक से देखने में बाधा उत्पन्न हुई। जब आतंकवादियों को एहसास हुआ कि अब कोई रास्ता नहीं है, तो उन्होंने स्कोडा कार को घुमाने का प्रयास किया, जिससे कार सड़क विभाजकों से टकरा गई। तुरंत ही, पुलिस दल

चढ़े, खिड़की खोली और कसाब को गोली चलाते हुए कैमरे में कैद कर लिया। तस्वीर में उसके चेहरे पर दिख रही खुशी कसाब की निर्मम क्रूरता को दर्शाती है। कैमरे की फ्लैश चमकते ही कसाब का ध्यान भटक गया और उसने उस खिड़की पर गोली चलाई जहाँ से फोटोग्राफर ने तस्वीर ली थी। सौभाग्य से, स्नाइपर का निशाना चूक गया। वे एक ऐसे भवन की तलाश में पुल से नीचे उतरे जिसका उपयोग वे एक सुविधाजनक स्थान के रूप में कर सकें, इसी बीच उन्होंने एक बंद कार में सेंध लगाने की कोशिश की।
हमले के समय सब-इंस्पेक्टर बापूराव दुर्गुडे सेंट जेवियर्स कॉलेज के बाहर, कामा अस्पताल के पास तैनात थे। सड़क पर लगभग अंधेरा छाया हुआ था। दुर्गुडे की राइफल तैयार थी जब उन्होंने दो बंदूकधारियों की धुंधली आकृतियों को अपनी ओर आते देखा। उन्होंने उन्हें कॉलेज के छात्र समझ लिया और मराठी में चिल्लाकर कहा, 'कामा अस्पताल में गोलीबारी हो रही है'। शायद युवकों को उनकी बात समझ नहीं आई और वे चलते रहे। दुर्गुडे उनकी ओर बढ़ने लगे और जैसे ही वे करीब पहुंचे, उनमें से एक ने मुड़कर उन पर एके-47 तान दी। सब-इंस्पेक्टर ने अपनी राइफल निकालने की कोशिश की, लेकिन एके-47 की एक गोली ने उन्हें रोक दिया। गोली उनके सीने में लगी और उनकी मौके पर ही मौत हो गई।
वे एक बेहतर स्थान की तलाश में आगे बढ़े और कामा अस्पताल पहुँचे – एक विशाल इमारत, गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिए बना अस्पताल। रास्ते में उन्होंने दो चौकीदारों और तीन नागरिकों को मार डाला।
पास ही में, जीटी अस्पताल के ओपीडी में तैनात सहायक कर्मचारी ठाकुर वाघेला (उनका नाम वागले भी लिखा गया है) 26 नवंबर की रात की शिफ्ट में काम कर रहे थे। ठाकुर के भाई भरत बताते हैं, “हम सब रात करीब 10:30 बजे फुटपाथ पर खाना खा रहे थे और बातें कर रहे थे, तभी नीले और काले रंग की जैकेट और बड़ी-बड़ी बंदूकें लिए दो बंदूकधारी अचानक आ गए और गोलीबारी शुरू कर दी... हम सब अपने घरों में घुस गए और दरवाजे बंद कर लिए।” जब उनकी मां ने उन्हें बाहर न निकलने की चेतावनी दी, तो ठाकुर ने उनकी बात अनसुनी कर दी। उन्होंने अपना खाना झोपड़ी के बाहर बैठकर खाया। दोनों हमलावर उनके पास आए और पानी मांगा। उन्होंने तुरंत उन्हें पानी दे दिया, और बदले में उन्हें गोली मार दी गई – यह दृश्य उनका छह साल का बेटा कभी नहीं भूल सकता।

कफ परेड की एक झुग्गी बस्ती में रहने वाली विजय चव्हाण हमले शुरू होने से पहले अस्पताल में प्रसव पीड़ा से गुजर रही थीं। “जब मैंने शोर सुना, तब तक मुझे प्रसव पीड़ा शुरू हो चुकी थी। यह पटाखों जैसी आवाज थी। मुझे लगा कि पास में कोई शादी हो रही है। नर्सों ने मुझे कभी नहीं बताया कि ये गोलियों की आवाजें थीं।” उन्हें 26 नवंबर की रात 10:00 बजे प्रसव कक्ष में लाया गया। उनके परिवार के सदस्यों और कर्मचारियों ने दरवाजे को सील करने के लिए सारा फर्नीचर दरवाजे के सामने रख दिया। प्रसव के दौरान पुरुष रिश्तेदार कमरे की रखवाली करते रहे। “जब प्रसव पीड़ा चरम पर थी, तब आतंकवादियों ने दरवाजा जोर से खटखटाया।” सौभाग्य से उसके बाद कुछ नहीं हुआ। डरा हुआ दंपति अगले ही दिन अस्पताल से निकल गया और उन्होंने अपनी बच्ची का नाम, जिसके गालों पर डिंपल थे, ‘क्रांति’ रखने का फैसला किया, जिसका अर्थ है क्रांति। जब हमला शुरू हुआ तब एक और महिला प्रसव पीड़ा में थी; अट्ठाईस वर्षीय नसरीन शेख ने बताया कि रात 10:00 बजे उनके बच्चे का सिर बाहर आ गया था, लेकिन डॉक्टरों ने बच्चे को वापस अंदर धकेल दिया, और तीन घंटे बाद उन्हें प्रसव करने दिया। उन्हें अभी-अभी बताया गया था कि अस्पताल के दो चौकीदारों को गोली मार दी गई है, इसलिए उन्होंने जल्दी से बत्तियाँ बंद कर दीं और नसरीन को बेहोशी की दवा का इंजेक्शन लगाया जिससे वह तुरंत सो गईं। उन्होंने बेंचों और अलमारियों से दरवाजे को बंद कर दिया। आतंकवादियों को वहाँ कोई रोशनी या आवाज नहीं सुनाई दी, इसलिए वे आगे बढ़ गए। उन्होंने दोपहर 1:30 बजे एक बच्ची को जन्म दिया, लेकिन सुरक्षा कारणों से उन्हें अगले ही दिन अस्पताल छोड़ने के लिए कहा गया।
बुद्धिमत्ता और व्यावहारिकता केवल शिक्षित लोगों का एकाधिकार नहीं है। आम लोगों की समझदारी भरी सलाह कभी-कभी बेहद मूल्यवान साबित होती है। कामा अस्पताल में एक साधारण आया (देखभालकर्ता) ने उस रात लगभग सभी माताओं और शिशुओं की जान बचाई।
उस रात अस्पताल में लगभग 150 महिला मरीज़ थीं, जिनमें से अधिकांश के साथ शिशु थे। आतंकवादी पिछले दरवाजे से अस्पताल में घुस आए थे और परिसर में प्रवेश करने से पहले उन्होंने सुरक्षा गार्डों पर गोलियां चलाईं थीं। वार्ड बॉय, फुंडू मामा, दौड़े और डॉक्टरों और नर्सों को सभी दरवाजे बंद करने की चेतावनी दी। तुरंत ही ग्रिल बंद कर दी गईं और बत्तियां बुझा दी गईं। आया को एहसास हुआ कि इस शोर-शराबे से शिशु डर सकते हैं और जोर-जोर से

रोने लग सकते हैं। उन्होंने चिकित्सा कर्मचारियों को निर्देश दिया कि वे माताओं से कहें कि वे अपने शिशुओं को स्तनपान कराएं ताकि शोर कम से कम हो। जब आतंकवादियों ने उनके दरवाजों पर दस्तक दी, तो कोई प्रतिक्रिया या आवाज नहीं हुई और चूंकि कमरे पूरी तरह से बंद, शांत और अंधेरे थे, इसलिए वे आगे बढ़ गए।
कामा अस्पताल की आया और वार्ड बॉय ने अस्पताल और मरीजों की मदद करने के लिए अपने कर्तव्य की सीमा से कहीं आगे बढ़कर काम किया।
जब आतंकवादी अस्पताल में घुसे तो उन्होंने लगातार गोलीबारी की। उन्होंने पुलिस पर हथगोले फेंके, जो उन्हें काबू करने या मार गिराने की कोशिश कर रही थी।
उनतालीस वर्षीय चंद्रकांत तिखे उन भारतीयों में से थे जिन्हें आतंकवादियों ने घूरकर अपने कब्जे में ले लिया था। लिफ्टमैन तिखे, कामा अस्पताल में हुई गोलीबारी के चश्मदीद गवाह हैं। उनका कहना है कि दो लोग (कसाब और खान) सरकारी कामा अस्पताल में AK-47 राइफलों और ग्रेनेडों के साथ घुस आए थे। तिखे ने इंडो-एशियन न्यूज सर्विस (IANS) को बताया, 'मैं अस्पताल की छठी मंजिल पर था जब आतंकवादी दो चौकीदारों को गोली मारकर संकरे पिछले गेट से अंदर घुसे। गेट पर गोलियों की आवाज सुनकर एक डॉक्टर डरकर भाग रहा था, तभी वे उसके पीछे सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गए।' उन्होंने सीएसटी पर गोलीबारी के बाद अस्पताल के कर्मचारियों से मुख्य गेट और खिड़कियां दोनों बंद करवा दीं। तिखे याद करते हुए बताते हैं, 'लेकिन अनजाने में पिछला गेट खुला रह गया था, जिससे दोनों बदमाश टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग से सटी एक गली से अंदर घुस आए। लगभग 22 से 25 साल की उम्र के दो आदमी अंदर आए।' ‘वे मुझे देखकर सीधे छठी मंजिल पर चढ़ गए और उनमें से एक, जो नेपाली जैसा दिख रहा था, ने मुझसे शुद्ध हिंदी में पूछा कि मैं हिंदू हूँ या मुसलमान। जब मैंने बताया कि मैं हिंदू हूँ, तो उन्होंने मुझ पर राइफल तान दी, मुझे पीठ फेरने का आदेश दिया और मेरी कमीज की जेब से मोबाइल फोन छीन लिया।’ आतंकवादियों ने बंदूक की नोक पर तिखे को अस्पताल के अंदर से आगे चलने का आदेश दिया। ‘मैंने विरोध करने की कोशिश की, लेकिन जब उन्होंने मुझे जान से मारने की धमकी दी, तो मैं मान गया और उनसे आगे सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा। तभी एक पुलिस अधिकारी (अतिरिक्त पुलिस आयुक्त सदानंद दाते) पाँच कांस्टेबलों के साथ ऊपर जाते हुए मुझे देख लिया। ‘मैंने अधिकारी को मराठी

में फुसफुसाकर बताया कि मैं एक कर्मचारी हूँ और उन्हें इशारा किया कि वे दोनों कुछ दूरी पर मेरा पीछा कर रहे हैं। अधिकारी ने मुझे बताया कि जब वे गोलीबारी शुरू करें तो मुझे झुक जाना चाहिए और आतंकवादियों को चुनौती देनी चाहिए। ‘वे हमारी ओर एक ग्रेनेड फेंकते हुए दौड़े और छत पर कहीं छिप गए। थोड़ी देर बाद, उन्होंने दो और ग्रेनेड फेंके, जब पुलिस अधिकारी ने गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद गोली चलाना जारी रखा।’ मैं घायल पुलिसकर्मियों के साथ दर्द से कराह रहा था, जबकि उनका नेता अपने खून बहते घावों की परवाह किए बिना डटा रहा। 'फिर वे दोनों शायद किसी पाइप से उतरकर वहां से भाग गए,' तिखे याद करते हुए डेट को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, जिन्होंने उस रात अस्पताल में भर्ती सैकड़ों महिलाओं और बच्चों की जान बचाई थी।

कामा अस्पताल में हुई गोलीबारी का विश्लेषण।
सीएसटी/कामा अस्पताल हमले में करकरे, कामते और सालस्कर की हत्याएं सबसे विवादास्पद और चर्चित मामले बनी हुई हैं। कई अनुत्तरित सवालों के कारण इन तीनों की हत्या को लेकर कई अटकलें लगाई जा रही हैं। यह उच्चस्तरीय टीम अक्सर गुप्त अभियानों में शामिल रहती थी। संयुक्त पुलिस आयुक्त, ए.टी.एस., हेमंत करकरे, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त अशोक राव कामते और पुलिस निरीक्षक विजय एस. सालस्कर अपनी बहादुरी के लिए जाने जाते थे और कई लोगों द्वारा सम्मानित थे।
एक शरारती विवाद खड़ा किया गया, संभवतः लश्कर-ए-तैबा (LeT) या भारत और पाकिस्तान में (SIMI) समर्थक गुटों के सदस्यों द्वारा। उन्होंने अफवाहें फैलाईं कि करकरे की हत्या भारतीय हिंदू कट्टरपंथियों की साजिश थी, जो उन्हें इसलिए निशाना बना रहे थे क्योंकि उनके पास कुछ ऐसी जानकारी थी जिससे मालेगांव कांड से जुड़े कुछ लोगों का पर्दाफाश हो सकता था। इस अटकल को महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री ए.आर. अंतुले ने और हवा दी, जो आगामी अप्रैल के राष्ट्रीय चुनावों में मुस्लिम वोटों के लिए बेताब थे। बाद में, जब उन्हें एहसास हुआ कि उनकी इस कोशिश से उन्हें लक्षित वोट बैंक से कोई समर्थन नहीं मिला, तो उन्होंने क्षमाप्रार्थी लहजे में अपने पहले के अनुमानों से पीछे हट गए।

एक और अनसुलझा विवाद यह है कि इनमें से किस अधिकारी ने कसाब पर गोली चलाई थी? हर एक पर गोली चलाने का आरोप है – सालस्कर समर्थक समूह का दावा है कि गोली कसाब ने चलाई थी; कामते समर्थक आश्वस्त हैं कि गोली कसाब ने चलाई थी; और करकरे टीम हर महत्वपूर्ण और निर्णायक कदम का श्रेय कसाब को देना चाहती है। इस विवाद के परिणामस्वरूप, सरकार ने इन सभी को अशोक चक्र से सम्मानित करने का फैसला किया, जबकि इनमें से केवल एक ही अधिकारी एक आतंकवादी को घायल करने में सफल रहा था। यह शायद अन्यायपूर्ण है। साठ घंटों की अवधि में अन्य पुलिस अधिकारियों ने भी आतंकवादियों से मुकाबला किया और उन्हें मार गिराया। सच कहें तो, कुछ ने इन तीन शीर्ष पुलिस अधिकारियों से कहीं अधिक बहादुरी दिखाई है। लेकिन क्योंकि वे इतने चर्चित नहीं थे, इसलिए उनकी वीरता को नजरअंदाज कर दिया गया – या तो इसलिए कि वे अभी जीवित हैं (क्या यह अयोग्यता है या दोहरी योग्यता?) या शायद इसलिए कि वे इतने उच्च पद पर नहीं हैं।
विवाद से अवगत गृह मंत्री प्रणब मुखर्जी ने संसद में इस बारे में बात की: श्री करकरे लगभग रात 9:45 बजे दादर स्थित अपने आवास पर पहुँचे। कुछ ही देर बाद, नियंत्रण कक्ष के प्रभारी इंस्पेक्टर श्री तोंडवालकर से टेलीफोन पर सूचना प्राप्त करते ही उन्होंने अपने कर्मचारियों को सीएसटी रेलवे स्टेशन की ओर तुरंत रवाना होने के लिए तैयार रहने का आदेश दिया। कुछ ही मिनटों में, वे और उनकी टीम, जिसमें एक पीएसआई (पुलिस सब-इंस्पेक्टर) और चार कांस्टेबल शामिल थे, एक बोलेरो जीप में सवार होकर सीएसटी की ओर रवाना हुए। सीएसटी पहुँचने से पहले ही उन्होंने पाया कि नाकाबंदी के कारण सड़क अवरुद्ध थी। इसलिए, श्री करकरे और उनकी टीम पैदल ही सीएसटी की ओर बढ़े। वहाँ उनकी मुलाकात रेल विभाग के अतिरिक्त डीजीपी श्री के.पी. रघुवंशी और अन्य अधिकारियों से हुई। उन्होंने श्री करकरे को बताया कि दो आतंकवादियों ने रेलवे स्टेशन के अंदर अंधाधुंध गोलीबारी करने के बाद टाइम्स ऑफ इंडिया भवन और अंजुमन इस्लाम हाई स्कूल के बीच स्थित एक गली (जिसे अंजुमन लेन कहा जाता है) की ओर भाग गए हैं। श्री करकरे ने तुरंत बुलेटप्रूफ जैकेट और हेलमेट पहना और अपनी टीम के साथ उस दिशा में दौड़ पड़े जिधर आतंकवादी भागे थे। श्री करकरे और उनकी टीम कामा अस्पताल के पिछले द्वार पर पहुँची। उन्होंने गोलीबारी और ग्रेनेड विस्फोटों की आवाज़ सुनी। उन्होंने पिछले द्वार के पीछे छिपकर शरण ली।

कुछ ही देर बाद, मुंबई के अतिरिक्त पुलिस कांस्टेबल श्री अशोक कामटे, कामा अस्पताल के पिछले गेट पर पहुंचे। इससे पहले, श्री कामटे रात करीब 10 बजे अपने आवास पर पहुंचे थे। पूर्वी क्षेत्र के नियंत्रण कक्ष से सूचना मिलते ही, उन्होंने पांच मिनट के भीतर अपने वायरलेस ऑपरेटर और ड्राइवर को निकलने के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया और अगले दस मिनट में वे स्वयं निकल पड़े। उन्होंने बॉम्बे पोर्ट ट्रस्ट के अंदर वाली सड़क पकड़ी। जब वे आज़ाद मैदान पुलिस क्लब पहुंचे, तो उन्हें बताया गया कि वे कार को कामा अस्पताल के पिछले गेट तक नहीं ले जा सकते। इसलिए, वे कार से उतरे, अपने ड्राइवर को कार में ही रुकने का निर्देश दिया और अपने वायरलेस ऑपरेटर के साथ कामा अस्पताल के पिछले गेट तक पैदल चले गए।
अपराध शाखा के जबरन वसूली विरोधी दस्ते के पुलिस निरीक्षक श्री विजय सालस्कर भी कामा अस्पताल के पिछले गेट पर पहुंचे। इससे पहले, वे लगभग 21:30 बजे घर पहुंचे थे और अपने ड्राइवर, स्टाफ और कार को ड्यूटी से मुक्त कर दिया था। हालांकि, लगभग 21:50 बजे, अपराध शाखा के अतिरिक्त आयुक्त से अपने मोबाइल फोन पर सूचना मिलने पर, वे अपनी निजी क्वालिस गाड़ी से अपने घर से निकले। रास्ते में, उन्होंने अपने पुलिस नायक श्री अरुण जाधव को फोन पर सूचित किया और पुलिस निरीक्षक श्री नितिन अलकनुरे को साथ लेकर हाजी अली और नेपियन सी रोड होते हुए कोलाबा पुलिस स्टेशन की ओर चल दिए। कोलाबा पुलिस स्टेशन में, पुलिस नायक अरुण जाधव उनसे मिल गए। संयुक्त पुलिस कांस्टेबल (अपराध) श्री राकेश मारिया ने मोबाइल फोन पर श्री सालस्कर को मुंबई पुलिस मुख्यालय पहुंचने का निर्देश दिया। मुख्यालय जाते समय, श्री सालस्कर ने आज़ाद मैदान पुलिस स्टेशन के गेट पर दो हथियारबंद पुलिसकर्मियों को सतर्क खड़े देखा। उन्होंने श्री सालस्कर को कामा अस्पताल के पास हुई गोलीबारी के बारे में जानकारी दी। इसलिए, श्री सालस्कर अपनी टीम के साथ कामा अस्पताल के पिछले गेट की ओर दौड़े।
ऊपर वर्णित तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि श्री करकरे, श्री कामते और श्री सालस्कर तीनों अधिकारी अलग-अलग रास्तों से कामा अस्पताल के पिछले गेट पर पहुंचे। तीनों आपस में स्थिति पर चर्चा कर रहे थे, तभी श्री सदानंद दते, अतिरिक्त पुलिस कांस्टेबल, के संपर्क में मौजूद वायरलेस ऑपरेटर श्री टेलेकर घायल अवस्था में कामा अस्पताल से बाहर आए और उन्हें सूचना दी कि कामा अस्पताल परिसर के अंदर आतंकवादियों के साथ हुई गोलीबारी में श्री

सदानंद दते घायल हो गए हैं। कामा अस्पताल की छत से कुछ देर गोलीबारी हुई, लेकिन अचानक सन्नाटा छा गया। इसके बाद सेंट जेवियर कॉलेज की दिशा से गोलीबारी की आवाज सुनाई दी। श्री करकरे ने अपनी टीम को उसी स्थान पर तैनात होने का निर्देश दिया और श्री कामते और श्री सालस्कर के साथ एसीपी, पायधोनी डिवीजन की क्वालिस जीप में बैठकर सेंट जेवियर कॉलेज की दिशा में चल दिए। श्री सालस्कर गाड़ी चला रहे थे, श्री कामते आगे की सीट के बाईं ओर बैठे थे, श्री करकरे बीच वाली सीट पर थे और श्री अरुण जाधव सहित चार अन्य लोग पीछे वाली सीट पर बैठे थे।
जीवित बचे पुलिसकर्मियों में से एक श्री अरुण जाधव ने बताया कि क्वालिस गाड़ी बदरुद्दीन तैयबजी मार्ग के रंग भवन लेन पर स्थित एक बैंक के एटीएम केंद्र के पास से गुजर रही थी, तभी दो आतंकवादियों ने लेन के दूसरी ओर झाड़ियों के पीछे से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। क्वालिस गाड़ी में सवार एक व्यक्ति ने जवाबी फायरिंग की, जिससे एक आतंकवादी (बाद में मोहम्मद अजमल कसाब आमिर के रूप में पहचाना गया) के हाथ में चोट आई। श्री करकरे, श्री कामते, श्री सालस्कर और तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों आतंकवादियों ने आगे और बीच की सीटों से तीनों घायल अधिकारियों को बाहर निकाला और क्वालिस गाड़ी को उन चार लोगों के साथ अगवा कर लिया, जिन्हें आतंकवादी मृत समझ रहे थे। श्री अरुण जाधव अपने तीन मृत साथियों के शवों के नीचे दब गए, इसलिए वे पकड़े नहीं गए। क्वालिस गाड़ी को फ्री प्रेस जर्नल मार्ग पर छोड़ दिया गया और दोनों आतंकवादियों ने एक स्कोडा कार को अगवा कर लिया। इस समय, श्री अरुण जाधव गाड़ी से बाहर निकले और क्वालिस गाड़ी में लगे वायरलेस सेट का उपयोग करके नियंत्रण कक्ष को घटना की सूचना दी। नियंत्रण कक्ष को यह रिपोर्ट 26/27 नवंबर 2008 की आधी रात के कुछ ही समय बाद, यानी 00:25 बजे प्राप्त हुई।
श्री अरुण जाधव ने कोलाबा पुलिस स्टेशन में श्री सालस्कर के साथ काम शुरू करने से लेकर नियंत्रण कक्ष में रिपोर्ट दर्ज कराने तक की घटनाओं का ब्योरा दिया है। गिरफ्तार आतंकवादी मोहम्मद अजमल कसाब आमिर ने कहानी के उस हिस्से की पुष्टि की है जिसमें उसने और उसके साथी ने एक क्वालिस वाहन पर गोलीबारी की, यह मानकर कि उसमें सवार सभी लोग मारे गए हैं, और वाहन को अगवा कर लिया। महाराष्ट्र सरकार के प्रधान सचिव (स्वास्थ्य) को उपलब्ध कराए गए वाहन के चालक श्री मारुति माधवराव फड़ ने घटना को करीब से देखा था। वह उन

उन्होंने यात्रियों को बाहर निकाला और स्कोडा लेकर भाग गए, जो 50 वर्षीय गुजराती व्यापारी रमेश अरसा की थी। अंधेरी में एक रेस्तरां चलाने वाले रमेश अरसा के पास नंबर प्लेट MH-02-JP-1276 वाली एक सिल्वर सेडान, स्कोडा लॉरा है। फरवरी 2009 की शुरुआत में मुंबई पुलिस ने उन्हें स्कोडा कार लौटा दी। उस रात उनका 27 वर्षीय बेटा शरण कार चला रहा था, और वे वास्तव में ओबेरॉय-ट्राइडेंट होटल जा रहे थे, ताकि अपने एक दोस्त से मिल सकें, जिसे होटल पर हमले के समय वहां से निकाल लिया गया था।
शरण अरसा ने बताया कि उन्हें आतंकी हमले का एहसास तब हुआ जब आतंकवादियों ने उन्हें रोककर बंदूक की नोक पर कार की चाबियां मांगीं। जैसे ही उन्होंने चाबियां सौंपीं, आतंकवादी गाड़ी लेकर भाग गए। उन्होंने डीएनए को बताया, 'मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने मुझे या मेरे साथ मौजूद दो दोस्तों को नहीं मारा।' उन्होंने आगे कहा, 'टीवी देखते हुए मुझे एहसास हुआ कि मैं बाल-बाल बच गया। अब मैं ऑटो से यात्रा करता हूं। यह परिवहन का सबसे सुरक्षित साधन लगता है।'
जब दोनों आतंकवादियों को पता चला कि अपहृत पुलिस वाहन का टायर पंचर है, तो उन्होंने शरन को रोक लिया और बंदूक की नोक पर वाहन को अगवा कर लिया।
अरसा को कार के लिए 13 लाख रुपये का बॉन्ड देने और समन मिलने पर कार को अदालत में पेश करने के लिए कहा गया था। उस रात नरीमन प्वाइंट की उनकी यात्रा, भले ही निर्दोष लग रही थी, लगभग जानलेवा साबित हुई। शुक्र है कि उन दोनों हिंसक लोगों ने उन्हें गोली मारकर जान से नहीं मारा। शायद, इस्माइल खान घायल कसाब को लेकर जल्दी भागने को लेकर चिंतित था और उसे एहसास था कि अगर उस इलाके में पुलिस की जवाबी कार्रवाई हुई तो उसकी स्थिति कमजोर पड़ जाएगी। अरसा परिवार उस रात बेहद भाग्यशाली रहा, शायद वे मौत के मुंह से बाल-बाल बचे। रमेश अरसा कहते हैं कि वे उस 'भाग्यशाली' कार को कभी नहीं बेचेंगे।
जाधव, जिसने मरने का नाटक किया था, ने उन्हें जहाज से उतरकर मरीन ड्राइव और चौपाटी की ओर जाते हुए देखा। हमने तुरंत वायरलेस का इस्तेमाल करके उसके साथियों को आतंकवादियों की गतिविधियों और कार के विवरण की जानकारी दी। पुलिस को सतर्क कर दिया गया और चौपाटी में सुख सागर मोड़ के पास नाकाबंदी कर दी गई।
चौपाटी

मुंबई में हर साल अगस्त-सितंबर के आसपास मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार गणपति उत्सव है, जो दस दिनों तक चलता है। इस उत्सव के दौरान, नृत्य करते भक्तों के जुलूस इसी स्थान से होकर गुजरते हैं। कई श्रद्धालुओं के लिए, मुंबई में यह भूमि का टुकड़ा लगभग पवित्र है। लालबाग की सबसे प्रतिष्ठित मूर्ति, जिसे लालबाग का राजा या लालबागचा राजा कहा जाता है, भी इसी स्थान से होकर धीरे-धीरे भव्यता के साथ गुजरती है। इन मूर्तियों को फिर अरब सागर के जल में विसर्जित किया जाता है, जो इस स्थान से लगभग सौ मीटर की दूरी पर स्थित है।
हमलों से दो महीने पहले, लालबागचा राजा और सैकड़ों गणपति प्रतिमाओं का विसर्जन यहीं किया गया था। यह सिद्ध हो गया कि यह इलाका भगवान गणपति द्वारा पवित्र और संरक्षित है, क्योंकि उस रात हुए आतंकवादी हमलों के दौरान यहाँ कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। संयोगवश, गणपति बापा का दूसरा नाम 'विघ्नेश्वर' (बाधाओं को दूर करने वाला) है। मुंबई में मुसलमान और पारसी भी जिन्हें पूजते हैं, उस रात भगवान ने अपना चमत्कार दिखाया और वह भी तुकाराम ओम्बले के माध्यम से। ऐसा सिर्फ इसलिए नहीं हुआ कि इससे उन दो निर्दयी लोगों के नरसंहार का अंत हुआ, बल्कि इसलिए भी कि इससे अजमल कसाब को पकड़ने में मदद मिली। जिंदा पकड़ा जाना चौपाटी पुलिस की बदौलत एक अमूल्य उपलब्धि थी।
चौपाटी में अपनी रात्रिकालीन शिफ्ट की तैयारी कर रहे तुकाराम ओम्बले टीवी पर क्रिकेट मैच देख रहे थे। उन्होंने उस रात जल्दी सोने का वादा किया था क्योंकि उन्होंने मजाक में कहा था, 'चौपाटी में रात 1 बजे के बाद कुछ नहीं होता।'
उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था।
जब नाकाबंदी की गई, तब ओम्बले के पास केवल एक पुलिसकर्मी की लाठी थी। लेकिन एके-47 से कहीं अधिक प्रभावी साबित हुआ उनका अटूट साहस। वे उस कार की ओर दौड़े, जिसमें इस्माइल खान मृत पड़ा था, और अजमल कसाब का सामना किया, जो उन पर गोलियां बरसा रहा था। लेकिन वे डटे रहे और लाठी छोड़ने से इनकार कर दिया। उस रात तुकाराम ओम्बले एक पुलिसकर्मी के कर्तव्य से कहीं बढ़कर काम कर रहे थे। ऐसा लगता है मानो वे किसी दैवीय मार्गदर्शन में किसी परम उद्देश्य को पूरा कर रहे हों। उन्होंने हार मानने से इनकार कर दिया और अपने साथियों को वे बहुमूल्य क्षण दिए जिनकी उन्हें घायल लेकिन हथियारबंद

कसाब को काबू करने के लिए आवश्यकता थी। इससे पहले कभी किसी आतंकवादी को जिंदा नहीं पकड़ा गया था। उनका शौर्य विस्मयकारी था। परिणामस्वरूप, भारत ने अंततः एक जीवित आतंकवादी को पकड़ लिया है जिसने कई पाकिस्तानी आतंकी संगठनों की योजनाओं का खुलासा किया है।
इसी बीच, हमलों के शुरू होने के ठीक एक सप्ताह बाद, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शाम 5:30 बजे सीएसटी स्टेशन पहुंचे। स्टेशन का निरीक्षण करने के बाद, वे शाम 6:15 बजे स्टेशन से रवाना हो गए। मुख्यमंत्री के जाने से कुछ ही मिनट पहले या बाद में, रेलवे अधिकारियों द्वारा स्टोररूम में छोड़े गए एक काले और सफेद रंग के बैग में दसवां बम मिला, जो सौभाग्य से फटा नहीं था। हमले के शुरू होने पर, भागते हुए यात्रियों ने स्टेशन पर कई बैग, पर्स और ऐसी ही अन्य चीजें छोड़ दी थीं। लोग भागने में बाधा डालने वाली हर चीज वहीं छोड़ गए थे। इस प्रकार, आठ दिन बाद, अन्य हानिरहित सामानों के बीच पड़ा हुआ यह बम मिला। बम निरोधक इकाई और खोजी कुत्ते ने पुष्टि की कि यह वास्तव में एक बम था। सौभाग्य से, तार ठीक से नहीं लगे थे और बम फटा नहीं। कुछ टिप्पणियां
मनुष्य योजना तो बनाता है, पर ईश्वर उसे पूरा करता है। इस मिशन के नेता इस्माइल खान हमले की शुरुआत के पांच घंटे से भी कम समय में चौपाटी में मारे गए। उनकी त्वरित मृत्यु से पाकिस्तान में मौजूद योजनाकारों को गहरा झटका लगा। टीम कमजोर पड़ गई और मिशन खतरे में प्रतीत होने लगा।
बिना किसी पछतावे या गुस्से के अंधाधुंध लोगों की हत्या करते हुए, इन दोनों आतंकवादियों को सीएसटी में मिले बच्चों को भी अमानवीय समझने का प्रशिक्षण दिया गया था। यह सोचना भी मुश्किल है कि उनके प्रशिक्षकों को उस धर्म की कितनी समझ थी जिसका वे पालन करने का दिखावा करते थे। बल्कि, उन्होंने अपने धर्म का नाम कलंकित किया है, जिससे यह गलत धारणा फैल रही है कि इस्लाम पुरुषों, महिलाओं और छोटे बच्चों की निर्मम हत्या को जायज़ ठहराता है।
‘हिट स्क्वाड’ के इस घिनौने कृत्य के कारण ही आम तौर पर शांत रहने वाले भारतीय मुसलमान नौ मृत आतंकवादियों को मुस्लिम कब्रिस्तानों में दफनाए जाने के खिलाफ भड़क उठे थे। कारण यह था कि भारतीय मुसलमानों ने अंधाधुंध हत्याओं की निंदा की और ऐसे लोगों को मुसलमान नहीं माना। इस पुस्तक के

पांचवें खंड में, मानेक प्रेमचंद के अध्ययन के माध्यम से, ‘भारतीय मुसलमान’ शीर्षक से विस्तृत विश्लेषण शामिल है।
इसी कारणवश, उनके ईद समारोह भी फीके रहे, और समुदाय ने स्वेच्छा से काले बैंड पहनने का विकल्प चुना, जो उन निर्दोष लोगों के लिए शोक का प्रतीक था जो दुर्भाग्यवश गुमराह पाकिस्तानी मुसलमानों के शिकार हुए, जिन्होंने अल्लाह के नाम पर यह सब करने का दावा किया था।
इस त्रासदी का दायरा इस अध्याय में समाहित नहीं किया जा सकता। कई लोगों का जीवन हमेशा के लिए बदल गया है। ऐसे कई मामले हैं जिनमें बच्चे माता-पिता की अनुपस्थिति से आहत हुए हैं; माता-पिता अपने बच्चों की मृत्यु से आहत हुए हैं; कई लोग लकवाग्रस्त हो गए हैं या सामान्य रूप से कार्य करने की क्षमता खो बैठे हैं। आशा की जा सकती है कि दुनिया उन आतंकवादी संगठनों पर कुछ लगाम लगाएगी जिन्होंने दूसरों की हत्या को एक आकर्षक व्यवसाय बना लिया है।
एक बेहद दुखद अध्याय का सुखद अंत करते हुए, भारतीय सरकार ने सुरक्षा बलों के कई सदस्यों को नकद पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र और सम्मान प्रदान किए हैं, लेकिन राष्ट्र को तुकाराम ओम्बले के सामने नतमस्तक होना चाहिए। यह वही एक व्यक्ति थे जिन्होंने बहादुरी से भारत को उस भयावह रात से बचाया। और सोचिए, इस ऐतिहासिक कार्य के लिए उनके पास मात्र एक लाठी थी!
लोकप्रिय भारतीय फिल्म अभिनेता अक्षय कुमार ने भी आगे बढ़कर ओम्बले के परिवार को 5 लाख रुपये का चेक देकर अपना योगदान देने का फैसला किया।
यह दुखद है कि चौपाटी में इस्माइल खान के मारे जाने और कसाब की गिरफ्तारी के बावजूद, सारा ध्यान और एकाग्रता कामा अस्पताल पर ही केंद्रित रही, क्योंकि यहाँ करकरे, कामते और सालस्कर की मृत्यु हुई थी। चौपाटी के इन गुमनाम और बहादुर जवानों को, जिन्होंने एक को मारने और दूसरे को गिरफ्तार करने में मदद की, कोई पदक नहीं दिया गया। ओम्बले भी तब तक अनसुने रहे जब तक कि एक पत्रकार, श्री शेनॉय ने उनके बारे में अखबारों में नहीं लिखा और लोगों का ध्यान इस असाधारण पुलिसकर्मी की वीरता की ओर नहीं दिलाया। क्या किसी को पता है कि दस्ते के नेता की हत्या किसने की? यह समझा जा सकता है कि इससे पुलिस बल का मनोबल कैसे गिर सकता है, क्योंकि उन्हें लगता है कि उनकी बहादुरी को पहचान और पुरस्कार नहीं मिल रहा है। यह उन बहादुरों के साथ अन्याय है जिन्होंने लड़ाई लड़ी और जीवित रहने में कामयाब रहे। उनकी उपलब्धि को दोहरा सम्मान माना जाना चाहिए। भारत को उन्हें भी पुरस्कृत

करना चाहिए। जैसा कि हमने कामा अस्पताल और चौपाटी दोनों जगह देखा है, आम लोग भी हमें बहुत कुछ सिखा सकते हैं।
यहां हिंदुस्तान टाइम्स की इस महान व्यक्तित्व पर रिपोर्ट है:
डीबी मार्ग पुलिस स्टेशन के ड्यूटी इंचार्ज गंगाराम सुतार बताते हैं, “मैंने ओम्बले को गिरगाँव चौपाटी पर रात्रि ड्यूटी पर तैनात किया था। ओम्बले क्रिकेट के शौकीन थे और हम दोनों उस रात मैच देख रहे थे। उन्हें ड्यूटी पर जाने का मन नहीं था।” सुतार आगे बताते हैं कि ओम्बले जल्दी काम खत्म करना चाहते थे। जैसा कि पहले बताया गया है, उन्होंने अपने वरिष्ठ अधिकारी से मज़ाक में कहा, “चूँकि चौपाटी रात 1 बजे के बाद बंद होती है, इसलिए आज मैं ड्यूटी पर ही सो जाऊँगा।” उन्हें उस रात यह नहीं पता था कि वह हमेशा के लिए सो जाएँगे और चौपाटी रात 1 बजे के बाद बंद नहीं होगी। जैसे ही पुलिस बैरिकेड के कारण आतंकवादियों को ले जा रही कार धीमी हुई, वह कसाब की ओर दौड़े और एके-47 छीन ली। कुछ ही पलों में उनके सीने में पाँच गोलियाँ लगीं, लेकिन उन्होंने तब तक हथियार नहीं छोड़ा जब तक उनके साथियों ने हमलावर को पकड़ नहीं लिया। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि उनके परिवार के एक सदस्य ने कहा, 'मैं उस दिन का इंतजार कर रहा हूं जब कसाब को सजा मिलेगी।' बाद में ओम्बले के बारे में कई कहानियां सामने आईं। ऐसा माना जाता था कि सतारा के तुकाराम ओम्बले से बेहतर कोई नहीं जानता था कि उनके इलाके में खलल डालने वाले खतरनाक सांपों को कैसे काबू में किया जाए। उन्हें हमेशा से पता था कि सही तरीका निडर होकर, सिर्फ एक छड़ी की मदद से ऐसा करना है।
जी हां, तुकाराम उस रात अपने कर्तव्य के दौरान सोए थे। लेकिन उनकी नींद साधारण नींद नहीं थी, यह वह नींद थी जिसने भारत को जगाया। और यह उस व्यक्ति की नींद थी जो अपने कर्तव्य को पूरा करने के कारण आत्मसंतुष्ट था।
अगर तुकाराम ओम्बले जीवित होते, तो शायद वे चेक लेकर ढेर सारी चॉकलेट खरीद लेते और बच्चों में बाँट देते, जैसा कि वे अक्सर किया करते थे। एक और चीज़ जिसमें वे माहिर थे, वह थी साँप। वे अपने गृह क्षेत्र के खेतों में मंडराने वाले साँपों को बड़ी कुशलता से पकड़ने में विशेषज्ञ थे।
गांधीजी अपनी लाठी के साथ अहिंसा का प्रतीक थे, जबकि तुकाराम ओम्बले की लाठी अब आतंक से ग्रस्त इन समयों में भारत के लिए कहीं अधिक शक्तिशाली प्रतीक बन जाएगी।

ताजमहल महल और मीनार

अहिंसा अच्छी बात है, लेकिन मशीनगन के सामने यह अच्छी नहीं है। – राम रामचंदानी
मुझे खेद है कि मेरे पास अपने देश के लिए बलिदान करने के लिए केवल एक ही जीवन है। – सीआईटी अधिकारी प्रेम आर. रामचंदानी (1941–1965)
मैं गर्व से कह सकता हूँ कि संदीप ने इस देश के लिए कुछ किया है। – के. उन्नीकृष्णन
अगर आप भारतीय सेना में सेवा नहीं करते हैं, तो जीवन जीने लायक नहीं है।
- मेजर संदीप उन्नीकृष्णन (1977-2008)
मुंबई के दक्षिणी छोर के पास ताज महल होटल और अरब सागर के बीच मुश्किल से एक सड़क का टुकड़ा है - प्रेम रामचंदानी मार्ग।
1941 में अविभाजित भारत में जन्मे प्रेम रामचंदानी सिंध के सफल वकीलों के परिवार से थे। विभाजन के बाद, सिंध के अधिकांश हिंदू भारत चले गए क्योंकि सिंधी हिंदुओं का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सांप्रदायिक सफाया शुरू हो गया था।
प्रेम के पिता राम रामचंदानी अपनी गर्भवती पत्नी और सात वर्षीय बेटे प्रेम के साथ बंबई के लिए रवाना हुए। प्रेम और उनके छोटे भाई का पालन-पोषण यहीं हुआ, वे ताज महल होटल से कुछ ही मिनटों की दूरी पर रहते थे। प्रेम ने भारतीय वायु सेना (आईएएफ) में भर्ती होकर नंबर 3 स्क्वाड्रन (कोबरा) में पायलट का पद प्राप्त किया। तीन साल बाद उन्हें भारतीय हवाई क्षेत्र में घुसपैठ करने वाले पाकिस्तानी विमानों से मुकाबला करने के लिए एक हवाई मिशन पर भेजा गया। भारत की रक्षा करते हुए प्रेम के विमान पर गोलीबारी हुई और 26 सितंबर 1965 को चोटों के कारण प्रेम का निधन हो गया। उनकी आयु मात्र चौबीस वर्ष थी। बाद में उन्हें उनकी वीरता के लिए मरणोपरांत वीर चक्र से सम्मानित किया गया।
29 नवंबर 2008 की सुबह-सुबह, ताज होटल की पहली मंजिल की खिड़की के ठीक सामने, जहाँ से एक आतंकवादी लगातार गोलीबारी कर रहा था और अपने आखिरी ग्रेनेड फेंक रहा था, उगते सूरज की किरणें एक पट्टिका पर पड़ रही थीं। उस

का शासन था, तब भारतीयों को अच्छे होटलों और क्लबों में प्रवेश करने की मनाही थी। जमशेदजी टाटा, जो एक भारतीय पारसी पारसी थे, को इंग्लैंड के एक होटल में प्रवेश नहीं दिया गया। इसी घटना ने उन्हें भारत में एक उत्कृष्ट होटल बनाने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, 1902 में बॉम्बे में ताज महल होटल अस्तित्व में आया। होटल में सभी के लिए बिना किसी प्रतिबंध के प्रवेश की नीति है, और आज यह टाटा इंडियन होटल्स लिमिटेड का प्रतिष्ठित प्रमुख होटल है।
यह भव्य इमारत अतीत और वर्तमान के सुंदर संगम और पूरब द्वारा पश्चिम के सौम्य स्वागत का प्रतीक है। कला प्रेमियों के लिए तो यह एक अनमोल कृति है ही, साथ ही मुंबईवासियों के लिए भी यह बेहद प्रिय है क्योंकि यह एक सशक्त, प्रगतिशील और बुद्धिमान भारत का प्रतिनिधित्व करती है जो अपनी संस्कृति में दृढ़ रूप से निहित है। इस होटल को उड़ाने की योजना बनाने वालों ने इसके महत्व को भलीभांति समझा। ताज महल होटल का विनाश भारतीय मनोबल को घातक आघात पहुंचा सकता था। पाकिस्तान ने बार-बार भारत की उपलब्धियों को नष्ट करने का प्रयास किया है। सीमा पार आतंकवाद, जाली नोट, आतंकी हमले - उसने इन सभी तरीकों का इस्तेमाल कभी न कभी किया है।
कम से कम चार आतंकवादियों के लगातार हमलों के बावजूद, ताज होटल की पत्थर की संरचना मजबूती से खड़ी रही और अपनी जगह पर टिकी रही। शायद, वर्षों से होटल के प्रति लोगों की सद्भावना ही वह रहस्यमयी शक्ति थी जिसने ताज होटल की रक्षा की।
चूंकि मैं ताजमहल के पास ही रहता हूँ, इसलिए उन तीनों सुबहों में मैं वहाँ गया जब उस पर आग का साया था। ये सुबह की यात्राएँ मेरे लिए तीर्थयात्रा के समान थीं, जिनमें मैं ईश्वर के हर रूप से गहरी प्रार्थना करता था। हर सुबह, भव्य होटल से निकलती आग और धुएँ से भोर की सुंदरता धूमिल हो जाती थी। वहाँ खड़े कई अन्य लोगों की तरह, जलते हुए ताजमहल को सन्नाटे में देखते हुए, मैं सोचता रहता था कि क्या यह कभी रुकेगा। आखिरी सुबह भी, जब मैंने धुआँ उठता देखा, तो मैंने पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की। कुछ ही मिनटों में, आग बुझाने का काम समाप्त हो गया और हमने ईश्वर का धन्यवाद किया।
दक्षिण दिशा में, यानी नॉर्थकोट नर्सिंग होम की तरफ, ताज महल को सबसे ज़्यादा नुकसान हुआ था; वहाँ हममें से कुछ लोगों ने कुछ ऐसा देखा जिससे हमारा हौसला बढ़ा। उन सुबहों में, सूर्योदय की सन्नाटा पसरा रहता था और

मोटरसाइकिल की आवाज़ से सन्नाटा टूट जाता था। एक आदमी मोटरसाइकिल से उतरता और कॉर्निश पर खड़े होकर ताज महल के सामने प्रार्थना करता, घेराबंदी के जितना करीब हो सकता था, उतना करीब जाता। वह 'ओम भूर्भुवस', 'सूर्य नमः' जैसे भजन गहरी, बुलंद आवाज़ में गाता, इतनी तेज़ कि ताज के केंद्रीय गुंबद तक पहुँच जाती। दमकलकर्मी, कमांडो, पुलिसकर्मी और आम नागरिक, सभी चुपचाप उसकी आवाज़ सुनते। गोलियों की आवाज़ गूंजने के बावजूद, वह सूर्य और समुद्र की ओर मुख करके अपना पाठ जारी रखता, ताज का एक हिस्सा उसके बाईं ओर और पीछे आग की लपटों में घिरा होता। गोलियों की आवाज़ के बावजूद, उसकी आवाज़ कभी नहीं काँपी और न ही उसने सूर्य के अलावा कहीं और देखा।
कुछ लोग मुस्कुराए, लेकिन किसी ने उन्हें रोका नहीं। मैं आभारी था – ताज के निर्दोष मृतकों के पास पढ़ी जाने वाली ये सबसे पहली प्रार्थनाएँ थीं। दूसरे दिन, मैंने देखा कि कुछ कमांडो उन्हें हैरानी भरे भाव से देख रहे थे। एक बार, जब उन्होंने प्रार्थना समाप्त कर ली, तो मैंने उनसे समय और स्थान चुनने का कारण पूछा। उन्होंने उत्तर दिया, 'अगर मैं अभी, यहीं प्रार्थना नहीं करूँगा, तो फिर कहाँ और कब? मेरे लिए राम और रहीम एक ही ईश्वर के दो रूप हैं।'
मुझे उसकी चिंता थी। हिंदू मंत्रों की आवाज़ सुनकर कोई आतंकवादी उस पर हमला कर सकता था। लेकिन मुझे लगता है कि किसी चीज़ ने उसकी रक्षा की, हालांकि मुझे ठीक से पता नहीं कि वह क्या थी। प्रार्थना के बाद, वह धीरे- धीरे दूर चला जाता, जब तक कि वह नज़रों से ओझल न हो जाए।
ताज महल होटल के पास ही तीन लोगों की जान चली गई, जो होटल में ठहरे एक स्थानीय विधायक से मिलने गए थे। उनके नाम इस प्रकार हैं:
1. इकलाक अहमद मुश्ताक, 29 वर्ष, उत्तर प्रदेश निवासी।
2. मकसूद शेख, 50 वर्ष, उत्तर प्रदेश निवासी।
3. फिरोज जे. खान, 50 वर्ष, उत्तर प्रदेश से।
ताज महल होटल में हताहतों की कुल संख्या 30 है।
भारतीय – 23; विदेशी – 7
सुरक्षाकर्मी – 2; नागरिक – 28
18 वर्ष से कम आयु के बच्चे – 2; वरिष्ठ नागरिक – 4.

No.	Name	Age	Resident of, Misc info
1.	Major Sandeep Unnikrishnan	32	NSG
2.	Police Constable Rahul Shinde	20	SRPF
3.	Gautam Singh Gosain	22	staff
4.	Rahamathulla Shaukat Ali	53	staff
5.	Rajan Kamble	49	staff
6.	Vijay Banja Rao	48	staff
7.	Paustine Martis	48	staff
8.	Thomas Varghese	48	staff
9.	Rabindra Jagan Kuwar	32	staff
10.	Kaizad Kamdin	28	staff
11.	Hemant Talim	27	staff
12.	Sadanand Patil	25	staff
13.	Zaheen Mateen	25	staff
14.	Boris Rego	23	staff
15.	Rupinder Randhava	29	staff family
16.	Uday Singh Kang	12	staff family
17.	Neeti Singh Kang	38	staff family
18.	Samar Veer Kang	5	staff family
19.	Sabina Sehgal Saikia	46	staff family
20.	Rajiv Saraswat	45	guest, Indian
21.	Nilam Narang	52	guest, Indian

No.	Name	Age	Resident of, Misc info
22.	Vishnu Narang	62	guest, Indian
23.	Gunjan Narang	32	guest, Indian
24.	Hemlata Kasipillai	51	guest, Malaysia
25.	Williem-Jan Berbers	57	guest, Belgium/ Netherlands
26.	Ralph Burkei	51	guest, Germany
27.	Andreas Liveras	73	guest, U.K.
28.	Chaitlal Gunness	54	guest, Mauritius
29.	Douglas Markell	73	guest, Australia
30.	Elizabeth Russell	65	guest, Canada

घटनाओं के क्रम का एक मोटा अनुमान
बडवार पार्क में उतरने के तुरंत बाद, दस आतंकवादियों में से चार ने ताज महल होटल जाने के लिए टैक्सी ली। रीगल सिनेमा गोलचक्कर पर ट्रैफिक जाम के कारण टैक्सी रुक गई। जाम से निकलने के बाद, टैक्सी लियोपोल्ड कैफे के ठीक सामने रुकी और शोएब और नाज़िर उतर गए। बाकी दो आतंकवादी, अब्दुल रहमान बदा और अबू अली, टैक्सी से आगे ताज महल होटल गए। संभवतः यही वे दोनों थे जिन्होंने रास्ते में ताज महल होटल के पीछे गोकुल रेस्टोरेंट के खुले गलियारे में एक टाइम बम रखा था। उन्होंने गेटवे ऑफ इंडिया के सामने होटल के मुख्य प्रवेश द्वार के बाहर पुलिस चौकी के पास टाइलों के ढेर के पास एक और बम भी रखा था। सौभाग्य से, ये दोनों बम समय रहते खोज लिए गए और निष्क्रिय कर दिए गए। लेकिन आठ से दस किलोग्राम आरडीएक्स से भरा आईईडी, जिसे इन चार आतंकवादियों में से एक ने उस टैक्सी की पिछली सीट पर रखा था जिसमें वे यात्रा कर रहे थे, वादी बंदर के पास फट गया, जिससे टैक्सी चालक सहित तीन लोगों की मौत हो गई। चौथे बम ने ताजमहल की संरचना को सबसे अधिक नुकसान पहुंचाया, क्योंकि इसने गुंबद को अंदर से क्षतिग्रस्त कर दिया।
आतंकवादियों की बात करें तो, अब्दुल रहमान बदा और अबू अली ने होटल में घुसने से पहले सबसे पहले खोजी कुत्ते को निशाना बनाया और उसे गोली मारकर मार डाला। फिर दोनों होटल के मुख्य द्वार से अंदर दाखिल हुए। शोएब और नाज़िर, लियोपोल्ड ऑपरेशन खत्म करने के बाद, ताज होटल की ओर जाने वाली गली में भागे और रास्ते में कुछ लोगों को मार डाला। यह स्पष्ट नहीं है कि उत्तर प्रदेश के जिन तीन लोगों का पहले ज़िक्र किया गया था, उन्हें इन दोनों टीमों में से किसने मारा। मेरा अनुमान है कि यह लियोपोल्ड ऑपरेशन वाली टीम ने किया होगा, क्योंकि वे ताज होटल की ओर जाते हुए गोलीबारी कर रहे थे और मुश्ताक, शेख़ा और खान, लियोपोल्ड और ताज होटल के बीच कहीं उनके रास्ते में आ गए होंगे। फिर वे नॉर्थकोट नर्सिंग होम की तरफ भागे और इस छोटे, सादे से प्रवेश द्वार से ताज होटल में घुस गए। यह प्रवेश द्वार न तो ज़्यादा इस्तेमाल होता है और न ही ज़्यादा जाना-पहचाना है।
चूंकि मेरा घर अन्य दो भव्य प्रवेश द्वारों की तुलना में इस प्रवेश द्वार के अधिक निकट है, इसलिए मैंने अक्सर ताज महल में प्रवेश करने के लिए इस रास्ते का उपयोग करने का प्रयास किया है, लेकिन सफलता नहीं मिली। अधिकांश

शामों को मैंने इस प्रवेश द्वार पर ताला लगा हुआ पाया। मुझे आश्चर्य होता है कि उस रात 9:30 बजे के बाद भी यह कैसे खुला रहा।
दोनों ने यहीं से प्रवेश किया और स्विमिंग पूल क्षेत्र में अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और फिर बगल के शामियाने की ओर बढ़ गए।
ताज होटल के चार आतंकवादियों (संभवतः और भी थे) ने बुधवार, 26 नवंबर 2008 को रात 9:45 बजे से लेकर 29 नवंबर 2008 को सुबह लगभग 8:15 बजे तक होटल को बंधक बनाए रखा, यह घेराबंदी लगभग साठ घंटे तक चली।
ओबेरॉय-ट्राइडेंट के विपरीत, यहाँ उनकी योजना कहीं अधिक घातक थी - होटल के बाहर बम लगाकर और गुंबद पर बमबारी करके, उनका इरादा न केवल होटल बल्कि उसके आसपास के क्षेत्र में भी आग लगाने का था।
सबसे उम्रदराज होने के नाते, अट्ठाईस वर्षीय नाज़िर उर्फ अबू उमर संभवतः ताज महल होटल में इन चार आतंकवादियों का नेतृत्व कर रहा था। पाकिस्तान के पंजाब निवासी नाज़िर ने लियोपोल्ड और ताज दोनों होटलों पर हमला किया और मुंबई की सड़कों पर भी लोगों को मार डाला। यदि अलग अध्याय में उपलब्ध कराए गए दस्तावेजों का विश्लेषण किया जाए, तो संभव है कि वह इस ऑपरेशन में मारा जाने वाला पहला व्यक्ति भी था।
हो सकता है कि होटल की छठी मंजिल पर कुछ अन्य लोग भी रहे हों, जो उनके साथ शामिल थे। यह महज़ एक संभावना नहीं है कि कुछ षड्यंत्रकारी या साथी आतंकवादी ताज होटल में छिपे हुए थे।
ताज में मोटे तौर पर यही सब हुआ था।
26 नवंबर 2008 की रात, मुंबई में कई जगहों पर बंदूकधारियों द्वारा अंधाधुंध फायरिंग शुरू होने के तुरंत बाद—जिसके बाद ताज महल पैलेस और टावर पर घेराबंदी शुरू हुई—साजन कपूर को मुंबई पुलिस के माहिर मुठभेड़ विशेषज्ञ पुलिस इंस्पेक्टर विजय सालस्कर का फोन आया। श्री सालस्कर ने कपूर को होटल पहुंचने, भीड़ में शामिल होने, स्थिति का जायजा लेने और उन्हें रिपोर्ट करने के लिए कहा। कपूर स्पष्ट रूप से सालस्कर के भरोसेमंद गुप्त जासूस थे। जब कपूर ताज महल पहुंचे, तो उन्हें दो अन्य विदेशियों के साथ बंधक बना लिया गया। उन्हें छठी मंजिल पर कमरा नंबर 630 (कुछ लोग इसे 632 बताते हैं) में ले जाया गया और कई घंटों तक बंधक बनाकर रखा गया। साजन कपूर ने बताया कि वह कमरा बंदूकधारियों का ऑपरेशनल बेस था, जहां भारी

मात्रा में गोला-बारूद का भंडार था। उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया कि वे पांच सितारा होटल में इतने बड़े जखीरे की तस्करी कैसे कर पाए।
इसके अलावा, उन्होंने खुलासा किया कि सत्रह लोग आतंकवादी थे। उन्होंने उन्हें देखा था, वे सभी कमरे में आ-जा रहे थे। वे अपने मोबाइल और सैटेलाइट फोन के ज़रिए कराची में किसी से बात कर रहे थे। पाकिस्तानी कठपुतली नचाने वाले कई टेलीविजन चैनलों पर हमलों का सीधा प्रसारण देखकर जानकारी हासिल कर रहे थे और इन गुर्गों को निर्देश दे रहे थे। कपूर ने बंदूकधारियों के बीच हुई बातचीत को दोहराया:
‘यार, इन भारतीय नेताओं के पास कितना पैसा है?’ (अरे, इन भारतीय नेताओं के पास कितना पैसा है?), एक युवक ने दूसरे से पूछा। दूसरे ने (कपूर के सामने) जवाब दिया – ‘तेरे को क्या लेने का – तुम्हें मिल गया ना पैसा।’ (तुम्हें इसकी चिंता क्यों है, तुम्हें अपना पैसा मिल गया ना?)
कपूर ने पैसों को लेकर उनके बीच हुए झगड़े के बारे में बताया। उन्होंने यह भी खुलासा किया कि उनका नेता, जो कुछ लेने नीचे गया था, होटल की दूसरी या तीसरी मंजिल पर मारा गया था – इससे अफरा-तफरी मच गई और इसी वजह से मतभेद और हिंसक झड़पें हुईं।
इसके बाद के घंटों में, जब कामा अस्पताल के पास गोली लगने से सालस्कर की मौत हो गई, तो उसके चुने हुए साथी साजन कपूर ने एक आतंकवादी का विश्वास जीत लिया, इतना कि उसे रसोई में जाकर उनके लिए कुछ खाना लाने को कहा गया। हालाँकि उनके पास पर्याप्त सूखे मेवे थे, फिर भी वे बेहतर भोजन चाहते थे। एक आतंकवादी ने दूसरे को कपूर को बाहर जाने से मना किया, क्योंकि उसे डर था कि वह वापस नहीं लौटेगा; पहले आतंकवादी ने जवाब दिया, 'चिंता मत करो, ये हमारा आदमी है।' फिर उसे खाना लाने को कहा गया। साजन कपूर चला गया और बिना किसी के रोके या उसकी पहचान पूछे शांति से होटल से बाहर निकल गया। वह होटल के पीछे वाले सर्विस एग्जिट से बाहर निकला।
सवाल यह है कि ऐसे कितने और लोग होंगे जो इसी तरह भाग निकले होंगे? क्या कपूर भी कोई आतंकवादी था जो भाग निकला या वह सादे कपड़ों में एक पुलिसकर्मी था? इस साक्षात्कार के बाद से उसके बारे में कोई खबर नहीं मिली है।
बाहरी लोगों के लिए स्पष्ट रूप से 'प्रवेश निषेध' का आदेश क्यों नहीं दिया गया था? जब ऑपरेशन चल रहा था तब रतन टाटा खुद होटल के अंदर नहीं गए, तो अबू

आज़मी और मॉरीशस के राजनयिक और उनके मित्र जैसे अन्य लोगों को होटल में प्रवेश करने का क्या अधिकार था? साजन कपूर बिना पूछताछ के होटल से निकल गए, वे वर्दी में भी नहीं थे और ऐसा करने वाले वे अकेले नहीं थे। प्रधानमंत्री और विपक्ष के नेता दोनों ही इन स्थानों तक, चाहे बाहर हों या अंदर, नहीं पहुँच सके, जबकि अन्य लोग वहाँ तक पहुँचने में सक्षम थे जहाँ बंधक छिपे हुए थे। इस तरह के अभियान में आदेश केवल एक ही व्यक्ति से क्यों नहीं लिए जाते? इस विषय पर गहन अध्ययन की तत्काल आवश्यकता है।
फ्रांकोइस गौटियर की रिपोर्ट के अनुसार, एरिका मान ने आतंकवादियों की संख्या केवल चार होने पर संदेह व्यक्त किया है।
उनका नाम एरिका मान है, वह जर्मनी की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी से यूरोपीय संसद की सदस्य हैं और व्यापारिक संबंधों पर बातचीत के लिए मुंबई में थीं। जब पहली गोलियों की आवाज सुनाई दी, तब एरिका मान ताज होटल की लॉबी के भूतल पर स्थित रेस्तरां में अपने कुछ भारतीय मित्रों के साथ खाना खा रही थीं। सभी को लगा कि पहली गोलियां पटाखे थे—लेकिन एरिका को ऐसा नहीं लगा, क्योंकि उन्हें आतंकवाद के बारे में कुछ जानकारी थी। आज वह याद करती हैं, 'मुझे लगा कि शायद यह किसी शादी में दी जाने वाली तोपों की सलामी है।' लेकिन मान कहती हैं कि इसके बाद जो हुआ वह 'बेहद भयानक' था, क्योंकि उन्होंने आतंकवादियों को लॉबी में घुसकर 'हर हिलती-डुलती चीज पर गोलियां चलाते' सुना।
मुंबई हमलों के दौरान हमने टेलीविजन पर जो कुछ देखा और बाद में सुना, वह सब नेतृत्व की कमी को दर्शाता था। महाराष्ट्र सरकार की प्रतिक्रिया धीमी थी, विशेष कमांडो को मुंबई पहुंचने में लगभग बारह घंटे लगे, और किसी ने भी कार्रवाई का ठीक से समन्वय नहीं किया।
लेकिन ताज महल होटल के अंदर कहानी कुछ और ही थी – एरिका मुस्कुराते हुए कहती हैं, ‘हम चालीस लोगों का एक समूह था जो किसी तरह रेस्टोरेंट से रसोई तक भाग निकला, और दस मिनट के भीतर ही चार लोगों ने लगभग नेताओं की तरह दूसरों की जिम्मेदारी संभाल ली।’ ऐसे तनावपूर्ण हालात में नेता बनना कैसा होता है? ‘दरअसल, ऐसी स्थिति में सोचना पड़ता है, जानकारी इकट्ठा करनी पड़ती है और फिर दोबारा सोचना पड़ता है।’ एरिका ने इस तरह अपना काफी समय अपने ब्लैकबेरी फोन पर जानकारी जुटाने में बिताया।. . . कुछ लोगों ने तो हथियार भी ढूंढने शुरू कर दिए और कबाब भूनने के लिए इस्तेमाल होने वाली

लोहे की छड़ें उन्हें काफी काम की लगीं।. . . एरिका याद करती हैं, ‘हमारे समूह में दस कर्मचारी थे। इनमें से सात लोग कुशल थे और उन्होंने हमारी भलाई से ऊपर अपनी सुरक्षा को अहमियत नहीं दी।’ बस एक ही व्यक्ति ऐसा था जो गड़बड़ कर रहा था: ‘हमारे समूह में एक सांसद भी थे, जिनका नाम मैं नहीं लूंगी। बाद में, जब हम चैंबर्स में पहुँच गए थे, उन्होंने फोन पर किसी टीवी रिपोर्टर से बात की और हमारी लोकेशन बता दी – हम सब मारे जा सकते थे।’ ताजमहल के कर्मचारियों की निगरानी में, एरिका और उसका समूह रसोई से निकलकर ताजमहल कक्षों की ओर जाने वाले गलियारे में पहुँच गया। वहाँ वे अन्य बंधकों से मिल गए, जिससे उनकी संख्या सौ हो गई।. . . फिर भी, स्थिति बहुत नाजुक थी: 'हमें किसी भी समय गोली मारी जा सकती थी।'
एरिका ने करीब आठ अरबी जैसे दिखने वाले लोगों के एक छोटे समूह को देखा जो आपस में ही मग्न थे: 'मैंने खुद को चुटकी काटी, क्योंकि मुझे तुरंत उन पर शक हुआ। लेकिन मैं समझ गई कि मैं अकेली नहीं थी जो उन्हें अजीब नज़र से देख रही थी, हालांकि मुझे यकीन है कि वे निर्दोष थे।' एरिका, कई अन्य बंधकों की तरह, ताजमहल के कुछ कर्मचारियों को भी संदिग्ध समझ रही थी: 'मेरे समूह के कुछ सदस्यों को लगा कि एक सहायक, जो ऐसा व्यवहार कर रहा था जैसे कुछ हुआ ही न हो, कुछ छिपा रहा है और उन्होंने दूसरों से फुसफुसाकर कहा कि उसे कुछ न बताएं।' तभी एरिका ने एक निकास द्वार देखा जिस पर दूसरों का ध्यान नहीं गया था। अपने समूह के एक अन्य सदस्य, ऑस्ट्रिया के टायरॉल के एक सज्जन के साथ, उन्होंने सावधानी से उसे खोला, एक दूसरे दरवाजे के सामने आ गए और अचानक वे बाहर थे। 'हमारी पहली प्रतिक्रिया थी "चलो देखते हैं, क्या हम इतना बड़ा जोखिम उठा सकते हैं?"' उन्होंने ऐसा नहीं किया। लेकिन बाद में, एरिका ने कहा: 'बाहर निकलो, बस बाहर निकलने के बारे में सोचो। मैंने गलती की।' अगर आप न्यूयॉर्क में 9/11 की घटना देखें, तो केवल वही लोग जीवित बच पाए जिन्होंने तुरंत बाहर निकलने की कोशिश की। बाकी सब मारे गए।’ वे वापस गलियारे में गए और एक चैंबर्स रूम में सुबह 3:00 बजे तक सैनिकों के आने का इंतजार करते रहे। ‘वहाँ लगभग बत्तीस सैनिक थे, उनके पास पर्याप्त उपकरण नहीं थे, उन पर काम का बोझ बहुत अधिक था और वास्तव में कोई भी प्रभारी नहीं दिख रहा था।’
एरिका आज क्या कहती हैं? ‘तब से लेकर अब तक के इन बहत्तर घंटों के बारे में मैं बहुत सोच रही हूँ। इस हमले में युवाओं की भूमिका मुझे अब भी हैरान करती

है। यह सच है कि उन्हें बहकाया गया था, लेकिन वे ऐसा कैसे कर सकते थे? मुझे उनके लिए न तो पहले और न ही बाद में कोई सहानुभूति है।’
उन्हें भी संदेह है: 'मुझे यकीन है कि ताज में तीन से अधिक आतंकवादी थे - हमने खुद उनमें से काफी लोगों को देखा।'
ताज महल होटल में एक विशाल केंद्रीय गुंबद, चार छोटे कोने वाले गुंबद और दो मीनारनुमा गुंबद हैं - एक आधुनिक ताज महल की ओर और दूसरा नॉर्थकोट नर्सिंग होम की ओर। जब छठी मंजिल पर आग लगी, तो नॉर्थकोट नर्सिंग होम की ओर वाले होटल के एक गुंबद को बुरी तरह से नुकसान पहुंचा। केंद्रीय मुख्य गुंबद को भी अंदर से काफी क्षति पहुंची।
57 वर्षीय नीदरलैंड निवासी विलियम जान-बर्बर्स व्यापारिक यात्रा पर भारत में थे। वे दो सप्ताह से भारत में थे और बुधवार शाम को मुंबई पहुंचे थे। होटल के रिसेप्शन पर चेक-इन करते समय उन पर गोली चलाई गई। बेल्जियम निवासी जान-बर्बर्स पांच बच्चों के पिता थे - संभवतः ताज होटल में मारे जाने वाले वे पहले व्यक्ति थे।
मुंबईवासियों के बीच 'पुराने ताज' के नाम से मशहूर ऐतिहासिक ताज पैलेस की छठी मंजिल पर स्थित कमरा नंबर 630 के पास कांग परिवार के तीन सदस्य ठहरे हुए थे। पास के ही एक अन्य कमरे में मलेशियाई नागरिक हेमलता कासापिल्लई थीं। दोनों कमरों में धुआं भर गया और चारों की धुएं के कारण दम घुटने से मौत हो गई।
कांग परिवार के अपार्टमेंट की सजावट चल रही थी और काम पूरा होने के बाद उन्हें होटल से दूसरे होटल में जाना था। नीति कांग और उनके बच्चे उदय और समर ताज होटल के अपने कमरे में थे जब धुएं के कारण दम घुटने से उनकी मौत हो गई।
मेरे मित्र सुरेश थडानी ने मुझे एक मित्र का ईमेल भेजा, जिसमें कांग परिवार पर आई त्रासदी के बाद की स्थिति का वर्णन था। कांग परिवार के करीबी श्री जोगेंद्र सिंह ने लिखा:
मैं अभी मुंबई से लौटा हूँ। यह कोई सैर-सपाटा या छुट्टी मनाने की यात्रा नहीं थी। मैं ताज होटल में हुए आतंकवादी हमले में अपनी भतीजी और उसके दो बेटों के अंतिम संस्कार में शामिल होने गया था। उसके पति करमबीर सिंह कांग ताज होटल के महाप्रबंधक थे। सब कुछ खो जाने का एहसास होने के बाद भी वे मेहमानों की मदद करते रहे। संयोग से, करमबीर के पिता, मेजर जनरल

(सेवानिवृत्त) कांग (इंटरनेशनल कोर), पूर्व एनडीए 22 वीं कोर्स किलो स्क्वाड्रन के अधिकारी हैं। वे कैंसर से पीड़ित हैं। जब उनकी बहू और पोते- पोतियों के ताबूत लाए गए, तो वे खड़े हो गए और प्रार्थना के दौरान भी खड़े रहे। मैं उस समय उनके बगल में खड़ा था और थोड़ी देर बाद, मैंने उन्हें बैठने के लिए कहा, क्योंकि मैंने देखा कि वे लड़खड़ाने लगे हैं। उन्होंने मुझसे कहा, 'बर्टी, मैं एक सिपाही हूँ। मैं दुनिया को रोते हुए नहीं दिखाऊँगा और न ही मेरा बेटा ऐसा होने देगा।' उस समय मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे।
फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं एनडीए से हूँ। जब मैंने उन्हें बताया कि मैं एनडीए से हूँ, तो उन्होंने कहा, 'बर्टी, हम एनडीए वालों में बहुत हिम्मत और हौसला होता है। चिंता मत करो।' संयोग से, मेरे साथ खड़े रतन टाटा की आँखों से आँसू बह रहे थे। सादर, बर्टी।
करमबीर कांग को 19 जनवरी 2009 को द इकोनॉमिक टाइम्स द्वारा 'कॉर्पोरेट सिटिजन ऑफ द ईयर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अपने स्वीकृति भाषण में, जो भावुकता से रहित था, उन्होंने 'ताज परिवार' की ओर से पुरस्कार स्वीकार किया। उन्होंने आगे कहा, 'यह सम्मान न केवल ताज के कर्मचारियों के लिए एक गौरव है, बल्कि भारत की सच्ची भावना की पहचान है... किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण हमें उन भयावह दिनों में जो कुछ हमने झेला, उसके लिए तैयार नहीं कर सकता था...'
टाइम्स ऑफ इंडिया की खाद्य समीक्षक और सलाहकार संपादक सबीना सहगल सैकिया थकान के कारण समय से पहले अपने कमरे में लौट आई थीं। वह ताज महल होटल में अतिथि के रूप में (उनके 'गॉरमेट' सेक्शन के लिए काम करने के लिए) और होटल में एक शादी में शामिल होने के लिए मुंबई आई थीं। वह छठी मंजिल पर थीं, जहां हमले के दौरान भारी गोलीबारी हुई। उन्होंने खुद को बाथरूम में बंद कर लिया और वहीं से अपने पति को संदेश भेजकर बताया कि वह छिपी हुई हैं। अपने आखिरी संदेश में उन्होंने पति को बताया कि वह बिस्तर के नीचे हैं और आतंकवादी उनके बाथरूम में घुस आए हैं। यह संदेश 27 नवंबर को लगभग 2:00 बजे भेजा गया था। इसके बाद उनसे कोई संपर्क नहीं हो पाया। उनके पति ने बाद में पुष्टि की कि उनके शरीर पर कोई गोली या चोट के निशान नहीं थे - उनकी मृत्यु दम घुटने से हुई थी।

मलेशियाई नागरिक हेमलता कासिपिल्लई कमरा नंबर 637 में थीं। हनोवर री नामक एक जर्मन वित्तीय समूह में अंडरराइटर के रूप में कार्यरत, वह 25 नवंबर से 5 दिसंबर के बीच एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए मलेशिया से आई थीं। उनकी पोस्टमार्टम रिपोर्ट में कहा गया है कि उनकी मृत्यु भी धुएं के कारण दम घुटने से हुई थी। उन्होंने आखिरी बार 27 नवंबर 2008 को लगभग 1:00 बजे होटल के आंतरिक टेलीफोन का उपयोग करके दूसरे कमरे में एक सहकर्मी से बात की थी। उनके आंशिक रूप से जले हुए अवशेषों की पहचान उनके दुखी पति के. शिवकुमारन ने की, जो मलेशिया से आए थे। वह स्तब्ध थे, यह नहीं जानते थे कि अपनी किशोर संतानों को उनकी मां की मृत्यु की सूचना कैसे दें। दोनों रूस में मेडिकल छात्र के रूप में अध्ययनरत थे।
एक कनाडाई दंपत्ति की मृत्यु के स्थान का पता लगाने के प्रयास में, मुझे बार-बार एक पहेली का सामना करना पड़ा। इंटरनेट और समाचार पत्रों में दो कनाडाई वरिष्ठ नागरिकों, एलिजाबेथ रसेल और माइकल स्टुअर्ट मॉस के बारे में मिली विभिन्न जानकारियों में सामंजस्य स्थापित करना मेरे लिए असंभव था। जहाँ ताज महल होटल ने अपने लॉबी में एक ग्रेनाइट पट्टिका पर उनके नाम अंकित किए थे, वहीं रेलवे पुलिस के रिकॉर्ड में माइकल स्टुअर्ट मॉस की मृत्यु सीएसटी पर हुई गोलीबारी के परिणामस्वरूप बताई गई थी, जबकि एलिजाबेथ रसेल का नाम मृतकों की सूची में नहीं था। चूंकि रेलवे अधिकारी मुआवज़े के दावों को मंज़ूरी देने में बहुत सावधानी बरतते हैं, इसलिए मैंने यह मान लिया है कि ताज महल होटल ही वह स्थान था जहाँ एलिजाबेथ ने अंतिम सांस ली, जबकि माइकल की मृत्यु सीएसटी पर हुई। हालांकि, मैं यह भी बताना चाहूंगा कि कनाडा में आयोजित शोक सभाओं के दौरान, उनके परिवार के कुछ सदस्यों ने ओबेरॉय-ट्राइडेंट होटल को उनकी मृत्यु का स्थान बताया। ओबेरॉय-ट्राइडेंट होटल के वरिष्ठ प्रबंधन ने कई बार प्रयास करने के बावजूद, उन्हें भेजी गई नामों की सूची की पुष्टि या खंडन करने से साफ इनकार कर दिया है।
माइकल मॉस और एलिजाबेथ रसेल पहले भी भारत की यात्रा कर चुके थे और उन्हें यह जगह बहुत पसंद आई थी। हालांकि, माइकल मॉस के अकेले भारत जाने से कुछ दिन पहले, उन्होंने अपनी कई वर्षों की साथी से कहा कि उन्हें आभास हो रहा है कि यह उनकी आखिरी यात्रा होगी और वे शायद इस यात्रा में जीवित न बच पाएं। घबराकर, एलिजाबेथ ने उनके साथ जाने का फैसला किया, जबकि असल में यह एक

पूछा जाता और हमसे कभी भी पहचान पत्र दिखाने को नहीं कहा गया। सुबह करीब 11:45 बजे रविन और मैं ताज होटल की लॉबी में दाखिल हुए।'
एक बार फिर, यह स्पष्ट हो जाता है कि ऑपरेशन के दौरान लोगों को ताज में प्रवेश करने की अनुमति दी गई थी! वे वास्तव में वहीं बैठ गए और सुरक्षाकर्मियों से अपनी बात मनवाने की मांग करने लगे।
हमने सैकड़ों सैन्यकर्मियों और पुलिसकर्मियों के बीच ताज होटल के कर्मचारियों की पहचान करने की कोशिश की। आखिरकार हमें होटल के सुरक्षाकर्मी से बात करने का मौका मिला। शुरुआती पूछताछ के बाद उन्होंने एक कागज निकाला और हमने कमरा नंबर 551 में चैतलाल गुन्नेस का नाम देखा। इससे पुष्टि हो गई कि वह वहीं थे। हमने उनसे और जानकारी जुटाने को कहा। पंद्रह मिनट बाद वह वापस आए और बताया कि एक फ्लोर मैनेजर अनिल के संपर्क में था। हमने उस सज्जन से बात करने की ज़िद की। उन्हें चैतलाल गुन्नेस के तीन-चार फोन आए थे, जिसमें उन्होंने कहा था कि वह कमरा नंबर 551 में हैं और उन्हें बचाने की ज़रूरत है। उस समय कुछ भी नहीं किया जा सकता था क्योंकि आतंकवादियों ने होटल के उस हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया था। फ्लोर मैनेजर के पास एक 'सुरक्षित' लाइन थी और वह मेहमानों को कॉल कर सकते थे। हमने उनसे उस कमरे में कॉल करने का अनुरोध किया ताकि हम अनिल से बात कर सकें। उन्होंने वापस आकर बताया कि कमरे में रहने वाला व्यक्ति जानबूझकर लाइन काट रहा था। हमने अनुमान लगाया कि यह सुरक्षाकर्मियों के निर्देश पर हो रहा था। हम प्रतीक्षा करने के लिए लाउंज में बैठ गए और संवाद करने या किसी प्रकार की कार्रवाई के लिए दबाव डालने का जो भी अवसर मिला, उसका लाभ उठाया। ताज होटल से शवों को बाहर निकाला जा रहा था। हमने लगभग एक दर्जन शव गिने। मुझे लगा कि ऐसी असाधारण परिस्थितियों में, मन और शरीर उस असाधारण स्थिति के अनुरूप ढल जाते हैं। हम उन गतिविधियों से न तो भयभीत हुए और न ही भयभीत। बाद में हमने सेना के जवानों के साथ वड़ा पाव और पानी का भोजन किया। बोर्ड पर लगा टेलीफोन काम कर रहा था। मैं उसके पास गया और कमरा नंबर 551 पर कॉल करने की कोशिश की। कॉल नहीं लग पाई। (दोपहर 3:30 बजे) सेना हेरिटेज विंग को घेरने की तैयारी कर रही थी। हमें होटल से लगभग 150 मीटर दूर गेटवे पर जाकर शरण लेने के लिए कहा गया। सुरक्षा की दृष्टि से यह एक भयावह स्थिति थी। म्यूनिख के अखबार एबेंडज़ाइटंग के अनुसार, 51 वर्षीय जर्मन नागरिक राल्फ बर्कई हमले शुरू होने के बाद भागने की कोशिश में ऊपरी मंजिल से गिर गए और

बुरी तरह घायल हो गए। गिरने के तुरंत बाद उन्होंने अपने मोबाइल से एक दोस्त को फोन किया और कहा, 'मेरी सारी हड्डियां टूट गई हैं। अगर कोई मेरी मदद नहीं करेगा तो मैं बच नहीं पाऊंगा।' दुख की बात है कि अस्पताल ले जाते समय उनकी मृत्यु हो गई।
सबसे दुखद घटना नारंग परिवार के साथ घटी। गुंजन और उनके माता-पिता, नीलम और विष्णु नारंग, अगले दिन यानी 27 नवंबर को ताज होटल में उनका बत्तीसवां जन्मदिन मनाने गए थे। उनकी पत्नी, बहन, माता-पिता और सास-ससुर भी इस उत्सव में शामिल हुए थे। गुंजन और उनके माता-पिता की इस घटना में मृत्यु हो गई, जबकि उनकी 33 वर्षीय बहन झरना को बॉम्बे अस्पताल में लंबे समय तक दर्दनाक इलाज के बाद मार्च 2009 में अस्पताल से छुट्टी मिली, जहां वह जीवन और मृत्यु के बीच जूझ रही थीं। उनकी पत्नी श्रुति और उनके माता-पिता भी बाल-बाल बच गए। श्रुति और गुंजन की शादी को दो साल हो गए थे, हालांकि श्रुति पिछले दस सालों से उनकी प्रेमिका थीं। मुंबई मिरर की रिपोर्ट के अनुसार: 26 नवंबर की शाम को, युवा जोड़ा अपने माता-पिता और गुंजन की बहन झरना के साथ गुंजन का बत्तीसवां जन्मदिन मनाने के लिए गोल्डन ड्रैगन रेस्टोरेंट गया था। वे रात 9:00 बजे पहुंचे और खाना शुरू होने से पहले उन्हें लगभग पैंतालीस मिनट इंतजार करना पड़ा। तभी उन्हें लॉबी में पहली गोलियों की आवाज सुनाई दी।. . . पहली गोलियां चलने के तुरंत बाद, रेस्टोरेंट के कर्मचारियों ने दरवाजे बंद कर दिए और सभी को मेजों के नीचे छिपने को कहा। फिर, सभी को रसोई तक रेंगने के लिए कहा गया, जिसके रास्ते उन्हें हार्बर बार, फिर पहली मंजिल पर स्थित वासाबी और फिर चैंबर्स ले जाया गया, जहां उन्हें सुबह 3:00 बजे तक बंद रखा गया। श्रुति के पिता अनिल जालान विलाप करते हुए कहते हैं, 'काश हम बाकी लोगों की तरह चार घंटे और रुक पाते। अगर हम रुक पाते, तो मेरा परिवार खत्म नहीं होता।' श्रुति कहती हैं कि वे उन सौ लोगों के पहले समूह में थे जिन्हें वहां से निकलने के लिए कहा गया था। वे सातों एक-दूसरे को कसकर पकड़े हुए गलियारों से होते हुए इस उम्मीद में निकले कि बाहर सेना के जवान तैनात हैं जो उन्हें सुरक्षा के लिए ले जाएंगे। अफरा-तफरी और धक्का-मुक्की के बीच वे एक-दूसरे से बिछड़ गए। केवल श्रुति और उनके माता-पिता ही ताज होटल के साइड गेट से बाहर निकल पाए। श्रुति कहती हैं, 'मेरे पति के टेक्स्ट मैसेज में लिखा था कि वह और उनके

पिता तहखाने में वाइन सेलर में हैं और उनकी मां से उनका संपर्क टूट गया है। उनका मुझे भेजा आखिरी एसएमएस था, "मां का ख्याल रखना।"'
उनके चचेरे भाई ने प्रेस को बताया कि जब उन पर गोलियां चलाई गईं, तब वे चारों होटल की सीढ़ियों पर थे। कुछ घंटे पहले, वह शराब के तहखाने में सुरक्षित रूप से छिपा हुआ था।
गुंजन की हत्या उसके जन्मदिन पर हुई थी।
नवी मुंबई के राजीव सारस्वत की उम्र पैंतालीस वर्ष थी; उनका शरीर बुरी तरह जल चुका था और पहचानना मुश्किल था। राजीव ने आतंकवादियों को कड़ी टक्कर दी थी। ताज होटल में मौजूद एक आतंकवादी की बातचीत के इंटरसेप्ट में उनका जिक्र भी था।
कॉल करने वाला: आपके पास कितने बंधक हैं?
प्राप्तकर्ता: हमारे पास बेल्जियम से एक व्यक्ति था। हमने उसे मार गिराया है। बैंगलोर से भी एक व्यक्ति था। उसे काबू में करना बहुत मुश्किल था। उनके चचेरे भाई शैलेश गुप्ता ने मुंबई मिरर को बताया कि राजीव ने कई लोगों की जान बचाई। परिवार के सदस्यों द्वारा दी गई कुछ चिकित्सीय जानकारियों की मदद से उनके शव की पहचान भी हो सकी।
ताज होटल में हुई एक दुर्घटना में बच निकली डॉ. तिलू मंगेशिकर ने राजन कांबले की दुखद मौत का बेहद मार्मिक वर्णन किया है। रात 9:30 बजे, वह अपनी बेटी की सहेली के शादी के रिसेप्शन में शामिल होने के लिए ताज होटल की पहली मंजिल पर स्थित क्रिस्टल रूम पहुंचीं। कुछ ही देर में उन्हें पहली गोलीबारी की आवाज सुनाई दी। “अचानक हमें एक तेज आवाज सुनाई दी और हमने सोचा कि दूल्हा-दुल्हन के लिए आतिशबाजी हो रही है... हमने सोचा कि शायद कोई सरप्राइज होगा क्योंकि वे दरवाजे बंद कर रहे थे। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि ताज होटल के अंदर गोलियों की आवाज आ रही है। हमें बताया गया कि यह गैंगवार है और जब तक हम अंदर रहेंगे, हम सुरक्षित रहेंगे। लेकिन थोड़ी देर बाद ही एक गोली से झूमर टूट गया और हमें चैंबर्स में ले जाया गया।” मेहमानों की देखभाल स्टाफ कर रहा था और वे टीवी देख रहे थे। लेकिन जल्द ही स्थिति बदल गई, जब उन्हें बताया गया कि इमारत पूरी तरह सुरक्षित है और उन्हें जल्द ही चैंबर्स से बाहर निकाल लिया जाएगा। तुरंत ही भगदड़ मच गई और कई विदेशियों ने एक-दूसरे को धक्का देकर रास्ता साफ कर दिया। मैंने अपनी बेटी से कहा, 'यह टाइटैनिक जैसा तो नहीं है, जहां उन्होंने महिलाओं और

बच्चों को पहले जाने दिया था?' फिर से गोलियां चलाई गईं, जिनमें ताज होटल के कर्मचारियों को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। सभी लोग वापस कमरों में भाग गए और तभी राजन कांबले को गोली लग गई।
डॉक्टर ने उसकी जान बचाने की पूरी कोशिश की। उसे पीछे से गोली लगी थी और उसके पेट में गहरा घाव था। 'उसकी आंतें बाहर निकल रही थीं। मुझे नहीं पता था कि कौन से अंग घायल हुए हैं, लेकिन मुझे खून बहना रोकना था। मैंने देखा कि कोई बड़ी रक्त वाहिका नहीं कटी थी, लेकिन अगर कट भी जाती, तो हम क्या कर सकते थे? किसी के पेट को बहुत कसकर बांधना मुश्किल होता है क्योंकि इससे सांस रुक सकती है, इसलिए मुझे एहसास हुआ कि मुझे उसके पास बैठकर उस पर नजर रखनी होगी और समय-समय पर उसकी छाती खोलनी होगी।' अगली सुबह 8:00 बजे उन्हें रिहा कर दिया गया। तब तक कांबले जीवित थे।
आतंकवादियों के बारे में डॉ. मंगेशिकर ने कहा, ‘मेरा मतलब है, बीस साल का लड़का महिलाओं को गोली कैसे मार सकता है? और, यह तो सवाल ही नहीं उठता कि उन्हें पता नहीं था कि वे किसे गोली मार रहे हैं, हम बिल्कुल सामने थे। उन्हें ठीक-ठीक पता था कि वे किसे गोली मार रहे हैं,’ उन्होंने स्तब्ध होकर कहा। उनकी सबसे बड़ी शिकायत यह है कि इतने बड़े हमले के बाद भी, जब वे जा रहे थे तो उनकी जाँच नहीं की गई, उनसे पूछताछ तक नहीं की गई और न ही उन्हें कोई जानकारी दी गई। ‘उनकी पूरी मानसिकता यही थी कि आतंकवादियों का क्या हुआ?’ हालांकि, उन्होंने एक युवा शेफ की प्रशंसा की जो निगरानी कर रहा था और ताज के एक अन्य कर्मचारी की भी, जिसने कांबले की देखभाल में मदद की। राजन कांबले का कुछ दिनों बाद निधन हो गया। डॉ. मंगेशिकर उन संभावित उपचारों को लेकर परेशान हैं जो वह उनकी जान बचाने के लिए कर सकती थीं। गोवा के बोरिस रेगो पर उनके शेफ पिता ने दबाव डाला था कि वे ताज होटल में जूनियर सू शेफ के रूप में काम करें। वे मात्र तेईस वर्ष के थे और ताज परिवार के सबसे कम उम्र के शहीद कर्मचारी थे। उनकी हत्या 27 नवंबर की सुबह हुई। बोरिस के पिता, शेफ रेगो ने अपनी आखिरी दर्दनाक कॉल को याद करते हुए बताया कि गुरुवार को सुबह लगभग 4:30 बजे उन्हें बोरिस का फोन आया। शेफ रेगो ने कहा, 'मेरे बड़े बेटे ने फोन उठाया। बोरिस से बात करने के बाद वह तनाव में लग रहा था और अचानक गिर पड़ा। मुझे कुछ गड़बड़ लगी और मैं तुरंत मोबाइल उठाने भागा। मैंने अपने बेटे को 'दादा' कहते हुए सुना और फिर फोन कट गया।' शेफ रेगो ने आगे कहा, 'इसके बाद हमने उसे कई बार फोन करने की कोशिश की,

लेकिन उसने फोन नहीं उठाया।' दोपहर 3:30 बजे परिवार को खबर मिली कि उनके बेटे को आतंकवादियों ने मार डाला है। शेफ रेगो ने आगे बताया, ‘गुरुवार रात 9:30 बजे जब हमने पहली बार फोन किया, तो उन्होंने कहा, ‘दादा, चिंता मत करो, सब ठीक हो जाएगा।’ लेकिन जब हमने दूसरी बार फोन किया, तो उनकी आवाज में तनाव झलक रहा था। उन्होंने कहा, ‘मैंने कुछ लोगों को शामियाना रेस्टोरेंट पर गोलीबारी करते देखा और एक वेटर मारा गया,’ पिता ने याद करते हुए बताया। ‘हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है, लेकिन हमें एहसास हो गया था कि वह सुरक्षित नहीं हैं। पूरी रात हमने उन्हें फोन किया, कभी-कभी उन्होंने फोन उठाया, लेकिन उनकी आवाज में तनाव साफ झलक रहा था। रात 2:00 बजे उन्होंने हमें बताया कि आतंकवादी उन्हें तहखाने में ले गए थे और एक घंटे बाद उन्होंने कहा कि उन्हें वापस रसोई में लाया गया है ताकि वे मेहमानों के लिए सैंडविच बना सकें,’ दुखी पिता ने याद किया।
वासाबी रेस्तरां के वरिष्ठ कप्तान वर्गीस थॉमस की पत्नी सुनी वर्गीस ने कहा, 'उनकी मृत्यु मेरे लिए एक बहुत बड़ी क्षति है, लेकिन मुझे खुशी है कि उन्होंने दूसरों की जान बचाते हुए एक नायक की तरह अपनी जान गंवाई।' सीरियाई ईसाई वर्गीस, जो ताज होटल में आने वाले मेहमानों के बीच बहुत लोकप्रिय थे, रेस्तरां में मेहमानों की जान बचाते हुए आतंकवादियों की गोलियों का शिकार हुए। उन्होंने अपना पूरा जीवन ताज होटल में ही बिताया, जहां उन्होंने तीस से अधिक वर्षों तक काम किया। उनके अंतिम शब्द उनकी पत्नी से थे, जिनसे उन्होंने 27 नवंबर 2008 को सुबह 1:30 बजे बात की थी। उन्होंने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा था, 'चिंता मत करो, मैं कल तुम्हारे साथ रहूंगा।' उनके पीछे उनकी बूढ़ी मां, पत्नी और दो बेटे हैं, जिनकी उम्र बीस और चौदह वर्ष है।
ताज होटल में काम करने वाले सत्ताईस वर्षीय शेफ ज़हीन मतीन की जान मेहमानों की रक्षा करने की कोशिश में लगी रही और उन्होंने अपनी जान जोखिम में डाल दी। मतीन को दो गोलियां लगीं, दोनों सिर और रीढ़ की हड्डी में पीछे से। खतरे को भांपते हुए वह मेहमानों को पहली मंजिल पर सुरक्षित स्थान पर ले जा रहे थे। उन्होंने तहखाने में मौजूद अपने साथियों से मदद मांगी, लेकिन दुर्भाग्य से कोई भी समय पर उन तक नहीं पहुंच सका। उनके एक सहकर्मी ने दुख जताते हुए कहा, 'अगर कोई भी कर्मचारी उनकी मदद करने की हिम्मत करता, तो उसे भी गोली मार दी जाती।'

ताज होटल में प्रशिक्षु सदानंद पाटिल को अभी-अभी यह खुशखबरी मिली थी कि एक हफ्ते में उन्हें होटल में पूर्णकालिक शेफ की नौकरी मिल जाएगी। चौबीस वर्षीय सदानंद बेहद खुश थे, उनके पिता और भाई भी ताज में ही काम करते थे। वे चार साल से ताज में काम कर रहे थे और आखिरकार उनकी मेहनत रंग लाई थी। लेकिन दुर्भाग्य से, ऐसा होना मुमकिन नहीं था। सदानंद पहली मंजिल से तहखाने की ओर जा रहे थे, तभी दूसरी मंजिल से पहली मंजिल की ओर बढ़ रहे एक बंदूकधारी ने उन पर गोली चला दी। मिलनसार और हंसमुख स्वभाव के सदानंद होटल में हमेशा खुशमिजाज रहते थे। सौभाग्य से, उनके परिवार के सदस्य हमले में बच गए। उनके पिता छुट्टी पर थे, जबकि उनके भाई को सुरक्षित बचा लिया गया। उनके सहकर्मी ने बताया, "वह माथेरान, विचारे में दो हफ्ते की छुट्टी बिताकर लौटे थे। कुछ देर पहले हम ठंडी रसोई में साथ बैठे थे और फोन पर अपने प्रिंसिपल से बात कर रहे थे। यह लगभग रात के 2:00 बजे का समय था। आखिरी बार मैंने उन्हें लगभग 2:30 बजे देखा था।" उसके बाद, लगभग सुबह 10:00 बजे मुझे पता चला कि उनका शव मिल गया है। 'हम लगभग 1:30 से 2:30 बजे के बीच मेहमानों और अपने लिए सैंडविच बना रहे थे। हमने बातें कीं और मजाक किया। हम बहुत खुश थे। उन्होंने मुझे बताया था कि उनके मोबाइल फोन की बैटरी खत्म हो गई थी। इसलिए जब मैंने आखिरी बार उन्हें फोन करने की कोशिश की, तो मुझे लगा कि बैटरी खत्म हो गई होगी, इसीलिए उन्होंने फोन नहीं उठाया,' विचारे ने कहा। कफ परेड की निवासी रुपिंदर राधावा शामियाना रेस्तरां में भोजन कर रही थीं, तभी गोलीबारी शुरू हो गई। उन्हें अन्य मेहमानों के साथ कुछ फर्नीचर के पीछे छिपने के लिए कहा गया। फिर सुबह 5:30 बजे जब किसी ने उन्हें बताया कि अब सुरक्षित है, तो वह उठीं और तुरंत गोली लग गई। सोमानी स्कूल की इस लोकप्रिय शिक्षिका के परिवार में उनके पति और दो बेटियां हैं, जो दोनों अमेरिका में रहती हैं।
ताज होटल के मुख्य शेफ विजया राव भंजा थे। बुधवार रात हैदराबाद में अपने परिवार वालों को उन्होंने भरोसा दिलाया, ‘सब ठीक है। मैं सुरक्षित हूं। घबराने की कोई जरूरत नहीं है।’ लेकिन आधी रात के बाद उनका मोबाइल फोन बंद हो गया, जिससे रिश्तेदार घबरा गए। उन्हें अगली सुबह यह चौंकाने वाली खबर मिली। विजया राव ने निचले स्तर से शुरुआत करके अपना नाम कमाया था। उन्होंने ताज की रसोई में निचले स्तर से अपना करियर शुरू किया और मुख्य शेफ के पद तक पहुंचे।

पुलिस द्वारा आतंकवादियों के मोबाइल फोन और सैटेलाइट फोन (जिनका इस्तेमाल वे अपने आकाओं और आपस में संवाद करने के लिए कर रहे थे) को इंटरसेप्ट करने से मृतकों की संख्या को सीमित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ताज महल में मौजूद आतंकवादी इन्हीं फोनों के जरिए आपस में बातचीत कर रहे थे और ये पुलिस के लिए उनके ठिकाने और उनकी योजनाओं का पता लगाने में महत्वपूर्ण सुराग साबित हुए। इससे बचाव अभियान की योजना बनाने में काफी मदद मिली। एक समय कुछ आतंकवादी बंधक बनकर ताज महल होटल से निकलने की योजना बना रहे थे, लेकिन एनएसजी ने इसे नाकाम कर दिया। इस प्रकार होटल और उसमें मौजूद लोगों के लिए रची गई तबाही को रोका और नियंत्रित किया गया। वास्तव में, इंटरसेप्ट ने पुलिस के लिए वही काम किया जो पाकिस्तान में मौजूद उनके संचालकों के लिए टेलीविजन प्रसारण ने किया था।
इंडियन एक्सप्रेस अखबार के फोटोग्राफर, 51 वर्षीय वसंत प्रभु, गोलीबारी शुरू होने के पंद्रह मिनट बाद ताज होटल के पिछले दरवाजे से अंदर दाखिल हुए। उन्होंने दो पुलिसकर्मियों का पीछा किया जो अंदर भागे थे - पुलिस उपायुक्त विश्वास नागरे-पाटिल और कांस्टेबल अमित खेताले, जिन्हें लगा कि वे ताज होटल के फोटोग्राफर हैं। प्रभु उनके और ताज होटल के दो अन्य सुरक्षा अधिकारियों के पीछे-पीछे गए। वे सावधानी से पुराने ताज होटल की छह मंजिलें चढ़े, दीवारों के सहारे आगे बढ़ते हुए, कभी झुकते हुए। वे बताते हैं, 'हमने अलग-अलग जगहों पर गोलियां चलने और ग्रेनेड फटने की आवाजें सुनीं, और ताज होटल की ध्वनि व्यवस्था ने इस प्रभाव को और बढ़ा दिया।' तीसरी मंजिल पर एक आतंकवादी को देखा गया और उस पर गोली चलाई गई। जवाबी फायरिंग हुई। प्रभु को याद है कि गोली चलाने वाला युवक लाल टोपी पहने हुए था, जिसका अगला हिस्सा पीछे की ओर मुड़ा हुआ था। फिर वह नजरों से ओझल हो गया। अपनी पत्नी और बेटे को याद करते हुए, उन्होंने यथासंभव सतर्क रहने की कोशिश की। उन्हें पता था कि फ्लैश की वजह से वे आसानी से निशाना बन सकते हैं। 'मैंने फ्लैश बंद करके फोटो खींचने की कोशिश की, लेकिन उससे कुछ नहीं हुआ। मैं अपने अखबार के लिए जितनी हो सके उतनी तस्वीरें लेना चाहता था।' अंत में, मैंने जोखिम उठाया, मुझे लगता है कि यह जिम्मेदारी भरा कदम था, क्योंकि मैं दुनिया को बताना चाहता था कि अंदर हालात कितने खराब थे।’ उनके द्वारा ली गई तस्वीरों में मेहमान भी अपने हाथों में जो कुछ भी आ सकता था, उससे लैस दिखाई देते हैं – छड़ें, शराब की बोतलें, चाकू आदि। ‘मैंने अपनी

पत्नी से कहा कि मैं दफ्तर में टीवी देख रहा हूँ और उसे भरोसा दिलाया कि मैं अपना ख्याल रखूँगा।’ कुछ दिनों बाद, जब उनकी पत्नी ने मराठी अखबार लोकसत्ता में उनका प्रत्यक्ष अनुभव पढ़ा, तो ‘उन्होंने मुझे गले लगाया और रोने लगीं।’
जीवित बचे लोगों में रोहित और सरिता मल्होत्रा भी शामिल थे, जो अपनी पच्चीसवीं शादी की सालगिरह मना रहे थे और उस समय ज़ोडियाक ग्रिल में थे। “हम रात करीब 9:30 बजे रेस्टोरेंट में दाखिल हुए। हम अभी ठीक से बैठे ही थे कि हमें गोलियों की आवाज़ और एक ज़ोरदार धमाका सुनाई दिया। लॉबी में लोग इधर-उधर भाग रहे थे और चिल्ला रहे थे कि गोलीबारी हो रही है और बम धमाका हुआ है। तुरंत ही स्टाफ ने मोर्चा संभाल लिया। दरवाज़े बंद कर दिए गए, फर्नीचर और पियानो से बैरिकेड लगा दिए गए और सारी बत्तियाँ बुझा दी गईं। हमें जहाँ थे वहीं रहने को कहा गया और चुप रहने की सलाह दी गई। हमें रुक-रुक कर गोलियों की आवाज़, ग्रेनेड के धमाके और पास में लगी आग की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। कुछ अन्य लोगों को रसोई के रास्ते सर्विस एंट्रेंस से ज़ोडियाक ग्रिल में सुरक्षा के लिए लाया गया। उस रात ज़ोडियाक ग्रिल में करीब पैंतालीस से पचास लोग थे।... मैं पूरी रात अपने कोने में बैठा रहा, इस विश्वास के साथ कि मैं इस स्थिति से ज़िंदा बच निकलूँगा।” अगली सुबह करीब 5 बजे जब हम सभी को मुख्य लॉबी से बाहर निकाला गया, तो मेरा आत्मविश्वास सही साबित हुआ। जब हम निकल रहे थे, तो रेस्तरां के कर्मचारियों ने, जो पूरी रात हमारे साथ थे, हमारे धैर्य के लिए हमें धन्यवाद दिया! रोहित ने बताया। दक्षिण अफ्रीका की क्रिकेट टीम के साथ भारत आए छह कमांडो नए ताज होटल की सबसे ऊपरी मंजिल पर स्थित 'सूक' नामक रेस्तरां में भोजन कर रहे थे। उन्होंने सबसे ऊपरी मंजिल के दो रेस्तरां में बैठे 150 लोगों को पास के ही पैंट्री और आग से बचाव के लिए बने निकास द्वार से सुरक्षित बाहर निकाला। उस रात उन्होंने जिन लोगों की जान बचाई, उनके लिए वे वरदान साबित हुए।
27 नवंबर 2008 को जलते हुए होटल से बचाए गए लोगों में छह लोगों का एक समूह भी शामिल था, जिनमें दो सांसद, महाराष्ट्र राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के सांसद बी.जी. पाटिल और उत्तर प्रदेश से भाजपा सांसद लाल मणि प्रसाद (चौबे) शामिल थे। ये दोनों सांसदों के उस दल का हिस्सा थे, जो हमले शुरू होने से कुछ घंटे पहले होटल में ठहरे थे। केरल के पालघाट से सांसद कृष्णिदास और गोधरा से सांसद बी.पी. सोलंकी सहित दो अन्य सांसद बच निकले,

जबकि पाटिल और लाल मणि प्रसाद अंदर ही फंस गए। सोलंकी ने शामियाना होटल में भोजन किया था, लेकिन सौभाग्य से गोलीबारी शुरू होते ही वे वहां से निकल गए थे। एनएसजी ने कृष्णिदास के माध्यम से प्रसाद और पाटिल को उनके कमरे में ही रहने के लिए कहा। सोलंकी और कृष्णिदास होटल के बाहर उनके लिए जीवन रेखा बन गए और दोनों सांसदों ने एनएसजी और फंसे हुए सांसदों के बीच तीन-तरफ़ा संचार बनाए रखा। दोनों ने अपने साथी विधायकों की मदद के लिए अपनी राजनीतिक दलों की सीमाओं को दरकिनार कर दिया। सौभाग्यवश, एक अन्य सांसद, गिरधर गोमांगो, अगली ही सुबह ताज होटल में चेक-इन करने वाले थे और इस प्रकार वे बाल-बाल इस नरसंहार से बच गए।
श्री रमेश गर्ग ताज होटल के अंदर अपनी पत्नी के अगले जन्मदिन के उपहार के लिए दुकानों को देख रहे थे। अचानक, उन्हें 'रैट-टैट, एक धमाका और फिर एक और रैट-टैट' की आवाजें सुनाई दीं। वे और दुकान के सहायक काउंटर के पीछे छिप गए। उन्होंने देखा, 'दो हथियारबंद लोग लोगों पर और फिर छत पर गोलियां चला रहे थे।' रमेश सौभाग्य से बच गए। उन्होंने बाद में कहा, 'ऐसी चीखें थीं जिन्हें मैं कभी नहीं भूल सकता, मुझे लगता है कि जलती हुई मंजिलों पर कमरों में फंसे लोगों की चीखें थीं।'
श्री हरीश मेहता अपने परिवार के साथ चैम्बर्स होटल में भोजन कर रहे थे, तभी होटल के कर्मचारियों ने सभी को अंदर बंद कर दिया और तीन कर्मचारी मेहमानों के साथ वहीं रुक गए। वे बच निकलने वालों में से थे, लेकिन उनके साथ मौजूद कुछ लोग इतने भाग्यशाली नहीं थे।
रात के 9:45 बज रहे थे और भीष्म मनसुखानी ताज क्रिस्टल होटल में अपने सबसे अच्छे दोस्त की शादी के रिसेप्शन में मौजूद थे। उन्होंने गोलियों की आवाज सुनी। एक गोली कांच के पैनल को भेदते हुए उन दोनों को लगी। वे ज़मीन पर गिर पड़े। गोलीबारी रुकने पर, कर्मचारियों ने उन्हें सुरक्षित कक्षों में पहुंचाया। वहां उन्हें पता चला कि आग फैल रही है। फिर, सुबह 4:00 बजे निकासी शुरू हुई, जब चार-चार लोगों के समूहों को गलियारे से ले जाया गया... जब वे गलियारे के पास पहुंचे, तो उन्होंने उस शाम की सबसे तेज़ आवाज सुनी और वे दूसरों के साथ भागे। वे सभी अलग-अलग कमरों में चले गए।
मेरे कमरे से चार लोग जल्दी से बाहर भागे क्योंकि किसी को गोली लग गई थी। जाहिर तौर पर, एक व्यक्ति की गोली लगने से मौत हो गई थी। दूसरा, होटल का एक पुराना मेंटेनेंस कर्मचारी, सीढ़ियों पर पड़ा था। उसे गोली लगी थी। मेरे

दोस्त के पिता डॉक्टर हैं और उन्होंने उसकी पट्टी बांधी, लेकिन उनके पास कोई दवा या पेनिसिलिन नहीं थी। हमने लाइट और एयर कंडीशनिंग बंद कर दी। हमने दरवाजा बंद कर दिया और चुप रहे। मैं गोली लगने वाले व्यक्ति के सामने बैठा था और मैंने उसे दर्द से कराहते हुए मदद के लिए पुकारते सुना। अगली सुबह, लगभग 9:30 बजे, अप्रत्याशित घटना घटी। हमने दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक सुनी - कोई खुद को राज्य पुलिस बता रहा था। जब तक हमें यकीन नहीं हो जाता, कोई भी दरवाजा खोलना नहीं चाहता था। तभी, बाहर से एक महिला की आवाज आई, जिसे ताज होटल के सेवा कर्मचारियों ने पहचान लिया, जिन्होंने शायद हमें घबराहट में मरने से बचाया था, और दरवाजा खोल दिया गया। घायल व्यक्ति को स्ट्रेचर पर एम्बुलेंस में ले जाया गया और हम सभी ने अपने हाथ ऊपर उठाए गलियारे से होते हुए दूसरी सेवा सीढ़ी की ओर चल दिए। मुझे न तो कोई खुशी महसूस हुई, न ही राहत का एहसास, बस एक कड़वी-मीठी खालीपन और निराशावाद का भाव था।
ब्रिटिश नागरिक सज्जाद करीम यूरोपीय सांसदों के एक प्रतिनिधिमंडल के हिस्से के रूप में मुंबई में थे। गोलीबारी की आवाज सुनते ही वे लॉबी में मौजूद थे। उन्होंने बताया, ‘हम लगभग पच्चीस-तीस लोग थे। कुछ एक तरफ तो कुछ दूसरी तरफ चले गए। एक बंदूकधारी मेरे ठीक बगल में खड़ा होकर अंधाधुंध गोलियां चला रहा था।… मैं होटल के रसोईघर में भागा और फिर हमें तहखाने में स्थित एक रेस्तरां में ले जाया गया।’
एक अन्य ब्रिटिश नागरिक, एलेक्स चेम्बरलेन ने कहा कि बंदूकधारी ब्रिटिश और अमेरिकी पर्यटकों को निशाना बना रहे थे। उन्होंने कहा, 'मेरे दोस्त ने मुझसे कहा, "हीरो बनने की कोशिश मत करो, यह मत कहो कि तुम ब्रिटिश हो।"'
एक अन्य जीवित बचे व्यक्ति, 39 वर्षीय भारतीय मुस्लिम श्री रिजवान कादर ने कहा,
जब गोल्डन ड्रैगन के बाहर पहली गोली चली, तब मैं ताज होटल के अंदर था। मैं आतंकवादी से महज पाँच फीट दूर था... 26 नवंबर को, रात करीब 9:15 बजे, मैं नए ताज होटल में ज़ोडियाक ग्रिल में डिनर करने आया था। हम छह लोग थे (मेरी बेटी, इंग्लैंड से आए मेरे रिश्तेदार और मैं)। मेरा परिवार गोल्डन ड्रैगन के सामने वाले शौचालय में गया, जबकि मैं रिसेप्शन के पास उनका इंतज़ार कर रहा था। रात 9:30 बजे, एक AK-47 असॉल्ट राइफल लिए एक आदमी अंदर घुस आया और गोल्डन ड्रैगन के पास खड़ी मेरी बेटी के बगल में खड़े एक आदमी पर गोली चला

उन्हें गोल्डन ड्रैगन में भोजन करना था। चूंकि वे जल्दी पहुंच गए थे, इसलिए उन्होंने हार्बर बार में एक ड्रिंक लेने का फैसला किया। उन्होंने अभी अपनी बीयर की चुस्की लेना शुरू ही किया था कि उन्हें बताया गया कि उनकी खाने की मेज तैयार है। वे अपनी ड्रिंक खत्म करने के लिए वहीं रुक गए। कुछ ही देर में, उन्होंने एक ज़ोरदार आवाज़ सुनी, जिसके बाद लगभग पच्चीस वैसी ही आवाज़ें आईं, और फिर एकदम सन्नाटा छा गया। वे एक मेज के पीछे दुबक गए, लॉबी में घुस आए बंदूकधारियों के बहुत करीब, जो उनके चारों ओर अंधाधुंध गोलियां चला रहे थे। उन्होंने एक कुर्सी से कांच की खिड़की तोड़ने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे।
हार्बर बार की होस्टेस, जो अपनी जगह पर डटी रही, ने हमें इशारा किया कि सीढ़ियों की ओर भागना सुरक्षित है। उसने बातों-बातों में बताया कि बाहर कॉरिडोर में एक लाश पड़ी है। हमारा मानना है कि हमारे भागने के बाद इस बहादुर महिला की हत्या कर दी गई। (बाद में हमें पता चला कि हमारे सीढ़ियाँ चढ़ने के कुछ ही मिनट बाद आतंकवादी हार्बर बार में घुस आए, वहाँ मौजूद सभी लोगों को गोली मार दी और बगल के गोल्डन ड्रैगन में मौजूद लोगों को भी मार डाला। वहाँ का स्टाफ भी उतना ही बहादुर था, जिसने अपने ग्राहकों को बचाने के लिए उन्हें तहखाने में बने वाइन सेलर में बंद कर दिया। लेकिन आतंकवादी अंदर घुसने में कामयाब हो गए और उन्होंने ग्रेनेड फेंके जिससे तहखाने में मौजूद सभी लोग मारे गए।) हमने दूसरी मंजिल पर स्थित एक अन्य रेस्तरां, वासाबी, की रसोई के छोटे से कार्यालय में शरण ली। वहाँ के शेफ और स्टाफ ने हम चारों को खाना-पीना परोसा और असुविधा के लिए माफी भी मांगी। टेक्स्ट मैसेज, ब्लैकबेरी पर ईमेल और कार्यालय में रखे एक छोटे से टीवी के माध्यम से हमें मुंबई में हुए आतंकवादी हमले की भयावहता का पूरा अंदाजा हुआ। हमें लगा कि फिलहाल हम सुरक्षित जगह पर हैं। लेकिन वहाँ से निकलने का कोई रास्ता भी नहीं था। रात करीब 11:30 बजे, रसोई में सन्नाटा छा गया। हमने एक बड़ी लकड़ी की मेज ली और उसे दरवाजे से सटा दिया, सारी बत्तियाँ बंद कर दीं और छिप गए... किसी भी कर्मचारी ने हमें छोड़ने की कोशिश नहीं की। आतंकवादियों ने बार-बार हमारे दरवाजे पर दस्तक दी। हमने उन्हें शेफ से हिंदी में पूछते सुना कि क्या ऑफिस के अंदर कोई है। उन्होंने शांत भाव से जवाब दिया: 'अंदर कोई नहीं है। वह खाली है।' यह दूसरी बार था जब ताज होटल के कर्मचारियों ने हमारी जान बचाई। लगभग बीस मिनट बाद, अन्य कर्मचारी हमें एक

संक्षेप में कहें तो, आतंकी हमले की उस मनहूस रात मैं ताज होटल के अपने कमरे में छिपा हुआ था। सुबह करीब 4 बजे मैं बाल-बाल बच निकला – आग और धुएं को खुद पर हावी होने से रोकने के लिए मैंने पूरी ताकत लगा दी। ईश्वर की कृपा से मैं छह मंजिल नीचे और कुछ मीटर तक बिना किसी बाधा के दौड़ने में कामयाब रहा। आप कल्पना कर सकते हैं कि यहाँ बैठकर यह लिखते हुए मुझे कितनी खुशी हो रही है।
ब्रिटिश नागरिक, छत्तीस वर्षीय दीपक कुंटावाला ने ताज होटल पर हुए हमले के दौरान 150 बंधकों को बचाया। उन्होंने रस्सियों और पर्दों की मदद से बंधकों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। दीपक और उनके पिता, अड़सठ वर्षीय विनय कुंटावाला, चार घंटे तक अंधेरे में बंधकों को छुड़ाने के अवसर की प्रतीक्षा करते रहे। उन्हें उनकी इस वीरतापूर्ण निस्वार्थ सहायता के लिए 'स्पिरिट ऑफ मुंबई' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वे सरे में रहते हैं और उन्होंने पीड़ितों के परिवारों के लिए एक कोष स्थापित किया है।
पुलिस इंस्पेक्टर दीपक धोले ने एसआरपीएफ के अपने साथी राहुल एस. शिंदे की जान बचाने की कोशिश की। दुर्भाग्य से, वे ऐसा करने में असमर्थ रहे, लेकिन उससे भी अधिक दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि इस प्रक्रिया में उनका चेहरा बुरी तरह जल गया। राहुल शिंदे पर 26 नवंबर की रात को आतंकवादियों ने हमला किया था और अत्यधिक धुएं के कारण पुलिसकर्मी प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देने में असमर्थ रहे; धोले रेंगते हुए राहुल को सुरक्षित बाहर निकालने में कामयाब रहे, लेकिन आग की लपटों ने उनके चेहरे को बुरी तरह झुलसा दिया। अब उनके पूरे चेहरे की पुनर्निर्माण सर्जरी की आवश्यकता होगी।
यह ऑपरेशन अंततः 29 नवंबर 2008 को सुबह लगभग 8.00 बजे समाप्त हुआ। निस्संदेह, ताजमहल में सबसे ज्यादा नुकसान नारंग और कांग परिवारों को हुआ। दोनों परिवारों ने तीन-तीन सदस्यों को खोया।
नरसंहार समाप्त होने के बाद, वेस्टमिंस्टर विश्वविद्यालय में वित्त के व्याख्याता हील्स साइमन ताज के आतंकवादियों के कई हमलों से बाल-बाल बच गए। साइमन और उनकी पत्नी दीविया दोनों ही बाल-बाल बचे। एकजुटता के प्रतीक के रूप में, विश्वविद्यालय ने शहर की वंचित महिलाओं को दी जाने वाली छात्रवृत्तियों की संख्या दोगुनी कर दी है।
ताज ने आतंकी हमलों से प्रभावित लोगों की सहायता के लिए एक नया ट्रस्ट, 'ताज पब्लिक सर्विस वेलफेयर ट्रस्ट' स्थापित किया, न केवल अपने होटल में,

बल्कि अन्य लोगों की भी मदद करने के लिए। शुरुआती लाभार्थियों में झरना नारंग भी थीं, जिन्हें पांच गोलियां लगी थीं और वे महीनों तक बॉम्बे अस्पताल में संघर्ष करती रहीं। 5 मार्च 2009 तक, ताज महल होटल को 6 करोड़ रुपये तक का दान प्राप्त हो चुका था।
इसी बीच, 5 दिसंबर 2008 को, ताज ने राष्ट्रीय दैनिक हिंदुस्तान टाइम्स में एक आकर्षक पूर्ण पृष्ठ का विज्ञापन प्रकाशित किया। ताज के भव्य केंद्रीय गुंबद की तस्वीर के नीचे ये शब्द लिखे थे,
‘मानव इतिहास की शाश्वत यात्रा में, हँसी और आँसू, साहस और कायरता, अच्छाई और बुराई के उतार-चढ़ाव के बीच, मैं दृढ़ रहा हूँ। मैं विजयी होऊंगा।’ इसमें आगे कहा गया, ‘पिछले सप्ताह ताजमहल पर हुआ हमला भारत की आत्मा पर हमला था। लेकिन, अपने देश की तरह, हम कभी हार नहीं मानेंगे। अब जब धुआँ छंट गया है, तो हमारे भीतर एक नई आग जल रही है - ताजमहल को उसकी पूरी शान के साथ पुनर्जीवित करने की। भारत की तरह, ताजमहल आने वाले वर्षों तक शान से खड़ा रहेगा।’
ताज महल की छठी मंजिल पर समुद्र के सामने स्थित चौदह कमरों को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा। रेस्तरांओं में, भूतल पर स्थित शामियाना रेस्तरां सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ। क्रिस्टल की मोमबत्तियां, कीमती बर्तन, मेजें और बार काउंटर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। चौथी मंजिल पर टावर की ओर वाले चार कमरे पूरी तरह जल गए और ठीक उसके नीचे वाला एक कमरा भी जल गया। ओनेक्स के खंभे, क्रिस्टल के झूमर और मेहराबों को भी काफी नुकसान हुआ। दमकलकर्मियों ने बताया कि बीच में बने एट्रियम की वजह से नुकसान काफी हद तक सीमित रहा, जिससे इमारत को नुकसान से बचने में मदद मिली। एक वरिष्ठ दमकल अधिकारी ने कहा, 'इसका डिजाइन ऐसा है कि इसमें पर्याप्त वेंटिलेशन है, जिससे गर्मी और धुआं जल्दी बाहर निकल जाता है। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि आग निचली मंजिलों तक नहीं फैली। यहां तक कि कमरे भी बीच में खुली जगह छोड़कर परिधि में बनाए गए थे, और यह भी मददगार साबित हुआ।'
एक समाचार पत्र की रिपोर्ट में कहा गया था कि ताज होटल को सुरक्षित रखने के लिए ताज प्रबंधन को कुछ सलाह दी गई थी। इनमें से कुछ सलाह तर्कसंगत प्रतीत होती हैं, इसलिए यह सवाल उठता है कि होटल ने इनका पालन क्यों नहीं किया। उन्हें सलाह दी गई कि ताज महल होटल के बाहर फुटपाथ पर बैरिकेड लगाए जाएं; होटल की छत पर दूरबीन से लैस दो पुलिस सब-इंस्पेक्टर तैनात होने चाहिए;

प्रवेश द्वार के पास दोहरी बैरिकेडिंग और सशस्त्र अधिकारियों के लिए रेत के गड्ढे होने चाहिए; खोजी कुत्तों द्वारा खोखले पाइप, कूड़ेदान, गमलों की नियमित रूप से जांच की जानी चाहिए और उन्हें भूतल और पहली मंजिल पर भी ले जाया जाना चाहिए; होटल के लेआउट प्लान की प्रति पुलिस को उपलब्ध कराई जानी चाहिए; होटल की दुकानों आदि में काम करने वाले सभी लोगों की एक सूची पुलिस को दी जानी चाहिए, विशेष रूप से उन दुकानों में काम करने वालों की जो कश्मीरी उत्पाद बेचती हैं; होटल में वाई-फाई की सुविधा नहीं होनी चाहिए; होटल से इंटरनेट का उपयोग करने वाले कर्मचारियों पर नजर रखी जानी चाहिए; केवल एक सीसीटीवी नियंत्रण कक्ष होना चाहिए; होटल को एक समय में केवल एक प्रवेश द्वार खुला रखना चाहिए और अन्य सभी द्वार बंद कर देने चाहिए; होटल में मौजूद पुरानी कलाकृतियों जैसे कि एंटीक ताबूतों को ताला लगाकर रखा जाना चाहिए; मेहमानों के आने और जाने के समय उनकी वस्तुओं की जांच की जानी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे कुछ भी पीछे न छोड़ दें। अंत में, कमरों के दरवाजों के चौखटों की जांच के लिए हाथ से पकड़े जाने वाले धातु डिटेक्टरों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। ताज जैसे प्रतिष्ठित होटल के लिए इन उपायों को लागू करना मुश्किल नहीं था, फिर भी इनकी अनदेखी की गई। खबरों के मुताबिक, शराब और वाइन के भंडारण कक्षों को भी आतंकवादियों ने निशाना बनाया, लेकिन वे नाकाम रहे। अगर वे अंदर घुस जाते, तो पूरा होटल आग की लपटों में घिर जाता। इतनी ज्वलनशील सामग्री वाले इस कमरे को किसी मजबूत सुरक्षा घेरे में रखना स्वाभाविक है, और शायद ताज महल होटल को जिन सुरक्षा उपायों को अपडेट करने की जरूरत है, उनमें इसे भी शामिल किया जाना चाहिए। एक घातक हमले के बाद भी, मुझे यह देखकर बेहद निराशा होती है कि चाहे मैं मॉल में हूँ या होटलों में, सुरक्षाकर्मी कारों के बूट की जाँच पर ही ध्यान देते हैं, आगे के हिस्से पर नहीं। यह अजीब बात है क्योंकि जिन दो टैक्सियों को बम से उड़ा दिया गया, उनमें बम ड्राइवर की आगे की सीट के नीचे रखे गए थे, न कि बूट में।
विश्लेषण
अहम सवाल यह है कि क्या सिर्फ चार ही आतंकवादी थे? यह आम तौर पर माना जाता है कि उन्हें स्थानीय लोगों की मदद मिली थी, फिर भी पुलिस और राजनेता दोनों ही इससे इनकार करते हैं। क्या ताज होटल के किसी कमरे को बेस के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा था? अखबारों में खबरें हैं कि छठी मंजिल के एक कमरे

में हथियार और गोला-बारूद जमा थे और वहां कुछ और लोग भी मौजूद थे। अगर वे वहां थे, तो क्या वे सभी उसी तरह भाग निकले जैसे साजन कपूर भागा था? एक संभावित परिदृश्य यह है कि ताज होटल पर हमला करने वाले चार आतंकवादियों में से दो पहले से ही छठी मंजिल पर मेहमान के तौर पर मौजूद थे। इस परिकल्पना को एक चश्मदीद के बयान से बल मिलता है कि दस नहीं, बल्कि छह बंदूकधारी बडवार पार्क में उतरे थे। अगर यह मान लिया जाए कि 26 नवंबर से पहले ही नरीमन हाउस के दो आतंकवादी वहां मौजूद थे, और ताज होटल के दो आतंकवादी छठी मंजिल पर ठहरे हुए थे, तो आरोपपत्र का निष्कर्ष इस तथ्य पर आधारित है कि छह आतंकवादियों का डीएनए कुबेर विमान से मिले सबूतों से मेल खाता है।
एक अपुष्ट खबर है कि ताज होटल के कर्मचारियों में से एक इस साजिश में शामिल था और उसने वही भूमिका निभाई थी जो अमरसिंह सोलंकी पर अपहृत मछली पकड़ने वाली नाव कुबेर में निभाने का संदेह है। ज़ी न्यूज़ ने बताया कि ताज होटल के एक शेफ का भी इस गिरोह में हाथ था। यह बात तब सामने आई जब नरसंहार में मारे गए एक प्रशिक्षु शेफ के परिवार ने बताया कि मृतक ने मरने से पहले उन्हें फोन किया था और कहा था कि उसे उसके दोस्त, एक अन्य शेफ ने गोली मारी है। अभी तक उस शेफ का नाम पता नहीं चला है; हालांकि, ताज होटल ने इस परिकल्पना को सिरे से खारिज कर दिया है। अगर इसकी पुष्टि हो जाती है, तो इससे इस बात को बल मिलता है कि इस ऑपरेशन की योजना, आंतरिक सहायता मिलने के अलावा, हमले से लगभग एक साल पहले से ही बनाई गई थी।
इसी बीच, हिंदुस्तान टाइम्स ने मुंबई पुलिस को बताया कि संदिग्धों ने खुलासा किया है कि दो आतंकवादी हमले से चार दिन पहले ताज महल होटल में फर्जी पहचान के साथ ठहरे थे। रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि वहां चार दिनों तक रहने के दौरान हमलावरों ने कई मेहमानों का स्वागत किया, जो अपने साथ बड़े-बड़े बैग लेकर कमरे में आए थे। यहां तक कि मरीन कमांडो के कमांडर ने भी कहा कि हमलावरों को होटल के लेआउट की अच्छी जानकारी थी। उन्होंने बताया कि आतंकवादियों को सिस्टम रूम का पता था और उन्होंने हमले की शुरुआत में ही उस पर कब्जा कर लिया था। इस कमरे से उन्हें होटल के अंदर लगे विभिन्न सीसीटीवी कैमरों की फुटेज मिल गई, जिससे उन्हें होटल की सभी गलियों और लॉबी का स्पष्ट दृश्य दिखाई दिया।

होटल के बाहर, पुलिस कांस्टेबल संभव राणे ने रात 1:20 बजे होटल के केंद्रीय गुंबद में आग देखी। दमकल गाड़ियां दोपहर 3:30 बजे पहुंचीं। श्री टाटा और हममें से कई लोगों के मन में यह सवाल उठ सकता है कि दमकलकर्मियों को देरी क्यों हुई, जबकि दमकल स्टेशन ताज महल होटल से मात्र पांच मिनट की दूरी पर है?
डीएनए ने एक और घटनाक्रम की रिपोर्ट दी जिसमें कहा गया कि कोलाबा के तीन दुकान मालिकों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया है।
ताज होटल के पीछे वाली गली के तीन दुकानदारों को रविवार को इस संदेह में हिरासत में लिया गया कि उन्होंने आतंकवादियों को रसद संबंधी सहायता प्रदान की थी। जांच दल के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने बताया कि तीनों ने अपनी दुकानें किराए पर दी थीं, जहां आतंकवादियों ने तीन दिन तक चले नरसंहार में इस्तेमाल किए गए हथियार और गोला-बारूद रखे थे। उन्होंने बताया कि बड़े मियां रेस्तरां के पास एक कालीन की दुकान और दो छोटे भोजनालयों का इस्तेमाल आतंकवादियों ने एके-47 राइफल और हथगोले रखने के लिए किया था। उस इलाके से कम से कम तीन लोगों को पुलिस ने संदेह के आधार पर हिरासत में लिया है। हालांकि, पुलिस अधिकारी आगे की जानकारी देने से हिचकिचा रहे थे, क्योंकि उन्हें डर था कि इससे उनकी जांच में बाधा आएगी। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, "जिन तीन दुकानों में हमें हथियार रखे जाने का संदेह है, वहां से ताज होटल तक आसानी से पहुंचा जा सकता है।" आतंकवादियों द्वारा हथियारों को कपड़ों, प्लास्टिक की थैलियों और कालीनों से छिपाकर रखने की सूचना के आधार पर, पुलिस दल ने इन लोगों को हिरासत में लिया।
26 नवंबर के हमलों के बाद, मुंबई के होटलों को मौखिक रूप से सलाह दी गई थी कि वे पाकिस्तानियों को अपने होटलों से बाहर रखें। ऐसा प्रतीत होता है कि ताज होटल को इस संबंध में सितंबर/अक्टूबर 2008 में ही कड़ी सलाह दी गई थी, लेकिन उनके रजिस्टर से पता चलता है कि कम से कम छह पाकिस्तानी चेतावनी मिलने के बावजूद ताज होटल में ठहरे थे।
क्या ताज होटल ने पुलिस द्वारा दी गई चेतावनियों को जानबूझकर अनदेखा किया? ऐसा ही प्रतीत होता है। कसाब के बयान से अब हमें पता चलता है कि 27 सितंबर 2008 को एक हमले की योजना बनाई गई थी, और किसी कारणवश पाकिस्तानी हैंडलर्स ने अचानक इस योजना को रद्द कर दिया। हालांकि, रॉ (पुलिस एजेंसी)

को भी श्रेय देना होगा - 18 सितंबर 2008 को, स्थगित हमले से कुछ दिन पहले, पुलिस ने लश्कर-ए-तैबा के एक ज्ञात एजेंट और एक अज्ञात व्यक्ति के बीच सैटेलाइट फोन पर हुई बातचीत को इंटरसेप्ट किया। लश्कर-ए-तैबा के एजेंट ने बताया कि गेटवे ऑफ इंडिया के पास एक होटल पर हमले की योजना बनाई जा रही थी, और आतंकवादी समुद्र के रास्ते पहुंचेंगे। 24 सितंबर 2008 को, रॉ एक और महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने में सफल रही। इस बार, होटलों के नाम सूचीबद्ध थे - ताज, मैरियट, लैंड्स एंड और सी रॉक। सभी होटल समुद्र के किनारे स्थित थे।
मुख्यमंत्री ने भी जवाब देते हुए कहा, ‘हमने ताज होटल को चेतावनी दी थी, लेकिन उनके उपाय अपर्याप्त थे।’ जयंत पाटिल की रिपोर्ट के अनुसार, ताज प्रबंधन ने कहा कि अत्यधिक सुरक्षा और तलाशी उनके आतिथ्य व्यवसाय के विरुद्ध थी। इसी प्रकार, मरीन ड्राइव पुलिस स्टेशन ने ओबेरॉय होटल प्रबंधन को पर्याप्त निर्देश दिए थे।
निष्कर्ष
ताज पैलेस की छठी मंजिल पर पीतल, कांसे और मिश्र धातुओं से बनी छह फुट ऊंची धातु की बस्तर आदिवासी प्रतिमा 'जीवन वृक्ष' भी मौजूद थी। यह चमत्कारिक रूप से भीषण आग से बच गई और अब इसे नीचे लाकर ताज पैलेस के मुख्य लॉबी में मृतकों के स्मारकों के बीच स्थापित किया गया है। यह आज ताज परिसर में सबसे अधिक फोटो खींची जाने वाली कलाकृति है। इसके बगल में लगी पट्टिका पर लिखा है, 'जीवन वृक्ष ब्रह्मांड की संरचना का सबसे प्राचीन अंतर-सांस्कृतिक प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है। इसे तीन लोकों में विद्यमान देखा जा सकता है - स्वर्ग, पृथ्वी और परलोक के बीच एक कड़ी, जो ऊपर और नीचे को जोड़ती है।' छत्तीसगढ़ के कोंडागांव के जयदेव बघेल द्वारा डिजाइन की गई यह प्रतिमा उनतालीस इंच ऊंची, पैंतीस इंच चौड़ी और पैंतीस इंच गहरी है। उस मंजिल पर लगी भीषण आग के बावजूद यह कैसे बच गई, यह आज तक एक रहस्य बना हुआ है।
ताज होटल एक महीने से भी कम समय में, 21 दिसंबर 2008 को 268 पूरी तरह से सुसज्जित कमरों के साथ फिर से खुल गया। होटल का आध्यात्मिक पुनर्जन्म सात धर्मों - पारसी, ईसाई, हिंदू, मुस्लिम, यहूदी, सिख और बौद्ध - से संबंधित पुजारियों और धर्मगुरुओं द्वारा संपन्न किया गया। होटल को जनता के लिए खोलने से पहले धार्मिक प्रार्थनाएँ की गईं। इस अवसर पर मुझे दिए गए कार्ड पर लिखा था,

बीते कुछ दिनों की घटनाओं ने यह साबित कर दिया है कि सबसे विनाशकारी ताकतें भी हमारे हौसले को नहीं तोड़ सकतीं। हम उन सभी पुरुषों और महिलाओं को सलाम करते हैं जिन्होंने सच्चे साहस और दृढ़ता से हमें हमारे सबसे कठिन समय से उबारा; जिन्होंने निस्वार्थ भाव से दूसरों की मदद करके और यहां तक कि अपने प्राणों की आहुति देकर असाधारण शक्ति का परिचय दिया। उनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। आइए हम उन सभी से प्रेरणा लें जिन्होंने अपने जीवन से पहले अपने कर्तव्यों को रखा।
ताज महल की लगभग सभी अनमोल कलाकृतियाँ सुरक्षित हैं। मानसी चोक्सी (द टाइम्स ऑफ इंडिया, 22 दिसंबर 2008) की रिपोर्ट के अनुसार, झूमरों और अन्य संपत्ति को हुए नुकसान का अनुमान लगभग 1000 करोड़ रुपये है। इंडियन होटल्स के उपाध्यक्ष आर.के. कृष्ण कुमार ने कहा, 'कलाकृति का एक भी ऐसा नमूना नष्ट नहीं हुआ है जिसे सुधारा न जा सके।' ताज महल ने जिस तेज़ी से दोबारा अपना काम शुरू किया और निवासियों और मेहमानों का स्वागत किया, वह किसी चमत्कार से कम नहीं है। ताज महल होटल एंड पैलेस ने प्रमुख समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित किए, जिनकी शुरुआत 'वेलकम होम अगेन' से हुई। दोबारा खुलने के एक दिन बाद जब मैं लॉबी और ऐतिहासिक इमारत के भूतल से गुज़रा, तो मैंने देखा कि कुछ दुकानें बंद थीं या मरम्मत के दौर से गुज़र रही थीं, जिनके प्रवेश द्वारों पर शालीनता से पर्दे लगे हुए थे। इसके अलावा, हमले की याद दिलाने वाला एक भी निशान नहीं था, सब कुछ सामान्य हो चुका था। (जिसकी रक्षा ईश्वर करता है, उसे कोई नष्ट नहीं कर सकता)।
मैं भावुक हो गया। ताज होटल में मौजूद लोगों के साहस को सलाम।
अगर आप मुंबईकर हैं तो ताज होटल का आप पर ऐसा ही प्रभाव पड़ सकता है। इसे केवल वही मुंबईकर समझ सकते हैं जिन्होंने ताज होटल को लंबे समय से जाना हो।
कुछ चीजें तर्क से परे होती हैं।
ये दिल के मामले हैं।
परिशिष्ट भाग
दुबई से मेरे दोस्त एक बार फिर दुबई से आए और ताज महल होटल में ठहरे, जिसने उन्हें दो रात और तीन दिन का ठहरने का खर्च मुफ्त में दिया था। 6 अगस्त 2009 को रात के खाने पर, मैंने अशोक से शरारती अंदाज़ में पूछा, 'पिछली बार के भयानक अनुभव के बाद आप फिर से ताज में कैसे ठहर रहे हैं?' वह मेरी बात पर

भड़क उठा और गुस्से और आक्रोश से जवाब दिया, जिससे मुझे बहुत खुशी हुई, 'तुम्हारा मतलब क्या है? आखिर हमारे लिए ताज के साथ एकजुटता दिखाना ज़रूरी है, न कि उन्हें उस चीज़ के लिए सज़ा देना जो स्पष्ट रूप से उनकी गलती नहीं थी। बल्कि, मैं भविष्य में भी अपने खर्च पर यहीं ठहरता रहूंगा, इसका उनके मुफ्त में दिए गए ऑफर से कोई लेना-देना नहीं है। ताज को हमारे हर संभव समर्थन की ज़रूरत है और मैं टाटा समूह को निराश नहीं करूंगा।' उनकी पत्नी नूतन ने सिर हिलाया और कहा, 'यह सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आता है कि कसाब ने उन दिनों ताज में हमारे बगल के कमरों में ठहरे इतने सारे निर्दोष लोगों को मारने के बाद अब मटन बिरयानी मांग रहा है।' क्या उसे लगता है कि वह स्कूल पिकनिक पर निकला है?
ताज महल होटल परिवार ने न केवल अपने मेहमानों के प्रति अपनी गरिमा का परिचय दिया है, बल्कि 26/11 हमले के हर पीड़ित की मदद करने का बीड़ा भी उठाया है। मोहम्मद उमर शेख, वह टैक्सी ड्राइवर जिसने कसाब और खान को सीएसटी तक छोड़ा था, और जिसकी टैक्सी बम धमाके में चकनाचूर हो गई थी और जिसमें उसका यात्री भी मारा गया था, अपने पीछे एक गर्भवती पत्नी और दो से छह साल की उम्र के तीन छोटे बच्चे छोड़ गया। 7 अगस्त 2009 को, ताज पब्लिक सर्विस वेलफेयर ट्रस्ट ने उसके नवजात शिशु के अस्पताल के सभी खर्चों का वहन करने का जिम्मा लिया। जन्म के तुरंत बाद शिशु अचानक चुप हो गया था और सांस नहीं ले पा रहा था। नवजात शिशु को नवजात आईसीयू में वेंटिलेटर पर रखा गया था, और कुछ समय बाद उसकी हालत में सुधार हुआ। वाह ताज!

दस/ग्यारह बम

मुंबई पुलिस की जांच टीम कुल दस बमों का पता लगाने में सफल रही है। प्रेस में ग्यारह बमों (फटे और अफरा-तफरी वाले) की रिपोर्टें इससे अलग संकेत देती हैं। हमलों के दौरान लगाए गए बमों की सूची इस प्रकार है:
1. नरिमन हाउस परिसर में विस्फोट हुआ।
2. नरिमन हाउस के बाहर, कोलाबा कॉज़वे पर स्थित एक्सप्रेस पेट्रोल स्टेशन में विस्फोट हो गया।
3. ओबेरॉय में स्थित टिफिन रेस्टोरेंट में विस्फोट हो गया।
4. ट्राइडेंट होटल की पांचवीं मंजिल में विस्फोट हो गया।
5. ट्राइडेंट की लॉबी में मिला, लेकिन एक पुलिसकर्मी द्वारा बाहर फेंके जाने पर, विस्फोट हो गया।
6. वाडी बंदर/मजगांव टैक्सी में विस्फोट हुआ।
7. विले पार्ले टैक्सी में विस्फोट हो गया।
8. ताज महल होटल का गुंबद फट गया।
9. ताज महल के मुख्य प्रवेश द्वार के पास टाइलों के ढेर के पास, एक अविघटित वस्तु।

1

10. ताज महल होटल से कुछ मीटर दूर, गोकुल रेस्तरां के खुले बरामदे में, बिना फटा हुआ।
11. सीएसटी स्टेशन का पार्सल कक्ष, विस्फोट नहीं हुआ।
नवंबर 2008 के आतंकी हमलों की जांच भारतीय जनता और जांच एजेंसियों दोनों के लिए रहस्य बनी हुई है। अनसुलझे रहस्यों में से एक बमों की संख्या है। इस तरह के बड़े ऑपरेशन में गलतियां होना स्वाभाविक है, लेकिन जैसे-जैसे साजिश के रहस्य खुलते जा रहे हैं, बरामद बमों की कुल संख्या अस्पष्ट बनी हुई है। सबसे पहले, बम निरोधक एवं पहचान दल द्वारा ताज महल होटल के पास दो अविघटित बम बरामद किए गए, एक ताज के पीछे गोकुल रेस्तरां के पास और दूसरा ताज के मुख्य प्रवेश द्वार के पास, गेटवे ऑफ इंडिया की ओर।
इसके बाद ओबेरॉय-ट्राइडेंट होटल में तीसरे बम का पता चला। आधी रात से पहले, कुछ कर्मचारियों ने लॉबी में पड़े एक लावारिस बैग की ओर इशारा किया।

ट्राइडेंट की लॉबी में गोलीबारी करते समय, आतंकवादी अपना बैग वहीं छोड़कर ओबेरॉय होटल की ओर जाने वाली सीढ़ियों की ओर बढ़ गए थे। बताया जाता है कि एक सब-इंस्पेक्टर ने बैग उठाया, लॉबी से बाहर भागा और उसे होटल के बाहर फूलों की क्यारी पर फेंक दिया। गिरते ही उसमें विस्फोट हो गया।
हालांकि, दस बमों की यह थ्योरी तब हिल गई जब हमले के एक हफ्ते बाद एक और बम बरामद हुआ। तब बमों की संख्या बढ़कर ग्यारह हो गई, जो अजमल आमिर कसाब की गवाही के विपरीत थी, जिसमें उसने कहा था कि दस्ते के दस सदस्यों में से प्रत्येक को एक-एक बम दिया गया था। उस गवाही को उभरते तथ्यों से मिलाने की कोशिश करते हुए, हिंदुस्तान टाइम्स ने 4 दिसंबर को रिपोर्ट किया: 'तो, पुलिस द्वारा ओबेरॉय होटल के बाहर मिलने का दावा किया गया बम उनके रिकॉर्ड से गायब हो गया है।'
कसाब के अनुसार, चूंकि प्रत्येक आतंकवादी को एक बम दिया गया था, तो क्या कुल मिलाकर ग्यारह आतंकवादी थे?
यह ग्यारहवां व्यक्ति कौन था, वह मुंबई कैसे पहुंचा और फिर गायब कैसे हो गया? मुर्दाघर में दो अज्ञात, लावारिस शव पड़े हैं, क्या उनमें से एक आतंकवादी हो सकता है?
क्या कसाब की गवाही में फिट होने के लिए बम को 'गायब' कर दिया गया था? क्या सूची में शामिल बमों में से एक शुरू से ही मनगढ़ंत था? इसके विपरीत, क्या यह संभव है कि कसाब ग्यारहवें बम और ग्यारहवें व्यक्ति से अनजान था, या वह झूठ बोल रहा है? क्या यह बम पहले से ही ताज महल होटल के किसी कमरे में रखा हुआ था, ताज के गुंबद को उड़ाने के लिए?
हमले के एक सप्ताह बाद, सीएसटी स्टेशन पर एक बिना फटा बम मिलने से एक और महत्वपूर्ण सुरक्षा चिंता सामने आई। स्टेशन को कितनी अच्छी तरह से सुरक्षित किया गया था?
पिछले दिनों की तरह, 3 दिसंबर 2008 को भी सीएसटी पीड़ितों के रिश्तेदार अपने निर्दोष परिजनों का सामान लेने के लिए स्टेशन पर उमड़ पड़े थे। सरकारी रेलवे पुलिस (जीआरपी) लावारिस सामान की छानबीन कर रही थी, तभी उन्हें एक भारी लाल-काले रंग का बैग मिला। बम एक स्कूल बैग जैसे दिखने वाले थैले में छिपा हुआ था। खोजी कुत्तों को बुलाया गया। शाम 6:30 बजे तक, बम पहचान और निरोधक दस्ते (बीबीडीएस) ने बम को निष्क्रिय कर दिया और पुष्टि की कि स्कूल बैग में आठ किलोग्राम आरडीएक्स मिला है, जो 'पूरे सीएसटी भवन

को उड़ाने के लिए पर्याप्त' था। मुख्यमंत्री का दौरा लगभग इसी खोज के समय हुआ। अनुमान है कि सर्किट में किसी खराबी के कारण बम फटने से बच गया और सीएसटी पर एक बड़ी मानवीय त्रासदी टल गई। पुलिस कांस्टेबल राकेश मारिया ने प्रेस को बताया, ‘कसाब ने सीएसटी पर बम लगाया था। उसने ड्राइवर की सीट के नीचे भी बम लगाया था, जो वाडी बंदर पर फट गया।’
इस बात की काफी संभावना है कि सीएसटी बम इस्माइल खान द्वारा नहीं, जैसा कि कसाब ने दावा किया था, बल्कि ग्यारहवें व्यक्ति द्वारा लगाया गया था। घटना के बाद मची अफरा-तफरी में, कोई भी व्यक्ति पीड़ितों के छोड़े हुए थैलों के बीच थैला रखकर भाग सकता था, या फिर 26-28 नवंबर की घटना के बाद भी, इसे चुपचाप अन्य लावारिस थैलों के बीच रखा जा सकता था।
कुछ समाचार पत्रों ने बताया कि ताज गुंबद को छोड़कर बाकी सभी बम कुबेर में टाइमर लगाकर रखे गए थे। इन्हें रात 8:15 बजे सेट किया गया था, ताकि ये चार घंटे और सत्तावन मिनट बाद फटें, यानी 27 नवंबर 2008 को लगभग 1:00 बजे। दूसरी ओर, कसाब ने दावा किया कि उन्होंने टाइमर नब्बे मिनट पर सेट किया था, लेकिन बाद में यह भी गलत साबित हुआ।
ग्यारह बमों में से तीन विस्फोट नहीं कर पाए, तो क्या आतंकवादी घबरा गए और परिणामस्वरूप, उत्तेजित अवस्था में उर्दू निर्देशों को गलत पढ़कर बमों की तारें गलत तरीके से लगा दीं? यदि उन्होंने सोलंकी की हत्या करने और नौसैनिक पोत को देखने के बाद बम लगाए, तो इसकी प्रबल संभावना है।
यह संभव है कि ग्यारहवां बम ताज होटल की छठी मंजिल पर रखा गया हो, जहां संभवतः कुछ आतंकवादी पहले से ही मौजूद थे।
समय के साथ, उम्मीद है कि यह रहस्य भी सुलझ जाएगा।

भाग - II

पीड़ितों की सूची

पृष्ठभूमि

यह मत पूछो कि घंटी किसके लिए बज रही है, यह तुम्हारे लिए बज रही है।
– अर्नेस्ट हेमिंग्वे
नवंबर 2008 में मुंबई में हुए आतंकी हमलों के बाद, कई अखबारों ने आतंकी हमलों में मारे गए लोगों की सूचियाँ प्रकाशित कीं। टेलीविजन चैनलों और वेबसाइटों ने भी पीछे न रहते हुए अपनी सूचियाँ जारी कीं। इन सभी सूचियों को समझने की कोशिशें नाकाम रहीं; कुछ नामों में उपनाम नहीं थे, कहीं उपनामों में नाम नहीं थे, यह पता नहीं चल पा रहा था कि मरने वाला पुरुष है, महिला है या बच्चा, कुछ नामों की वर्तनी गलत थी, उम्र, लिंग, राष्ट्रीयता आदि की जानकारी या तो गलत थी या अधूरी थी। यहाँ तक कि मृतकों की संख्या भी अलग-अलग थी (इस अध्याय के अंत में परिशिष्ट A–D देखें); कुछ जीवित लोगों को मृत बताया गया, जबकि अन्य जिनकी दुखद मृत्यु हो गई, उनका कोई ज़िक्र नहीं था। इन सूचियों के साथ काम करना जितना उलझन भरा था, उतना ही थकाने वाला भी था।
कभी-कभार गलती होना स्वाभाविक है, लेकिन यहाँ गलतियाँ तो अनगिनत थीं। जानबूझकर और अनजाने में की गई ये गलतियाँ संभवतः जीत हासिल करने की लालसा से उपजी थीं। साथ ही, ये गलतियाँ 26/11 के बाद अपनाए गए 'भारत को चौंकाओ और भड़काओ' नामक नए खेल से भी गहराई से जुड़ी थीं। इससे हिंदुस्तान टाइम्स के संपादक वीर संघवी के वे शब्द याद आते हैं, जब उन्होंने कहा था, 'अगर राजनीति को हटा दिया जाए, तो मीडिया दूसरा सबसे शक्तिशाली पेशा है। लेकिन राजनेताओं के विपरीत, जो किसी न किसी रूप में जवाबदेह होते हैं, मीडिया एक ऐसी शक्ति है जो जवाबदेही से परे है।'
लोकतंत्र और स्वतंत्र प्रेस पूरी तरह से ध्वस्त हो गए। इसके अलावा, हमारे राजनीतिक वर्ग और कार्यपालिका की कार्यप्रणाली भी संतोषजनक नहीं थी। भारतीय प्रशासनिक तंत्र हताहतों की सही संख्या और उनके नाम तक बताने में विफल रहा। हमारे राजनीतिक नेता या तो तथ्यों पर टिप्पणी करने के लिए अनुपलब्ध थे, या इससे भी बदतर, जब वे बोलते थे, तो केवल विवादास्पद बयान देते थे जिन्हें मीडिया तुरंत सनसनीखेज बना देता था।

मानव जीवन पवित्र है। हमें अमेरिका और इज़राइल से सीख लेनी चाहिए। छह अमेरिकी नागरिकों और आठ यहूदियों की मौत के बाद, अमेरिका और इज़राइल दोनों ने इस हमले को गंभीरता से लिया। लेकिन यहाँ, मेरे गाँव मेरे देश में, मरने वालों की संख्या 150 से कहीं अधिक होने के बावजूद, हमने यह जानने की भी परवाह नहीं की कि हमारे कितने मूल्यवान नागरिक मारे गए हैं। हमलों के किसी भी पूर्ण अध्ययन के लिए, एक सत्यापित और प्रामाणिक सूची, भले ही उसमें कभी- कभार कोई त्रुटि हो, अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस संवेदनहीनता और उदासीनता ने मुझे एक चुटकुला याद दिला दिया - एक छात्र से पूछा गया, 'भारत के लिए इन दोनों में से कौन सा बुरा है, अज्ञानता या उदासीनता?' छात्र ने उत्तर दिया, 'मुझे नहीं पता और मुझे परवाह भी नहीं है।' 26/11 के बाद भारतीयों में व्याप्त आक्रोश का एक बड़ा कारण यह अंतर्निहित बोध है कि सत्ता में बैठे लोग राष्ट्र के प्रति जवाबदेह नहीं हैं, ज्यादातर समय चिड़चिड़े रहते हैं और तथ्यों पर टिप्पणी करने के लिए हमेशा अनुपलब्ध रहते हैं।
मारे गए पीड़ित केवल मुर्दाघर में पड़े शव नहीं हैं, वे भारत के मूल्यवान नागरिक थे, चाहे वे सीएसटी में मारे गए हों या ताजमहल में; वे तबाह हुए भारतीयों के परिवार के सदस्य थे। उनकी उम्र कितनी थी, वे कहाँ थे जब उनकी हत्या हुई - ये ऐसे तथ्य हैं जिन्हें साझा किया जाना चाहिए, न कि तोड़- मरोड़ कर पेश किया जाना चाहिए।
हमले को सही ढंग से समझने के लिए, मुझे एक प्रामाणिक सूची की आवश्यकता थी, जो आगे के अध्यायों के लिए एक ठोस आधार का काम करे। और अंततः, सभी रास्ते मुंबई पुलिस आयुक्त के कार्यालय की ओर ही जाकर जाकर रुके।
एसीपी (क्राइम ब्रांच) कार्यालय में कुछ मुलाकातों और कुछ घंटों के इंतजार के बाद, 6 जनवरी 2009 को मेरी मुलाकात क्राइम ब्रांच प्रमुख से हुई। व्यस्त लेकिन विनम्र एसीपी श्री राकेश मारिया ने संक्षिप्त और सार्थक बातचीत के बाद अपने कार्यालय को निर्देश दिया कि मुझे मृतकों और घायलों की पूरी सूची वाली सीडी उपलब्ध कराई जाए। सीडी लेकर घर लौटने पर मुझे पहली बार लगा कि मेरे पास किताब के लिए एक ठोस आधार है।
6 जनवरी 2009 को मुझे दी गई इस सूची का उपयोग करते हुए, मैंने हताहतों को विस्तृत और गहन जानकारी के लिए कई श्रेणियों में वर्गीकृत किया है। फिर भी, हो सकता है कि कोई त्रुटि रह गई हो, लेकिन इसकी जिम्मेदारी मेरी है।
मैंने त्रुटियों को कम करने के लिए पूरी सावधानी बरतने का प्रयास किया है।

मुस्लिम मृतकों और घायलों की संख्या कुल का अठारह प्रतिशत है।
अनुभवी और सम्मानित पत्रकारों की भी इस तरह की सुस्ती और जल्दबाजी का अंदाजा लगाना मुश्किल है। टाइम्स ऑफ इंडिया के अनिल धारकर ने शायद किसी निराधार अफवाह पर विश्वास कर लिया था जब उन्होंने 5 दिसंबर 2008 को टाइम्स ऑफ इंडिया के संपादकीय अनुभाग के लिए लिखा था। विडंबना यह है कि उन्होंने मीडिया द्वारा अपना काम ठीक से न करने के बारे में विस्तार से लिखा; कि सीएसटी नरसंहार को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया था। उन्होंने लिखा, 'कवर करने के लिए पर्याप्त मानवीय पहलू थे, जैसे कि चायवाले ने लोगों की जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली... या यह चौंकाने वाला तथ्य कि शहर भर में मारे गए लोगों में से लगभग चालीस प्रतिशत मुसलमान थे।' यह चौंकाने वाला आंकड़ा उनकी नजर में क्यों नहीं आया? मुंबई हमले में मारे गए 170 लोगों में से 36 मुसलमान थे, जो वास्तव में इक्कीस प्रतिशत है, न कि दावा किया गया चालीस प्रतिशत। घायल हुए मुसलमानों और हिंदुओं की संख्या पर भी विचार करने की आवश्यकता है। घायल हुए 304 लोगों में से 49 मुसलमान पीड़ित थे। यानी यह 16 प्रतिशत है। दोनों सूचियों को मिलाकर देखें तो घायल और मृतकों की कुल संख्या 474 है, जिनमें से मुसलमानों की संख्या 85 थी, जिससे शारीरिक रूप से घायल लोगों की संख्या 18 प्रतिशत हो जाती है।
श्री धारकर का लेख प्रकाशित होने से पहले ही, द इंडियन एक्सप्रेस ने इस गलतफहमी को दूर कर दिया था (परिशिष्ट डी)। शहर भर में मारे गए कुल लोगों में से 40 प्रतिशत मुसलमान थे, इस दावे के कारण उन्होंने भारत और पाकिस्तान दोनों में पहले से ही तेज़ी से फैल रहे उन्माद को और भड़का दिया। उन्होंने पाकिस्तानियों को ठीक वही चीज़ मुहैया करा दी जिसकी उन्हें तलाश थी - पाकिस्तान द्वारा किए गए अत्याचार के लिए भारत को दोषी ठहराने का एक बहाना।
मैंने मुंबई मिरर के 3 दिसंबर 2008 के अंक में छपे पूरे पृष्ठ के विज्ञापनों को देखा, जैसे कि, 'हे भगवान! अब हम क्या कर सकते हैं? 195 निर्दोष मारे गए, 327 घायल हुए...।'
मुझे उम्मीद है कि भविष्य में ऐसी ही स्थिति उत्पन्न होने पर, मीडिया भ्रम पैदा करने वाले नामों और संख्याओं को प्रकाशित करने से पहले 'पुष्टि' करने

का विकल्प चुनेगा। जल्दबाजी ने न केवल बर्बादी की, बल्कि भारी तबाही भी मचाई।
नुकसान बहुत भयानक था। मुझे लाहौर के एक पुराने मुस्लिम मित्र से गुस्से भरा ईमेल मिला, जिसमें उन्होंने याद दिलाया कि मुंबई में मरने वालों में से 40 प्रतिशत मुसलमान थे, और अगर ऐसा है, तो भारतीय यह कैसे कह सकते हैं कि इस हमले के पीछे पाकिस्तान का हाथ है जबकि असल में हिंदू थे (क्या आपने कलाई पर बंधी पट्टी देखी? मुसलमान तो ऐसी पट्टियाँ नहीं पहनते!) मुझे पता चला कि उनका स्रोत बैंगलोर में प्रकाशित टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट थी। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के एक पीएचडी धारक (परिशिष्ट सी) को यह रिपोर्ट मिली और उन्होंने इसे प्रसारित किया। यह पाकिस्तान तक भी पहुँच गई। मैंने खुद इस दावे की पुष्टि करने का फैसला किया; मैंने इंडियन एक्सप्रेस का अपना विवरण पढ़ा - 'विस्फोटों में मारे गए 172 लोगों में से 32 मुसलमान थे,' (परिशिष्ट डी) जिससे हताहतों का प्रतिशत 40 प्रतिशत से घटकर 20 प्रतिशत हो गया। मेरे मित्र का यह तर्क कि मुसलमानों को निशाना बनाने वाले हमले के पीछे पाकिस्तान का हाथ नहीं हो सकता (जिसका अर्थ है कि कम से कम पाकिस्तान के लिए, मुसलमानों की जान बचाना महत्वपूर्ण है जबकि हिंदुओं की जान बिना किसी झिझक के ली जा सकती है) निराधार था। पाकिस्तान और अफगानिस्तान में मारे गए अधिकांश लोग मुसलमान हैं, और उनके हत्यारे भी मुसलमान ही हैं। अगर वे उन्हें उनकी ही मातृभूमि में मार सकते हैं, तो भारत में, जिस देश से वे नफरत करते हैं, वहां वे क्यों हिचकिचाएंगे?
कुछ आंकड़े:
मारे गए 170 लोगों में से 36 मुसलमान थे, यानी 21 प्रतिशत।
घायल हुए 304 लोगों में से 49 मुसलमान थे, यानी 16 प्रतिशत।
कुल 474 मृतकों और घायलों में से 85 मुसलमान थे, यानी 18 प्रतिशत।
भारत की 11 अरब आबादी में से लगभग 80.5 प्रतिशत हिंदू और 14 प्रतिशत मुस्लिम हैं।
भारत में एक लाख से भी कम पारसी हैं, जिनमें से 3 लोग हमलों का शिकार हुए।
भारत में 5,000 से भी कम यहूदी हैं और इस नरसंहार में 9 लोग मारे गए।
क्या इन तथ्यों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए?
केवल मीडिया ही विफल नहीं हुआ, बल्कि सरकारी तंत्र भी विफल रहा। उन्हें अपनी वेबसाइटों और दूरदर्शन पर सही नाम प्रकाशित करने चाहिए थे और प्रमुख

समाचार पत्रों में पूरे पृष्ठ के विज्ञापन प्रकाशित करके जनता को तथ्यों से सही जानकारी देनी चाहिए थी। यह सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, गृह मंत्रालय और राज्य सरकार का संयुक्त दायित्व था।
सीएसटी पर हताहतों और घायलों की संख्या सबसे अधिक थी, क्योंकि आतंकवादियों ने लक्षित स्थानों में से रेलवे स्टेशन को विशेष रूप से इसलिए चुना था क्योंकि वहां आकस्मिक गोलीबारी में बड़ी संख्या में लोग शामिल हो सकते थे। यह सबसे भीड़भाड़ वाला स्थान था।
सीएसटी विशाल हज भवन से सटा हुआ है और मुस्लिम अंजुमन-ए-इस्लाम परिसर से कुछ ही मिनटों की दूरी पर है। यह घनी आबादी वाले मुस्लिम बहुल क्षेत्र मोहम्मद अली रोड से मात्र दस मिनट की पैदल दूरी पर है। इसके अलावा, तटरक्षक बल की जाँच के कारण आतंकवादियों को कुछ घंटों की देरी हुई, इसलिए वे लक्षित स्थानों पर देर से पहुँचे। बुधवार शाम 9:00 बजे के बाद चलने वाली ट्रेनें अधिकतर आंध्र प्रदेश, बंगाल और उत्तर प्रदेश जैसे स्थानों की ओर जा रही थीं, जहाँ बड़ी संख्या में मुस्लिम परिवार रहते हैं। इन परिस्थितियों में, 18 प्रतिशत मुसलमानों का मारा जाना और घायल होना निस्संदेह दुखद है, लेकिन समझ से परे नहीं है।
सबसे बड़ी त्रासदी अंसारी परिवार पर आई, जो एक मुस्लिम परिवार है। सीएसटी पर आतंकवादियों अजमल कसाब और इस्माइल खान की अंधाधुंध गोलीबारी में उन्होंने अपने छह सदस्यों को खो दिया। ये बंदूकधारी हर किसी पर अंधाधुंध फायरिंग कर रहे थे। उन्होंने यह पूछने के लिए भी नहीं रुके कि कोई मुसलमान है या नहीं, वे बस वहां मौजूद लोगों की भीड़ पर गोलियां चलाते चले गए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ये रिमोट-कंट्रोल्ड रोबोट, जो एक भयानक मिशन पर निकले थे, 5,000 लोगों को मारने के लिए भारतीय धरती पर उतरे थे, और इनमें से अधिकांश लोगों को सीएसटी से ही प्राप्त किया जाना था। यह नरसंहार केवल उन पुलिसकर्मियों के कारण टल सका जिन्होंने इस प्रक्रिया में अपनी जान गंवाई - सत्ताईस वर्षीय अंबदास पवार, चौवालीस वर्षीय शशांक शिंदे, पैंतालीस वर्षीय मुरलीधर चौधरी और तेईस वर्षीय मुकेश जाधव भीकाजी। वे इसलिए शहीद हुए ताकि हम जी सकें। ईश्वर का शुक्र है कि जुल्लू यादव जैसे अन्य लोग भी थे जिन्होंने किसी और से बंदूक छीनकर गोली चलाई, और ज़ेंडे जैसे कुछ सतर्क कर्मचारियों का भी शुक्र है जिन्होंने सीएसटी पर रक्तपात को रोकने के लिए यात्रियों को समय पर चेतावनी भेजी। इन बहादुर, गुमनाम

लोगों के हस्तक्षेप के बिना सीएसटी पर मरने वालों की संख्या कहीं अधिक हो सकती थी - उनमें से कुछ आज भी जीवित हैं और हमें सच्चाई बता रहे हैं। लेकिन आइए उस घातक दुष्प्रचार वायरस पर वापस लौटते हैं जो इंटरनेट और टेलीविजन चैनलों की गति से पूरी दुनिया में फैल गया था।
मैंने लाहौर में अपने मित्र को सत्यापित तथ्यों के साथ जवाब दिया, जिससे यह साबित हुआ कि प्रतिशत बहुत कम था, और मैंने उसे मुस्लिम मृतकों के पीछे की पृष्ठभूमि भी समझाई। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मैंने अपने जवाब का अंत इस वाक्य से किया, 'और मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं उन्हें मृत मुसलमान नहीं, बल्कि मृत भारतीय मानता हूँ। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे, उन्होंने कोई गलती नहीं की थी।'
उसके बाद मैंने उनसे ‘मृत मुसलमानों’ के विषय पर कुछ नहीं सुना। संभव है कि पहली बार उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा कि चर्चा ‘मुसलमानों’ से हटकर ‘मानव जीवन’ पर केंद्रित हो गई है। संगीत समारोहों में मानवतावाद की वाहवाही करना एक बात है, और जीवन की कसौटी पर खरा उतरते समय उसे अपनाना बिलकुल अलग बात है। उदार मानवतावाद बौद्धिक ईमानदारी और भावनात्मक विकास का परिणाम है, और यह इस बात का अकाट्य प्रमाण भी है कि व्यक्ति संकीर्ण धार्मिकता से आगे बढ़कर समावेशी आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर हुआ है।
अंततः, यही फर्क था – मेरे लिए वे सभी जान गंवाने वाले इंसान थे, उनका धर्म या धर्म का अभाव मायने नहीं रखता था। लेकिन मैं अकेला नहीं था – मैं यह भी कहना चाहूंगा – भारत में मुसलमानों ने भी पाकिस्तान की इस दिखावटी चिंता को नकार दिया। उन्होंने इस ढोंग को भांप लिया और पाकिस्तानी आतंकवादियों को भारतीय कब्रिस्तानों में दफनाने से इनकार करके आतंकवाद को करारा जवाब दिया।
यही भारतीय लोकाचार है।

परिशिष्ट
परिशिष्ट ए
यूएनआई रिपोर्ट
ताज होटल में हताहतों की संख्या 195 बताई गई है, हताहतों की संख्या अभी ज्ञात नहीं है। यूएनआई; 29 नवंबर 2008; 12:32 IST

[illegible] 195 [illegible] 59 [illegible]

[illegible]

http://timesofindia.indiatimes.com/Cities/Mumbai/Flashback_Mumbai_
2008/articleshow/3918719.cms

[illegible] 9 [illegible] 6 [illegible] 40 [illegible]

[illegible]

'[illegible]' shariqnisar@yahoo.com [illegible] shariqnisar:

[illegible],

[illegible] 40 [illegible] . . . [illegible]

[illegible]

[illegible], 6 [illegible] 2008, '[illegible]':
http://www.indianexpress.com/news/a-sombre-eid/394827/

[illegible] 9 [illegible] '[illegible]' [illegible] 172 [illegible] 33 [illegible]

[illegible]

[illegible] **– 170**

[illegible]

[illegible]	5
[illegible]	9
[illegible]	10
[illegible], [illegible]	74
[illegible]	34
[illegible]	33
[illegible]	5
[illegible]	**170**

[illegible]	18
[illegible]	26

भारतीय नागरिक 126

बच्चे (अठारह वर्ष से कम आयु के
नाबालिग)

11

वरिष्ठ नागरिक (साठ वर्ष और उससे
अधिक आयु के)

17

वयस्क महिलाएं 32

पारसी - 3 (भारतीय - 3)
यहूदी – 8 (विदेशी – 8)
मुसलमान – 37 (भारतीय – 35, विदेशी – 2)
हिंदू और अन्य – 123 (भारतीय – 107, विदेशी – 16)

आतंकी हमले में मारे गए लोगों की पूरी सूची

कुल हताहत – 170 1
1. संयुक्त. पुलिस आयुक्त, एटीएस, हेमन्त करकरे
2. जोड़ें. पुलिस आयुक्त, अशोक राव कामटे
3. मेजर (एनएसजी) संदीप उन्नीकृष्णन
4. पुलिस इंस्पेक्टर विजय एस. सालस्कर
5. पुलिस इंस्पेक्टर, (आरपीएफ-सीएसटी), शशांक शिंदे
6. पुलिस सब-इंस्पेक्टर प्रकाश पी. मोरे
7. पुलिस सब-इंस्पेक्टर बापूसाहेब धुर्गुडे
8. सहा. पुलिस उपनिरीक्षक तुकाराम गोपाल ओम्बले
9. सहायक पुलिस उपनिरीक्षक बालासाहेब चंद्रकांत भोसले
10. Havaldar (NSG) Gajendra Singh
11. पुलिस हेड कांस्टेबल (आरपीएफ) मुरलीधर लक्ष्मण चौधरी
12. पुलिस कांस्टेबल अरुण रघुनाथ चित्ते
13. Police Constable Vijay Madukar Khandekar
14. पुलिस कांस्टेबल जयवंत हनुमंत पाटिल
15. पुलिस कांस्टेबल अंबादास रामचन्द्र पवार
16. पुलिस कांस्टेबल योगेश शिवाजी पाटिल
17. पुलिस कांस्टेबल, (एसआरपीएफ), राहुल सुभाष शिंदे
18. कांस्टेबल मुकेश जाधव भीकाजी, होम गार्ड
19. नाओमी शेर
20. एलन शेर
21. संदीप जेसवानी
22. मुराद अमेरसे
23. लौमिया हिरिदजी
24. विलियम जान-बर्बर्स

25. [illegible]
26. Gehara/Jina Kanmani
27. [illegible]
28. [illegible]
29. [illegible]
30. [illegible]
31. [illegible]
32. [illegible]
33. [illegible]
34. [illegible]
35. [illegible]
36. [illegible]
37. [illegible]
38. [illegible]
39. [illegible]
40. [illegible]
41. [illegible]
42. [illegible]
43. [illegible]
44. [illegible]
45. Ramesh Nagji Solanki
46. Balwant Prabhu Tandel
47. Mukesh Ambu Rathod
48. Natvar Lalubhai Rathod
49. Amarsinh Narayan Solanki
50. Farrukh Dinshaw
51. Jasmine Kaur Bhurji
52. Sanjay Surve
53. [illegible]
54. [illegible]
55. [illegible]

56. जॉर्डन फर्नांडेस
57. शंकर चेम्बुरकर
58. एस.एस. भोसले
59. विल्सन मंडलिक
60. Kanubhai Patel
61. Ajit Chhabria
62. मोनिका छाब्रिया
63. हिमस्खलन रिज
64. मोहित हरजानी
65. Sunil Parekh
66. रेशमा पारेख
67. संजय अग्रवाल
68. रीता अग्रवाल
69. Pankaj Shah
70. Uma Rathi Garg
71. Ravidas V
72. Ashok Kapur
73. आनंद एस. भट्ट
74. Rohinton Baji Mallu
75. गौतम सिंह गोसाईं
76. Rahamathulla Shaukat Ali
77. राजन कांबले
78. विजय बंजा राव
79. पाउस्टीन मंगलवार
80. थॉमस वर्गीज
81. Rabindra Jagan Kuwar
82. Kaizad Kamdin
83. हेमंत तालीम
84. सदानंद पाटिल
85. ज़हीन मतीन
86. बोरिस रेगो

87. Rupinder Randhava
88. उदय सिंह कांग
89. नीति सिंह कांग
90. समर वीर कांग
91. राजीव सारस्वत
92. नीलम नारंग
93. Vishnu Narang
94. Gunjan Narang
95. सबीना सहगल सैकिया
96. इखलाक अहमद मुश्ताक
97. P.K. Gopalkrishna
98. शाहबुद्दीन एस. खान
99. Gaurav B. Jain
100. हिदायतुल्लाह का काम
101 पीरपाशा एम. शेख
102. Malayesh Bannerjee
103. कमल एन. मोटवानी
104. Harishbhai Gohil
105. Bechand Ramprasad Gupta
106. सलीम अली हरहरवाला
107. महजबीं सलीम हरहरवाला
108. मकसूद शेख
109. Firoz J. Khan
110. मोहम्मद उमर
111. लक्ष्मण नारायण गोयल
112. अज्ञात
113. अज्ञात
114. कितने असरान
115. ज़रीना शेख
116. रीमा शेख
117. किशोरभाई फुलचंद

118. □□□ □□□□□
119. Bhanudev Narkar
120. Bhagwan G. Shinde
121. □□□□□ □□□□□□
122. □□□□□ □□□□□□
123. Nitesh Sharma
124. Aijazbhai Dalal
125. □□□□□□□□□□ □□□□□□□□
126. Sitaram Sakhare Malappa
127. Nathoni Parshuram Yadav
128. □□□□ □□. □□□□□□
129. Sushilkumar Sharma
130. Arkhabai Lalji Solankhi
131. □□□□□ □□□□□
132. □□□□□ □□□□□□
133. Chandulal Tandel
134. Prakash Mandal
135. □□□□□□□ □□□□ □□□□□□
136. □□□□□□□ □□. □□□□□□
137. □□□□□□□ □. □□□
138. Rajendra Baburam Prasad
139. □□□□ □□. □□□□□□□
140. Fatima Rehmat Shaikh
141. □□□□ □□□ □□□□
142. □□□□□□□□□ □□□□□
143. Akash A. Yadav
144. Sarfaraz Ansari
145. Raju J. Chitekar
146. Deepali Chitekar
147. Aditya Yadav
148. □□□□□□ □□. □□□

149. □□□□□□ □□□□ □□□□□
150. Shishabai Kharatmol
151. □□□□□□ □□□□□□□ □□□□
152. □□□□□□□ □□□□□□ (□□□□□□□)
153. Shirish Chari
154. □□□□□ □□□
155. □□□□□□
156. □□□□ □□□□□ □□□□□□
157. □□□□ □□□ □□□
158. □□□□□□ □□□□□□
159. Rakhila Ansari
160. Mohd. Iliyas Ansari
161. □□□□□□ □□□□□□
162. Anish Prabhu
163. Upendra Birju Yadav
164. □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□
165. □□□□□□□ □□□□□ □□□
166. Avdesh Pandit
167. Shivshankar Gupta
168. Surendra Kumar Binduram
169. □□□□□□□ □□□□
170. Manohar Sahani

□□□□□□□ □□ □□□□□: □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□

170 □□□□□□□ □□ □□□□□

□. □□□□□□ – 144

□□□□□□□□□□□□ – 18

□□□□□□ – 126

□□. □□□□□□ – 26

□□□□□□

□□	□□□□ □□□□
□□□□□	– □□□□□□□ □□ □□□□□□
□□□□□□□□ □□□□□□□□	– □□□□□ □□□□
□□□	– □□□□□□-□□□□□□□□ □□□□
□□□□	– □□□ □□□ □□□□
□□□□	– □□□□□□□□□ □□□□
□□□□□□	– □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□
□□□□□	– □□□□□□
□□□□	– □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□

□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ **– 18**

No.	Name	Age	POI
1.	Jt. Commissioner of Police, Hemant Kamlakar Karkare	54	CH
2.	Addtl. Commissioner of Police, Ashok Rao Kamte,	47	CH
3.	Major (NSG) Sandeep Unnikrishnan	32	TJ
4.	Police Inspector Vijay Sahdev Salaskar	51	CH
5.	Police Inspector (RPF), Shashank Chandrasen Shinde	44	CST
6.	Police Sub-Inspector Prakash P. More	40	CH
7.	Police Sub-Inspector (ATS) Bapurao S. Dhurgude	45	CH
8.	Asst. Police Sub-Inspector Tukaram Gopal Omble	54	CY
9.	Asst Police Sub-Inspector Balwantsaheb C. Bhosale	40	CH
10.	Hawaldar (NSG) Gajendra Singh	38	NH
11.	Police Head Constable (RPF) Murlidhar Chowdhary	45	CST
12.	Police Constable Arun R. Chitte	36	MJ
13.	Police Constable Vijay M. Khandekar	34	CH
14.	Police Constable Jaywant H. Patil	30	CH
15.	Police Constable Ambadas R. Pawar	27	CST
16.	Police Constable Yogesh S. Patil	25	CH
17.	Police Constable (SRPF) Rahul S. Shinde	20	TJ
18.	Constable (Home Guards, Mumbai) Mukesh Bhikaji	23	CST

□ II. □□□□□□ □□□□□□ – 126

26/11 □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ 126 □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□-□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□

□□. □□□□□□□: □□□ – 26

1	Sandeep Jeswani	43	USA	OT
2	Alan Scherr	58	USA	OT
3	Naomi Scherr	13	USA	OT
4	Rabbi Gavriel N. Holtzberg	29	USA/ Israel	NH
5	Rabbi Bentzion Chromin	28	USA/Israel	NH
6	Rabbi Leibish Teitelbaum	50	USA/Israel	NH
7	Elizabeth Russell	65	Canada	TJ
8	Michael Stuart Moss	73	Canada	CST
9	Norma Rabinovich	50	Mexico	NH
10	Andreas Liveras	73	U.K.	TJ
11	Mourad Amarsy	49	France	OT
12	Loumia Hiridjee	47	France	OT
13	Jurgen Heinz Schmidt	68	Germany	CST
14	Daphne Schmidt	50	Germany	CST
15	Ralph Burkei	51	Germany	TJ
16	Williem Jan-Berbers	57	Netherlands/ Belgium	TJ
17	Antonio Di Lorenzo	63	Italy	OT
18	Rivka Gavriel Holtzberg	28	Israel	NH
19	Yocheved Orpaz	62	Israel	NH
20	Gehara/Jina Kanamani	27	Thailand	OT
21	Lo Hwei Yen	28	Singapore	OT
22	Hisashi Tsuda	38	Japan	OT

23	Hema Kasipillai	51	Malaysia	TJ
24	Douglas Markell	71	Australia	TJ
25	Brett Taylor	49	Australia	CST
26	Gunness Chaitlall	54	Mauritius	TJ

[illegible]

[illegible]

□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□

□□□□ □□□□/□□□□□/□□□□□□□ **– 170** □□□□□□□ □□ □□□□□

□□□□□□ □□□□□□□	– 5
□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□	– 9
□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□	– 10
□□□□□□	– 5
□□□□□□	– 74
□□□□□□-□□□□□□□□□ □□□□	– 34
□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□	– 33

□□-□□□□□□ □□ □□□□□: □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ – 5

1. □□□□ □□□□□ □□□□□□, 36 □□□□, □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□
2. □□□□□ □□□□□ □□□□□, 45 □□□□, □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□
3. □□□□□ □□□□ □□□□□□, 20 □□□□, □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□
4. Natvar Lalubhai Rathod, 23, killed after being hijacked.
5. □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□, 38 □□□□, □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□

□□□: □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□ □□-□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□: '□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□' □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□

□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ – 9

1. □□□□□ □□□□□□□□□□□□□, 24 □□□□, □□□□ □□□□
2. □□□□□□□□ □□. □□□, 42 □□□□, □□□□ □□□□
3. □□□□□ □□□□□□, 27, □□□□
4. □□□□ □□. □□□, 25 □□□□, □□□□ □□□□

5. □□□□□□ □□□□□□□, 44, □□□□ □□ □□□□□
6. □□.□□. □□□□□□□□□□□ 45, □□□□
7. □□□□□□□□□□□ □□. □□□, 46, □□□□ □□ □□□□□
8. □□□ □□. □□□□□□□□, 38, □□□□ □□□□
9. Bechand Ramprasad Gupta, 45, Outside Leo
□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ **– 10**
1. Havildar (NSG) Gajendra Singh, 38, Indian, NH
2. Harishbhai Gohil, 35, Indian, Near NH
3. □□□□ □□□ □□□□□□□□, 62, □□□□□□, □□□□ □□ □□□
4. □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□, 57, □□□□□□, □□□□ □□ □□□
5. □□□□□ □□□□□□□ □□. □□□□□□□□□□□□, 29, □□□□□/□□□□□□□, □□□□
6 □□□□□□ □□□□□□□□□□□□, 28, □□□□□□□, □□□□
7 □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□, 38, □□□□□□□/□□□□□□, □□□□ □□□□□□□□□
8 □□□□□□□ □□□□□□, 62, □□□□□□□, □□□□ □□□□□□□□□
9 □□□□□□□□□ □□□□□□, 28, □□□□□/□□□□□□□, □□□□□
10. □□□□□□ □□. □□□□□□□□□, 50 □□□□, □□□□□□□□, □□□□ □□□□□□□□□
□□□□□□□ □□□ **– 5,** □□□ □□□□□□
1. □□□□□ □□□, 40, □□□□□□
2. □□□□□□□□ □□□□□□, 32, □□□□□□□□
3. □□□□ □□□, □□□□□, □□□□□□□□
4. □□□□□□□ □□□□□ □□□□, 57 □□□□, □□□□ □□□□□□
5 □□□□□□□ □□□, 28, □□□□ □□□□□□
□□□□□□/□□□□/□□□□□□ □□□□□□/□□□□□□ □□□ □□□□□ **– 74,** □□□□□□-**70,** □□□□□□-**4**
□□□□ – 15, □□□□□□ – 59
□□□□□□□ – 8, □□□□□□ □□□□□□ – 6
□□□□□□ □□□: 58; □□□□ – 4, □□□□□□ – 54
□□□ CH – 13; Sp – 9, □□□□□□ – 4
□□□□ □□□ – 2; □□□□ – 1, □□□□□□ – 1
□□□ □□□□ – 1; □□□□□ □□□□ – 1.

1.	□□□□□ □□□□□	54, □□□□□, □□□□, □□□□
2.	Ashok Rao Kamte	47, □□□□□, □□□□, □□□□

3.	□□□□ □□□□□ □□□□□□□	51, □□□□□, □□□□, □□□□
4.	Prakash P. More	40, □□□□□, □□□□, □□□□
5.	□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□	45, □□□□□, □□□□, □□□□
6.	□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□	54, □□□□□, □□□□, □□□□□
7.	Balwant Chandrakant Bhosale	40, □□□□□, □□□□, □□□□
8.	Arun Raghunath Chitte	36, □□□□□, □□□□, □□□□
9.	Vijay Madukar Khandekar	34, □□□□□, □□□□, □□□□
10.	Jaywant Hanumant Patil	30, □□□□□, □□□□, □□□□
11.	Ambadas Ramchandra Pawar	27, □□□□□, □□□□, □□□□□□
12.	Yogesh Shivaji Patil	25, □□□□□, □□□□, □□□□
13.	Shashank Chandrasen Shinde	44, □□□□□, □□□□, □□□□□□
14.	Murlidhar Laxman Chowdhary	45, □□□□□, □□□□, □□□□□□
15.	Mukesh Jadhav Bhikaji	23, □□□□□, □□□□, □□□□□□
16.	Arkhabai Lalji Solankhi	53, □□□□□, □□□□□□
17.	□□□□□ □□□□□	30, □□□□□, □□□□□□
18.	□□□□□ □□□□□□	32, □□□□□, □□□□□□
19.	Chandulal Tandel	50, □□□□□, □□□□□□
20.	Prakash Mandal	26, □□□□□, □□□□□□
21.	□□□□ □□. □□□□□□□	22, □□□□□, □□□□□□
22.	□□□□□□□□□□ □□□□□□□□	63, □□□□□, □□□□□□
23.	Fatima Rehmat Shaikh	65, □□□□□, □□□□□□
24.	□□□□ □□□ □□□□	30, □□□□□, □□□□□□

25.	□□□□□□□□□ □□□□□	40, □□□□□, □□□□□□
26.	Shivshankar Gupta	38, □□□□□, □□□□□□
27.	□□□□□□ □□□□ □□□□□	31, □□□□□, □□□□□□
28.	□□□□□□ □□. □□□□□□	65, □□□□□, □□□□□□
29.	□□□□□□ □□□□□□□ □□□□	45, □□□□□, □□□□□□
30.	□□□□□□ □□□□□□	7, □□□□□, □□□□□□
31.	Shirish Chari	44 □□□□□, □□□□□□
32.	□□□□□ □□□□□	26, □□□□□ □□□□□□
33.	Nathoni Parshuram Yadav	42. □□□□□, □□□□□□
34.	□□□□ □□□ □□□	21 □□□□□ □□□□□□
35.	Malappa Sitaram Sakhare	40, □□□□□ □□□□□□
36.	□□□□□□□ □□□□ □□□□□□,	34, □□□□□, □□□□□□
37.	□□□□□□□ □□. □□□□□□	15, □□□□□, □□□□□□
38.	Sarfaraz Ansari	17, □□□□□, □□□□□□
39.	□□□□□□ □□□□□□	55, □□□□□, □□□□□□
40.	Rakhila Ansari	40, □□□□□, □□□□□□
41.	Mohd Iliyas Ansari	40 □□□□□, □□□□□□
42.	□□□□□□ □□□□□□	40, □□□□□, □□□□□□
43.	Nitesh Sharma	15, □□□□□, □□□□□□
44.	Anish Prabhu	35, Kanyakumari, CST
45.	□□□□□□	55 Kanyakumari, CST
46.	Upendra Birju Yadav	35, □□□□□□, □□□□□□
47.	Akash Yadav	5, □□□□□□ □□□□□□
48.	Aditya Yadav	4, □□□□□□, □□□□□□
49.	□□□□□ □□□	20 □□□□□ □□□□□□ □□□□□□
50.	Aijazbhai Dalal	39, □□□□□□□, □□□□□□
51.	□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□	35, □□□□□□□, □□□□□□
52.	□□□□□□□ □□□□□ □□□	32, □□□□□, □□□□□□

53.	Avdesh Pandit	25, □□□□□, □□□□□□
54.	□□□□□□□ □. □□□	19, □□□□□, □□□□□□
55.	□□□□ □□□□□ □□□□□□	51, Vardha, CST
56.	□□□□ □□. □□□□□□	67, □□□□□, □□□□□□
57.	□□□□□□ □□. □□□	18, □□□□□, □□□□□□
58.	Sushilkumar K. Sharma	48, □□□□□, □□□□□□
59.	□□□□□□□ □□□□	33, □□□□□□□□, □□□□□□
60.	Manohar Sahani	30, Uttar Pradesh, CST
61.	Rajendra Baburam Prasad,	30, Uttar Pradesh, CST
62.	Raju J. Chitekar	8, □□□□□□□, □□□□□□
63.	Deepali Chitekar	10, □□□□□□□, □□□□□□
64.	□□□ □□□□□	55, Mumbai, CH
65.	Bhanudev Narkar	45, Mumbai, CH
66.	Bhagwan G. Shinde	40, Mumbai, CH
67.	□□□□□ □□□□□□	33, Mumbai, CH
68.	Surendra Kumar Binduram	30. Bihar, MC
69.	□□□□□□,	55, □□□□□□, □□□□□□
70.	□□□□□□	35, □□□□□□, □□□□□□
71.	□□□□□ □□□□□□□□ □□□	73, □□□□□, □□□□□□
72.	□□□□□ □□□□□	50, □□□□□□, □□□□□□
73.	□□□□□□ □□□□ □□□□□	68, □□□□□□, □□□□□□
74.	□□□□□ □□□□	49, □□□□□□□□□□□, □□□□□□

□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ **– 33,** □□□□□□**-26,** □□□□□□**-7**

1.	□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□	32, □□□□□□
2.	□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□	20, □□□□□□□□

3.	□□□□ □□□□ □□□□□□	22, □□□□□□□□
4.	Rahamathulla Shaukat Ali	53, □□□□□□□□
5.	□□□□ □□□□□□	49, □□□□□□□□
6.	□□□□ □□□□ □□□	48, □□□□□□□□
7.	□□□□□ □□ □□□□□□□	48, □□□□□□□□
8.	□□□□ □□□□□□	48, □□□□□□□□
9.	Rabindra Jagan Kuwar	32, □□□□□□□□
10.	Kaizad Kamdin	28, □□□□□□□□
11.	□□□□□ □□□□□	27, □□□□□□□□
12.	□□□□□□ □□□□□	25, □□□□□□□□
13.	□□□□□ □□□□	25, □□□□□□□□
14.	□□□□□ □□□□	23, □□□□□□□□
15.	Rupinder Randhava	29, □□□□□ □□□□□□
16.	□□□ □□□□ □□□□	12, □□□□□ □□□□□□
17.	□□□□ □□□□ □□□□	38, □□□□□ □□□□□□
18.	□□□ □□□ □□□□	5. □□□□□ □□□□□□
19.	□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□3 □□□□□□□	46, □□□□□ □□□□□□
20.	□□□□□ □□□□□□□	45, □□□□□, □□□□□□
21.	□□□□□ □□□□□□	52, □□□□□, □□□□□□
22.	Vishnu Narang	62, □□□□□, □□□□□□
23.	Gunjan Narang	32, □□□□□, □□□□□□
24.	□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□	73, □□□□□, □□.□□.
25.	□□□□□□ □□□□□	57, □□□□□, □□□□□□
26.	□□□□ □□□□□□□	73, □□□□□, □□□□□□□□□□□□
27.	Hemlata Kasipillai	51, □□□□□, □□□□□□□
28.	□□□□□□-□□□ □□□□□□□	57, □□□□□, □□□□□□□□/□□□□□□□□

29.	[illegible] [illegible]	51, [illegible], [illegible]
30.	[illegible] [illegible]	65, [illegible], [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

15.	Sunil Parekh	45, □□□□□, □□□□□□
16.	□□□□□ □□□□□	42, □□□□□, □□□□□□
17.	□□□□ □□□□□□□	48, □□□□□, □□□□□□
18.	□□□□ □□□□□□□	42, □□□□□, □□□□□□
19.	Pankaj Shah	60, □□□□□, □□□□□□
20.	Uma Rathi Garg	44, □□□□□, □□□□□□
21.	Ravidas V	60, □□□□□, □□□□□□
22.	Ashok Kapur	57, □□□□□, □□□□□□
23.	□□□□ □□ □□□□	60, □□□□□, □□□□□□
24.	Rohinton Baji Mallu	48, □□□□□, □□□□□□
25.	Farrukh Dinshaw	52, □□□□□, □□□□□□
26.	□□□□□ □□□	13, □□□□□, □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□
27.	□□□ □□□	58, □□□□□, □□□□□
28.	□□□□□ □□□□□□□	43, □□□□□, □□□□□
29.	□□□□□ □□□□□	49, □□□□□, □□□□□
30.	□□□□□ □□□□□□□	45, □□□□□, □□□□□
31.	□□□□□□□□ □□ □□□□□□□	63, □□□□□, □□□□
32.	□□□: □□□□□	27, □□□□□, □□□□□□□
33.	□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□3 □□□□□□□ □□□□	28, □□□□□, □□□□□□□□
34.	□□□□□ □□□□□	38, □□□□□, □□□□□

□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□

□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□

□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□/□□□□□□□

□□□□□□ □□□□□□, □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□

□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□

18 □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□/□□□□□□□□ □□□ **- 11**

1.	Naomi Scherr	13	OT
2.	Uday Singh Kang	12	TJ
3.	Samar Veer Kang	5	TJ
4.	Nitesh Sharma	15	TJ
5.	Murtaza S. Ansari	15	CST
6.	Akash A. Yadav	5	CST
7.	Raju J. Chitekar	8	CST
8.	Deepali Chitekar	10	CST
9.	Aditya Yadav	4	CST
10.	Afreez Kureshi	7	CST
11.	Sarfaraz Ansari	17	CST

□□□□□□ □□□□□□, □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ **- 17,** □□□□□ **- 12,** □□□□□□□ **- 5**

1.	Kanubhai Patel	76	OT
2.	Pankaj Shah	60	OT
3.	Ravidas V	60	OT
4.	Anand S. Bhatt	60	OT
5.	Antonio Di Lorenzo	63	OT
6.	Elizabeth Russell	65	OT
7.	Michael Stuart Ross	73	OT
8.	Vishnu Narang	62	TJ
9.	Andreas Liveras	73	TJ
10.	Douglas Markell	73	TJ
11.	Yocheved Orpaz	62	NH
12.	Rahimatulla Ibrahim	63	CST
13.	Meera Chatterjee	67	CST
14.	Fathima Rehmat Sheikh	65	CST
15.	Sheshbai B. Haratmol	65	CST
16.	Jurgen Schmidt	68	LEO
17.	Salim Ali Harharwala	62	NH

कुल **32** वयस्क महिलाओं की मौत हुई।

1.	Rivka Gavriel Holtzberg	28	NH
2.	Norma Rabinovich	50	NH
3.	Mehjabeen Harharwala	57	NH
4.	Loumia Hiridjee	47	OT
5.	Gehara/Jina Kanmani	27	OT
6.	Lo Hwei Yen	28	OT
7.	Elizabeth Russell	65	TJ
8.	Jasmine Kaur Bhurji	21	OT

9.	Ami V. Thakur	24	OT
10.	Neeta Gaikwad	23	OT
11.	Monica Chhabria	35	OT
12.	Lavina Harjani	36	OT
13.	Reshma Parekh	42	OT
14.	Reeta Agarwal	42	OT
15.	Uma Rathi Garg	44	OT
16.	Rupinder Randhava	29	TJ
17.	Neeti Singh Kang	38	TJ
18.	Nilam Narang	52	TJ
19.	Sabina Sehgal Saikia	46	TJ
20.	Hemalata Kasipillai	51	TJ
21.	Meera Chatterjee	67	CST
22.	Arkhabai L. Solankhi	53	CST
23.	Poonam B. Navadia	22	CST
24.	Amina Shaikh	20	CST
25.	Fatima Rehmat Shaikh	65	CST
26.	Sheshbai B. Haratmol	65	CST
27.	Rakhila Ansari	40	CST
28.	Mitu Asrani	26	CST
29.	Daphne Schmidt	50	CST
30.	Mehjabeen Harharwala	57	NH
31.	Reema Shaikh	–	Mazgaon, taxi blast
32.	Zarina Shaikh	40	Mazgaon, taxi blast

□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□

□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□, □□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□-□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□, '□□□□□ □□ □□□□' □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□

□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□, □□ 1 □□□ □□ □□□□ □□, □□□ □□ □□□□ 83 □□□□□□□ □□□□□ □□ 14 □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□, □□□, □□□, □□□□, □□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ 3 □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□

□□□ □□□□□ **– 170,** □□□□□□ **– 144**

□□□□□□□□	3 (□□□ □□□□□□)
□□□□□□□□□	36 (34 □□□□□□, 2 □□□□□□□□□ □□□□□□)
□□□□□□□□	9 (□□□□□□□/□□□□□□/□□□□□□/□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□)
□□□□□ □□ □□□□	123 (107 □□□□□□, 16 □□□□□□)

□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ **– 37**

□□□□□□ – 35, □□□□□□ – 2

18 □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ - 3 □□□□, □□□□□□ □□□□□□ (60 □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□)

1. □□□□□ □□□□□, 49
2. □□□□□□ □□□□□□□, 45, □□□□□□□
3. Rahamathulla Shaukat Ali, 53
4. □□□□□ □□□□,
5. □□□□□ □□□□ □□□□□□□, 29
6. Shahabuddin S. Khan, 46

7. □□□□□ □□□□□□□□□□□□, 24
8. □□□ □□□□ □□. □□□, 42
9. □□□□ □□□ □□□□□□□□, 62
10. Mehjabeen Salim Harharwala, 57
11. □□□□□ □□□, 50
12. Firoz J. Khan, 29
13. □□□□□□□ □□□, 28
14. □□□□□□ □□□, 40
15. □□□□ □□□, 30
16. Aijazbhai Dalal, 39
17. □□□□□□□□□□ □□□□□□□□, 63
18. □□□□□□□ □□□□ □□□□□□, 34
19. □□□□□□□ □□. □□□□□□, 15
20. □□□□□□□ □. □□□, 19
21. Fatima Rehmat Shaikh, 65
22. □□□□ □□□ □□□□, 30
23. Sarfaraz Ansari, 17
24. □□□□□□ □□. □□□, 18
25. □□□□□□ □□□□ □□□□□, 31
26. □□□□□□ □□□□□□□ □□□□, 45
27. □□□□□□ □□□□□□, 7
28. □□□□ □□□□□ □□□□□□, 51
29. □□□□ □□□ □□□, 21
30. □□□□□□ □□□□□□, 55
31. Rakhila Ansari, 40
32. Mohammed Iliyas Ansari, 40
33. □□□□□□ □□□□□□, 40
34. □□□□ □□□□□□ □□□□□□□, 55
35. □□□□□□□ □□□□□ □□□, 32
36. □□□□□ □□□, 20

1. Kaizad Kamdin, 28
2. Rohinton Baji Mallu, 48
3. Farrukh Dinshaw, 52

□□□□ □□ □□□□□ – 8

1. □□□□□ □□□□□□□ □□. □□□□□□□□□□□□, 29
2. □□□□□ □□□□□□□□□□□□, 28
3. □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□, 38
4. □□□□□□□ □□□□□□, 62
5. □□□□□□□□□ □□□□□□, 28
6. □□□□□□ □□. □□□□□□□□□, 50
7. □□□□□□□ □□□□ □□□□□, 68
8. □□□□□ □□□□□, 50

अन्य श्रेणियाँ

सिंधी समुदाय के 10 लोग मारे गए (भारतीय – 9, विदेशी – 1)
वर्गीकरण के उद्देश्य से, मैंने अपने समुदाय, सिंधी हिंदुओं के जीवन की हानि का उदाहरण लिया है। यह समुदाय सिंध (अब पाकिस्तान में) में स्थित अपनी पैतृक भूमि से भारत भाग आया था ताकि सिंध के नए इस्लामी राष्ट्र, पाकिस्तान का हिस्सा बनने के तुरंत बाद शुरू हुए जातीय सफाए से बच सके। विडंबना यह है कि आतंकवादियों ने सिंधी शहर कराची से ही अपने इस मिशन को अंजाम दिया था। सिंध में रहने वाले 14,00,000 हिंदू सिंधियों में से लगभग 12,25,000 अगस्त 1947 के तुरंत बाद भाग गए थे। उनमें से अधिकांश मुंबई में बस गए। सांख्यिकीय रूप से, यह एक घुमंतू लेकिन शांतिप्रिय और परोपकारी समुदाय होने के बावजूद, सिंधी हिंदुओं को एक बार फिर जीवन की दुखद हानि का सामना करना पड़ा है, कुल 170 मौतों में से 10 सिंधी हिंदू हैं। मृतकों में से एक, श्री विश्वनाथदास नारंग ने अपने जीवनकाल में विभाजन और 26/11 दोनों घटनाओं को देखा था।
1. संदीप जेसवानी, 43 वर्ष, संयुक्त राज्य अमेरिका
2. Ajit Chhabria, 42
3. मोनिका छाब्रिया, 35
4. मोहित हरजानी, 37
5. लवीना हरजानी, 36
6. Vishwanathdas Narang, 62
7. Gunjan Narang, 32
8. नीलम नारंग, 52
9. कमल मोटवानी, 38
10. मितु असरानी, 26
ड्यूटी के दौरान मारे गए कर्मचारी – 55
1. सुरक्षा कर्मी 18
2. घन 5
3. लियोपोल्ड 2

4.	□□□□□□□	2
5.	□□□□□□□	3
6.	□□□□□□□-□□□□□□□□□□	9
7.	□□□ □□□ □□□□	12
8.	□□□□□□□□ □□ □□□□□□□	2
9.	□□□□ □□□□□□□□	2

6 जनवरी 2009 तक घायल पीड़ितों की सूची

कुल – 304; सुरक्षाकर्मी – 37; विदेशी – 26

ए. घायल सुरक्षाकर्मियों की सूची, उन्हें जिस अस्पताल में भर्ती कराया गया था उसके अनुसार।
1. दीपक नरसू ढोले, बॉम्बे हॉस्पिटल आईसीयू
2. विजय तुकाराम पोवार, बॉम्बे हॉस्पिटल आईसीयू
3. Vijay Bhikaji Shinde, Bombay Hospital
4. नितिन दिघंबर काकडे, बॉम्बे अस्पताल
5. Arunkumar Mane, Bombay Hospital
6. Arun Dada Jadhav, Bombay Hospital
7. अशोक लक्ष्मण पवार, बॉम्बे हॉस्पिटल
8. प्रवीण पांडुरंग सावंत, बॉम्बे अस्पताल
9. शंकर भाऊसाहेब वंदे, बॉम्बे हॉस्पिटल
10. सुदागर निवृत्ति शिंदे, बॉम्बे हॉस्पिटल
11. अमित रघुनाथ खेतले, बॉम्बे अस्पताल
12. मोहन तातोबा शिंदे, जे.जे. अस्पताल
13. निवृत्ति गवाने, जे.जे. अस्पताल
14. मुरलीधर चिंदु झोले, जी.टी. अस्पताल
15. बंडू बालू मोरे, जी.टी. अस्पताल
16. सचिन दादासाहब तिलेकर, जी.टी. अस्पताल
17. विनायक चिंतामन दादनगव्हल, जी.टी. अस्पताल
बी. घायल नागरिकों और सुरक्षा कर्मियों की पूरी सूची

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
1	Arunkumar Mane	Male	–	Indian	Police
2	Zahed	Male	45	Jordian	Foreigner
3	Anil Yadav	Male	–	Indian	Public
4	Patil Ashish	Male	–	Indian	Public
5	Gujram Jagdish	Male	–	Indian	Public
6	Ranjit Jadhav (PN 965 SRPF)	Male	34	Indian	Police

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
25	Katcherine Instee	Female	24	Australian	Foreigner
26	Firechand	Male	–		
27	Rajvir (Cammondo)	Male	–	Indian	Police
28	Rajendra Kore (Commando)	Male	34	Indian	Police
29	Antonni Savy (Commando)	Male	24	Indian	Police
30	Dinesh Pannalal Shahu (Commando)	Male	–	Indian	Police
31	Anil Kolhe (SRPF - 1) ASI	Male	–	Indian	Police
32	Dipak Dhole (PI Colaba)	Male	–	Indian	Police
33	Babu Bandu More (PC 31615)	Male	40	Indian	Police
34	Saudagar Shinde (PC 23965)	Male	–	Indian	Police
35	Ashok L. Pawar (PN 6122)	Male	–	Indian	Police
36	Joy Joseph	Male	22	Indian	Public
37	Shankar Pawar (Commando)	Male	–	Indian	Police
38	Nitin Digamber Kakde (PSI Colaba)	Male	34	Indian	Public
39	Manish (Commando)	Male	–	Indian	Police
40	Murlidhar Jhole (HC 970987)	Male	35	Indian	Police
41	C.M. Puri	Male	57	Indian	Public
42	Amit Khetle (Zone 1 operator)	Male	–	Indian	Police

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
43	Vijay Powar (API Azadmaidan)	Male	47	Indian	Police
44	Iqbal Khan	Male	20	Indian	Public
45	Andolina Vaoagta	Female	–	Indian	Public
46	Willium Pike	Male	28	UK	Foreigner
47	Amitendra Kumar Singh	Male	–		
48	Jaiprakash Fadtare	Male	47	Indian	Public
49	Kunal Jeswani	Male	31	Indian	Public
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
66	Mukesh Agarwal	Male	45	Indian	Public
67	Michal Rudder	Male	–	Canadian	Foreigner
68	Lind Orcistala	Male	–	American	Foreigner
69	Shanti Mayur Ransley	Female	–	Indian	Public
70	Shankar	Male	–		
71	Shih Fung Chen	Male	49	Chinese	Foreigner
72	Pandurang Patil (ASI Railway)	Male	52	Indian	Police
73	Raghu Deora	Male	–		
74	Vinay Kuntavala Keshavji	Male	68	Indian	Public
75	Sunilkumar Yadav	Male	29	Indian	Public
76	Rakesh Chavan	Male	–		
77	Gyani Reshma	Female	–		
78	Sushil (Commando)	Male	–	Indian	Police
79	Mohan Shinde (HC 338)	Male	–	Indian	Police
80	Nivrutti Babulal Gavane	Male	–	Indian	Public
81	Andalina Waogta	Female	–	American	Foreigner
82	Ibrahim Rehmatpure	Male	37	Indian	Public
83	Sistla Sandhya Dhananjay	Female	28	Indian	Public
84	Bibi Sakina	Female	65	Indian	Public
85	Nanda Sunita Deep	Female	33	Indian	Public
86	Sharma Pallavi Vikas	Female	26	Indian	Public
87	Al Balushi Hamadan Abdula Mohd.	Male	61	Indian	Public
88	Kamal K. Singh	Male	59	Indian	Public

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
89	Patak Kusumkar Kamalakar	Male	61	Indian	Public
90	Jyoti Narendra Thakur	Female	37	Indian	Public
91	Rameshwar Tuntun Shah	Female	20	Indian	Public
92	Kiran Tahaka	Female	21	Indian	Public
93	M. V. Vijayshri	Female	33	Indian	Public

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
108	Amardip Harkishan Shetti	Male	50	Indian	Public
109	Apurva Natvarlal Parekh	Male	51	Indian	Public
110	Drriusz Sobicziuski	Male	54	Poland	Foreigner
111	Kashmira Vyas	Female	28	Indian	Public
112	Shyama Kaviratne	Female	64	Indian	Public
113	Balkrushna Ramchandra Bare	Male	42	Indian	Public
114	Shyamsundar Chaudhari	Male	34	Indian	Public
115	Chandresh H. Vyas	Male	46	Indian	Public
116	Vinayak Dandgavhal (PC 30818)	Male	39	Indian	Police
117	Nilesh Gandhi	Male	43	Indian	Public
118	Naresh Mulchand Jumani	Male	32	Indian	Public
119	Prakash Raoji Surve	Male	65	Indian	Public
120	Kalpanath Jitayi Singh	Male	36	Indian	Public
121	Kailash Chandrakant Gagandani	Male	48	Indian	Public
122	Ajmal Ali Nirhu Shah	Male	63	Indian	Public
123	Pappu Munna Singh	Male	22	Indian	Public
124	Ijaj Abdulla K. K.	Male	20	Indian	Public
125	Prashant Koshti	Male	17	Indian	Public
126	Ansar Albaksha Saudagar	Male	38	Indian	Public
127	Sarita Shantaram Harkulkar	Female	35	Indian	Public
128	Harshada Shantaram Harkulkar	Female	20	Indian	Public
129	Neeta Gajanan Kurade	Female	–	Indian	Public
130	Ajay Vaman Korgaonkar	Male	47	Indian	Public
131	Maruti Madhavrao Phad	Male	32	Indian	Public

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
132	Babaji Rakhma Dhavan	Male	49	Indian	Public
133	Hirabai Jadhav	Female	47	Indian	Public
134	Sajid Asharfi	Male	–	Indian	Public
135	Sanjay Yashwant Govilkar (ASI D.B. Marg)	Male	40	Indian	Police
136	Vishnu Bhikaji Ramane	Male	41	Indian	Public
137	Sheldon Aman/40103962	Male	26	Indian	Public
138	Phaningshang Vashum	Male	27	Indian	Public
Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
158	Hemant Sadhulkar	Male	22	Indian	Public
159	Maltidevi Madan Gupta	Male	62	Indian	Public
160	Ramjan Sharif	Male	23	Indian	Public
161	Abdul Salam Qureshi	Male	50	Indian	Public
162	Unknown	Male	30	Indian	Public
163	Ashok Shivram Patil	Male	49	Indian	Public
164	Pappukumar Laldev	Male	20	Indian	Public
165	Mohammed Fakir	Male	38	Indian	Public
166	Ganpat Gangaram Shivgan	Male	34	Indian	Public
167	Manoj Thakur	Male	27	Indian	Public
168	Unknown	Male	40	Indian	Public
169	Ramchandra Morya	Male	40	Indian	Public
170	Anasaheb Ambu Waghmode	Male	19	Indian	Public
171	Laxman Shivaji Handekar	Male	25	Indian	Public
172	Abdul Rashid Qureshi	Male	40	Indian	Public
173	Dadarao Jadhav	Male	27	Indian	Public
174	Suryabhan Gupta	Male	42	Indian	Public
175	Mohd Siddhiki	Male	29	Indian	Public
176	Kanya Sahane	Male	24	Indian	Public
177	Ravi Ranjan Giri	Male	26	Indian	Public
178	Nafisa Sadaf Qureshi	Female	46	Indian	Public
179	Shivnath Shandulkar	Male	46	Indian	Public
180	Unknown	Male	60	Indian	Public
181	Chandrakant Lokhande	Male	60	Indian	Public
182	Akhilesh Yadav	Male	22	Indian	Public
183	Sushant Pande	Male	22	Indian	Public
184	Imran Subur Bagran	Male	29	Indian	Public

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
185	Ashok Kumar	Male	18	Indian	Public
186	Mahadev Datta Petkar	Male	30	Indian	Public
187	Dilshad B. Ismail Dalal	Female	40	Indian	Public
188	Shabir Abdul Salam Dalal	Male	52	Indian	Public
189	Priyanka Chittranjan Giri	Female	23	Indian	Public
190	Ramchandra Nair	Male	28	Indian	Public
191	Vijay Ankush Falke	Male	30	Indian	Public
192	Ashok Babu Sunnappa	Male	55	Indian	Public

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
213	Bharat Sham Nawadiya	Male	20	Indian	Public
214	Sarikha Upadhyay	Female	30	Indian	Public
215	Indraraj Luis	Male	40	Indian	Public
216	Lalji Pande	Male	54	Indian	Public
217	Mohd. Ayub Mohd. Abdul Ansari	Male	21	Indian	Public
218	Habibul Rehman Khan	Male	30	Indian	Public
219	Vishshveshwar Shushupal Pacharne (2869 F, Zone)	Male	22	Indian	Home Guard
220	Afroz Abbas Ansari	Male	30	Indian	Public
221	Mohd. Parvej Ansari	Male	27	Indian	Public
222	Ibrahim Abdul Rehman	Male	40	Indian	Public
223	Vibha Ashokkumar Singh	Female	39	Indian	Public
224	Bajrang Prajapati Jaykaran	Male	30	Indian	Public
225	Purnachandra Das (Canceled from Sr. No. 298)	Male	30	Indian	Public
226	Satyanand Behara	Male	25	Indian	Public
227	Devika Natavarlal Rotavan	Female	10	Indian	Public
228	Meenakshi Sadhu Dantani	Female	21	Indian	Public
229	Samadhan More (SRPF)	Male	22	Indian	Police
230	Sushma Yadav	Female	24	Indian	Public
231	Shital Yadav	Female	4	Indian	Public
232	Asha Borade	Female	36	Indian	Public
233	Bharat Satyaprakash Gujar	Male	32	Indian	Public

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
234	Rasika Krushna Sawant	Female	22	Indian	Public
235	Bebi Ashok Yadav	Female	26	Indian	Public
236	Bharat Ramchandra Bhosale	Male	53	Indian	Police
237	Sanjay Yadav	Male	25	Indian	Public
238	Sanjay Katar	Male	23	Indian	Public
239	Manwara Ali Shaikh	Female	60	Indian	Public
240	Vatsal Kurade	Female	6	Indian	Public
241	Balaji Baburao Khatmode	Male	53	Indian	Public

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
259	Pandurang Shivram Patil	Male		Indian	Public
260	Babulal	Male		Indian	Public
261	Vijay Paylat	Male		Indian	Public
262	Bhurya Jadhav	Male		Indian	Public
263	P. Pohalwagaj	Male		Indian	Public
264	Khanish Panchal	Male		Indian	Public
265	Manav Datta Parkar	Male		Indian	Public
266	Anandrao Rangrao Patil (PC 1031, SRPF)	Male		Indian	Police
267	Firoj Yunus Khan (PC 4326, RPF)	Male	44	Indian	Police
268	Prakash Satan Bharwani	Male	48	Indian	Public
269	Bablu Rajani Elia	Male	48	Indian	Public
270	Diane Murphy	Female	53	English	Foreigner
271	Michael Murphy	Male	58	English	Foreigner
272	Harsh Patel	Male	29	British	Foreigner
273	Hanifa Anjum Bilachia	Female	40		
274	Rajvardhan (DCP)	Male		Indian	Police
275	K.R. Rammurti	Male	69		
276	Sadanand Date, (Addl. C.P)	Male	44	Indian	Police
277	Chandrakant Dnyandev Tike	Male	45	Indian	Public
278	Arvind Gopinath Bhalekar	Male	50	Indian	Public
279	Surykant Narayan Gaikwad	Male	40	Indian	Public
280	Bhaskar D.	Male	25	Indian	Public
281	Siegfried Deurr	Male	69		Foreigner
282	Ajamal Amir Kasab	Male	21	Pakistani	Terrorist
283	Mohd. Abas Ansari	Male	19	Indian	Public

Sr. No.	Name of Injured/ Contact No.	Sex	Age	Nationality	Category
284	Ashif Abdul Rasid Shaikh	Male	22	Indian	Public
285	Noshir P. Sanjana	Male	52	Indian	Public
286	Asif Babubhai Menon	Male		Indian	Public
287	Nuruddin Shabbir Bhaisaheb	Male	74	Indian	Public
288	Asma Al Raisi	Female	20		
289	Al Zadjali Faizal Miran Sahil	Male	19	Oman	Foreigner
290	Al Raisi Munira Mohd.	Female	35	Oman	Foreigner
291	Adhikrao Kale	Male	39	Indian	Public
292	Niraj Ahmmed Bablu Ajim Ulla Ansari	Male	24	Indian	Public
293	Sachin Singh	Male	6	Indian	Public
294	Rekha Sham Thapa	Female	35	Indian	Public
295	Shauddin Rehman	Male	30	Indian	Public
296	Gopal Fulena Prajapati	Male	33	Indian	Public
297	Sunita Upendra Yadav	Female	24	Indian	Public
298	Jogendrakumar Kailash Mishra	Male	66	Indian	Public
299	Abdul Rehman Shaikh	Male	14	Indian	Public
300	Ratanlal Kanhaya Yadav	Male	25	Indian	Public
301	Sadashiv Ramchandra Kamble	Male	25	Indian	Public
302	Trupti Natmanigar Nadar	Female	45	Indian	Public
303	Abdul Salim Shaikh	Male	32	Indian	Public
304	Shahabaz Zuber Khan (cancelled from Sr. No. 117)	Male	19	Indian	Public

[redacted]

भाग – III

हत्यारें

दस आतंकवादी

Unhi ke sheesa-e-dil choor-choor ho ke rahey Taras rahey they jo, duniya ki dosti ke liye.’
– Makhmoor
उनके अपने कांच के दिल ही चकनाचूर हो गए थे
और वे ही थे जो दुनिया की दोस्ती के लिए तरसते थे। कम से कम दस लोगों ने 26 नवंबर 2008 की रात से शुरू होकर तीन दिनों तक मुंबई शहर पर हमला किया और उनसठ घंटों तक शहर को जकड़ कर रखा। ये सभी लोग भारतीय हिंदू होने का दिखावा कर रहे थे, जबकि वास्तव में वे पाकिस्तानी मुसलमान थे।
पाकिस्तान, जिसे इन दिनों ‘अंतर्राष्ट्रीय सिरदर्द’ और ‘नफरत का घर और कुटीर उद्योग’ कहा जा रहा है, ने आखिरकार स्वीकार किया कि बीस से अट्ठाईस वर्ष की आयु के दस व्यक्ति पाकिस्तानी थे। हालांकि, भारतीय साक्ष्यों के विपरीत, पाकिस्तान ने कहा कि 22 नवंबर 2008 की सुबह कराची से मुंबई के लिए नौ नहीं बल्कि दस व्यक्ति रवाना हुए थे। उन्होंने लापता दसवें व्यक्ति के बारे में कोई जानकारी नहीं दी और न ही यह बताया कि यह दसवां पाकिस्तानी भारतीय शहर में कैसे दाखिल हुआ।
यह व्यक्ति पहले से ही नरिमन हाउस या ताज महल होटल में छिपा हुआ था या नहीं, यह तो समय और जांच ही बता पाएगी। कुबेर से बरामद ड्यूटी लॉग में इमरान बाबर (नरिमन हाउस पर हमला करने वाला आतंकवादी) का नाम नहीं है। कसाब ने बताया कि उसे रसोई की ड्यूटी के कारण छूट दी गई थी। यह भी संभव था कि यह किसी और का नाम हो, क्योंकि नासिर, नज़ीर और इस्माइल खान पहले भी आतंकी अभियानों में शामिल हो चुके थे।
इन सभी आतंकवादियों ने अपने फर्जी पहचान पत्रों पर हिंदू नाम लिखवाकर यात्रा की। अदालत में दायर आरोपपत्र की प्रति के आधार पर यहां पहचान पत्रों का विवरण दिया गया है।
इस ऑपरेशन के मास्टरमाइंड चाहते थे कि शुरुआत में वे भारतीय बनकर रहें, इसीलिए पहचान पत्र और भगवा व लाल रंग के रिस्टबैंड का इस्तेमाल किया गया

था। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि आतंकवादी फैशनेबल कपड़े पहनें ताकि वे हैदराबाद के किसी कॉलेज के संपन्न भारतीय हिंदू छात्र लगें। ज़ाहिर है, एक बार जब वे महत्वपूर्ण स्थानों पर पहुँच जाते, तो उनमें से प्रत्येक को एक और झूठी पहचान अपनानी थी - नाराज़ और असंतुष्ट भारतीय मुसलमानों की। किसी भी हालत में उनके पाकिस्तानी मूल का सच सामने नहीं आना था।
कसाब से पूछताछ में पता चला कि उनकी विभिन्न मांगों में से एक मांग भारत की विभिन्न जेलों में बंद भारतीय मुजाहिदीन के बीस सदस्यों की रिहाई थी, जिनमें आर्थर रोड जेल भी शामिल है। दुर्भाग्यवश, इस्माइल खान सीएसटी पर कोई सुविधाजनक स्थान नहीं ढूंढ पाए। उनके लिए स्थिति तब और बिगड़ गई जब रेलवे पुलिस के कुछ सदस्यों ने बहादुरी से उनकी गोलीबारी का जवाब दिया, और फिर स्थिति तब और खराब हो गई जब उनका सिम कार्ड सक्रिय नहीं हुआ। इस्माइल खान चाचा से संपर्क करने की पूरी कोशिश कर रहे थे, लेकिन सिम की खराबी के कारण वे ऐसा करने में असफल रहे। चरण-दर-चरण मार्गदर्शन न मिलने के कारण दोनों को काफी परेशानी हुई, जो पूरे मिशन के दौरान रिमोट कंट्रोल पर निर्भर रहने की उम्मीद कर रहे थे।
पाकिस्तानी हैंडलर्स की आखिरी इच्छा यही रही होगी कि इन प्रशिक्षित और हथियारों से लैस भाड़े के सैनिकों में से कोई भी जिंदा पकड़ा न जाए – लेकिन ठीक यही हुआ। कसाब के बाद में गवाही देने के कारण ही हिंदू और फिर भारतीय मुस्लिम का भेष उजागर हो सका। कसाब गिरफ्तार होने वाला एकमात्र जीवित पाकिस्तानी आतंकवादी है।
इन नौ व्यक्तियों के बारे में कुछ जानकारी:
1. इस्माइल खान, जिसे अबू इस्माइल के नाम से भी जाना जाता था, उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रांत (एनडब्ल्यूएफपी) के डेरा इस्माइल खान का रहने वाला पच्चीस वर्षीय युवक था। वह दस सदस्यीय आतंकवादी समूह का नेता भी था। 27 नवंबर 2008 को मुंबई के चौपाटी में पुलिस के साथ मुठभेड़ में वह मारा गया। दस सदस्यीय दस्ते में वह इकलौता सदस्य था जो पाकिस्तान के पंजाब प्रांत का निवासी नहीं था।
इस्माइल खान 26/11 से पहले भारत की यात्रा कर चुके थे। वे 2005 में कश्मीर में थे, जहाँ उन्होंने कश्मीर के पूंछ जिले में लश्कर-ए-तैबा के विभिन्न अभियानों में भाग लिया था। भारत में दो साल बिताने के बाद, उन्हें 2007

में नवंबर 2008 में होने वाले मुंबई ऑपरेशन का नेतृत्व करने के लिए फिर से पाकिस्तान बुलाया गया।
इस ऑपरेशन के लिए, वह एक फर्जी पहचान पत्र लेकर भारत आया था, जिसमें निम्नलिखित विवरण थे:
Name – Naresh Vilas Varma
पता – मकान नंबर 28/बी, ममता नगर, निगोल, हैदराबाद।
फर्जी पहचान पत्र अरुणोदय डिग्री और पीजी कॉलेज, वेद्रे कॉम्प्लेक्स, दिलसुख नगर, हैदराबाद 500 060 का था।
2. शोएब उर्फ अबू शोएब, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के सियालकोट जिले के शककरगढ़ का रहने वाला इक्कीस वर्षीय युवक था। उसकी हत्या 26 नवंबर से 29 नवंबर 2008 के बीच मुंबई के ताज महल होटल में हुई थी। उसका पहचान पत्र बरामद नहीं हुआ, संभवतः वह ताज महल होटल के जले हुए मलबे में कहीं दब गया था।
3. जावेद उर्फ अबू अली, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के ओकारा का रहने वाला बाईस वर्षीय युवक था। उसकी हत्या मुंबई के ताज महल होटल में 26 नवंबर से 29 नवंबर 2008 के बीच हुई थी। उसका पहचान पत्र बरामद नहीं हुआ, क्योंकि होटल में साठ घंटे तक चले ऑपरेशन के दौरान वह जल गया या नष्ट हो गया होगा।
4. नाज़िर उर्फ अबू उमर, पाकिस्तान के पंजाब राज्य के फ़ैसलाबाद का रहने वाला अट्ठाईस वर्षीय युवक था। उसकी हत्या मुंबई के ताज महल होटल में 26 नवंबर से 29 नवंबर 2008 के बीच हुई थी।
वह एक फर्जी पहचान पत्र लेकर भारत आया था, जिसमें निम्नलिखित विवरण थे: Name – Dinesh Kumar Ravikumar
Address – 781, Huda Colony, Sarur Nagar, Hyderabad 500 035.
यह पहचान पत्र अरुणोदय डिग्री और पीजी कॉलेज, वेद्रे का था।
Complex, Dilsukh Nagar, Hyderabad 500 060.
5. हाफ़िज़ अरशद उर्फ़ बड़ा अबू अब्दुल रहमान, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मुल्तान का रहने वाला तेईस वर्षीय युवक था। उसकी हत्या मुंबई के ताज महल होटल में 26 नवंबर से 29 नवंबर 2008 के बीच हुई थी।
उसके फर्जी पहचान पत्र का विवरण इस प्रकार था:
Name – Raghubir Singh Ranajit Singh
पता – प्लॉट नंबर 673-4V, एलिसब्रिज, अहमदाबाद।

आईडी कार्ड अरुणोदय डिग्री और पीजी कॉलेज, वेड्रे कॉम्प्लेक्स, दिलसुख नगर, हैदराबाद 500060 का था।
6. अबू उमर उर्फ नासिर, पंजाब, पाकिस्तान के फैसलाबाद का रहने वाला तेईस वर्षीय युवक था। उसकी हत्या मुंबई में नरीमन हाउस स्थित यहूदी केंद्र में 27 नवंबर और 28 नवंबर 2008 के बीच हुई थी।
उसके फर्जी पहचान पत्र का विवरण इस प्रकार था:
Name – Dinesh Kumar Ravikumar
Address – 781, Huda Colony, Sarur Nagar, Hyderabad 500 035.
यह पहचान पत्र अरुणोदय डिग्री और पीजी कॉलेज, वेद्रे कॉम्प्लेक्स, दिलसुख नगर, हैदराबाद 500 060 से संबद्ध था।
7. बाबर इमरान उर्फ अबू अकाशा, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मुल्तान का रहने वाला पच्चीस वर्षीय युवक था। 28 नवंबर 2008 को मुंबई के नरीमन हाउस स्थित यहूदी केंद्र में उसकी हत्या कर दी गई। वह पाकिस्तानी आकाओं से मार्गदर्शन के लिए संपर्क में था। बाबर इमरान ने ही इंडिया टीवी को फोन करके अपनी मांगें रखीं और भारत के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। इस्माइल खान के मुठभेड़ के बाद, आकाओं ने उसे दूसरे नंबर का कमांडर बना दिया और मोहम्मद अजमल आमिर कसाब की रिहाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।
उसके फर्जी पहचान पत्र का विवरण:
नाम- अर्जुन कुमार वीरकुमार
पता – 13/2, एस.के. अपार्टमेंट्स, इंदिरा नगर, हैदराबाद।
उनका आईडी कार्ड अरुणोदय डिग्री और पीजी कॉलेज, वेड्रे कॉम्प्लेक्स, दिलसुख नगर, हैदराबाद 500060 का है।
8. अब्दुल रहमान उर्फ अब्दुल रहमान छोटा, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मुल्तान जिले के आरिफवाला का रहने वाला इक्कीस वर्षीय युवक था। उसकी हत्या 27 नवंबर से 28 नवंबर 2008 के बीच मुंबई के ओबेरॉय-ट्राइडेंट होटल में हुई थी।
उसके फर्जी पहचान पत्र का विवरण इस प्रकार है:
नाम – अरुण विक्रम शर्मा
पता – प्लॉट नंबर 36-ए, गंगा कॉलोनी, नई दिल्ली
अरुणोदय डिग्री और पीजी कॉलेज, वेड्रे कॉम्प्लेक्स, दिलसुख नगर, हैदराबाद 500 060 का आईडी कार्ड।

9. फहदुल्ला उर्फ अबू फहद, तेईस वर्ष का युवक था और पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के ओकारा जिले के रसूर रोड स्थित उजराशाह मुखिम में रहता था। उसके दाहिने हाथ की कुछ उंगलियां गायब थीं। उसकी हत्या मुंबई के ओबेरॉय-ट्राइडेंट होटल में 27 नवंबर से 28 नवंबर 2008 के बीच हुई थी।
उसके फर्जी पहचान पत्र का विवरण इस प्रकार है:
Name – Rohit Dipak Patil
पता – 313, एसके अपार्टमेंट्स, इंदिरा नगर, विजय नगर कॉलोनी,
हैदराबाद। उनका पहचान पत्र अरुणोदय डिग्री और पीजी कॉलेज, वेद्रे कॉम्प्लेक्स, दिलसुख नगर, हैदराबाद 500 060 का है।
10. मोहम्मद अजमल आमिर कसाब, जिसे अबू मुजाहिद या मुहीब के नाम से भी जाना जाता था, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के फरीदकोट का रहने वाला इक्कीस वर्षीय युवक था। वह कामा अस्पताल के पास घायल हो गया था और फिर चौपाटी से जिंदा गिरफ्तार किया गया। वह फिलहाल मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच की हिरासत में है और दस सदस्यीय आतंकवादी दस्ते का इकलौता जीवित सदस्य है। उसके फर्जी पहचान पत्र में निम्नलिखित विवरण थे:
Name – Samir Dinesh Chaudhari
पता – 254, टीचर्स कॉलोनी, नागरभावी, बैंगलोर। यह पहचान पत्र अरुणोदय डिग्री एवं पीजी कॉलेज से संबद्ध है। दिलचस्प बात यह है कि बरामद किए गए पहचान पत्रों में से केवल इसी एक पर बैंगलोर का पता है। कसाब के बारे में अगले अध्याय में अलग से चर्चा की गई है।
ये हत्यारे गुरिल्ला युद्ध में प्रशिक्षित सैनिकों की तरह लड़े, उन्होंने चतुर रणनीति और चालों का इस्तेमाल किया। वे अधिकतम नुकसान पहुँचाना जानते थे।
क्या वहाँ सिर्फ दस लोग थे? सीआईए और रैंड कॉर्प की पूर्व आतंकवाद-विरोधी विश्लेषक और आतंकवादी नेटवर्क की विशेषज्ञ फरहाना अली ने मुंबई हमले के तुरंत बाद कहा, 'मुझे लगता है कि वहाँ और भी लोग थे। मेरे सूत्रों (पाकिस्तान से) का कहना है कि कम से कम तेईस बंदूकधारी थे। अगर... यह सच है, तो यह सवाल उठता है कि हमने और हमले क्यों नहीं देखे। क्या वे छुपकर बैठे हैं?' एक अन्य वरिष्ठ आतंकवाद-विरोधी सलाहकार डेविड किलकुलन ने भी इस बात से सहमति जताई कि संभवतः और भी हमलावर थे।

अब तक भारत दस में से आठ आतंकवादियों का डीएनए प्रोफाइल भेज सका है, क्योंकि अबू उमर और अब्दुल रहमान की डीएनए रिपोर्ट का इंतजार है। इसके अलावा, दस में से आठ आतंकवादियों के फिंगरप्रिंट पाकिस्तान को सौंप दिए गए हैं। जिन दो आतंकवादियों के फिंगरप्रिंट प्राप्त नहीं हो सके, उनके शरीर बुरी तरह झुलस गए थे।

[illegible]

Is daur ke basher pe kya guzra haadsa,
Aadmi ke zahan ka zameer hi mar gaya.

– Ashok Sahni

[illegible]

[illegible], [illegible], [illegible] 5'7", [illegible] 1987 [illegible] [illegible] [illegible]

मज़दूरी शुरू की और फिर लाहौर में अपने भाई अफ़ज़ल के साथ रहने चला गया, जहाँ उसने 2005 तक मज़दूरी की। कभी-कभी वह घर आता था। एक बार घर आने पर उसका अपने पिता से झगड़ा हो गया और वह घर छोड़कर चला गया। वह लाहौर के अली हाजवेरी दरबार नामक भगोड़ों के लिए बने एक आश्रय में रहने लगा। दरबार के अधिकारी ऐसे भगोड़ों के लिए रोज़गार की व्यवस्था करते हैं। एक बार शफीक नाम का एक व्यक्ति दरबार आया और उसने कसाब को अपने खानपान के व्यवसाय में नौकरी की पेशकश की। कसाब ने 2007 तक उसके यहाँ दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम किया।
वहाँ काम करते समय उनकी दोस्ती बाईस वर्षीय मुजफ्फर लाल खान से हो गई। दोनों को लगा कि तनख्वाह पर्याप्त नहीं है और उन्होंने अच्छी कमाई के लिए डकैती का सहारा लेने का सोचा। उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और रावलपिंडी चले गए जहाँ वे एक किराए के फ्लैट में रहने लगे। उन्होंने एक घर में चोरी करने का ठिकाना चुना, लेकिन इसके लिए उन्हें हथियारों की ज़रूरत थी। बकरीद के दिन राजा बाजार में उनकी नज़र लश्कर-ए-तैबा के कुछ स्टॉलों पर पड़ी, जहाँ उन्होंने कुछ भाषण सुने। संभव है कि उन्होंने जो भाषण सुना वह रावलपिंडी में सईद द्वारा दिया गया था। इसके बाद, कसाब और उसके दोस्त ने हथियार चलाना सीखने के लिए लश्कर-ए-तैबा में भर्ती हो गए।
इन दोनों को भर्ती किया गया, प्रत्येक को 200 रुपये और एक रसीद दी गई, और उन्हें मुरीदके में मरक़ज़ तैय्याबा नामक स्थान पर जाने का निर्देश दिया गया, जहाँ लश्कर-ए-तैबा का प्रशिक्षण शिविर स्थित था। पूछताछ के दौरान, कसाब ने कहा कि उसने यह सब पैसे के लिए किया, 'क्योंकि वह मुझे पैसे देता था
- वरना आप ही बताइए, खाते-पीते घर का भला कोई जाएगा? (क्या कोई अमीर आदमी उनके साथ भर्ती होगा?)... हमें बस पैसे मिलते थे। पहनने के लिए कपड़े नहीं थे... खाने के लिए खाना नहीं था... और ज़की चाचा दावतें देते थे... पहले कुछ महीनों तक हम बस खाते रहे... हम सब बस खाते-पीते और मौज-मस्ती करते रहे... और फिर उसने कुछ चुने हुए लोगों को प्रशिक्षण के लिए भेज दिया... लेकिन जो भी आए वे सब गरीब थे...'
पंजीकरण के बाद उन्हें अंदर जाने की अनुमति दी गई। उन्होंने दौरासुफा नामक इक्कीस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा किया। दैनिक कार्यक्रम में प्रार्थना, तीन समय का भोजन शामिल था और इनके बीच वे शारीरिक प्रशिक्षण भी करते थे और खेल खेलते थे।

जैसे ही उन्होंने प्रशिक्षण पूरा किया, उन्हें मनसेरा में दौरा-अमा नामक एक अन्य इक्कीस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए भेजा गया, जहाँ प्रार्थना और तीन भोजन के अलावा, उन्हें शारीरिक और हथियार प्रशिक्षण से भी गुजरना पड़ता था, जहाँ उन्होंने एके-47, ग्रीन-ओ, एसकेएस, उजी बंदूकें, पिस्तौल, रिवॉल्वर आदि चलाना सीखा।
प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद, दो महीने तक उन्हें किसी प्रकार की खिदमत (सेवा) करने का विकल्प चुनना था।
खिदमत की अवधि समाप्त होने के बाद, उन्हें एक महीने के लिए घर भेज दिया गया।
परिवार के साथ एक महीने की छुट्टी बिताने के बाद, कसाब को आगे की ट्रेनिंग के लिए मुज़फ़्फ़राबाद के शाईवैनाला स्थित लश्कर-ए-तैबा के एक कैंप में भेजा गया। यहाँ कसाब, जो पहले चोर था और अब आतंकवादी बन गया है, की तस्वीरें ली गईं और कैंप में उसकी पूरी जानकारी दर्ज की गई। फिर, उसे और कई अन्य लोगों को तीन महीने की 'दौरा-खास' नामक ट्रेनिंग के लिए भेजा गया, जिसमें शारीरिक प्रशिक्षण के माध्यम से फिटनेस पर ध्यान केंद्रित किया गया और हैंड ग्रेनेड, रॉकेट लॉन्चर, मोर्टार, ग्रीन-ओस, एसकेएस, उजी गन, पिस्तौल, रिवॉल्वर आदि सहित सभी हथियारों को चलाने का प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के कामकाज के बारे में भी जानकारी दी गई।
कुल मिलाकर बत्तीस प्रशिक्षु थे, जिनमें से सोलह को एक गोपनीय अभियान के लिए चुना गया था, जिसकी निगरानी ज़की-उर-रहमान लखवी, जिन्हें चाचा के नाम से भी जाना जाता था, द्वारा की जानी थी। लेकिन चुने जाने के बाद, इन सोलह प्रशिक्षुओं में से तीन डर गए और भाग गए। इसके बाद चाचा ने शेष तेरह को काफा के साथ मुरीदके के शिविर में भेज दिया।
मुरीदके में उन्हें तैराकी और समुद्री गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने नौकाओं पर कुछ अभ्यास सत्र भी किए। उन्होंने भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के कामकाज को समझने के लिए सत्रों में भाग लिया। इन प्रस्तुतियों के साथ-साथ भड़काऊ वीडियो क्लिप भी दिखाए गए जिनमें भारतीय मुसलमानों पर अत्याचार दर्शाए गए थे।
प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद, वे एक सप्ताह के लिए घर लौट आए। इसके बाद कसाब मुज़फ़्फ़राबाद स्थित लश्कर-ए-तैबा के शिविर में वापस आ गया। वहाँ

उन्होंने एक महीने तक तैराकी और समुद्र का अनुभव करने का प्रशिक्षण लिया। फिर से उन्हें भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के बारे में व्याख्यान दिए गए और उन्हें सिखाया गया कि पीछा किए जाने पर भारतीय सुरक्षाकर्मियों से कैसे बचा जाए। उन्हें भारत पहुँचने के बाद पाकिस्तान को फोन न करने की चेतावनी दी गई।
प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में, 15 सितंबर 2008 को, चाचा ने उनमें से दस का चयन किया।
चाचा ने दो-दो सदस्यों की पाँच टीमें बनाईं, जिनमें कसाब और इस्माइल की जोड़ी बनाई गई; इस जोड़ी को 'वीटीएस' टीम के नाम से जाना जाता था। दूसरी टीम में अबू अक्शा और अबू उमर थे। तीसरी टीम में बड़ा अब्दुल रहमान और अबू अली थे। चौथी टीम में छोटा अब्दुल रहमान और फहदुल्ला थे। पाँचवीं टीम में शोएब और अबू उमर थे।
उन्हें इंटरनेट पर 'गूगल अर्थ' से परिचित कराया गया। उस साइट पर उन्हें मुंबई के आज़ाद मैदान और मुंबई शहर के दृश्य दिखाए गए। उन्हें वीटी रेलवे स्टेशन का एक वीडियो दिखाया गया जिसमें व्यस्त समय में यात्रियों की आवाजाही दिखाई गई थी। उन्हें निर्देश दिया गया कि वे व्यस्त समय में, यानी सुबह 7:00 से 11:00 बजे के बीच और शाम 7:00 से 11:00 बजे के बीच गोलीबारी करें। गोलीबारी के बाद, उन्हें कुछ लोगों का अपहरण करके पास की एक इमारत की छत पर ले जाना था और छत पर पहुँचते ही उन्हें चाचा से संपर्क करना था, जो उन्हें उस इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का फ़ोन या मोबाइल नंबर देंगे जिससे उन्हें संपर्क करना था। उन्हें बंधकों को रिहा करने के बदले में कुछ मांगें रखनी थीं।
हमले की निर्धारित तिथि 27 सितंबर 2008 थी, लेकिन इसे अचानक बिना किसी स्पष्टीकरण के रद्द कर दिया गया। ये दस लोग कराची में एकांतवास में रहे। इस दौरान, वे कभी-कभी समुद्र में स्पीड बोट से यात्रा करने का अभ्यास करते थे। फिर, 22 नवंबर 2008 को वे भारत के लिए रवाना हो गए।
वे सुबह 4:15 बजे पास के समुद्र तट पर पहुँचे, जहाँ उन्होंने एक नाव पर सवार हुए। कुछ देर यात्रा करने के बाद, वे गहरे समुद्र में इंतज़ार कर रहे एक बड़े जहाज़, अल-हुसैनी में सवार हो गए। उनकी यात्रा और सीएसटी में उनके आगमन का विस्तृत विवरण इस पुस्तक के पहले भाग में दिया जा चुका है।
यह कसाब के कबूलनामे का पहला भाग था।

हालांकि, ये निष्कर्ष उसके पहले कबूलनामे के बाद सामने आए, जब उसने तथ्यों को अलग तरह से पेश किया था; उदाहरण के लिए, उसने लश्कर-ए-तैबा से परिचय कराने और संगठन में शामिल होने के लिए उकसाने का आरोप अपने पिता पर लगाया था। बाद में दिए गए अपने बयान में उसने इसे बदल दिया, क्योंकि उसे एहसास हो गया था कि पुलिसकर्मियों को भावनात्मक रूप से प्रभावित करने का उसका प्रयास विफल हो गया था और वह अपने धोखे के परिणामस्वरूप उनसे सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार की उम्मीद नहीं कर सकता था।
कसाब के पहले कबूलनामे से पता चलता है कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जो दूसरों को भावनात्मक रूप से हेरफेर करना जानता है ताकि वे उससे सहानुभूति रखें। शुरुआत में, जब उसने ऑपरेशन के बारे में खुलासा किया था, तो उसने कहा था कि उन्हें बताया गया था कि उन्हें वापस पाकिस्तान ले जाने के लिए एक जहाज इंतजार कर रहा होगा, और यह कि भले ही उनमें से सभी घर लौटने तक जीवित न रहें, कुछ लोग वापस यात्रा शुरू कर सकेंगे। उन्हें आश्वासन दिया गया था कि जब वे अपनी AK-47 से फायरिंग शुरू करेंगे, तो पुलिस छिपने के लिए भाग जाएगी। उन्हें आश्चर्य हुआ क्योंकि रेलवे पुलिस ने उन पर (जुल्लू यादव और अन्य) जवाबी फायरिंग शुरू कर दी और उनका पीछा करती रही, भले ही उनमें से कुछ के पास केवल लाठियां थीं। तब कसाब ने कहा, 'पुलिस ने हमें कुत्तों की तरह दौड़ाया। हम घबरा गए।' घबराहट में, वे सीएसटी से निकल गए, टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग की ओर जाने वाले ओवरब्रिज पर चढ़ गए और जहां भी संभव हो, शरण ली। परिणामस्वरूप, वे कामा अस्पताल पहुंचे।
उन्होंने यह भी खुलासा किया कि उन्हें लक्ष्यों के बारे में विस्तृत जानकारी मिली थी और उन्हें वीडियो, नक्शे आदि दिखाए गए थे, ताकि वे दोनों होटलों के हर कोने से परिचित हो सकें। इसके चलते होटल के पुराने रिकॉर्ड की गहन जांच की गई, क्योंकि इससे यह साबित हुआ कि पहले वहां ठहर चुके किसी व्यक्ति ने होटल के अंदरूनी हिस्सों की वीडियो रिकॉर्डिंग की थी और उसे लश्कर-ए-तैबा को सौंप दिया था।
कसाब की पहली पूछताछ (गिरफ्तारी के एक घंटे के भीतर) के कुछ अंश, जो 14 मार्च 2009 को मुंबई मिरर में प्रकाशित हुए थे:
मेरा अनुवाद अक्षरशः इसी प्रकार है:
Kasab (K): Maine bahut ghalat kiya.. . .
मैंने बहुत सारी गलतियाँ की हैं...

Police (P): Kiske kehne pe?
किसके आदेश पर?
K: Chaacha ke kehne pe.
Chaacha told me.
(वह ज़की-उर-रहमान लखवी का जिक्र कर रहे हैं, जिन्हें पाकिस्तानी सुरक्षा बलों ने 7 दिसंबर को मजाफ्फरबाद के ठीक बाहर लश्कर-ए-तैबा के एक परिसर से गिरफ्तार किया था।)
P: Kaun chaacha hai?
चाचा कौन हैं?
K: Woh jo Laskharwala hai.
लश्कर संगठन का वह आदमी।
P: School kab chhoda tumhara?
आपने स्कूल कब छोड़ा?
K: Do hazaar main chhoda tha.
मैंने 2000 में स्कूल छोड़ दिया था।
P: Uske baad kya kiya? Do hazar se kya, kya kar raha tha?
आपने 2000 के बाद क्या किया?
K: Mazdoori. Pehle gaon mein kiya . . . phir wahaan se nikaala gaya. मजदूरी का काम। पहले गांव में, और फिर मुझे वहां से निकाल दिया गया। P: Mazdoori yaani kya kya karta tha?
लेबर से आपका क्या तात्पर्य है?
K: Mistry ke saath . . . reti vagerah . . . cement vagerah. . . . राजमिस्त्रियों के साथ काम करना, सीमेंट, रेत आदि ढोना।
P: Yaani ke building ka kaam karta tha?
क्या आप किसी निर्माण मजदूर की तरह हैं?
K: Haan. Uske baad Lahore chala gaya . . . udhar bhi kaam kiya. हां, फिर मैं लाहौर चला गया। वहां भी मैंने काम किया।
P: Tumhare baap ki aur Chaacha ki pehchaan kaise hui?
आपके पिता चाचा को कैसे जानते थे?
K: Woh to Lahore mein nahin, gaon mein kiya tha naa unse. उनकी जान-पहचान गांव में हुई थी, लाहौर में नहीं।

P: Gaon mein woh (Chacha) aaya tha kya?
क्या चाचा गांव आए थे?
K: Haan, gaon mein aur Diphalpur mein na, unka daftar hai.
जी हां, वह गांव और दीफलपुर आए थे, जहां उनका कार्यालय है।
P: Kitne log hain wahaan pe?
कितने लोग हैं वहाँ?
K: Kaafi log aate-jaate hain. Kuchh naye hote hain, kuch puraane hote hain. काफी लोग आते-जाते रहते हैं, कुछ नए होते हैं, कुछ पुराने।
P: Daftar mein kaun kaun hota hai?
ऑफिस में कौन-कौन लोग हैं?
K: Bhaijaan, udhar badalte rehte hain, bande. Confirm nahin hota hai.
भाई, वहां लोग आते-जाते रहते हैं, लेकिन किसी की भी स्थायी नियुक्ति नहीं होती।
K: Jaise mere baap ko . . . pata nahin un logo ne kya kaha. Usne mujhko kaha – Zehmat-wala kaam hai. Is mein izzat bahut hota hai, aisa bolte the. Mere baap ne mujhko tarruf (introduce) . . . Phir, baad mein, usne mujhko lecture diya.
मुझे नहीं पता उन्होंने मेरे पिता को क्या बताया, उन्होंने मुझे बताया कि यह सम्मान के योग्य काम है, मेरे पिता ने हमारा परिचय कराया, फिर बाद में उन्होंने मुझे उपदेश दिया।
P: Garibi door ho jayegi, aisa bola? Paisa milega, aisa bola? Aur tum uske saath shamil ho gaye? Kab shamil ho gaye uske saath?
क्या उसने कहा कि तुम्हारी गरीबी दूर हो जाएगी? कि तुम पैसा कमाओगे? और, कि तुम्हें उनके साथ जुड़ जाना चाहिए? तुम उनके साथ कब जुड़े?
K: Aapko bataya to hai . . . Eid se kuch thodi der pehle shamil hua tha ...मैं उनके साथ शामिल हो गया... मैंने आपको बताया था, ईद से कुछ समय पहले। P: Training kitne din ka liya tumne?
आपको कितने दिनों का प्रशिक्षण मिला?
K: Training teen maah ka.
तीन महीने का प्रशिक्षण।
P: Training shuruwat kaunse mahine mein hua?

प्रशिक्षण किस महीने में शुरू हुआ था?
K: Yaad nahin . . . baraf badh raha tha.
मुझे याद नहीं, उस समय बर्फबारी बढ़ रही थी...
P: Yaane ek saal pehle . . . January ya December tha? Moharram hua tha? इसका मतलब है कि एक साल पहले, जनवरी या दिसंबर में? मुहर्रम के दौरान? K: Moharram nahi malum.
मैं मोहर्रम को नहीं जानता।
पी: क्या हालचाल है?
क्या उस समय ईद थी?
K: Ji. Benazir kab mari?
जी हाँ। बेनज़ीर की मृत्यु कब हुई थी?
P: Haan. Haan. Benazir ko mara tha tab tum kidhar gaya tha? साँस?
जी हां, जब बेनजीर की मृत्यु हुई, तो आप कहां गए थे?
K: Udhar . . . udhar pe tha.
मैं वहाँ था।
P: Achha, Benazir ko marne mein kaun, yehi log the?
अच्छा, बेनजीर की हत्या के पीछे कौन लोग थे, क्या ये वही लोग थे? K: Pata nahin yeh log kya karte hai.
मुझे नहीं पता कि ये सब लोग क्या करते हैं।
P: Benazir Bhutto ko mara tab tumhara training chalu tha kya . . . ? क्या बेनजीर की हत्या के समय आपका प्रशिक्षण चल रहा था?
के: प्रशिक्षण कठिन है।
उस समय प्रशिक्षण पहले से ही चल रहा था।
P: Traning kahaan pe hua?
प्रशिक्षण कहाँ हुआ था?
K: Mansera sheher hai ek bada . . . uske saath ek ilaaka hai . . . gaon hai, Batal.
मनसेरा नाम का एक बड़ा शहर है, उसके पास ही बटल नाम का एक इलाका, एक गाँव है।
प्रश्न: रद्द करें?

K: Haan. Udhar, pahadon mein . . .
हाँ, पहाड़ों में, वहाँ...
P: Kitne log the?
वहाँ कितने लोग थे?
K: Ek to main hoon na . . . Ek wo tha, Ismail.
मैं एक था, और इस्माइल दूसरा था।
P: Nahin, nahin, training ke liye.
नहीं, नहीं, मैं प्रशिक्षण के बारे में पूछ रहा हूँ।
K: Training ke liye, chaubis se pacchis log the, hamaari class mein. मेरी कक्षा में लगभग चौबीस या पच्चीस प्रशिक्षु थे।
P: Aaj ka jo kaam kiya. Aaj ka kaam karke, baad mein, kidhar jaane waale the, tum log?
आज आपने जो काम किया है, उसके बाद आप लोगों को कहाँ जाना था?
K: Marnewale the, hum log.
हमें मरना था।
P: Kaise?
कैसे?
K: Wo bolta tha jannat mein jaoge . . . to maine kaha bhaago . . . ye achha nahin lagta . . . Maine kaha bhaago yaar, main nahin reh sakta, idhar.
वह कहा करता था कि तुम स्वर्ग जाओगे, और मैंने मन ही मन कहा, भागो... यह अच्छी बात नहीं है... मैंने मन ही मन कहा, दोस्त, भागो, मैं यहाँ नहीं रह सकता।
P: Nahin thik hai – Ye jo kitna shoot kiya tumne?
नहीं, बिल्कुल सही। तुमने कितनों को गोली मारी?
K: Pata nahi.
मुझें नहीं पता।
P: Kitni goli udaya?
आपने कितनी गोलियां चलाईं?
K: Pata nahi. Do-dhai magazine tha.
मुझे नहीं पता, शायद दो या ढाई पत्रिकाएँ। P: Dhai magazine mein kitne logon ko mara?

आपने ढाई पत्रिकाओं में कितने लोगों को मारा?
K: Pata nahi, bas aise chalaate rahe … chalaate rahe . . . bas.. . .
मुझे नहीं पता, मैं बस यूं ही कुछ प्रयोग कर रहा था, बस इतना ही।
P: Abhi, aaj kitne baje tak kaam karne waale the?
आज से आप यह काम कब तक जारी रखने वाले थे?
K: Aaj? Nahi, nahi, woh bolta tha . . . Jab tak zinda raho, maarte raho
. . . मरते रहो. . . मरते रहो. ..(रोते हुए) हम इंसान हैं, यार।
आज? नहीं, नहीं, वह कहता रहा... जब तक तुम जीवित हो, मारते रहो... मारते रहो... मारते रहो... (रोता है) हम इंसान हैं, मेरे दोस्त।
P: Achha kitne log aaye the?
ठीक है, कितने लोग आए?
K: Hum to do the . . . aur bhi log aaye the . . . lekin hamaari aankhon pe patti tha . . . humko do ko naa, utar diya bas.
हम दो थे...वहाँ और भी लोग थे...लेकिन हमारी आँखों पर पट्टी बंधी हुई थी, उन्होंने हम दोनों को ही छोड़ दिया...
P: Achha kitne log the wo?
वे कितने थे?
K: Baaqi ka pata nahin.
मुझे बाकियों के बारे में नहीं पता।
P: Kyun? yeh to bataana padega na . . .
क्यों? इसका जवाब आपको ही देना होगा।
K: Bhaijaan, nahin pata hai. Jab patti bandhte hain na, kehte hai raaz hota hai koi.
भाई, मुझे नहीं पता। जब आंखें ढकी होती हैं, तो लोग कहते हैं कि यह एक रहस्य है।
पी: मुर्गा?
हाँ?
K: To raaz ek dusre ko nahi bataate. . . . Ye aise log hote hain.
ये लोग आपस में कोई राज़ नहीं रखते।
प्रश्न: हम्म?

K: To aankhon pe patti baandh diya hum dono ki . . . humne dekha ke jab humko us launch pe bitha rahe the na . . . India waale ki.
फिर उन्होंने हम दोनों की आंखों पर पट्टी बांध दी... तब हमें पता चला कि हम एक भारतीय लॉन्च पर थे।
P: Kahaan pe, launch pe bithaya?
लॉन्च के दौरान आपको कहाँ रखा गया था?
K: Jidhar India aur Pakistan ki launch mix hoti hai . . . udhar.
जहां भारत और पाकिस्तान के जहाज़ों का प्रक्षेपण मिलता है, वहीं पर।
P: Wo launch India ki thi? Aur laanewale Indian hi the kya?
क्या वह विमान भारतीय था और क्या आपको लेने आया व्यक्ति भी भारतीय था? के: हां, वो थी.
हाँ यह था।
P: Kya naam hai, jo Indian lane waale the?
आपको लेने आए उस भारतीय का नाम क्या था?
K: Wo nahin jaanta.
मुझे यह नहीं पता।
P: Aur idhar kaun India ka tha . . . jo support kar raha hai aapko? और यहाँ, भारत से कौन था जो आपका समर्थन कर रहा था?
K: Pata nahi, bhaijaan.
मुझे नहीं पता, भाई।
P: Yaani ki training to bahut achha liya hai, tumne.
इसका मतलब है कि आपको बहुत अच्छा प्रशिक्षण मिला है।
के: मुर्गा।
हाँ।
P: Barabar hai . . . Jihad karne ke liye aaye ho na, tum log? Hai ke nahi? सच है... तुम यहाँ जिहाद के लिए आए हो, है ना?
K: (Weeps) Kya jihad hai, sahib?
महोदय, यह किस प्रकार का जिहाद है?
P: Abhi rone se kuchh fayda nahi . . . jo bhi hai sab sahi, sahi bataana . . . Barabar hai ki nahi?

अब रोने का कोई फायदा नहीं, चाहे जो भी हो, हमें सच-सच बताओ, यह सच है या नहीं?
K: Kaise samjhaoon tumko?
मैं आपको यह कैसे समझाऊं?
P: Kitne, kitne din ka training tha?
आपको कितने दिनों का प्रशिक्षण मिला?
K: Udhar pehle ek maah ka hota hai . . . Jis mein aam logo hote hain
. . . Phir, jo bada training hota hai, na? Usko bolte hain – pucca ho gaya ladka . . . usko teen maah ka deta hai.
पहले एक महीना होता है जिसमें आम लोग भी शामिल होते हैं... फिर बड़ी ट्रेनिंग शुरू होती है, जिसके बाद वे कहते हैं कि लड़का मजबूत हो गया है, और इसमें तीन महीने लगते हैं।
P: Aur.. . .
और तब?
K: Uske baad tayaar karte hain . . . Chal ja, maar, bas.
उसके बाद वे आपको तैयार करते हुए कहते हैं, जाओ, मार डालो।
P: Kya lecture deta tha, woh?
वह (चाचा) आपको क्या व्याख्यान दे रहे थे?
K: Tum musalmaan ho, ye insaniyat hai . . . aisi, aisi batein karte the . . . Ye insaniyat nahin . . . wo tumhare sab kuch maar dete hai. Tumhen, aaj bhi, unhone garibi mein chhoda hua hai . . . Khud woh duniya ki daud mein aage hain . . . Aisi, aisi baatein karte hain. He would say, you are a Muslim, this is humanism . . . he used to say such things . . . this is not humane, they destroy everything that belongs to you, they have even today reduced you to poverty, they themselves are successful and ahead in the race of the world

….

P: Achha, achha . . . jihadi ka matlab kya hai?
अच्छा, जिहाद का अर्थ क्या है?
K: Jihadi ka matlab pata nahin.
मुझे जिहादी होने का मतलब नहीं पता।
P: Unnhone kya bataya, jihadi ka matlab?

उन्होंने जिहादी होने का अर्थ क्या समझाया?
K: Kehte hain – Ajr (reward) hai, ajr. Ajr hain, aur jannat hai. उन्होंने कहा कि इसके पुरस्कार हैं, स्वर्ग है...
P: Theek hai . . . jihad ka matlab? Tumhe kya pata hai?
लेकिन जिहाद का अर्थ आप क्या समझते हैं?
K: Hum nahin jaante.
मुझें नहीं पता।
P: Malum nahin to tum kaisa itna daring kar rahe ho?
अगर आपको नहीं पता तो आप इतने साहसी मिशन में कैसे शामिल हुए? K: Paisa deta hai bahut.
वह पैसे देता है, बहुत सारे पैसे।
P: Kitna diya? Tumhaare account mein . . . jama kiya kidhar? कितना? उसने आपके खाते में कितना पैसा जमा किया?
K: Account-vaccount nahin . . . usko diya tha, mere baap ko. उन्होंने मेरे पिता को कोई हिसाब नहीं दिया।
P: Kitna diya lekin?
लेकिन उसने कितना दिया?
K: Lakhon ke hisaab se diya hoga. Mujhe bataata nahi.
उन्होंने लाखों रुपये दिए होंगे। मुझे नहीं बताया गया।
P: Abhi tumhare baap ke pass paisa hoga?
क्या आपके पिता के पास अब पैसे होंगे?
K: Shayad ho, ya shayad dhokha kare.
हो सकता है, वह ऐसा करता हो, या हो सकता है कि उन्होंने उसे धोखा दिया हो। P: Tumhara mohra banaya na?
उसने तुम्हें बलि का बकरा बना दिया, है ना?
K: Aisa hi sahi samjho.
जी हां, आप ऐसा कह सकते हैं।
P: Bombay (Mumbai) kaise pahunche?
आप बॉम्बे (मुंबई) कैसे पहुँचे?
K: Wo launch jo hai, na? Bada launch, India ka? वो बड़ा भारतीय लॉन्च, याद है ना?

प्रश्न: भारत में इसका लॉन्च किस बारे में है? भारतीय वाला?
K: Usne humko idhar, qarib utaara.
इसने हमें यहीं पास में उतार दिया।
P: Kaunse jagah pe baitha tum?
आपने कहाँ से बोर्डिंग की?
K: Udhar. Aapko bataya.
लो, मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया था।
P: (Interrupts) Kitna din pehle baitha?
आपने कितने दिन पहले बोर्डिंग की थी?
K: Chaar din pehle. Udhar, hum na . . . Jidhar mix hota hai na, Pakistan aur India ka launch . . .?
चार दिन पहले, पाकिस्तान और भारत से होने वाले प्रक्षेपण कहाँ आकर मिलते हैं...?
P: Nahin, Pakistan pe kis jagah par baithe? Pakistan mein . . . jahaaz mein, kaunsi jagah par baithe?
नहीं, आप पाकिस्तान से आए थे, आपने जहाज पर कहाँ से चढ़ाई की थी?
K: Jahaaz matlab?
What is a jahaaz?
पी: नकद, नकद।
नाव, नाव।
K: Udhar Azizabad hai . . . jungle sa ilaka hai . . . udhar se humko laate
the . . . us jungle se humko bitha dete the. . . .
वहाँ अजीजाबाद नाम की एक जगह है, वह बिल्कुल जंगल जैसी है... वहाँ से वे हमें लाते थे, हमें नाव में बिठाते थे...
P: Taye kab hua?
यह निर्णय कब लिया गया था?
K: Tai? Lagbhag ek mahina pehle . . . Mujhe aur Ismail ko ek jagah ekattha kiya . . . usko pata nahin kidhar se laaye, aur kaha – yaaro dehko, aaj mauqa aa gaya tumhari aazmaish ka . . . aisi, aisi baaten karte the . . . pura ghoomke CD dikhaya.

ताई? (वह इस शब्द को नहीं समझता—जिसका अनुवाद 'निर्णय लिया' के रूप में किया जा सकता है—लेकिन वह इसका अर्थ समझ लेता है।) लगभग एक महीने पहले। उन्होंने मुझे और इस्माइल को एक जगह इकट्ठा किया... मुझे नहीं पता कि वह कहाँ से आया था। फिर उसने कहा, 'भाई, अब तुम्हारी परीक्षा लेने का मौका आ गया है... वे ऐसी बातें कहते थे... उन्होंने हमें पूरी सीडी दिखाई।'
P: Kya kya usme tha?
सीडी में क्या था?
K: Ye jo VT hai na? Wohi dikhaya tha.
क्या यह वीटी स्टेशन है? उन्होंने हमें यह दिखाया।
P: VT ke saaath aur kya dikhaya tha?
VT स्टेशन के साथ-साथ उन्होंने आपको और क्या दिखाया?
के: ये एक सड़क है ना? आज़ाद मैदान की तरफ? हमें उस सड़क से जाना था... बस, उस सड़क के बारे में... ताज ओरिएंटल रोड है, कोई? ये सड़क जो आज़ाद मैदान की तरफ जाती है, उन्होंने हमें बताया था कि हमें उस सड़क से जाना होगा... ताज ओरिएंटल रोड, क्या ऐसी कोई सड़क है?
प्रश्न: ताज होटल?
थाई होटल?
K: Haan. Woh bhi raste mein ayega . . . Azad Maidan bhi raste mein
ayega . . . to us taraf se jaana hai tumko . . . us taraf se hum sidha gaya, udhar stand pe phir. . . .
हाँ, उन्होंने कहा कि यह हमारे रास्ते में ही पड़ेगा, आज़ाद मैदान भी रास्ते में ही पड़ेगा... इसलिए आपको वहीं से जाना होगा... हम सीधे वहीं से चले गए... फिर दोबारा स्टैंड पर...
P: CD bataya, aur kya bataya?
सीडी दिखाते समय उसने आपको और क्या-क्या बताया?
K: Aur bola ke ye kaam karna hai.
उन्होंने कहा कि हमें यह काम करना ही होगा।
प्रश्न: क्या यह काम करता है?
वह कौन सी नौकरी है?
K: Yehi, VT ka kaam karna hai.
यह नौकरी, वीटी वाली।

P: Kaam karna matlab?
इस काम को 'करने' से आपका क्या तात्पर्य है? K: Yehi, matlab logon ko maarna hai, na? इसके लिए हमें लोगों को मारना पड़ेगा।
P: Logon ko, matlab? Kisko?
लोग हैं, जो?
K: Jo hoga, usko.
वहां जो भी लोग हैं, वे ही लोग।
P: Kaisa office tha CD mein?
सीडी में किस प्रकार का कार्यालय दिखाया गया था?
K: CD mein ek banda hota hai, na? Wo shakal nahi dikhata hai. Sirf aage, aage chalta hai . . . Sab kuch aage nazar aata hai . . . Pura ghoomta hai: Woh kehta hai, yeh haalaat hai, aur yeh log hain . . . is tarah, is tarah.
सीडी में एक आदमी है, जिसका चेहरा हम नहीं देख सकते, वह बस आगे बढ़ता ही जा रहा है... उसके सामने सब कुछ दिखाई दे रहा है... वह पूरी यात्रा को पीछे मुड़कर भी देखता है। वह कहता है, यही स्थिति है, यही लोग हैं... इस तरफ, उस तरफ।
P: Gaadi kaunsa liya tha, saath mein? Police ka tha, na?
आपने कौन सी कार ली थी? वह पुलिस की गाड़ी थी, है ना?
के: मुर्गा।
हाँ।
P: Police ki gaadi tumhare paas kaise aayee?
आपको पुलिस की गाड़ी कैसे मिली?
K: हां। वो उधार खड़ी थी।
हां, वह वहीं खड़ी थी।
P: Police gaadi mein, kucch log udhar baithe honge, na? पुलिस की गाड़ी में कुछ लोग जरूर रहे होंगे?
के: मुर्गा।
हाँ।
P: To unko kya kiya?
आपने उनका क्या किया?

K: Ye to unhi logo ne goli mari thi na? Main to gir gaya, phir Ismail ne wo logon ko mara.

□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□, □□□ □□□ □□□, □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□

P: Nahin, nahin iske pehle . . . wo gaadi kisne di thi . . . jo Ismail chala raha tha?

□□□□, □□□□, □□□□ □□□□, □□ □□□ □□□□ □□□ □□, □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□... □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□?

K: Udhar se humne koi do teen bande the udhar se liya tha.

□□□□ □□-□□□ □□□ □□, □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□

P: Kaun bande the?

□□ □□□ □□?

K: Aam bande jo hote hain.

□□ □□□□

P: Unke paas se chheen ke liya?

□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□?

□□: □□□□□□□

□□□□

P: Kahan se liya?

□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□?

K: Waheen, jahaan se police ki gaadi mili.

□□□ □□□, □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□

P: Aur police jo baithi thi, us mein?

□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□?

K: Usme jo baitha tha, usko?

□□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□?

P: Goli maar diya?

□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□?

K: Main to gir gaya . . . usne phir wo apna kaam kiya . . . Mujhko na, kheech ke, na, us gaadi mein laya . . . phir wo gaadi puncture tha.

□□□ □□□ □□□... □□□□ □□□□ □□□ □□□□... □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□... □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□

P: Police ka gaadi mein puncture tha?
पुलिस की गाड़ी का टायर पंचर हो गया था?
K: Haan . . . Phir, uske baad, usne naya gaadi pakadna chaha. Mujhe phir khinchke us gaadi mein le gaya . . . uske baad, bas aapke saamne
hai.Yes . . . then he wanted to hijack another car, again he dragged me . . . after that, you know everything.
P: Tumhare sangathan ka naam kya hai? Lashkar-e-Tayyaba (LeT), ya दक्कन मुजाहिदीन।
आपके समूह का नाम क्या है, क्या यह लश्कर-ए-तैयबा (LeT) है या दक्कन मुजाहिदीन?
K: लश्कर-ए-तैयबा.
P: Kahaan pe utre tum log?
आप लोग कहाँ उतरे?
K: Wahaan pe bahut sari kashtiyan khadi hoti hain . . . badi buildingen hain udhar.
वहां कई नावें और ऊंची इमारतें भी थीं।
P: Ye poore dus ka bhi incharge Ismail tha?
पूरे समूह का प्रभारी इस्माइल था?
K: Hum ko bola tha, agar raaste mein kuch ho to Ismail incharge. उन्होंने हमें बताया था कि यात्रा के दौरान कोई भी कठिनाई होने पर इस्माइल जिम्मेदारी संभालेंगे।
P: Ismail kya cheez hai udhar?
वहां इस्माइल की क्या स्थिति है?
K: Kuch nahin. Humari tarah hi hai . . . Lekin humse bada hai na.
कुछ नहीं, वह हमारे जैसा ही था, लेकिन वह हमसे वरिष्ठ था।
P: Karobar kya hai uska?
वह किस तरह का काम करता है?
K: Wo humse pehle hi jamaat mein hai.
वह हमसे पहले समूह में आया था।
P: Ismail ke baad senior kaun tha? Baaqi nau logon mein senior kaun tha? Naam bata sabke ….

इस्माइल के बाद कमान संभालने वाला अगला व्यक्ति कौन था, कृपया सभी के नाम बताइए।
K: Fahadullah, Darman, Kashab, Sohaib, Meher, Ismail, Umar aur main (he gives the names ending with ‘and me’)
इस मिशन में शामिल दस आतंकवादियों को बताया गया था कि उन्हें कश्मीर की मुक्ति के लिए लड़ना है। उन्हें मिशन के काफी देर बाद तक यह नहीं बताया गया था कि उनका लक्ष्य मुंबई है। संयोगवश, कसाब को यह नहीं पता था कि इस्माइल की चोटों के कारण मृत्यु हो गई है; जांच अधिकारी उसे बता रहे थे कि बाकी सभी जीवित हैं।
18 दिसंबर 2008 की अख़बार रिपोर्टों के अनुसार, पुलिस को लगा कि कसाब सहयोग नहीं कर रहा है, इसलिए उन्होंने उसे कुछ मृत आतंकवादियों की तस्वीरें दिखाईं और बताया कि जब उन्होंने सहयोग करने से इनकार किया तो उन्हें गोली मार दी गई। एक अपराध शाखा अधिकारी ने बताया, ‘हालाँकि वह फ़िदायीन है, फिर भी वह इस सब से काफ़ी डरा हुआ है। और, लॉकअप में कुछ समय बिताने के बाद, उसे अब यह विश्वास नहीं रहा कि यहाँ मौत उसे जन्नत ले जाएगी। वह शुरू में बहुत घमंडी था, लेकिन अब वह नरम पड़ गया है और पूछताछ के दौरान ज़्यादा खुलकर बात करता है।’
प्रारंभिक पूछताछ के तुरंत बाद, उसे पहचान परेड के लिए जेल ले जाया गया। विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट और दो पंच गवाहों के सामने कई गवाहों ने उसकी पहचान की। एक गवाह ने बताया, “कसाब को एक जैसे कपड़े पहने छह लोगों के साथ लाइन में खड़ा किया गया और गवाह को उसकी पहचान करने के लिए बुलाया गया। मजिस्ट्रेट ने मुझे बताया कि उपस्थित लोगों में से एक आरोपी है जिसने 26 नवंबर को सीएसटी पर अंधाधुंध फायरिंग की थी और मुझसे पूछा कि क्या मैं उसकी पहचान कर सकता हूँ।” गवाह ने आगे कहा, “मैं आगे बढ़ा और उसे छूकर उसकी ओर इशारा किया।” उसने आगे बताया, “कुछ गवाह तो आतंकवादी का सामना करने से भी डर रहे थे... कसाब शांत था, जब भी मजिस्ट्रेट आतंकवादी से उसका नाम पूछते, वह चिल्लाकर कहता, ‘अजमल आमिर कसाब’।”
कसाब कभी-कभार अपने साथी आतंकवादियों से मिलने की बात करता था। एक दिन पूछताछ के दौरान, क्राइम ब्रांच के प्रमुख ने कसाब से पूछा, 'क्या तुम कभी लश्कर-ए-तैबा के प्रमुख हाफिज सईद से मिले हो?'

के: 'जी हां, वह आए थे और हमारे शुरुआती प्रशिक्षण सत्रों में से एक के दौरान उन्होंने उपदेश दिए थे। उन्होंने हमें बताया कि दुनिया भर के मुसलमानों को काफिरों के खिलाफ जिहाद के लिए उठ खड़ा होना चाहिए।'
‘सईद ने अपने प्रवचन में और क्या कहा?’
उन्होंने कहा कि हमें अल्लाह के लिए युद्ध लड़ना होगा। उन्होंने कहा कि अगर हम जिहाद करते हुए मरेंगे तो हमारे चेहरे चांद की तरह चमकेंगे। हमारे शरीर से सुगंध निकलेगी और हम सीधे स्वर्ग जाएंगे।
बाद में, कसाब ने उनसे पूछा, 'साहब, क्या आप मुझे बताएंगे कि मेरे अलावा आपने और किसे गिरफ्तार किया है?'
‘तुम्हें पता चल जाएगा,’ मारिया ने कहा और चली गई।
बाद में, आशीष खेतान बताते हैं:
'घटना के लगभग एक महीने बाद, एक दोपहर मारिया ने उसे अपने कार्यालय में बुलाया।'
उन्होंने पूछा, 'क्या आप अब अपने अन्य सहकर्मियों से मिलना चाहते हैं?' ‘हां, मैं उन्हें देखना चाहूंगा,’ कसाब ने उत्तर दिया।
मारिया ने अपराध शाखा के एक अधिकारी को उसके कार्यालय में बुलाया और उससे कहा, 'कृपया उसे उस जगह ले जाएं जहां उसके अन्य दोस्तों को रखा गया है। बैठक के बाद, उसे वापस मेरे कार्यालय में ले आएं।'
उन्हें मुर्दाघर ले जाया गया जहाँ उन्हें नौ आतंकवादियों के शव दिखाए गए। जावेद और शोएब के शव आधे जले हुए थे। नज़ीर का शरीर कोयले के ढेर जैसा था। इस्माइल का शरीर गोली लगने से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। हाफ़िज़ अरशद का चेहरा लगभग पूरी तरह जल चुका था। फ़हदुल्लाह की आँख में गोली लगी थी। नासिर और बाबर इमरान के शरीर गोलियों से छलनी थे। आतंकवादियों के चेहरे विकृत थे, दाँत बाहर निकले हुए थे और चेहरे की त्वचा पीली या पपड़ीदार और जली हुई थी। कमरे में घिनौनी बदबू फैली हुई थी। कसाब वहाँ ज़्यादा देर नहीं रुक सका। उसने अधिकारियों से कहा कि वह जाना चाहता है। उसे वापस मारिया के कार्यालय ले जाया गया।
जैसे ही कसाब कमरे में दाखिल हुआ, मारिया ने उससे पूछा, 'तो क्या तुमने उनके चेहरों पर चमक देखी और उनके शरीर से गुलाबों की खुशबू महसूस की, जैसा कि हाफ़िज़ सईद ने तुम्हें बताया था?'
कसाब लगातार फर्श की ओर देखता रहा। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

कसाब ने बार-बार कहा है कि उसने जो किया वह ‘ईश्वर की इच्छा’ थी। जाहिर तौर पर, घर पर अपने छोटे से अवकाश के दौरान उसने अपनी माँ को बताया था कि वह मुजाहिदीन बन गया है और उसकी माँ ने उसे रोकने की पूरी कोशिश की थी। एक सूत्र ने बताया, ‘उसे अपने कृत्य पर कोई पछतावा नहीं था और उसने जोर देकर कहा कि उसके कार्य इस्लाम के विरुद्ध नहीं थे, जो निर्दोषों की हत्या की निंदा करता है।’ उसे इस बात से कोई आपत्ति नहीं थी कि उसके प्रशिक्षकों ने उसे मिशन पर भेजा जबकि वे अपने देश की सुरक्षा में रहे।

8

पुलिस के सामने दिए गए अपने विभिन्न बयानों में, उसने धीरे-धीरे और भी तथ्य उजागर किए। शुरू में, ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके पिता ने ही उसे लश्कर-ए-तैबा में शामिल होने के लिए उकसाया था। बाद में, उसने कहा कि यह उसका अपना निर्णय था, ताकि वह चोरी और सेंधमारी के लिए हथियार जुटा सके। उसने बताया कि वह लश्कर-ए-तैबा में लगभग उसी समय शामिल हुआ जब बेनजीर भुट्टो की हत्या हुई थी (सुश्री भुट्टो का निधन 27 दिसंबर 2007 को हुआ था)। वह लश्कर-ए-तैबा के प्रति कुछ हद तक उपेक्षापूर्ण रवैया रखता था; जब चाचा ने उनसे कहा कि वे जन्नत जाएंगे, तो उसने पलटकर कहा, 'भागो यार। मैं यह नहीं कर सकता।'
जब उनसे पूछा गया, 'आपने सीएसटी स्टेशन पर कितने लोगों को मारा?' तो उन्होंने जवाब दिया, 'पता नहीं। मैंने ढाई मैगज़ीन गोलियां चलाईं, बस फायरिंग करता रहा। ज़ाकी ने हमें तब तक मारते रहने को कहा था जब तक हम ज़िंदा हैं।'
उसके बयानों के अनुसार, हमलों से पहले उन्हें तीन महीने तक एकांतवास में रखा गया था, और जब उन्हें पाकिस्तान से बाहर निकाला गया तो उनकी आँखों पर पट्टी बाँध दी गई थी। उसने बताया कि उसने यह सब पैसों के लिए किया था। उसके परिवार को लश्कर-ए-तैबा से एक बड़ी रकम मिलने वाली थी। उसने चाचा का वर्णन करते हुए कहा कि वह काली दाढ़ी वाला आदमी था जिसमें कुछ सफेद बाल भी थे, और उसकी उम्र लगभग चालीस से पैंतालीस वर्ष के बीच थी। उसने उन्हें बताया था कि वह खुद 'कार्रवाई' में शामिल रहा है। वह अफगानिस्तान गया था और वहाँ रूसियों को मार डाला था। उसने चाचा के हवाले से कहा, 'तुम मुसलमान हो। तुम्हें गरीबी से छुटकारा पाना होगा। भारत को देखो, वे हमसे बहुत आगे निकल गए हैं, वे हमारे लोगों को मारते हैं। तुम्हें भारत के खिलाफ जिहाद छेड़ना होगा।' उसे बताया गया कि उसे 'सबाब' यानी 'नेक काम' मिलेंगे। लेकिन पुलिस ने

शब्दों से खिलवाड़ किया, उससे पूछा गया, 'क्या तुम्हें शबाब मिली? मजा आया? (यहाँ शबाब का अर्थ महिला है।)'
कसाब ने गुस्से से जवाब दिया, 'छी, छी, मेरे पास कोई कार्ड नहीं है।'
फिर उनसे पूछा गया, 'क्या आपको उन निर्दोष लोगों के लिए कोई दुख नहीं हुआ जिन पर आपने गोली चलाई?'
कसाब ने जवाब दिया, 'बड़ा आदमी बनने के लिए ऐसे काम करने पड़ते हैं।' उन्होंने अजीजाबाद से, विशेष रूप से कसमाबाद नामक स्थान से अपनी यात्रा शुरू की। मुंबई पर हमले का फैसला हमले से ठीक एक महीने पहले लिया गया था। प्रत्येक व्यक्ति को 5,400 रुपये दिए गए थे। दिसंबर 2008 के मध्य में, कसाब के पिता ने एक पाकिस्तानी अखबार के सामने स्वीकार किया कि कसाब उनका बेटा था, जबकि कई ग्रामीणों ने भी उसकी पहचान की। 18 दिसंबर 2008 को, नवाज शरीफ ने भी स्वीकार किया कि कसाब एक पाकिस्तानी था, और पाकिस्तान में आतंकवादियों पर लगाम लगाने के लिए पर्याप्त कदम न उठाने के लिए अपनी ही सरकार की आलोचना की। फिर, 22 दिसंबर 2008 को, भारत ने कसाब का एक पत्र पाकिस्तान उच्चायोग को सौंपा। इस पत्र में, उसने कहा कि वह अपने बचाव के लिए एक पाकिस्तानी वकील चाहता है, और उसने यह भी कहा कि इस मिशन में शामिल अन्य नौ आतंकवादी भी पाकिस्तान से थे। उसने अपने देश से उन नौ शवों का भी जिम्मा लेने का अनुरोध किया।
ब्रिटिश अखबार 'द ऑब्जर्वर' ने सबसे पहले खबर दी कि उन्हें कसाब का घर मिल गया है और उन्हें फरीदकोट की मतदाता सूची की एक प्रति भी मिल गई है जिसमें नूर इलाही से विवाहित मोहम्मद आमिर सहित 478 पंजीकृत मतदाता शामिल हैं। उन्हें दंपति के राष्ट्रीय पहचान पत्र नंबर भी मिल गए हैं।
पाकिस्तान से डॉन अखबार ने बताया कि बीबीसी ने उनके पिता का पता लगा लिया है, जो पहले तो फूट-फूटकर रोने लगे और किस्मत के अन्याय पर शिकायत करने लगे। कसूर जाने वाले रास्ते पर दीपालपुर से कुछ ही किलोमीटर दूर फरीदकोट गांव में अपने घर के आंगन में डॉन से बात करते हुए उन्होंने कहा, “पहले दो दिन तो मैं इस बात को मानने से ही इनकार करता रहा, खुद से कहता रहा कि यह मेरा बेटा नहीं हो सकता। अब मैंने इसे स्वीकार कर लिया है। यही सच है। मैंने अखबार में तस्वीर देखी है। यह मेरा बेटा अजमल है।”
उन्होंने आगे कहा, ‘उसने ईद पर मुझसे नए कपड़े मांगे थे जो मैं उसे नहीं दे सका। वह गुस्सा हो गया और चला गया।’

हालांकि, गिरफ्तारी के दो सप्ताह बाद भी, कसाब को विश्वास था कि वे सही थे, और उन्हें 'जिहाद' करना था और काफिरों को मारना था। जब उन्हें बताया गया कि कई मुसलमानों ने भी अपनी जान गंवाई है, तो उनके पास कोई जवाब नहीं था। 26/11 के आयोजक या मुख्य साजिशकर्ता कसाब जैसी शख्सियत वाले किसी व्यक्ति की तलाश में थे। वे एक ऐसे व्यथित भगोड़े की तलाश में थे जिसका अपने भाई-बहनों से कोई लगाव न हो; बीस से तीस वर्ष की आयु का कोई व्यक्ति; जिसे उनकी सोच के अनुरूप ढाला जा सके; एक आज्ञाकारी व्यक्ति जिसका निशाना अचूक हो, क्योंकि हथगोले फेंकने के लिए यह क्षमता आवश्यक थी। प्रशिक्षित व्यक्ति का शारीरिक रूप से भी चुस्त-दुरुस्त होना, संयमी होना और किसी भी प्रकार की फिजूलखर्ची से दूर रहना आवश्यक था – जैसे शराब पीना, अय्याशी करना या धूम्रपान करना।
कसाब ने पुलिस को बताया कि पिछले तीन महीनों से वे कराची में दुनिया से अलग-थलग रखे गए थे, ताकि जानकारी लीक होने का खतरा न रहे। उन्हें उनकी हर मनचाही चीज़ मुहैया कराई गई; फहदुल्लाह कराची के रेस्तरांओं का सबसे बढ़िया खाना चाहता था, जबकि बड़ा रहमान बॉलीवुड फिल्में देखना चाहता था। जब वे मुंबई आए, तो अपने साथ बड़ी मात्रा में चिकन बिरयानी लेकर आए थे।
इन दस लोगों को गुरिल्ला और सैन्य रणनीति का प्रशिक्षण भी दिया गया था। उन्हें महत्वपूर्ण स्थानों पर कब्जा करने का प्रशिक्षण दिया गया था ताकि वे सुरक्षित रह सकें और ग्रेनेड फेंककर, गोलीबारी करके हमला कर सकें और परिणामस्वरूप अपनी मांगें रख सकें।
तदनुसार, उन्होंने छह मंजिला ऐतिहासिक इमारत ताज के पाँचवें और छठे तल पर कब्जा कर लिया; उन्होंने ओबेरॉय की अठारहवीं और उन्नीसवीं मंजिल पर कब्जा कर लिया; और नरीमन हाउस की तीसरी और चौथी मंजिल पर कब्जा कर लिया। वे केवल सीएसटी पर ही अनुकूल स्थिति प्राप्त करने में असफल रहे और इसका कारण संभवतः यह था कि रेलवे पुलिस ने जोरदार बचाव किया था। सीएसटी पर मुंबई पुलिस की जवाबी फायरिंग से उन्हें काफी मदद मिली।
जेल में
जांच अधिकारियों द्वारा मुख्य आरोपी कसाब समेत अन्य लोगों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किए जाने के बाद, कैदी ने मांग की कि उसे उर्दू में आरोपपत्र की एक प्रति दी जाए, क्योंकि वह अंग्रेजी नहीं समझ सकता था।

हालांकि, कुछ प्रावधानों के कारण यह संभव नहीं है, इसलिए उसे एक ऐसे वकील की आवश्यकता होगी जो आरोपपत्र को समझता हो और उसे समझा सके।
कसाब का व्यवहार शुरू से ही विरोधाभासी रहा है। पहले तो यह खबर आई कि उसने आतंकी हमलों में अपने पिता की संलिप्तता का आरोप लगाकर पुलिस को झूठी कहानी सुनाने की कोशिश की; जब यह कोशिश नाकाम रही, तो उसने अपना बयान बदल दिया जो अब सच के करीब लगता है।
उसने पहले तो खाना खाने से इनकार कर दिया, जिसके कारण उसे एसिडिटी हो गई। फिर उसने एक गैर-मुस्लिम के हाथों से खाना लेने से भी इनकार कर दिया। छह साल से अधिक समय से जेल में बंद एक विचाराधीन कैदी ने बताया, 'कसाब ने अधिकारियों को अभद्र तरीके से दरकिनार करते हुए कहा कि वह कुछ भी नहीं खाना चाहता और जेल का खाना तो वह खा ही नहीं सकता। मैंने उसे पार्ले-जी बिस्कुट का एक पैकेट दिया, जिसे उसने अनिच्छा से स्वीकार किया और कहा कि वह ऐसा सिर्फ इसलिए कर रहा है क्योंकि एक मुस्लिम उसे दे रहा है। उसकी यह बात सुनकर मैं चौंक गया। जाहिर है उसने मेरी लंबी दाढ़ी और मेरा नाम देख लिया था।' जब उसने बिस्कुट खत्म कर लिए, तो उसे खड़े होने के लिए कहा गया क्योंकि एक वरिष्ठ अधिकारी कमरे में आ गया था। विचाराधीन कैदी ने बताया, 'कसाब ने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि अधिकारी कितना वरिष्ठ है।'
बाद में, जैसे-जैसे दिन बीतते गए, उसने जेल में दिया जाने वाला शाकाहारी भोजन खाना शुरू कर दिया - जिसमें नाश्ते में एक कप चाय के साथ रोटी के पांच टुकड़े, दोपहर के भोजन में दाल-सब्जी (दाल और सब्जियां), दही, पापड़ और पांच रोटियां, दोपहर में चाय और रात के खाने में चावल, दाल, चना-मसाला और पापड़ शामिल थे।
क्योंकि उन्हें कुरान का उतना ज्ञान नहीं था, इसलिए उन्होंने जेल में धीरे-धीरे नमाज़ पढ़ना बंद कर दिया।
फिर, जब उसे पहचान परेड के लिए आर्थर रोड जेल ले जाया गया, तो उसने 'जय हिंद' कहने से इनकार कर दिया। हालांकि, जेल अधिकारियों ने लगभग आधे घंटे तक उसे मनाने की कोशिश की, जिसके बाद उसने अनिच्छा से 'जय हिंद' कहा। इसके बाद, उसे सीधे खड़े होकर जेल अधिकारियों को सलाम करने के लिए कहा गया। एक कांस्टेबल ने कहा, 'जब भी अजमल ने 'जय हिंद' कहा, हमें लगा कि हमने उन निर्दोष लोगों का कुछ बदला ले लिया है जिन्हें उसने और अन्य लोगों ने मार डाला था।'

पहचान परेड के दौरान कम से कम सैंतीस लोगों ने कसाब की पहचान की। 17 मार्च को अखबारों ने खबर दी कि अब वह महात्मा गांधी की आत्मकथा 'माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ' के उर्दू अनुवाद को पढ़ रहा है।
उसके कंबल को टुकड़ों में काट दिया गया है ताकि वह उससे आत्महत्या करने का प्रयास न कर सके। इसी कारण उसे दाढ़ी बनाने की भी अनुमति नहीं है। उसकी कोठरी में न तो पंखे हैं और न ही बिजली के सॉकेट।
श्री राम जेठमलानी, एक प्रसिद्ध भारतीय आपराधिक वकील, ने सिंधीशान के 22 दिसंबर 2008 के अंक में 'एक आतंकवादी को खुला पत्र' शीर्षक से एक लेख में लिखा है।
आप इस्लाम धर्म और उसके महान पैगंबर के लिए कलंक हैं।
मुझे उस शिक्षा के मूल तत्वों की प्रामाणिक समझ है जो आपको उस प्रकार का आतंकवादी बनाती है जो आप हैं।. . .ये तत्व हमेशा ये होते हैं – पहला, कि आप अंतिम युद्ध लड़ रहे हैं जो इस्लाम को सर्वोच्च विश्व धर्म के रूप में स्थापित करेगा; दूसरा, कि जिहाद पवित्र ग्रंथ द्वारा प्रत्येक मुसलमान पर लगाया गया कर्तव्य है; और तीसरा, कि जब आप जिहाद के लिए मर रहे होते हैं, तो आप स्वर्ग से कुछ ही सेकंड दूर होते हैं, जहाँ आप अनंत काल तक सभी इंद्रिय सुखों का आनंद लेंगे, जिनमें निश्चित रूप से सुंदर महिलाओं द्वारा व्यभिचारी पुरुषों को दी जाने वाली सेवाएं भी शामिल हैं। यह एक तिहरा धोखा है जो सदियों से चला आ रहा है लेकिन मुसलमानों को इससे कोई लाभ नहीं हुआ है।. . .
यह मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको बताऊं कि इस्लामी भविष्यवाणी को उन गैर-मुसलमानों द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है जिनके पास वर्तमान में परमाणु भंडार की कुंजी है, और वे गैर-इस्लामी भविष्यवाणी की संभावना का अनुमान लगा रहे हैं। कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसी अस्पष्ट भविष्यवाणियों से अपने कार्यों को निर्देशित नहीं होने देगा।
आपके शिक्षकों ने स्वयं उस स्वर्ग को नहीं देखा है जिसका वे आपसे वादा करते हैं। यदि वे अपने द्वारा सिखाई गई बातों की सच्चाई पर विश्वास करते, तो वे स्वयं वहाँ पहले जाते। और, ओसामा बिन लादेन पाक-अफगान सीमा पर पहाड़ों की किसी अंधेरी गुफा में डरे हुए चूहे की तरह नहीं छिपा होता। वह उन विमानों में होता जिन्होंने न्यूयॉर्क में ट्रेड टावर्स को गिराया था

या वह 26 नवंबर 2008 को बॉम्बे (मुंबई) पर हमला करने वाले दस लोगों के दल में ग्यारहवां व्यक्ति हो सकता था।
अंत में, उन खूबसूरत महिलाओं के बारे में जो निर्दोषों की बेरहमी से की गई हत्याओं पर तालियाँ बजाने के लिए इंतज़ार कर रही हैं। क्या आपको एहसास है कि भगवान को आपको अपने पक्ष में रखने के लिए वेश्यालय चलाने की ज़रूरत नहीं है?
उदार लोकतंत्र द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का लाभ उठाकर किसी शहर में घुसपैठ करना बहादुरी का काम नहीं है, चाहे आप जैसे दुष्ट और अपराधी ही क्यों न हों। निहत्थे, पूरी तरह से असहाय लोगों को अपनी एके-47 और उसकी घातक गोलियों से मारना भी बहादुरी का काम नहीं है।
भारत की आबादी एक अरब से अधिक है। अगर एक आतंकवादी बीस आतंकवादियों को मार या अपाहिज कर सकता है, तो अपने मकसद को पूरा करने के लिए आपको कितने आतंकवादियों की ज़रूरत होगी? याद रखिए, आपके साथ लाखों-करोड़ों नेक मुसलमान भी मारे जाएंगे जो आपके बुरे कामों से घृणा करते हैं।
निष्कर्ष
समाज में किसी बिगड़ैल बच्चे के लिए किसे जिम्मेदार ठहराया जाए? क्या इसके लिए माता-पिता, स्कूल, धर्म, समाज या राष्ट्र को जिम्मेदार ठहराया जाए, जब कोई बच्चा बड़ा होकर समाज पर कलंक लगाता है?
आज पाकिस्तान जिया-उल-हक द्वारा तैयार किए गए नक्शे को अपनाने का खामियाजा भुगत रहा है। नैतिकता इतनी भ्रमित दिखती है कि लड़कियों के स्कूल बंद करने पर भी बुद्धिजीवियों और मीडियाकर्मियों की मिली-जुली प्रतिक्रिया देखने को मिलती है। ऑक्सफोर्ड से पढ़े इमरान खान भी स्वात घाटी में शरिया कानून लागू करने का स्वागत करते हैं, जबकि वे इस बात को पूरी तरह से नजरअंदाज कर रहे हैं कि शरिया कानून का इस क्षेत्र की आबादी पर और क्या असर पड़ेगा। अगर इमरान खान जैसे पढ़े-लिखे लोगों का जवाब 'हालात पर निर्भर करता है...' है, तो क्या हमें तब आश्चर्य होना चाहिए जब एक गरीब अनपढ़ ग्रामीण हत्या और नफरत का रास्ता अपना लेता है, क्योंकि उसे निर्दोषों को दुश्मन समझने के लिए गुमराह किया गया है, जबकि उसके असली दुश्मन चाचा जैसे लोग हैं?
तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जब अधिकारियों की नाक के नीचे क्रिकेट टीम पर हमला होता है, तो उपद्रवी बिना किसी पुलिसकर्मी के पीछा किए भाग जाते हैं। वे उनका पीछा कैसे कर सकते हैं जिन्हें मदरसों में नायक

□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□? □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ - □□ □□□□□□□ □□□□□ □ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□? □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□-□□□□□ □□□□□, □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□-□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□

□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□.□□. □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ 23 □□□□□□ 2009 □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□

□□□□□□□:

□□ □□□□□□□□□□□□: □□□□?

□□□□□:	□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ (□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□)□
□□□□□□□□□□□:	□□□□□ □□ □□?(□□ □□□□□ □□ □□□□?)
□□□□□:	□□□□□□□□□□□□
□□□□□□□□□□□:	Kahaan se?(From where?)
□□□□□:	□□□□□□ □□□□□□□ (□□□□□□ □□)
□□□□□□□□□□□:	□□□□□?
□□□□□:	□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□? (□□□□ □□ □□□□□?)
□□□□□:	□□□□□□□□□
	(SPP Ujjwal Nikam repeats – Faridkot)
□□□□□□□□□□□:	□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□? (□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□?)
□□□□□:	□□ □□□□
□□□□□□□□□□□:	□□□□ □□□□□ □□? (Do you have any

lawyer?)
साथी: Filhal to nahi.(Till now, none.)

न्यायाधीश:

Aapko chahiye kya?(Do you want
one?)

साथी:

Jo pehle tarikh mein mere naam pe
khade the wohi chalega.
(जो पहले से वहां था, वही काम करेगा।)
न्यायाधीश (कार्यवाही का जिक्र करते हुए): समझ में आ रहा है? (क्या आप मेरी बात समझ पा रहे हैं?)

साथी:

Yes Judge: Tumhe malum hai main kaun hoon?(Do you know who I am?)
साथी: नहीं।

न्यायाधीश:

मैं ही जज हूं। मैं ही तुम्हारा केस चलाऊंगा। (मैं ही वह जज हूं जो तुम्हारा केस चलाएगा।)

साथी:

(मुस्कुराते हुए, दोनों हाथ जोड़ते हुए): नमस्ते।

न्यायाधीश:

Kaun vakil hai? (Who is your lawyer?)

शोरगुल भरी हलचल

(हाथ जोड़ते हुए): पहले 27 को खड़े हुए थे? (27 तारीख को कौन खड़ा हुआ
था?)
जज निकम की ओर देखते हैं।
निकम मराठी में कहते हैं: कोनी
नाहुता (उनके लिए कोई उपस्थित नहीं
हुआ)
न्यायाधीश: Aapka koi vakil nahin tha pehli peshi main. Case ke liye vakil

chahiye?(You didn't have any lawyer in your first appearance. Do you need a lawyer?)

□□□□: Vakil ki zaroorat hai. Aage jo aap behetar samjhe.(I will need a lawyer, but you know best.)

□□□□□□□□□□: Aapke kharche par vakil kar sakte hain?(Can we appoint a lawyer at your expense?)

□□□□: (□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□):
Ji nahin. (No, Sir.)

□□□□□□□□□□: *Sarkar ke kharche par aapko vakil denge. Manzoor hai?*
(□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□? □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□?)

□□□□: □□ □□□ (□□ □□□)

□□□□□□□□□□: Agli date ka order court mein paas karunga, tumhe jail superintendent Mrs Swati Sathe bata degi.(You will be told about the next date by the jail Superintendent Mrs Swati Sathe.)

□□□□: Bilkul theek.(Absolutely fine.)

□□□□□□□□□□: Abhi aap jayiye.(Now you may go.)

□□□□: (□□□□□□□□□)
(□□□□ □□□ □□□□ □□□)

□□□□ □□□, □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□, □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□, □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□

अदालत में कसाब का बचाव कर रहे हैं। कसाब ने जुलाई 2009 में अपराध स्वीकार कर लिया था। हालांकि, मामला अभी भी चल रहा है क्योंकि लोक अभियोजक उज्ज्वल निक्कम इस स्वीकारोक्ति को अंतिम सजा कम करने की एक चाल मानते हैं।

मारो और भागो

जो लोग किताबों को जलाकर शुरुआत करते हैं, वे अंत में इंसानों को जलाकर ही खत्म होंगे।
– हेनरिक हेन
कसाब ने जांच एजेंसियों को बताया कि उसके परिवार के सदस्य, जो घोर गरीबी में जी रहे थे, को मुंबई हमलों में उसकी भागीदारी के लिए डेढ़ लाख पाकिस्तानी रुपये का भुगतान किया गया था।
यह गरीब परिवार के लिए एक अप्रत्याशित लाभ था क्योंकि उन्होंने इतनी बड़ी रकम पहले कभी नहीं देखी थी। यह स्पष्ट है कि ये उच्च प्रशिक्षित और प्रेरित भाड़े के सैनिक थे जिन्हें विशेष रूप से इसलिए चुना गया था क्योंकि वे समाज के निचले तबके से थे। वे इस कार्य के लिए उपयुक्त भी थे क्योंकि उनमें से प्रत्येक (कम आत्मसम्मान से ग्रस्त) अपने जीवन को कम महत्व देता था। क्रोध की भावना भी एक महत्वपूर्ण घटक थी। इन कारकों का उपयोग संचालकों ने इस घातक मिशन के लिए किया।
हालांकि इस ऑपरेशन के मुख्य योजनाकारों को पता था कि दस्ते के जिंदा घर लौटने की संभावना बहुत कम है, फिर भी उन्होंने समूह को आश्वस्त किया था कि यह कोई आत्मघाती दस्ता नहीं है और उनका मिशन संक्षिप्त है। भारत द्वारा पाकिस्तान को भेजे गए दस्तावेज़ में कुबेर पर मिले जीपीएस (ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम) खोज डेटा का उल्लेख है। उस पर सात बिंदुओं वाली वापसी यात्रा का नक्शा बना हुआ था; सीएसटी टीम को छोड़कर बाकी सभी के पास जीपीएस सेट था। सीएसटी टीम का जीपीएस, जो इस्माइल खान के लिए था, कुबेर पर ही छूट गया था।
जीपीएस पर वापसी के सात बिंदु T007 से T001 के रूप में चिह्नित हैं। यात्रा बडवार पार्क से शुरू होती है और इसकी तारीख 27 नवंबर है। शेष यात्रा 28 नवंबर के लिए चिह्नित है - जिसका अर्थ है कि उन्हें 27 नवंबर की शाम को वापस लौटना था। प्रत्येक मोड़ पर सूर्योदय और सूर्यास्त के बिंदु दर्शाए गए हैं ताकि आतंकवादियों को रास्ते में मार्गदर्शन मिल सके। वापसी की यात्रा 407 समुद्री मील की थी। उनका जीपीएस 22 नवंबर को काझर क्रीक के

पास सक्रिय किया गया था और उन्हें उसी रास्ते से वापस लौटना था जिससे वे आए थे।
यह एक अचानक हमला करके भागने की योजना थी। आतंकवादियों का इरादा संपत्ति को नष्ट करना, लोगों को मारना, कुछ बंधकों को पकड़ना, अपना विरोध जताना, कुछ मांगें रखना, बडवार पार्क लौटते समय मानव ढाल बनाना और फिर तुरंत गायब हो जाना था। यह स्पष्ट है कि भागने के बाद वे मानव ढालों को भी मारने की योजना बना रहे थे।
इन रिमोट कंट्रोल रोबोटों का मकसद मुसलमानों को छोड़कर बाकी सभी को मारना था। पाकिस्तान में बैठे संचालक, जो हर कदम पर इनका मार्गदर्शन करते थे, पाकिस्तान के एक दूरस्थ गुप्त स्थान पर प्रसारित विनाश और दुख के भयावह दृश्यों और तस्वीरों का भरपूर आनंद लेते थे।
कई कारणों से उनका मिशन विफल रहा। उनकी पहली गलतियों में से एक यह थी कि वे कुबेर को डुबाने में असफल रहे। इसका कारण यह था कि तटरक्षक दल अचानक प्रकट हो गया, जिससे पकड़े जाने का डर पैदा हो गया। वे अपने निर्देशों को भूल गए। चूंकि कुबेर तैरता रहा, इसलिए इसने भारतीय अधिकारियों को जीपीएस प्रणाली सहित कई महत्वपूर्ण सबूत उपलब्ध कराए।
उनके घर न लौट पाने का दूसरा महत्वपूर्ण कारण यह था कि दस सदस्यीय दस्ते में सबसे पहले उनके नेता इस्माइल खान की मृत्यु हो गई। मात्र इक्कीस वर्ष का कसाब, जो शायद समूह में सबसे कमजोर था, को संभवतः सबसे अनुभवी इस्माइल खान के साथ तैनात किया गया था – जिसकी असमय मृत्यु ने सारी योजना को गड़बड़ा दिया। खान को गोली लगने के एक मिनट के भीतर ही कसाब को भी गोली लग गई और उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उसने मिशन के बारे में जो जानकारी दी, उससे पुलिस को दस्ते के शेष सदस्यों की गतिविधियों का अनुमान लगाने में मदद मिली। उसकी जानकारी से कुछ हत्यारों को होटलों में ठहरने वाले या भोजन करने वाले बनकर भागने से रोकने में भी मदद मिली। गुप्त रिकॉर्डिंग से नरिमन हाउस में दो आतंकवादियों का मुकाबला करने में भी मदद मिली, क्योंकि उनकी बातचीत से उन्हें आगे क्या करने का निर्देश दिया गया था, इसका पता चल गया।
कसाब ने खुलासा किया कि अबू हमजा, लश्कर का वह आतंकवादी जिसने बैंगलोर स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान पर हमला किया था, ने अपने उदाहरण से उन्हें

आश्वस्त किया था कि भारत में आतंक फैलाने के बाद वे सुरक्षित घर लौट आएंगे।
कसाब ने खुलासा किया कि दस में से आठ लोग उसी रास्ते से मुंबई लौटने वाले थे जिससे वे आए थे; वहीं नरीमन हाउस के दोनों लोग यहूदियों को बंधक बनाने वाले थे ताकि पाकिस्तानी बॉस उनकी जान के बदले कुछ हासिल कर सकें। उन्होंने आगे बताया कि सीएसटी पर पुलिस द्वारा पीछा किए जाने पर उनकी योजना विफल हो गई।

षड्यंत्रकारियों

Apni manzil se insaan to gir gaya, Aur patthar ubhar kar Khuda ho gaya.
– जोश मालसियानी
[मनुष्य अपने उद्देश्य से भटक गया है, और पत्थर उठकर ईश्वर बन गए हैं।] ताज होटल के हेरिटेज विंग की भूतल की खिड़की से आखिरी हमलावर के गिरते ही दाऊद इब्राहिम का नाम सामने आया। चूंकि ये हमले कई मायनों में 1993 के हमलों से मिलते-जुलते थे, इसलिए यह मानना स्वाभाविक था कि इस बार भी वह इसमें शामिल था। महीनों बीत जाने के बाद भी, भारत ने दाऊद को उन अन्य लोगों के साथ सह-साजिशकर्ता के रूप में नहीं बताया है जिनका नाम आरोपपत्र में दर्ज है।
दूसरी ओर, इसमें कोई संदेह नहीं है कि लश्कर-ए-तैबा को मुंबई में पाकिस्तानी सैनिकों को प्रेरित और निर्देशित करने वाले प्रमुख संगठन के रूप में नामित किया गया है।
लगभग 2007 के अंत में, पाकिस्तान के बैतुल मुजाहिदीन में एक बैठक हुई। इसके सदस्यों में मुज़म्मिल, काफ़ा और अली शामिल थे। लश्कर-ए-तैबा का एक भारतीय सदस्य फ़हीम अंसारी भी मौजूद था। उसे लश्कर-ए-तैबा के एक अन्य सदस्य यूसुफ़ ने मुंबई के एक दर्जन प्रमुख स्थानों की रेकी करने का निर्देश दिया था। इनमें से कुछ स्थान वे थे जिन्हें अंततः 26 नवंबर 2008 को निशाना बनाया गया था - नरीमन हाउस, ताज महल होटल, ओबेरॉय-ट्राइडेंट और सीएसटी।
फ़हीम अंसारी और लश्कर-ए-तैबा के एक अन्य भारतीय सदस्य, सबाहुद्दीन अहमद को मुरीदके और मनशेरा के पास उन्हीं शिविरों में प्रशिक्षित किया गया था, जहाँ 26/11 के दस सैनिकों को प्रशिक्षण दिया गया था। उनतालीस वर्षीय फ़हीम अंसारी ने पहले उत्तर प्रदेश विशेष कार्य बल को बताया था कि उसका आदर्श ओसामा बिन लादेन था। एक पुलिस अधिकारी ने बताया, 'फ़हीम को जब पता चला कि वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला हुआ है, तो वह बहुत खुश हुआ।'

2008 की शुरुआत में, फहीम अंसारी ने साहिल पावस्कर नाम का एक फर्जी हिंदू नाम इस्तेमाल करते हुए बडवार पार्क कॉम्प्लेक्स में एक कमरा किराए पर लेने की कोशिश की। बडवार पार्क, माछीमार नगर जेटी के ठीक सामने है, जिसका इस्तेमाल बाद में पाकिस्तान से आए आतंकवादियों के उतरने के ठिकाने के रूप में किया गया। उसे वहां कमरा किराए पर नहीं मिला। फहीम को मुंबई पर होने वाले हमले की जानकारी कम से कम एक साल पहले से थी। इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि फहीम अंसारी ने ही आतंकवादियों को निशाना बनाने के लिए जगहों और मुंबई में घुसने के लिए इस्तेमाल होने वाली जेटी के बारे में बताया हो।
उसने दिए गए आदेशों का पालन किया और जनवरी 2008 में नेपाल जाकर उसने लश्कर-ए-तैबा के एक अन्य वफादार साथी सबाहुद्दीन अहमद को इन बारह स्थानों के हाथ से बनाए गए रेखाचित्र, वीडियो फिल्में, सीडी और तस्वीरें सौंप दीं। सबाहुद्दीन अहमद ने इन नक्शों और आंकड़ों को पाकिस्तान में अपने वैचारिक आकाओं को भेज दिया। फरवरी 2009 में मुख्य जांच अधिकारी द्वारा दायर आरोपपत्र में सूचीबद्ध ये विवरण इस सांठगांठ को स्पष्ट रूप से स्थापित करते हैं। सीएसटी, ताजमहल और ओबेरॉय-ट्राइडेंट होटलों के वीडियो फुटेज के अलावा, उसने बारह अन्य स्थानों के नक्शे और वीडियो फुटेज भी प्राप्त किए थे - पुलिस महानिदेशक और पुलिस आयुक्त के कार्यालय, गेटवे ऑफ इंडिया, मंत्रालय, वानखेड़े स्टेडियम, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज भवन, हाजी अली दरगाह, (भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, सहार हवाई अड्डा, सेंट मैरी चर्च, कलिना आर्मी गेट, आईएनएस हमला और अक्सा बीच)।
बाद में अंसारी उत्तर प्रदेश चले गए, जहां उन्हें नव वर्ष की पूर्व संध्या पर रामपुर सीआरपीएफ हमले के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया।
पूछताछ के दौरान, फहीम अंसारी ने कबूल किया कि उसने दक्षिण मुंबई के महत्वपूर्ण स्थलों की रेकी की थी। खुफिया ब्यूरो के एक वरिष्ठ अधिकारी ने टिप्पणी की, 'सीडी में मौजूद वीडियो फुटेज इतनी व्यापक रूप से शूट की गई थी कि उसमें कफ परेड के बडवार पार्क के सामने प्रस्तावित लैंडिंग स्पॉट तक की जानकारी थी, साथ ही चारों लक्ष्यों के बारे में विस्तृत जानकारी भी थी।' दिनेश हुकमानी द्वारा लिखित इस खंड के एक अलग अध्याय में दो भारतीय षड्यंत्रकारियों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

26/11 के दस सदस्यीय दस्ते का नेता इस्माइल खान, जो 2005 से दो साल तक कश्मीर में सक्रिय रहा था, ने भी हमलों से पहले मुंबई के चुने हुए स्थानों की इसी तरह की रेकी की थी।

5 इसलिए, जब वह नवंबर के अंत में आतंकी मिशन के लिए
मुंबई पहुंचा, तो वह मुंबई से अनजान नहीं था।
25 फरवरी 2009 को न्यायाधीश एम.एल. ताहिलियानी के समक्ष दायर 11,000 पृष्ठों की आरोपपत्र में इस ऑपरेशन में शामिल सैंतालीस लोगों के नाम शामिल थे। इन सैंतालीस में से दो (संख्या 46 और 47) भारतीय हैं, शेष पैंतालीस पाकिस्तानी हैं।
नामों की सूची इस प्रकार है:
हाफ़िज़ मुहम्मद सईद उर्फ़ हाफ़िज़ साहब (जिन्हें 26/11 के बाद पाकिस्तानी एफआईए ने गिरफ्तार किया था) लश्कर-ए-तैबा के 58 वर्षीय नेता हैं और इसके वैश्विक चंदा जुटाने के अभियानों में भी शामिल हैं। हाफ़िज़ सईद सोवियत-अफगान युद्ध के दौरान मुजाहिदीन में शामिल होने के लिए पेशावर गए थे; उन दिनों पेशावर सीआईए का अड्डा था। यहाँ वे अब्दुल्ला आज़म के चहेते बन गए, जो मकतब अल-खिदमत (एमएके) के सह-संस्थापक थे। एमएके के दूसरे संस्थापक सऊदी नागरिक ओसामा बिन लादेन थे।
इसके बाद एमएके, सीआईए और आईएसआई (जो उस समय सीआईए के प्रॉक्सी के रूप में काम कर रही थी) ने मिलकर काम किया। सईद को 2005 से भारत में हुए सभी आतंकी मामलों का मास्टरमाइंड माना जाता है – अहमदाबाद, जयपुर, हैदराबाद, दिल्ली में हुए विस्फोट और साथ ही 2008 का मुंबई हमला। संभवतः सईद ही वह व्यक्ति था जिसे आतंकवादी फोन पर 'मेजर जनरल' कहकर संबोधित करते थे – यह उपाधि उसके लिए उपयुक्त थी क्योंकि उसने सोवियत-अफगान युद्ध में भाग लिया था। दिसंबर 2008 से पाकिस्तानी एफआईए द्वारा नजरबंद ज़ाकी-उर-रहमान लखवी, जो 48 वर्षीय हैं, पर 26/11 हमलों के पीछे मुख्य साजिशकर्ता होने का संदेह है। 2004 में, उन्होंने इराक में अमेरिकी सेना पर हमला करने के लिए आतंकवादियों और धन की आपूर्ति की थी; उन पर अल-कायदा और उसके वैश्विक सहयोगी संगठनों से चंदा प्राप्त करने का संदेह है। कुछ दिनों बाद उन्हें रिहा कर दिया गया और फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। अप्रैल 2009 तक, वह पुलिस हिरासत में बताए जा रहे हैं।
लखवी के दो बेटे, अबू क़तल और अबू कासिम, लश्कर-ए-तैबा के सदस्य के रूप में कश्मीर में भारतीय सैनिकों के खिलाफ सक्रिय रूप से लड़ रहे थे। दोनों

कश्मीर के बांदीपोरा में मारे गए। लखवी की पत्नी ने लश्कर-ए-तैबा के मारे गए आतंकवादियों की विधवाओं और बच्चों की देखभाल का जिम्मा उठाया है। लश्कर-ए-तैबा अपने मारे गए आतंकवादियों के परिवारों को खून के बदले नकद राशि भी देता है। इससे लश्कर-ए-तैबा को एक वफादार कार्यकर्ता समूह स्थापित करने में मदद मिली है।
सईद (जिसे सईद भी लिखा जाता है) और लखवी एक दूसरे को 1990 से जानते हैं, जब उन्होंने अल-कायदा के पदाधिकारी शेख अबू अब्दुल अजीज की मदद से मरकज़ अल-दावा वल इरशाद की स्थापना की थी। लखवी ने पाकिस्तान के अंदर और बाहर दोनों जगह कार्यकर्ताओं की भर्ती की। लश्कर-ए-तैबा को तब और मजबूती मिली जब पाकिस्तानी तानाशाह जिया उल हक ने संगठन को 200 एकड़ जमीन दान में दी। यह जमीन मुरीदके में स्थित थी। वही जगह जहां फहीम अंसारी, सबाहुद्दीन और मुंबई हमले के दस आतंकवादियों को प्रशिक्षण दिया गया था।
अबू हमजा (पाक एफआईए द्वारा गिरफ्तार)।
अबू अल कमा उर्फ अमजिद। उसकी असली पहचान मजहर इकबाल है, जो पंजाब की मंडी तहसील का निवासी है। लश्कर-ए-तैबा ने उसे 'अबू अल कमा' नाम दिया था। उसे 26/11 के आतंकवादियों को प्रशिक्षण देने का दोषी माना जाता है। लाल किला मुठभेड़, गुजरात के अक्षरधाम मंदिर पर हमला और दिवाली की पूर्व संध्या पर 2005 में हुए दिल्ली के सिलसिलेवार बम धमाकों सहित अन्य हाई-प्रोफाइल मामलों में भी उसकी तलाश है। बताया जाता है कि इकबाल भारत (जम्मू और कश्मीर को छोड़कर) में लश्कर-ए-तैबा के अभियानों का प्रभारी है।
अबू खहफा को पाकिस्तानी एफआईए ने दिसंबर 2008 में गिरफ्तार किया था। मुज़म्मिल उर्फ यूसुफ मुज़म्मिल, जिसे अबू यूसुफ, अबू (गुरेरा) हुरेरा और याहा के नाम से भी जाना जाता है। पहले, लखवी के बजाय मुज़म्मिल को लश्कर-ए-तैबा का सैन्य कमांडर समझ लिया गया था। जेरेमी हैमंड की रिपोर्ट के अनुसार, '18 नवंबर को मुज़म्मिल को किए गए एक इंटरसेप्टेड कॉल ने भारतीय नौसेना और तटरक्षक बल को हाई अलर्ट पर डाल दिया था ताकि पाकिस्तान से भारतीय जलक्षेत्र में प्रवेश करने वाले किसी भी विदेशी जहाज पर नज़र रखी जा सके।' 26/11 हमले की साजिश में शामिल अबू मुज़म्मिल भारतीय अभियानों का नियंत्रक भी है। उस पर मुंबई हमले की जिम्मेदारी का भी संदेह है। कसाब ने उसकी आवाज तब पहचानी जब उसे उन इंटरसेप्ट्स को सुनाया गया जिनमें आतंकवादियों को ऑपरेशन के दौरान निर्देशित किया जा रहा था।

ज़ारार शाह को दिसंबर 2008 में पाकिस्तानी एफआईए ने गिरफ्तार किया था। उन्हें अबू फहद उल्लाह ज़ारार शाह के नाम से भी जाना जाता है। उनका असली नाम अब्दुल वाजिद है और वे पंजाब प्रांत के शेखूपुरा जिले के निवासी हैं। 31 दिसंबर 2008 को वॉल स्ट्रीट जर्नल की रिपोर्ट के अनुसार, लश्कर-ए-तैबा के शीर्ष कमांडर ज़ारार शाह को मुंबई हमले के 'प्रमुख योजनाकारों' में से एक बताया गया था। उन्होंने स्वीकार किया कि 'उन्होंने हमले के दौरान हमलावरों से बात करके उन्हें सलाह दी और उनका ध्यान केंद्रित रखा।' हालांकि लश्कर-ए-तैबा पर पाकिस्तान में 2000 में प्रतिबंध लगा दिया गया था, लेकिन शाह इसके संचार प्रमुख के रूप में काम करते रहे। उसी दिन एएनआई की रिपोर्ट के अनुसार, शाह ने बताया कि उन दस लोगों को कराची में शहरी युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया था। कसाब ने शाह को 26/11 आतंकी हमले के पीछे के लोगों में से एक बताया। यह संदेह है कि खरक सिंह, जिसने अमेरिका के वर्जीनिया से कॉलफोनएक्स के साथ वीओआईपी (वॉइसओवर इंटरनेट प्रोटोकॉल) खाता खोला था, कोई और नहीं बल्कि ज़ारार शाह है। शाह ने स्वीकार किया कि मुंबई हमले की तैयारी के रूप में दस आतंकवादियों को शहरी युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया था।
अतः इसमें शामिल व्यक्तियों की सूची इस प्रकार है:
अबू अब्दुल रहमान
अबू अनस
अबू बशीर
अबू इमरान
अबू मुफ्ती सईद
हकीम साहब
यूसुफ
मुर्शीद
पुरालेख
अबू उमर सईद
उस्मान
मेजर जनरल साहब (नाम ज्ञात नहीं)
खरक सिंह (यह जरार शाह के अलावा और कोई नहीं हो सकता) मोहम्मद इशाक

जाविद इकबाल
लाहौर से साजिद इफ्तिखार
रावलपिंडी के कर्नल आर. सादात उल्लाह। उनका ईमेल आईडी pmit@sco.gov.pk था और उनका पंजीकृत पता इस प्रकार है: कर्नल आर. सादात उल्लाह, विशेष संचार संगठन, कासिम रोड, रावलपिंडी, पाकिस्तान। उनकी संलिप्तता पाकिस्तानी सरकार के साथ एक संदिग्ध संबंध स्थापित करती है क्योंकि उनके ईमेल आईडी से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि वे पाकिस्तान सरकार के कर्मचारी थे। रावलपिंडी से खुर्रम शाहदाद
अबू अब्दुर रहमान
अबू माविया
अबू अनीस
अबू बशीर
अबू हंजिया पठान
अबू सारिया
अबू सैफ-उर-रहमान
अबू इमरान
Hakim Saheb
इस सूची में मुंबई में मारे गए नौ आतंकवादी भी शामिल होंगे (अलग से 'दस आतंकवादी' शीर्षक वाला अध्याय देखें)।
पैंतालीसवां व्यक्ति एम.ए.ए. कसाब होगा, जिसे गिरफ्तार कर लिया गया है और अब वह मुंबई पुलिस की हिरासत में है (देखें 'कसाब' शीर्षक वाला अलग अध्याय)।
छियालीसवां व्यक्ति फहीम अंसारी होगा, जिसे गिरफ्तार कर लिया गया है और वह अब मुंबई पुलिस की हिरासत में है (दिनेश हुकमानी द्वारा लिखित अतिथि लेख देखें)।
सैंतालीसवां व्यक्ति सबाहुद्दीन अहमद है, जिसे गिरफ्तार कर लिया गया है और वह फिलहाल मुंबई पुलिस की हिरासत में है (दिनेश हुकमानी द्वारा लिखित अतिथि लेख देखें)।
इस ऑपरेशन के मास्टरमाइंड मुरीदके में स्थित थे, जो ज़मीन उन्हें कई साल पहले ज़िया उल हक ने दान में दी थी। यह पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में लाहौर के ठीक बाहर स्थित है। अपने घिनौने और शैतानी कृत्यों को छिपाने के

लिए, इसने जमात-उद-दावा नामक एक मुखौटे वाला संगठन बना रखा है, जो धर्मार्थ और शैक्षिक कार्यों में लगा रहता है। यह लश्कर-ए-तैबा का एक सम्मानजनक मुखौटा है, जो उसके क्रूर और खूनी चेहरे को छुपाता है। लश्कर-ए-तैबा की कमान और नियंत्रण संरचना दुनिया भर में आतंकी हमले करने में सक्षम है, हालांकि माना जाता है कि इसकी शुरुआत भारत को लक्षित करने वाले संगठन के रूप में हुई थी। संयुक्त राष्ट्र ने 26/11 के तुरंत बाद दिसंबर 2008 में जमात-उद-दावा पर प्रतिबंध लगा दिया था। लश्कर-ए-तैबा और जैश-ए-मोहम्मद दोनों ने आईएसआई के लिए काम किया है, जिसने भारत के खिलाफ अपने युद्ध में इन समूहों को प्रॉक्सी के रूप में इस्तेमाल किया है।
हमले से कुछ दिन पहले, 'खरक सिंह' (जिसके बारे में संदेह है कि यह ज़ारार शाह की फर्जी आईडी है) के नाम से kharak_telco@yahoo.com नाम की एक ईमेल आईडी बनाई गई थी, जिसने अमेरिका की कॉलफोनएक्स कंपनी का वीओआईपी अकाउंट खरीदा था। भारत में मौजूद दस आतंकवादियों ने इसी वीओआईपी अकाउंट का इस्तेमाल पाकिस्तान में अपने हैंडलर्स से संपर्क करने के लिए किया। इस आईडी को दस अलग-अलग जगहों से एक्सेस किया गया – दो शिकागो, अमेरिका में; एक कुवैत में; दो मॉस्को, रूस में; और बाकी पाकिस्तान में।
मुंबई क्राइम ब्रांच के अनुसार, तीन लोगों—साजिद इफ्तिखार, कर्नल सदातुल्लाह और खुर्रम शहजाद (ऊपर दी गई सूची में क्रमशः तेईसवें, चौबीसवें और पच्चीसवें नंबर पर)—ने पाकिस्तान से इस खाते तक पहुंच बनाई थी।
कुवैत में, इस खाते को सफात के अहमद मक्की ने एक्सेस किया था, और रूस में, कोरोलियोव के व्लादिमीर एन. ज़र्नोव ने इसमें लॉग इन किया था। क्राइम ब्रांच के पास शिकागो के जैक्सन बुलेवार्ड से इसे एक्सेस करने वाले व्यक्ति का विवरण नहीं है। यह स्पष्ट नहीं है कि कुवैत के अहमद मक्की और रूस के व्लादिमीर ज़र्नोव के नाम आरोप पत्र से क्यों हटा दिए गए हैं।
इस खाते से भेजा गया आतंकी ईमेल टूटी-फूटी हिंदी में लिखा गया था, जिसमें कुछ उर्दू और पंजाबी शब्द भी शामिल थे। यह भारत और विशेष रूप से हिंदुओं के प्रति अपमानजनक था। ईमेल में चेतावनी दी गई थी कि जब तक 'हम हिंदुओं को उनकी औकात (दर्जा) नहीं दिखा देते... जब तक भारत में मुसलमान कुरान और हदीस के अनुसार जीवन नहीं जी लेते... जब तक हम हर अत्याचार और हर बूंद का बदला नहीं ले लेते' तब तक लगातार आतंकी हमले जारी रहेंगे। इसमें भारतीय सरकार

को चेतावनी दी गई थी कि वह 'मुसलमानों पर हो रहे अत्याचारों की श्रृंखला को रोके, उन्हें उनके राज्य लौटा दे...'। इसमें आगे कहा गया था, 'हम जानते हैं कि हिंदू बनिया (दुकानदार) जाति से हैं जो केवल लेते हैं, कभी कुछ वापस नहीं देते। लेकिन हिंदू बनिया को यह जानना चाहिए कि हम एक कौम (समुदाय) हैं जो अपना इतिहास कभी नहीं भूलती और वास्तव में उसे दोहराती है।'
लश्कर-ए-तैबा के कुछ अन्य सदस्यों में वित्त प्रमुख एच.एम. अशरफ (जो मध्य पूर्व में धन जुटाता है), लश्कर-ए-तैबा का सऊदी वित्तपोषक और प्रचारक एम.एम.ए. बहाज़िक, भारत में आतंकवादियों की घुसपैठ कराने वाला प्रमुख कमांडर आज़म चीमा और अब्दुल अमा शामिल हैं, जो कश्मीर में सभी अभियानों को संभालता है और फैजाबाद में आईएसआई के एक सुरक्षित ठिकाने में रहता है। इसके अलावा, ब्रिटेन के बर्मिंघम निवासी कंप्यूटर इंजीनियर राहिल शेख की संदिग्ध छवि भी है, जो जुलाई 2006 में मुंबई ट्रेन बम धमाकों के सिलसिले में वांछित है। शेख के भाइयों पर भी इसी हमले के लिए आरोप लगाए गए हैं। राहिल शेख मुंबई हमलों के लिए धन जुटाने वालों में से एक माना जाता है - यह धन उसने लश्कर-ए-तैबा को भेजा था। उसके नवीनतम इंटरसेप्ट से पता चलता है कि उसने लश्कर-ए-तैबा के आज़म चीमा को पैसा भेजा था। उसके कॉल रिकॉर्ड से पता चलता है कि वह सऊदी अरब, दुबई, नेपाल और बांग्लादेश के लोगों के संपर्क में था। हालांकि, एटीएस के उसे पकड़ने से पहले ही वह भाग निकला।
प्रभार
भारतीय सरकार द्वारा इन सभी सैंतालीस षड्यंत्रकारियों के खिलाफ दायर आरोपपत्र में उन पर निम्नलिखित आरोप लगाए गए हैं:
1. आपराधिक साजिश रचने में सहयोग करना।
2. निर्मम हत्याओं में लिप्त होना।
3. विभिन्न लक्षित स्थानों पर हत्या का प्रयास।
4. भारत सरकार के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के लिए हथियार और गोला-बारूद इकट्ठा करना और पुरुषों को प्रशिक्षित करना।
5. लोगों का अपहरण करना, गंभीर चोटें पहुंचाना और अवैध रूप से कैद करना।
6. अपने वैध कर्तव्यों का निर्वहन करते समय आम जनता और लोक सेवकों को धमकाना और उन पर हमला करना।
7. आगजनी द्वारा सरकारी और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाना।
8. पहचान दस्तावेजों की जालसाजी करना और प्रतिरूपण में लिप्त होना।

26/11 हमलों में कम से कम दो अन्य भारतीय मुस्लिम भी शामिल थे – मुख्तार अहमद और तौसीफ रहमान, जिन्हें दस आतंकवादियों द्वारा इस्तेमाल किए गए सिम कार्ड प्राप्त करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। दिसंबर 2008 के फॉरेन पॉलिसी जर्नल के अनुसार, अहमद को वास्तव में आतंकवाद विरोधी अभियान बल द्वारा एक गुप्त एजेंट के रूप में इस्तेमाल किया गया था, और उनकी भूमिका की जांच की जा रही है।
भारतीय आरोपों के जवाब में, पाकिस्तानी सरकार ने दस सदस्यीय दस्ते के पाकिस्तानी मूल के होने की बात स्वीकार करते हुए एक चौंकाने वाली घोषणा की। 12 फरवरी 2009 को, पाकिस्तानी गृह मंत्री रहमान मलिक ने मुख्य साजिशकर्ता के रूप में हमद अमीन सादिक का नाम बताया, जो पाकिस्तान के दक्षिण पंजाब का रहने वाला था और अब कराची में रह रहा था। उन्होंने कहा कि उसे सरकार ने गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार किए गए अन्य लोग रियाज खान, अबू अल क़मा, जावेद इकबाल और मोहम्मद अशफाक थे। माना जाता है कि हमद सादिक ने ही नवंबर में मुंबई हमले के लिए धन हस्तांतरण की व्यवस्था की थी। मलिक ने कहा कि इकबाल और अशफाक ने वीओआईपी कनेक्शन प्राप्त किया था, जबकि एक सिम कार्ड ऑस्ट्रिया से खरीदा गया था।
अल क़मा का फ़ोन उन फ़ोनों में से एक था जिनका इस्तेमाल आतंकवादियों ने पाकिस्तानी आकाओं से संपर्क करने के लिए किया था। श्री मलिक ने जांच का दायरा बढ़ाते हुए दावा किया कि इन हमलों में सिर्फ़ पाकिस्तान ही नहीं, बल्कि अमेरिका, स्पेन, ऑस्ट्रिया और इटली जैसे अन्य देश भी शामिल थे। 26/11 हमलों की जांच में पंद्रह देश शामिल हैं, जिनमें से पांच ने कसाब के खिलाफ आपराधिक शिकायतें दर्ज कराई हैं।
लश्कर-ए-तैबा के प्रमुख ऑपरेशनल कमांडरों में से एक, अबू ज़रार ने कहा, 'हम लोकतंत्र और राष्ट्रवाद में विश्वास नहीं करते। हम केवल अल्लाह के संदेश में विश्वास करते हैं। हमारी विचारधारा दुनिया भर में उन मुसलमानों के हितों की रक्षा करना है जो गैर-मुसलमानों के शासन के अधीन हैं। हमने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जिहाद को सर्वोत्तम साधन के रूप में चुना है।'

दो भारतीय षड्यंत्रकारी

Dinesh Hukmani

फ़हीम अंसारी और सबाहुद्दीन दो आतंकवादी थे जिन्होंने 1 जनवरी, 2008 को उत्तर प्रदेश के रामपुर स्थित सीआरपीएफ शिविर पर हमला किया था। इस हमले में सात सीआरपीएफ जवान शहीद हो गए थे। अंसारी और सबाहुद्दीन को इस हमले में शामिल होने के आरोप में उत्तर प्रदेश आतंकवाद विरोधी दस्ते (एटीएस) ने फरवरी 2008 में गिरफ्तार किया था।
रामपुर हमले के एक महीने बाद फहीम अंसारी को गिरफ्तार कर लिया गया था और मुंबई हमलों के समय वह पुलिस हिरासत में था। उसे पूछताछ के लिए मुंबई एटीएस द्वारा मुंबई लाया गया। उसने स्वीकार किया कि उसने संभावित हमलों के लिए मुंबई के बीस प्रमुख स्थानों का सर्वेक्षण किया था। उसने डीजीपी कार्यालय, नेवी नगर, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज भवन, हाजी अली दरगाह, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई हवाई अड्डा, वानखेड़े स्टेडियम, चर्चगेट स्टेशन, गेटवे ऑफ इंडिया और महालक्ष्मी रेस कोर्स जैसी जगहों का दौरा किया था। उसने ताज महल होटल का भी विस्तृत अध्ययन किया था, जिस पर 26 नवंबर, 2008 को हमला हुआ था। अंसारी और उसके प्रमुख सहयोगी सबाहुद्दीन अहमद को लश्कर-ए-तैबा ने पाकिस्तान में रहने के दौरान मुंबई हमले की योजना तैयार करने का निर्देश दिया था। इस साजिश की योजना यूसुफ उर्फ मुजम्मिल और जर्रार शाह ने बनाई थी, जो आईएसआई के प्रमुख ऑपरेटिव थे। अंसारी और अहमद दोनों ने पाकिस्तान में नौसेना कमांडो का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया था। लश्कर-ए-तैबा के इन गुर्गों का नेतृत्व अबू हमजा कर रहा था, जो 2007 में बेंगलुरु स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान पर हुए हमले का मुख्य संदिग्ध है।
अंसारी ने आगे खुलासा किया कि लश्कर-ए-तैबा एक साल से अधिक समय से इस हमले की योजना बना रहा था।
उन्होंने बताया कि लश्कर-ए-तैबा के प्रमुख नेताओं ज़की-उर रहमान लखवी और यूसुफ मुज़म्मिल से उनकी पहली मुलाकात मार्च 2007 में हुई थी। मुंबई निवासी अंसारी रोजगार की तलाश में दुबई गए थे।

दुबई में मेरी मुलाकात लश्कर-ए-तैबा के एक ऑपरेटिव से हुई, जिसने मुझे संगठन में शामिल होने के लिए राजी कर लिया। मैंने तुरंत सहमति दे दी, जिसके बाद मुझे अबू धाबी होते हुए पाकिस्तान ले जाया गया। मुझे बैतुल स्थित मुजाहिदीन शिविर में ले जाया गया, जहाँ मैंने आठ महीने का प्रशिक्षण लिया। मुजाहिदीन शिविर में मुझे गूगल अर्थ पर मुंबई के प्रमुख स्थानों की पहचान करने के लिए कहा गया। दिसंबर 2007 में, मैं महत्वपूर्ण स्थानों की रेकी करने के लिए मुंबई रवाना हुआ। मैंने शुरू में छत्रपति शिवाजी टर्मिनस, ताज होटल, ट्राइडेंट होटल और मंत्रालय की पहचान की। मुझे हवाई अड्डे पर जाकर रनवे पर धावा बोलने और विमान पर हमला करने की संभावना का अध्ययन करने के लिए भी कहा गया था। लेकिन यह योजना बाद में छोड़ दी गई क्योंकि यह संभव नहीं थी। रेकी करने के बाद, मैंने इन स्थानों के वीडियो बनाए और रेखाचित्र भी तैयार किए। मैंने ये वीडियो और रेखाचित्र सबाहुद्दीन को सौंप दिए, जिसने इन्हें लश्कर-ए-तैबा के अबू हमजा को दे दिया। हमजा ने इन वीडियो और रेखाचित्रों का इस्तेमाल उन आतंकवादियों को प्रशिक्षित करने के लिए किया जिन्हें हमले करने थे। मेरी मुलाकात सबाहुद्दीन से नेपाल के काठमांडू में हुई थी, जहां मैंने उसे वीडियो और चित्र सौंपे थे। सबाहुद्दीन वही व्यक्ति था जिसने दिसंबर 2005 में बैंगलोर स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान पर हमला किया था।
बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज भी निशाने पर था। लश्कर बीएसई पर बमबारी करना चाहता था क्योंकि इससे भारत की वित्तीय राजधानी पंगु हो जाती। व्यापक योजना बनाई गई और मुझे बीएसई सहित कई स्थानों के बारे में अधिकतम जानकारी जुटाने के लिए कहा गया। मुंबई के बारे में मेरे ज्ञान का पूरा उपयोग किया गया।
जानकारी जुटाने के लिए मुझे दौरा-ए-रिबात नामक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम से गुजरना पड़ा। मुझे यह पाठ्यक्रम एक महीने में पूरा करना था। पाकिस्तान में यह पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद, मैं एक फर्जी पासपोर्ट पर भारत वापस आ गया। पहले मैं हम्माद नाम से नेपाल गया और वहाँ से मंजूरी मिलने के बाद चुपके से भारत में घुस गया। अबू हमजा ने मेरे लिए साहिल पावस्कर के नाम से एक ड्राइविंग लाइसेंस बनवाया, जिसका इस्तेमाल मैंने मुंबई पहुँचने पर पहचान के लिए किया। मुझे शुरू में बीएसई, हवाई अड्डे, रिलायंस के कार्यालयों और ताज महल होटल का सर्वेक्षण करने के लिए कहा गया था।

हालाँकि, योजना में बदलाव हुआ। मैंने केवल उन्हीं ठिकानों का सर्वेक्षण किया जिन पर अंततः हमला हुआ। मुंबई में, मैंने अपना अधिकांश समय संभावित ठिकानों की तस्वीरें खींचने और डेटा इकट्ठा करने में बिताया। मैंने बीएसई के पास एक कंप्यूटर सेंटर में छात्र के रूप में दाखिला लिया ताकि मैं बीएसई के आसपास की सुरक्षा के बारे में जानकारी इकट्ठा कर सकूँ। बीएसई में बम इमरान शहजाद द्वारा लगाए जाने थे। हालाँकि, उसे भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।
लश्कर ने सभी भावी जिहादियों के लिए समुद्री प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया था। मुझे बताया गया था कि अधिकांश हमले समुद्र से ही किए जाएंगे। पाकिस्तानी नौसेना के जवान समुद्री प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से शामिल थे। मुझे जियो-पोजिशनिंग सिस्टम और कंपास का उपयोग करना सिखाया गया ताकि खुले समुद्र में नेविगेशन आसान हो सके। समुद्री प्रशिक्षण लश्कर के मुख्यालय, मुरीदके, पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर और मंगला बांध जलाशय में दिया गया था।
चूंकि अधिकांश आतंकवादी पहले कभी मुंबई नहीं आए थे, इसलिए तीन महीने की अवधि में उन्हें पांच लक्ष्यों - लियोपोल्ड कैफे, मुंबई सीएसटी स्टेशन, होटल ओबेरॉय-ट्राइडेंट, होटल ताज महल और नरीमन हाउस - से परिचित कराया गया। यह जानकारी अंसारी द्वारा भेजी गई थी, जिसने मुंबई के बारह स्थानों का सर्वेक्षण किया था। उन्हें सटीक विवरण दिए गए थे, यहां तक कि पैदल चलकर किसी विशेष स्थान तक पहुंचने में लगने वाला समय, दूरी, टैक्सी का किराया आदि जैसी छोटी-छोटी बातें भी बताई गई थीं।
उत्तर प्रदेश पुलिस की रिपोर्ट में अंसारी द्वारा नरीमन हाउस का सर्वेक्षण करने का उल्लेख नहीं है, जबकि वास्तव में अंसारी ने उस घर का बारीकी से निरीक्षण किया था। पूछताछ के दौरान अंसारी ने पुलिस को बताया कि वह लश्कर-ए-तैबा के कमांडर मुज़म्मिल के संपर्क में था। पुलिस को आतंकवादियों से जब्त किए गए कई मोबाइल फोन में मुज़म्मिल का नंबर मिला। अंसारी ने ग्रांट रोड पर दो कमरों का एक फ्लैट भी किराए पर लिया था, जिसका इस्तेमाल आतंकवादियों के छिपने की जगह के रूप में किया जाना था, जबकि दूसरे कमरे में हथियार रखे जाने थे।
रामपुर स्थित सीआरपीएफ शिविर और बेंगलुरु स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान पर हमले के मुख्य आरोपी सबाहुद्दीन ने मुंबई हमलों में भी अहम भूमिका

निभाने की बात कबूल की है। आतंकवाद विरोधी दस्ते द्वारा ट्रांजिट रिमांड पर मुंबई लाए गए सबाहुद्दीन ने स्वीकार किया कि उसने और उसके सह-आरोपी फहीम अंसारी ने आतंकवादियों को हमले को अंजाम देने में मदद की थी। उसने यह भी कबूल किया कि हमला लश्कर-ए-तैबा (LeT) द्वारा पाकिस्तान से किया गया था। सबाहुद्दीन का बयान अंसारी और कसाब दोनों के बयानों की पुष्टि करता है, जिन्होंने स्वीकार किया था कि मुंबई हमले की योजना लश्कर-ए-तैबा के सदस्यों ने बनाई थी और इसे पाकिस्तान से अंजाम दिया था।
पूछताछ के दौरान छब्बीस वर्षीय सबाहुद्दीन ने कहा कि वह ज़की-उर-रहमान लखवी से अच्छी तरह परिचित था।
मैं ज़की-उर-रहमान को अच्छी तरह जानता था। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में लश्कर-ए-तैबा के दौर-ए-खास नामक प्रशिक्षण को पूरा करने के बाद मेरी उनसे मुलाकात हुई थी। इस विशेष प्रशिक्षण के बाद, मैं मुज़म्मिल नाम के एक अन्य लश्कर-ए-तैबा कार्यकर्ता के घर गया। उनके घर पर मेरी पहली मुलाकात लखवी से हुई। वहीं मुझे लश्कर-ए-तैबा और आईएसआई के समन्वयक अब्दुल्ला मुजाहिद से मिलवाया गया।
बाद में मुझे लाहौर से पचास किलोमीटर दूर मुरीदके स्थित जमात-उद-दावा मुख्यालय ले जाया गया। लश्कर-ए-तैबा ने मुझे लाहौर में भट्टा चौकी में रहने की व्यवस्था की, जहाँ मैं तीन महीने तक रहा। मुझे एक कंप्यूटर दिया गया जिस पर मैं इंटरनेट ब्राउज़ कर सकता था। मुझे फर्जी ईमेल आईडी बनाना और उनसे ईमेल भेजना भी सिखाया गया।
बाद में, मेरी मुलाकात आईएसआई के कर्नल कयानी, अब्दुल मजीद और सूबेदार बाबर से हुई। उन्होंने मुझे खुफिया जानकारी जुटाने का प्रशिक्षण दिया। मुझे टोही और निगरानी करना भी सिखाया गया। कैप्टन मलिक जफर नाम के एक अन्य व्यक्ति ने मुझे विभिन्न हथियारों को चलाने का प्रशिक्षण दिया। जफर मेरे प्रति बहुत दयालु थे और प्रशिक्षण के बाद वे मुझे बाहर ले जाया करते थे। प्रशिक्षण के बाद, मुझे मोहम्मद शफीक नाम के पासपोर्ट पर भारत वापस भेज दिया गया। मेरे लिए पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के फैसलाबाद का एक फर्जी पता तैयार किया गया। आईएसआई अधिकारी सूबेदार जावेद साहब मुझे इस्लामाबाद में नेपाल दूतावास ले गए। वहाँ मुझे वीज़ा मिल गया। मुझे पाकिस्तान से कालीन विक्रेता बनकर रहने को कहा गया। भारत जाने से पहले कर्नल कयानी ने मुझे 25,000 रुपये दिए। ये पैसे लाहौर हवाई अड्डे पर किसी व्यक्ति के

माध्यम से दिए गए। मुझे लाहौर से कतर के दोहा जाने वाली पीआईए की उड़ान लेने का निर्देश दिया गया। दोहा से मैंने कतर एयरवेज की उड़ान से काठमांडू के लिए उड़ान भरी। काठमांडू पहुँचकर, निर्देशों के अनुसार, मैंने पाकिस्तानी पासपोर्ट नष्ट कर दिया। मैंने एक होटल में कमरा लिया और ट्रेन और बस से कई बार भारत में घुसने की कोशिश की, लेकिन कड़ी सुरक्षा के कारण मुझे पीछे हटना पड़ा। मैंने इस बारे में पाकिस्तान में लश्कर-ए-तैबा के संपर्क अज़ीज़ को पत्र लिखा, जिसने कैप्टन मलिक ज़फर से संपर्क किया। कैप्टन ने बदले में सैफुल्लाह नाम के एक व्यक्ति को भेजा, जो लश्कर-ए-तैबा का मुख्य लेखाकार था। सैफुल्लाह, जिसने खुद को विनोद बताया, ने मुझे मोटरसाइकिल पर सीमा पार करके भारत ले जाने के लिए एक नेपाली युवक को 65,000 रुपये दिए।
सबाहुद्दीन ने जांचकर्ताओं को यह भी बताया कि उसने मुंबई हमलों के लिए धन जुटाने में मदद की थी। उसने लाहौर के पास मुरीदके और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के मुज़फ़्फ़राबाद में स्थित लश्कर-ए-तैबा शिविरों में प्रशिक्षण प्राप्त किया था, जहां अंसारी और कसाब दोनों को भी प्रशिक्षण दिया गया था। सबाहुद्दीन की मुलाकात प्रशिक्षण शिविर में लश्कर-ए-तैबा नेता ज़की-उर-रहमान लखवी से भी हुई थी। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद, उसे लश्कर-ए-तैबा के हैंडलर अबू हमज़ा के साथ भारतीय विज्ञान संस्थान पर हमले को अंजाम देने के लिए भारत भेजा गया था। हमले के बाद वह पाकिस्तान भाग गया और उसे नेपाल के रास्ते वापस भारत भेजा गया। सीआरपीएफ शिविर पर हमले की योजना बनाने के बाद, उसकी मुलाकात अंसारी से हुई, जिसने मुंबई में भी इसी तरह की योजना बनाई थी। अंसारी ने आवश्यक वीडियो और रेखाचित्र सबाहुद्दीन को सौंप दिए, जिसे वह पाकिस्तान ले गया और यूसुफ मुज़म्मिल को दे दिया - जो उसके अनुसार, भारत में लश्कर-ए-तैबा के अभियानों का प्रभारी है।
इसके बाद सबाहुद्दीन सीआरपीएफ शिविर पर हमले को अंजाम देने के लिए भारत लौट आया। उत्तर प्रदेश के रामपुर स्थित सीआरपीएफ शिविर पर हमला महज एक पूर्वाभ्यास था और मुंबई पर हमले के लिए हथियार और गोला-बारूद की तस्करी का एक अभ्यास मात्र था। योजना यह थी कि रामपुर हमले से सुरक्षा एजेंसियों का ध्यान भटकेगा और मुंबई में हथियारों की तस्करी आसान हो जाएगी। सबाहुद्दीन ने हमलों की योजना के बारे में और अधिक जानकारी दी:

रामपुर ऑपरेशन यूसुफ मुज़म्मिल द्वारा दिए गए निर्देश के अनुसार किया गया था। मैंने सबसे पहले इमरान शहजाद से संपर्क किया ताकि हथियार जुटाए जा सकें और उन्हें रामपुर के एक घर में रखा जा सके। शहजाद ने तीन राइफलें जुटा लीं। हमें एहसास हुआ कि मुंबई हमले के लिए और हथियारों की आवश्यकता है। तब मुज़म्मिल ने मुझे कश्मीर में स्थित लश्कर-ए-तैबा के एक कार्यकर्ता अब्दुल मीर से संपर्क करने का निर्देश दिया। मुझे बताया गया कि मीर मुंबई हमले के लिए और हथियारों की व्यवस्था करेगा। मीर का कश्मीर में एक प्रिंटिंग प्रेस था और वह लश्कर के लिए हथियार जुटाता था।
फिर मैंने मोहम्मद शरीफ नाम के एक व्यक्ति से संपर्क किया, जिसने हथियारों के लिए मीर से संपर्क किया। शरीफ ने और हथियार जुटाए और उन्हें अपने साले के घर में छिपा दिया। यह सब तब हुआ जब सुरक्षा एजेंसियां रामपुर मामले को सुलझाने की कोशिश कर रही थीं। अगली योजना फहीम अंसारी को मुंबई वापस भेजने की थी। अंसारी मुंबई से लश्कर द्वारा हमला किए जाने वाले महत्वपूर्ण ठिकानों का सर्वेक्षण करके लौटा था। अंसारी द्वारा मुंबई में देखी गई जगहों के रेखाचित्र और वीडियो सौंपने के बाद, हमने उसे मुंबई वापस जाकर हथियारों की खेप का इंतजार करने का आदेश दिया। फहीम का काम हथियार इकट्ठा करना और उन्हें सुरक्षित रखना था, और बाद में उन्हें मुंबई हमले के लिए प्रशिक्षण ले रहे लोगों को सौंपना था। हालांकि, अंसारी के मुंबई वापस जाकर हथियार लेने से पहले ही, सुरक्षा एजेंसियों ने उसे गिरफ्तार कर लिया। मुझे भी जल्द ही गिरफ्तार कर लिया गया और लश्कर को अपनी योजना स्थगित करनी पड़ी।
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने वाले सबाहुद्दीन ने पूछताछ करने वालों को बताया कि बाबरी मस्जिद विध्वंस और गुजरात दंगों से प्रेरित होकर उसने आतंकवाद का रास्ता चुना। उसने कबूल किया कि इन घटनाओं से वह बहुत परेशान था और लश्कर-ए-तैबा के संचालकों ने उसे बहला-फुसलाकर अपने आतंकी मिशन में शामिल कर लिया।
अंसारी और सबाहुद्दीन दोनों ने बताया कि मुंबई पर ये हमले 27 सितंबर 2008 को पहले से ही तय थे, लेकिन इनमें देरी हुई क्योंकि पहली बात तो यह थी कि उनके संचालकों को डर था कि अंसारी ने मुंबई के आतंकी ठिकानों की जानकारी लीक कर दी होगी और पुलिस उन जगहों पर हाई अलर्ट पर होगी; दूसरी बात, लश्कर-ए-तैबा हमलों के लिए पर्याप्त हथियार जुटाने में असमर्थ था। सीआरपीएफ

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

सबूत

अन्य कई हमलों के विपरीत, 26/11 के हमलों से मिले सबूतों का एक ऐसा सिलसिला है जो पाकिस्तान की ओर इशारा करता है। गिरफ्तार पाकिस्तानी आतंकवादी मोहम्मद अजमल आमिर कसाब भारतीय सरकार के लिए अब तक का सबसे अहम सबूत है। उसने नाम, स्थान, तारीखें और अन्य विवरण दिए हैं जिनसे पूरे ऑपरेशन को सुलझाने में मदद मिली है। उससे भारतीय पुलिस के साथ-साथ एफबीआई, मोसाद और स्कॉटलैंड यार्ड जैसी कई अन्य जांच एजेंसियों ने भी पूछताछ की है।
अन्य महत्वपूर्ण सबूतों में पीड़ितों के 170 शव (जिनमें कुबेर नदी पर मिला सोलंकी का शव भी शामिल है) और अपराध स्थल पर पाए गए उनके स्वयं के शव शामिल हैं। चश्मदीदों ने बंदूकधारियों को कई संपत्तियों पर हमला करते और आग लगाते हुए देखा था।
मुंबई में आतंकवादियों और पाकिस्तान में बैठे उनके संप्रेषकों के बीच हुई बातचीत के कई रिकॉर्डिंग मौजूद हैं (अगले अध्याय में रिकॉर्डिंग देखें)। ये रिकॉर्डिंग, कुबेर से बरामद सैट फोन के साथ मिलकर (जिसमें इस्माइल खान और संप्रेषकों के बीच हुई बातचीत का रिकॉर्ड भी है), पाकिस्तान को हमलों से सीधे जोड़ती हैं।
मछली पकड़ने वाली नाव कुबेर, जिसे योजना के अनुसार डुबाया नहीं जा सका, ने कई महत्वपूर्ण सबूत पेश किए हैं। कुबेर पर कप्तान सोलंकी के शव के अलावा, अधिकांश आतंकवादियों के डीएनए नमूने और उंगलियों के निशान भी मिले हैं। कुबेर पर कई उपयोगी वस्तुएं भी मिली हैं जो हमले में पाकिस्तान की भूमिका को साबित करने में सहायक हैं।
मुंबई पुलिस के पास मौजूद कुछ सबूतों की सूची नीचे दी गई है:
उर्दू अक्षरों से खुदा हुआ 16 इंच का चाकू नमाज़ के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक स्कार्फ जिस पर पाकिस्तानी पता लिखा है, 'कैशमिलान सर्वोत्तम गुणवत्ता, फोन 061 4516729।'
एक काली ¾ पैंट जिस पर 'साउथ पोल, मेड इन पाकिस्तान' लिखा हुआ है।
‘PAK’ चिह्न वाला डिटर्जेंट पाउडर
नेस्ले, पाकिस्तान के लेबल वाले नेस्ले दूध के दो पैकेट।

टचमी फेशियल क्रीम, जिस पर 'मेड इन पाकिस्तान' लिखा हुआ है।
कसाब का पत्र, उसी की हस्तलेख में।
कसाब द्वारा अपनी पृष्ठभूमि, घर आदि के बारे में दी गई जानकारी।
लखवी और मुज्जमिल ने भारत में बंदूकधारियों के साथ वीओआईपी पर बातचीत की; एक बातचीत में, लखवी ने अपने स्थान का उल्लेख किया (यह इंटरसेप्ट अभी तक सार्वजनिक नहीं किया गया है)।
डेंटल जेल
पाकिस्तान में निर्मित अन्य चिकित्सा सामग्री
कराची की एक दुकान से आटा
धातु की प्लेट पर उर्दू में लिखे निर्देश
कराची में स्थित मुख्य कार्यालय वाले पेट्रोल पंप से डीजल का डिब्बा।
दस एके-47 राइफलें
एके-47 राइफलों की इकत्तीस मैगज़ीन
8-9 मिमी पिस्तौलें जिन पर डायमंड नेदी का निशान अंकित था
फ्रंटियर आर्म्स कंपनी, पेशावर
250 गोला-बारूद
पांच ग्रेनेड जो 1993 के सिलसिलेवार बम धमाकों और दिसंबर 2001 में भारतीय संसद पर हुए हमलों में इस्तेमाल किए गए ग्रेनेडों से मिलते-जुलते हैं।
दस आईईडी
दिनेश हुकमानी अपनी पुस्तक, 'आतंकवाद का गवाह', के माध्यम से हमें और भी महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, मैं उद्धृत करता हूँ:
कुबेर जहाज के तहखाने में उसके कप्तान अमरसिंह सोलंकी का शव मिला, जिसके हाथ पीछे बंधे थे और गला कटा हुआ था। तटरक्षक बल ने जहाज के डेक से चार ड्रम भी बरामद किए। इनमें से एक ड्रम में एक हजार चार सौ लीटर हाई स्पीड डीजल (एचएसडी) था। स्थानीय मछुआरे केवल हल्के डीजल का उपयोग करते हैं, जबकि एचएसडी का उपयोग केवल सरकारी जहाजों पर किया जाता है। यह संभव है कि पाकिस्तानी नौसेना इस प्रकार के डीजल की आपूर्ति में शामिल थी।
कुबेर जहाज पर एक मरीन वीएचएफ रेडियो सेट लगा हुआ पाया गया। ऐसे रेडियो सेट सभी जहाजों और अधिकांश मोटर चालित छोटी नावों पर लगे होते हैं। इनका उपयोग कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है। इनमें बचाव सेवाओं को बुलाना, अपने बेस लोकेशन से संपर्क करना और अन्य मछली पकड़ने वाले जहाजों के साथ

सामान्य संचार शामिल है। ये रेडियो सेट 156 मेगाहर्ट्ज से 174 मेगाहर्ट्ज के बीच वीएचएफ आवृत्ति रेंज में काम करते हैं। 156.8 मेगाहर्ट्ज पर चैनल नंबर 16 अंतरराष्ट्रीय कॉलिंग और संकटकालीन चैनल है। जहाज पर सवार आतंकवादियों ने अपने नौकायन पैटर्न को छिपाने के लिए अंतरराष्ट्रीय मरीन वीएचएफ चैनल का इस्तेमाल किया, क्योंकि इसका इस्तेमाल मछुआरे बड़े पैमाने पर करते हैं और सभी संचारों का पता लगाना मुश्किल होता है। गुजरात तटीय क्षेत्र में काम करने वाले लगभग सभी मछुआरे संचार के लिए वीएचएफ आवृत्ति का उपयोग करते हैं, जिससे नेटवर्क जाम हो जाता है और तटरक्षक बल के लिए स्रोत का पता लगाना असंभव हो जाता है। प्रति मिनट सैकड़ों कॉल किए जाने के कारण, प्रत्येक कॉल का पता लगाना बेहद मुश्किल है। पिछले कुछ महीनों में गुजरात तट पर दस हजार से अधिक वायरलेस सेट अवैध रूप से बेचे गए हैं। आतंकवादी इस तथ्य से भलीभांति परिचित थे और उन्होंने इसका फायदा उठाया।
यह एक मछली पकड़ने वाली नाव थी, लेकिन इसमें मछलियों को संरक्षित करने के लिए बर्फ नहीं थी, जैसा कि आम तौर पर किया जाता है।
जीपीएस से प्राप्त सत्रह मार्ग बिंदुओं को तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है: पहला, आतंकवादियों के लिए आरंभिक बिंदु, वापसी संदर्भ बिंदु और वापसी बिंदु; दूसरा, वह मार्ग जिसका आतंकवादियों को अनुसरण करना था; और तीसरा, मुंबई पहुँचने के लिए उनके द्वारा वास्तव में अपनाया गया मार्ग। यह पाया गया कि जीपीएस को पाकिस्तान के कोटि बंदर के पास, काझर क्रीक से 20 किमी दक्षिण-पश्चिम में चालू किया गया था। यह कराची से 150 किमी दक्षिण-पूर्व में स्थित है, और मिशन पूरा होने के बाद उन्हें यहीं वापस लौटना था। इन बिंदुओं से यह भी पता चलता है कि ट्रॉलर नियोजित मार्ग से भटक गया और भारत की तटरेखा से दूर रहने के लिए समुद्र में और आगे चला गया (भारत द्वारा पाकिस्तान को भेजे गए पहले दस्तावेज़ के अनुलग्नक 111 में दोनों मार्गों का विवरण दिया गया है जहाँ अंतर स्पष्ट है)। जीपीएस में पहले से ही निर्देशांक अंकित थे जिनमें वापसी की तिथि 28 नवंबर 2008 को सुबह 10:32 बजे अंकित थी। इसमें इस यात्रा के लिए एक नक्शा भी अंकित था।
आतंकवादियों द्वारा रखी गई लॉगबुक से उर्दू में यह भी पता चलता है कि नाव पर टीम के सदस्यों ने अलग-अलग समय पर क्या-क्या काम किया था।

इन आतंकवादियों की विभिन्न स्थानों पर ली गई तस्वीरें और वीडियो फुटेज भी महत्वपूर्ण सबूत हैं।
उनके साथ मुठभेड़ करने वाले कई पुलिसकर्मियों के बयान भी मौजूद हैं। सबूत के तौर पर दस्ते के कुछ सदस्यों के फिंगरप्रिंट और डीएनए भी एकत्र किए गए हैं।

पाकिस्तान और भारत के बीच हुई कॉलों के प्रतिलेख

आरोपपत्र में आतंकवादियों द्वारा की गई कॉलों का विवरण दिया गया है। पूरे ऑपरेशन के दौरान, मुंबई में मौजूद आतंकवादियों को पाकिस्तान में बैठे उनके संचालकों से लगातार मार्गदर्शन और निर्देश मिलते रहे। उन्होंने 9819464530, 9820704561 और 9910719424 मोबाइल नंबरों का इस्तेमाल किया।
पाकिस्तान में सुरक्षित बैठे लोग उन्हें चरण-दर-चरण निर्देश दे रहे थे और साथ ही उनका मनोबल भी बढ़ा रहे थे। मुंबई में मौजूद आतंकवादियों पर नज़र रखी जा रही थी ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे आदेशों का पालन करें। उनके संचालक उन्हें प्यार भरे शब्दों जैसे 'पाशा', 'दोस्त' आदि से समझा रहे थे ताकि वे जोखिम उठाने से न हिचकें।
जांच के दायरे में आने वाली कॉलों का रिकॉर्ड:
ताजमहा होटल से पाकिस्तान में कुल 41 कॉल किए गए, जिनकी कुल अवधि 8,834 सेकंड थी; यानी लगभग ढाई घंटे।
ओबेरॉय-ट्राइडेंट से पाकिस्तान को 62 कॉल किए गए, जिनकी कुल अवधि 15,705 सेकंड थी; यानी लगभग चार घंटे और बीस मिनट।
नरीमन हाउस से पाकिस्तान को 181 चौंका देने वाली कॉल की गईं, जिनकी कुल अवधि 35,172 सेकंड थी; यानी लगभग 10 घंटे।
जांच अधिकारियों को जिन कॉलों के बारे में जानकारी है, उनकी कुल संख्या 284 है।
ये इंटरसेप्ट भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम, 1885 के प्रावधानों के तहत कानूनी रूप से निष्पादित किए गए थे, और मुंबई पुलिस के आतंकवाद विरोधी दस्ते द्वारा किए गए थे।
इनमें से कई बातचीत मीडिया में प्रसारित और प्रकाशित हुईं। कई बातचीत के लिखित दस्तावेज अभी तक सार्वजनिक नहीं किए गए हैं।

मुंबई में पाकिस्तानी हैंडलर और उनके निर्देशों का पालन करने वाले आतंकवादी कभी पंजाबी में तो कभी उर्दू में बात करते थे।
कुछ बातचीत आजतक द्वारा प्रसारित की गई थीं, कुछ भारतीय सरकार द्वारा पाकिस्तान को भेजे गए पहले दस्तावेज़ में प्रस्तुत की गई थीं, जबकि अन्य प्रेस में लीक हो गईं और पत्रकार आशीष खेतान ने अपनी पुस्तक '26/11, मुंबई हमला' में इनका ज़िक्र किया है। हमलों और उनके पीछे के लोगों को बेहतर ढंग से समझने के लिए इनमें से कुछ का संक्षिप्त अनुवाद यहाँ प्रस्तुत किया गया है।
नीचे दिए गए प्रतिलेखों में प्रयुक्त कुछ संक्षिप्त रूप इस प्रकार हैं: पीएच – पाकिस्तानी हैंडलर
आईबी - इमरान बब्बर (और अबू उमर), नरीमन हाउस में आतंकवादी
टीटी – ताज आतंकवादी
डब्ल्यूएच - महिला बंधक
नरिमन हाउस
सबसे ज्यादा कॉल नरिमन हाउस से किए गए। इसका कारण शायद यह था कि इस्माइल खान के मुठभेड़ के बाद दस्ते के नेता की जिम्मेदारी इमरान बब्बर के कंधों पर आ गई थी। इन बातचीत में से चौदह का पाठ यहाँ दिया गया है:
1. नरिमन हाउस (समय और तिथि अज्ञात):
आईबी: मैं आपको बता रही हूँ कि अभी मैं अपने लिए कुछ लेने जा रही हूँ... मैं उमर को सोने दे रही हूँ। उमर को बहुत नींद आ रही है, मैं उसे सुला रही हूँ... अगर हालात बिगड़ते हैं, और आपको लगता है कि बिगड़ रहे हैं, तो हमें बता देना...
पीएच: ठीक है, जैसे-जैसे स्थिति स्पष्ट होती जाएगी, मैं आपको सूचित करता रहूंगा। उमर को आराम करने दीजिए, लेकिन ध्यान रखिए कि किसी भी क्षण आपको उसे जगाना पड़ सकता है, उसे भी यह बात पता होनी चाहिए।
आईबी: जी हां, बिल्कुल।
2. नरीमन हाउस, 27 नवंबर 2008, शाम 7:45 बजे
आईबी: मेजर जनरल ने क्या कहा?
पीएच: मेजर जनरल ने हमें अपनी मर्जी से कुछ भी करने का निर्देश दिया है।
हमें चिंता नहीं करनी चाहिए। ऑपरेशन कल सुबह तक पूरा हो जाना चाहिए। भगवान

से प्रार्थना करो। दो मैगज़ीन और तीन ग्रेनेड अलग रख लो, और बाकी गोला- बारूद का इस्तेमाल कर लो।
3. 27 नवंबर 2008, शाम 7:45 बजे।
पीएच (वासी): ध्यान रखें कि बंधक तभी तक उपयोगी हैं जब तक उनकी सुरक्षा के कारण आप पर गोलीबारी न हो। यदि फिर भी खतरा हो, तो बंधकों का बोझ अपने ऊपर न लें, उन्हें तुरंत मार डालें।
आईबी: जी हां, ईश्वर की कृपा से हम ऐसा ही करेंगे।
पीएच: सतर्क रहें।
4. 27 नवंबर, समय अज्ञात:
पीएच: उसे मुझसे बात करने के लिए लाइन पर लगा दो।
आईबी: ठीक है, बोलो।
डब्ल्यूएच: हेलो, ये कौन हैं?
पीएच: क्या आपने बात की... क्या आपने दूतावास से बात की?
डब्ल्यूएच: मैं दूतावास से बात कर रहा हूँ... वे... वे अभी फोन कॉल कर रहे हैं... अभी...
पीएच: (आपने) इसे पहले ही बना लिया है या आप इसे बनाने जा रहे हैं? डब्ल्यूएच: जी हाँ... (वह रोने लगती है और फिर खुद को संभालती है) मैंने उनसे बात कर ली है... अभी कुछ सेकंड पहले ही मैं दूतावास से बात कर रही थी और वे फोन कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि लाइन खाली छोड़ दें ताकि वे आपसे कभी भी संपर्क कर सकें और आपको बता सकें कि हम आपसे खुश हैं (वह फिर रोने लगती है)। समझी?
पीएच: फिर से कहिए, फिर से कहिए, नहीं, मुझे समझ नहीं आया।
डब्ल्यूएच: वे किसी भी समय आपसे संपर्क करेंगे।
पीएच: चिंता मत करो, बस आराम से बैठो और उनके संपर्क करने का इंतजार करो... ठीक है?
डब्ल्यूएच: (रोने की आवाज)
पीएच: अपनी ऊर्जा अच्छे दिनों के लिए बचाकर रखें... शायद, अगर वे अभी संपर्क कर सकें... शायद, आप अपने परिवार के साथ सब्त का दिन मना सकें।
डब्ल्यूएच: (रोती है)।
पीएच: फोन उस आदमी को वापस दे दो।
(आतंकवादी फोन पर आता है)

पीएच: उसने उनसे बात कर ली है। वे किसी भी क्षण आपको फोन करेंगे।
आईबी: मेरे नंबर पर?
पीएच: जी हाँ, आपके नंबर पर... अधिकारी आपको फोन करेंगे और पूछेंगे कि आप क्या चाहते हैं। फिर आपको कहना होगा कि आंसू गैस और गोलाबारी पाँच मिनट में बंद होनी चाहिए और पूरे इलाके से सुरक्षाकर्मी हटा दिए जाने चाहिए, वरना हम अपना धैर्य खो देंगे। क्या आप सुन रहे हैं? यह सब लिख लीजिए। आईबी: हां।
पीएच: तो कहिए कि ताज, ओबेरॉय और नरीमन हाउस, तीनों जगहों पर इसी तरह के सभी ऑपरेशन तुरंत रोक दिए जाएं। कल उन्होंने हमारे एक आदमी को गिरफ्तार किया है। उनसे कहिए कि वे उसे आपके पास लाएं और उसकी राइफल के साथ उसे रिहा कर दें, चाहे वह घायल हो या किसी भी हालत में हो। बातचीत कीजिए कि ऑपरेशन तुरंत रोक दिया जाए। क्या आपने खाना खा लिया है?
आईबी: हां, थोड़ा बहुत।
पीएच: ये लोग किसी तरह की पार्टी कर रहे थे, वहाँ भरपूर खाना होगा, और वे हलाल मांस खाते हैं, हराम मांस नहीं, इसलिए इस चिंता के कारण आपको एक निवाला खाने से नहीं रुकना चाहिए।
(इस बिंदु पर आईबी गिरफ्तार व्यक्ति का नाम पूछती है। पहले तो उसका हैंडलर नाम बताने में आनाकानी करता है, लेकिन बाद में गलत नाम बताकर कहता है कि इस्माइल खान को गिरफ्तार किया गया है, जबकि असल में कसाब को जिंदा पकड़ा गया था। या तो उसे पता नहीं था या वह जानबूझकर उसे गुमराह करना चाहता था। शायद उसे लगा कि इस्माइल खान का नाम लेने से इमरान मामले को और भी गंभीरता से ले लेगा।)
5. एक अन्य अवसर पर, जब अनुवादक विश्वनाथ इमरान बाबर से बात कर रहे थे, तो चाबाद के दूत रब्बी शेमटोव ने पूछा कि क्या बंधक जीवित और स्वस्थ हैं। इस पर आईबी ने जवाब दिया, 'हमने उन्हें थप्पड़ भी नहीं मारा है।' (हमने उन्हें थप्पड़ तक नहीं मारा है)। फिर रब्बी ने उनसे पूछा कि क्या वे (आतंकवादी) सुरक्षित हैं और क्या उन्होंने खुद खाना खाया है, जिस पर आईबी ने उन्हें तिरस्कारपूर्वक जवाब दिया, 'हम यहां खाना खाने नहीं आए हैं।' (हम यहां खाना खाने नहीं आए हैं)।
6. 27 नवंबर 2008, सुबह 2:33 बजे।
पीएच: क्या आपको कोई फोन कॉल आया है?

आईबी: मुंबई पुलिस के इंस्पेक्टर पाटिल ने फोन किया। मैंने उनसे कहा कि मैं किसी निचले स्तर के इंस्पेक्टर से बात नहीं करता। मैं किसी वरिष्ठ अधिकारी से बात करना चाहता हूं।
पीएच: उनसे कहो कि वे सुरक्षा क्षेत्र खाली कर दें। क्या तुमने बाहर ग्रेनेड फेंके हैं?
आईबी: हां।
पीएच: आपने उन्हें कब फेंका?
आईबी: अभी-अभी, कुछ मिनट पहले।
पीएच: क्या कोई प्रतिक्रिया हुई?
आईबी: हमारे ग्रेनेड फेंकने के बाद कोई जवाबी गोलीबारी नहीं हुई।
पीएच: आपने ग्रेनेड किस दिशा में फेंका?
आईबी: यानी, मर्चेंट हाउस की दिशा में।
पीएच: ठीक है, अब आप अपनी बंदूक की नली बाहर निकालें और गली की दिशा में एक या दो बार गोली चलाएँ। केवल नली को बाहर निकालें, अपना शरीर न दिखाएँ, गली में नीचे की ओर गोली चलाएँ।
आईबी: हां, यह खुला है। हम बाईं ओर, दाईं ओर और पीछे की ओर गोली चला सकते हैं, लेकिन सामने वाली लेन में हमें कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है।
पीएच: ठीक है, क्या दरवाजा अभी तक नहीं खुला है?
आईबी: नहीं, यह अभी तक खुला नहीं है।
पीएच: बाहर कोई भी हलचल दिखते ही गोली चला दें। आपको अपनी जान बचानी है। एक व्यक्ति को छत पर होना चाहिए और अगर कोई हलचल दिखे तो गोली चला दें।
आईबी: ठीक है, अगर हम इस महिला को लाएं और उसे सीधे मीडिया से बात करने दें? उसे खुद मीडिया को बताना चाहिए कि वह किस दौर से गुजर रही है और उन्हें उसे बचाना चाहिए।
पीएच 2: आपने अभी जो ग्रेनेड फेंका है, उससे मीडिया में हंगामा मच गया है।
पीएच 3: आपको नमस्कार।
IB: Wailekum as-salaam.
पीएच 3: आप कैसे हैं, भाई?
आईबी: ईश्वर की कृपा।
PH3: मैंने आपको जिन बातों के बारे में बताया था, क्या आपको वे याद हैं? अगर मीडिया आपसे पूछे तो आप उन्हें बता देना कि आप हैदराबाद दक्कन से हैं,

हैदराबाद शहर से। और, आप टोली चौकी इलाके से हैं। फिर कह देना कि आप मुजाहिदीन दक्कन से जुड़े हैं; किस संगठन से? मुजाहिदीन दक्कन से। मीडिया आपसे पूछेगा कि आपने यह सब क्यों किया।
आईबी: हाँ?
PH3: कहते हैं कि यह दोहरे मापदंडों की वजह से है, वे हमारी पीठ थपथपाते हैं और फिर हमें हथौड़े से पीटते हैं। इसका सबसे ताजा उदाहरण सच्चर समिति की सिफारिशें हैं, सरकार कुछ और घोषणा करती है लेकिन प्रशासन भारत के युवाओं को गिरफ्तार करता है और उन्हें परेशान करता है।
आईबी: मुस्लिम... (वह एक अपरिचित हिंदी शब्द को खोजने की कोशिश कर रहा है) PH3: Yuvako (youths)
आईबी: युव. . . .
पीएच 3: (उसे बीच में रोकते हुए) मुस्लिम युवकों को गिरफ्तार कर लिया जाता है, उनका भविष्य बर्बाद हो जाता है... फिर, उन्हें अल्टीमेटम दें, उनसे कहें कि यह सिर्फ ट्रेलर है, पूरी फिल्म जल्द ही आएगी... और धीरे-धीरे, बिना जल्दबाजी किए, शांत भाव से बात करें, हमें सिर्फ अपनी बात रखनी है, उन्हें आपसे सवाल करने का बहुत कम मौका दें।
आईबी: ईश्वर की कृपा से, ठीक है।
पीएच 3: एक मिनट। (पाकिस्तान में लोगों के बीच बातचीत चल रही है, फिर एक और आवाज आती है।)
PH4: वे आपसे पूछेंगे कि आपकी मांगें क्या हैं।
आईबी: हाँ?
PH4: आप कहते हैं, पहला, भारत की जेलों में बंद सभी मुसलमानों को रिहा किया जाना चाहिए; दूसरा, उन्हें किसी मुस्लिम देश के मुसलमानों को सौंप दिया जाना चाहिए; तीसरा, कश्मीर से सुरक्षा बलों को वापस बुलाया जाना चाहिए और कश्मीरियों को उनके अधिकार दिए जाने चाहिए; उसके बाद बाबरी मस्जिद के पुनर्निर्माण का काम शुरू होना चाहिए। इज़राइल को भारत के साथ राजनयिक संबंध नहीं रखने चाहिए।
आईबी: इज़राइल, वह शब्द क्या था?
PH4: गाथजोड (संबंध, आईबी के लिए एक और अपरिचित हिंदी शब्द), और इज़राइल को मुसलमानों पर अत्याचार करना बंद कर देना चाहिए।

PH4: मुसलमानों के खून से खेलना बंद करो। और, अगर इज़राइल ऐसा नहीं करेगा, तो मुझे लगता है कि इतना ही काफी है।
आईबी: ठीक है। (एक और पीएच कार्यभार संभालता है)।
PH5: उन्हें बताएं कि आप नरीमन हाउस से बोल रहे हैं, मीडिया कह रहा है कि आतंकवादी नरीमन हाउस में हैं। (जाहिर तौर पर, पाकिस्तानी इसे चाबाद सेंटर कहते हैं)।
आईबी: नरिमन हाउस (इसे ऐसे दोहराते हुए जैसे यह कोई अपरिचित शब्द हो जिससे वह परिचित होने की कोशिश कर रहा हो)।
पीएच: नरिमन, नरिमन। और साथ ही, बाहर के घटनाक्रमों पर भी नजर रखें।
आईबी: इंशाल्लाह। और, जो बातें आपने मुझे लिखने को कहा है, मुझे उन्हीं बातों का पालन करना होगा?
पीएच: जी हाँ, बस इतना ही; एक मिनट रुकिए। यह नंबर लिख लीजिए, यह ज़ी टीवी का ऑफिस नंबर है, 0120-2511064। और जिस नंबर से आप कॉल करेंगे, क्या मैं आपको वह नंबर दे दूँ? (शायद कुबेर ऑपरेशन में सवार होने से ठीक पहले ही उन्हें सिम कार्ड दिए गए थे, इसलिए उन्हें अपने नंबर याद नहीं होंगे।)
आईबी: जी हाँ, मुझे बताइए।
फ़ोन: आपका नंबर 98194644530 है।
आईबी: (नंबर दोहराते हुए कहता है): मुझे उन्हें बताना होगा कि मैं नरिमन हाउस से कॉल कर रहा हूं और उन्हें मुझे इस नंबर पर कॉल करना होगा।
पीएच: जी हां, आप उन्हें बता दीजिए कि आपके पास एक बंधक है, और उन्हें तुरंत इस नंबर पर आपको कॉल करना होगा। (फोन कट जाता है)।
7. यहाँ बंधकों के बारे में बात करते समय नामों या सर्वनामों का उपयोग न करने पर ध्यान दें। इसका उद्देश्य उन्हें अमानवीय बनाना और पूरी बातचीत को व्यक्तिगत न रखना है। इससे शुरू से ही यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें मार डाला जाना था, और यह क्रूरता उन दस आतंकवादियों में गहराई से समाई हुई थी।
पीएच: हमें अभी-अभी पता चला है कि हमारे एक लड़के को पकड़ लिया गया है। आईबी: हां. . . .
पीएच: उन्हें (भारतीय अधिकारियों को) बता दीजिए कि आप चाहते हैं कि उसे तुरंत आपके पास लाया जाए। क्या आपने प्रधानमंत्री से बात की है? भारतीय सेना से?

नुरमा (एक इजरायली): जी हां, वे दिल्ली स्थित हमारे दूतावास से फोन कर रहे हैं।
पीएच: ठीक है
नुरमा: उन्होंने आपसे कहा है कि आप अपना फोन नंबर खाली रखें ताकि वे आपको कॉल कर सकें।
8. यह बातचीत बंधकों और उन्हें कुछ खाने को दिया जाना चाहिए या नहीं, इस बारे में है:
IB: Lekin poochhna tha ki kuchh dena hai ki nahin dena (I wanted to ask you if something should be given)
PH: Kuchh hai aap ke paas yahan pe…kuchh hai building mein khane peene ka? (Do you have anything to eat and drink in the building?)
IB: Biscuit hain, packet hain, pata nahin kya hai, humne nahin khaaya, inko de den? (Yes there are biscuits, we have not eaten them, should we give to them?)
पीएच: काफी हैं, एक दो ही हैं? (क्या वे पर्याप्त हैं या बहुत कम हैं?)
IB: Chhote chhote kaafi hain waise to . . . (quite a few small packets)
PH: Biscuit haan dey inko, khilayen . . . (okay then . . . give them biscuits) आईबी: सपने? (क्या हमें उन्हें पानी देना चाहिए?)
PH: Haan paani bhi pilayen, khilayen.(Yes, give them water, feed them).
9. पीएच: वे दोनों कहाँ हैं?
आईबी: सोना।
पीएच: क्या दोनों सो रहे हैं?
आईबी: हां।
पीएच: ठीक है, उनमें से एक को जगा दो, दूसरे को सोने दो।
आईबी: एक को जगाना है?
पीएच: हां। आप कहां जाकर गोली चला सकते हैं? उसे दरवाजे के अंदर खड़ा करो, उसके सिर में गोली मारो, गोली आर-पार होकर फ्लैट से बाहर निकल जानी चाहिए।
आईबी: ठीक है।
पीएच: क्या आपने उन्हें बांध दिया है?
आईबी: हां, मैं उसे खोल दूंगा।

पीएच: हां, अगर वे बंधे हुए हैं तो उन्हें खड़ा कर दें और फिर उन्हें छोड़ दें। अगर वे खुले हुए हैं तो कोई बात नहीं।
आईबी: उन्हें जगाया जा रहा है। (कॉल कट जाती है। बाद में, उनसे पूछा जाता है कि काम हो गया है, आईबी जवाब देते हैं कि उन्होंने दोनों काम पूरे कर लिए हैं ('दोनों को')।
10. पीएच: मैं आपको बता रहा था कि सामने, ऊपर की ओर वाली खिड़की...
आईबी: हां. . . .
पीएच: अगर आपने अपनी बंदूक उस बिंदु पर तान रखी है, तो खुद खिड़की के पास न रहें। ठीक है, अब इस इमारत से, बिना किसी को पता चले, अंदर से, अगर आप सीढ़ियों से नीचे जाना चाहें, तो जा सकते हैं।
आईबी: नहीं, सीढ़ियों पर छह से सात फुट ऊंचा एक बड़ा दर्पण लगा हुआ था जो पूरी तरह से चकनाचूर हो गया है, इसलिए वह जगह पूरी तरह से खुली है।
पीएच: ठीक है, तो ऐसा मत करो, जब अंधेरा हो जाए तो फिर से शुरू करो, ध्यान रखो कि तुम्हारी ऊर्जा का स्तर ऊंचा बना रहे। पानी पियो।
आईबी: यहाँ एक कोक है, क्या मैं इसे पी लूँ?
पीएच: जी हां, इसे पी लो, भगवान के नाम पर, क्यों न पी लो!
आईबी: ठीक है। मैं बस यही पूछना चाहता था, मैंने रात से कुछ नहीं खाया है।
11. 27 नवंबर 2008, रात 10:26 बजे।
पीएच: भाई, तुम्हें लड़ना होगा। यह इस्लाम की प्रतिष्ठा का सवाल है। ऐसे लड़ो कि तुम्हारी लड़ाई एक मिसाल बने। अल्लाह के नाम पर मजबूत रहो। तुम्हें थकान या नींद आ सकती है, लेकिन इस्लाम के जवानों ने सब कुछ पीछे छोड़ दिया है। अपनी मां, अपने पिता, अपने घर। भाई, तुम्हें इस्लाम की जीत के लिए लड़ना होगा। मजबूत रहो।
आईबी: आमीन! (ऐसा ही हो!)
12. 28 नवंबर 2008, सुबह 7:23 बजे।
पीएच (वासी): कैसे हो दोस्त? (शायद स्नेहपूर्ण शब्द का प्रयोग इसलिए किया जा रहा है क्योंकि देखभाल करने वालों को अब एहसास हो गया है कि उसके पास जीने के लिए ज्यादा पल नहीं बचे हैं।)
आईबी: मुझे लगता है कि छत पर एक दस्ता उतारा गया है. . . .
पीएच: लगभग पंद्रह लोगों को हेलीकॉप्टर से आपकी छत पर उतारा गया है। आईबी: कुछ लोग खिड़कियों के सामने भी खड़े हैं।

पीएच: आप क्या कह रहे हैं? क्या आप उन्हें देख पा रहे हैं?
आईबी: हमारे सामने कुछ गोलीबारी हो रही है।
पीएच: उन्हें आपको लेने के लिए नीचे आना होगा... वे ऊपरी मंजिल खाली करा रहे हैं... सीढ़ियों के पास इस तरह से खड़े हो जाइए कि जैसे ही वे नीचे आना शुरू करें, आप उन्हें पकड़ लें... उन्हें सीढ़ियों से ही नीचे आना होगा...
पीएच: अपनी जगह पर तैनात हो जाओ। संभव है कि वे नीचे उतरने से पहले सीढ़ियों पर ग्रेनेड फेंक दें।
आईबी: हां, यह भी संभव है।
पीएच: कमरे में ही रहें, लेकिन सीढ़ियों पर नज़र रखें। क्या आपको अपने बाईं या दाईं ओर कोई भारतीय सैनिक दिखाई दे रहे हैं?
आईबी: मुझे सामने स्नाइपर साफ दिखाई दे रहे हैं, वे सामने वाली इमारत की खिड़कियों पर बैठे हैं।
पीएच: (बेसब्री से) उन पर हमला करो, उन पर गोली चलाओ, विस्फोट करो, मेरे दोस्त।
आईबी: इस फ्लैट का सामने वाला कमरा पहले ही क्षतिग्रस्त हो चुका है। वे कमरे में गोलियां चला रहे हैं; वे इस कमरे को भी पहले वाले कमरे की तरह ही नष्ट कर देंगे। हमारे पास अब कोई सुरक्षित स्थान नहीं बचा है।
पीएच: लेकिन आप उन्हें देख सकते हैं। जैसे ही वे आपको देखेंगे, वे आप पर गोली चलाना शुरू कर देंगे।
आईबी: इसीलिए मैं कह रहा हूं कि हमें छत पर जाकर उनसे वहीं लड़ना चाहिए। पीएच: नहीं, आपको ऊपर नहीं चढ़ना चाहिए। दो बातें याद रखें। पहली बात, खिड़कियों के पास छिपे उन स्नाइपरों के बारे में, मौका मिलते ही उन पर गोली चला दें; हेलिकॉप्टर से उतरे पंद्रह लोग आपकी ओर आ रहे हैं। उन पर ग्रेनेड फेंकें।
आईबी: हमारे पास केवल चार ग्रेनेड बचे हैं।
पीएच: ठीक है, तो आप अपनी सुरक्षित स्थिति बनाए रखें और गोलीबारी शुरू करें। एक लक्ष्य चुनें, स्नाइपर पर गोली चलाएं और तुरंत अपनी स्थिति बदलें, आप में से एक अंदर से और दूसरा दूसरी तरफ से उन पर गोली चलाएगा।
13. पीएच: क्या वह ग्रेनेड फटने की आवाज थी?
आईबी: जी हां, जी हां, वे इस जगह को तोड़ रहे हैं; वे अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को साफ कर रहे हैं।

पीएच: खुले मैदान में लड़ो, लेकिन दो बातें याद रखना; पहली, स्नाइपर तैनात हैं और तुम्हें देखते ही गोली चला देंगे; दूसरी, पंद्रह जवान ऊपरी मंजिल को खाली करा रहे हैं।. . . अपनी स्थिति सही रखो।
आईबी: यह पद, मुझे समझ नहीं आ रहा है...
पीएच: सीढ़ी कोने में है, है ना?
आईबी: हां।
पीएच: जैसा कि मैंने आपको कल रात बताया था, आप में से एक को एक स्थान पर तैनात होकर सीढ़ियों को कवर करना चाहिए, और दूसरे को विपरीत दिशा में एक चौराहे पर तैनात होना चाहिए, इससे यह सुनिश्चित होगा कि आप दोनों तरफ से हमला कर सकें।
आईबी: लेकिन अगर वे ग्रेनेड फेंकते हैं तो हमारे पास खुद को बचाने के लिए कोई जगह नहीं होगी।
पीएच: मेरी बात सुनो, दोस्त। अगर तुम दीवारों से चिपके रहोगे और ग्रेनेड फेंका जाएगा, तो इससे तुम्हें क्या नुकसान हो सकता है?
आईबी: मैंने आपको दीवार के बारे में पहले ही बताया था. . . .
पीएच: ठीक है, आपके पास और क्या है? क्या आपके पास सोफा है, कुछ फर्नीचर है या फोम का गद्दा है? एक मिनट रुकिए... (एक और हैंडलर लाइन पर आता है)
PH6: एक काम करो, ग्रेनेड फेंकते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरो।
आईबी: हमारे पास अब कोई ग्रेनेड नहीं बचा है।
PH6: आपके पास दो हैं, है ना? आप सीढ़ियों से नीचे आते समय उन दोनों का इस्तेमाल करते हैं।
आईबी: क्या हमें दरवाजों के पीछे छिप जाना चाहिए और जैसे ही वे अंदर आएं, उन पर गोली चला देनी चाहिए?
PH6: क्या आप दोनों अलग-अलग जगहों पर छिप सकते हैं? (दूसरा हैंडलर फोन ले लेता है)
PH7: एक काम करो, ग्रेनेड फेंकते हुए छत पर जाओ, इससे पहले कि वे तुम पर गोली चला सकें, तुम उन पर गोली चलाओ। अब, अल्लाह का नाम लो।
आईबी: ठीक है, हम अल्लाह का नाम लेते हुए आगे बढ़ रहे हैं।
PH7: बिस्मिल्लाह-ए-रहमान-ए-रहीम। (अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और रहम करने वाला है)।
14. 28 नवंबर 2008 सुबह 8:47 बजे।

आईबी: मुझे जलने के निशान हैं।
पीएच: कहाँ?
आईबी: मेरी बाहों और पैरों पर।
पीएच: अल्लाह आपकी देखभाल करेगा।
आईबी: उनके लोग भी घायल हो रहे होंगे। (पृष्ठभूमि में गोली चलने की तेज़ आवाज़ आती है)
पीएच: अल्लाह आपकी रक्षा करे।
फोन कट जाता है।
आरएडब्ल्यू ने फोन पर निर्देश देने वाले संचालकों की पहचान वसी, जरार शाह, जुंदल, बुजुर्ग और कहफा के रूप में की है। इनके अलावा, 'मेजर जनरल' का रहस्यमय व्यक्ति भी मौजूद है।
ताज महल होटल से प्राप्त प्रतिलेख
टीटी – ताज आतंकवादी
पीएच – पाकिस्तानी हैंडलर
15. 27 नवंबर 2008, सुबह 1:04 बजे।
पीएच: अरे, मीडिया कह रहा है कि आप लोग अब कमरा नंबर 360 या 361 में हैं। उन्हें कैसे पता चला कि आप किस कमरे में हैं? क्या उसमें कैमरा लगा है? सारी लाइटें बंद कर दो, कैमरे नष्ट कर दो, इन सब चीजों का ध्यान रखो – ये सब चीजें आपकी स्थिति, आपकी हालत उजागर कर देंगी; क्या बात है, वरना आपकी सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी।
टीटी: हम यह नहीं बता सकते कि कैमरे कहां हैं।
पीएच: क्या आप उन्हें देख नहीं सकते? आपके ऊपर क्या है, कोई रोशनी? रोशनी के अलावा वहां और क्या है?
टीटी: ये तो लाइटें हैं, मुझे बाकी बटन समझ नहीं आ रहे हैं।
टीटी: सुनो, दो भाई समुद्र की ओर वाले हिस्से में दरवाजा खोलने गए हैं - एक बार दरवाजा खुल जाए तो हम उसमें आग लगा देंगे।
पीएच: ठीक है, लेकिन देरी मत करो।
15. ताज महल होटल 27 नवंबर 2008, 1:08 पूर्वाह्न।
पीएच: आपके पास कितने बंधक हैं?
टीटी: हमारे पास बेल्जियम का एक व्यक्ति था। हमने उसे मार गिराया। बैंगलोर का भी एक व्यक्ति था। हमने बड़ी मशक्कत के बाद उसे काबू में किया।

पीएच: मुझे उम्मीद है कि उनमें कोई मुसलमान नहीं होगा?
टीटी: नहीं, कोई नहीं।

4

16. अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, अपराध शाखा, देवेन भारती को 27 नवंबर 2008 को लगभग 1:00 बजे अपराध शाखा प्रमुख श्री राकेश मारिया का फोन आया। श्री मारिया ने उन्हें एक गुप्त सूचना के बारे में बताया जिसमें ताज महल होटल में मौजूद आतंकवादियों से फोन करने वाले ने पूछा, 'होटल की खिड़कियों से आप क्या देख सकते हैं? चादरें, कालीन, गद्दे इकट्ठा करें और उनमें आग लगा दें।'
17. टीटी: लेकिन बाकी कमरे बंद हैं, हमारे पास सिर्फ एक कमरा है, अगर हम इसे आग लगा दें तो हम कहाँ जाएँगे?
पीएच: ओह, तो बाकी कमरे नहीं खुल रहे हैं?
टीटी: नहीं, महोदय।
पीएच: तो जाओ और गलियारे में बिछे कालीनों में आग लगा दो। हम इस जगह को आग लगाने में देरी नहीं कर सकते।
टीटी: इंशा अल्लाह (ईश्वर की इच्छा से)।
पीएच: और, जब मैं आपको कॉल करूं, तो सुनिश्चित करें कि आप कॉल का जवाब दें।
18. 27 नवंबर 2008, सुबह 1:15 बजे से 1:26 बजे तक।
पीएच: क्या आपने आग लगाई थी या नहीं?
टीटी: हम बस कपड़ों को एक ढेर में जमा कर रहे हैं।
पीएच: जल्दी करो, आग जलाओ। और, एक मजबूत ठिकाना भी ढूंढो। तुमने लाश का क्या किया?
टीटी: इसे वहीं छोड़ दिया।
पीएच: क्या आपने नाव में पानी भरने के लिए वाल्व नहीं खोला था?
टीटी: हमने ऐसा नहीं किया। जल्दबाजी में हमने काम बिगाड़ दिया।
पीएच: क्या गलत हुआ?
टीटी: जब हम यह करने वाले थे, तब लहरें बहुत ऊंची थीं और एक दूसरी नाव हमारी नाव के पास आ गई। सब कहने लगे कि ये नौसेना की नाव है, ये नौसेना की नाव है, इसलिए हम जल्दी से दूसरी नाव में चढ़ गए और अपना सामान भी उसमें रख दिया।
इस्माइलभाई का सैटेलाइट फोन भी वहीं छूट गया।
19. 27 नवंबर 2008, सुबह 1:26 बजे।
टीटी: मैं बाकी दोनों के लौटने का इंतजार कर रहा हूँ।

पीएच: वे कहाँ गए हैं?
टीटी: वे अन्य कमरों की जाँच कर रहे हैं।
पीएच: कौन-कौन चले गए हैं?
टीटी: अली और उमर। नीचे का काम शुरू हो गया है।
पीएच: क्या नीचे कोई गोली चला रहा है? टीटी: हाँ।
20. लगभग 1:20 बजे हेमंत करकरे की मृत्यु की घोषणा की गई। कुछ ही सेकंड बाद, ताज महल होटल में पाकिस्तान से एक कॉल आया।
पीएच: माहौल बहुत तनावपूर्ण हो गया है, पूरा शहर तबाही का असर महसूस कर रहा है। 250 से ज़्यादा लोग घायल हुए हैं, तेरह-चौदह जगहों पर गोलीबारी हो रही है, आप घबराइए मत, अल्लाह आपके साथ है। मीडिया के मुताबिक एक कमिश्नर भी शहीद हो गया है। अब सुनिए, एटीएस प्रमुख भी शहीद हो गया है।
टीटी: ठीक है। ओह, उमर और अली आ गए हैं। (एक और हैंडलर लाइन लेता है और उमर नाम का आतंकवादी उससे बात करता है)।
PH2: अब घबराने की कोई जरूरत नहीं है। अल्लाह की कृपा से, बॉम्बे ऑपरेशन का नेतृत्व करने वाला व्यक्ति, मुख्य अधिकारी, कुछ ही क्षण पहले मारा गया है।
टीटी (उमर): किसकी हत्या हुई है?
PH2: बॉम्बे के प्रमुख की हत्या कर दी गई है। कमिश्नर की हत्या कर दी गई है। कई लोग घायल हुए हैं, उन्हें मारा जा रहा है। पूरे शहर में गोलीबारी हो रही है। शहर आग की चपेट में है। अल्लाह ने तुम सब से बहुत अच्छा काम करवाया है।
21. 27 नवंबर 2008 सुबह 2:02 बजे।
पीएच: तो, अब आपके पास कितनी मुर्गियाँ हैं? (बंधकों को कायर मुर्गियाँ कहकर उपहास करते हुए)।
टीटी: हमारे पास पांच हैं। उनमें से एक कन्नड़ भाषा बोलता है।
पीएच: उसका नाम क्या है?
टीटी: वह कह रहा है कि उसका नाम राममूर्ति है।
पीएच: उससे पूछो कि वह क्या करता है।
टीटी: आप क्या करते हैं? वह कहता है कि वह शिक्षक है। (वह बंधक से कहता है): आपको 20,000 रुपये से ज़्यादा वेतन नहीं मिलना चाहिए, क्या आप तस्कर नहीं

हैं? आप ताज होटल में ठहरे हैं; एक शिक्षक सपने में भी इस जगह पर नहीं आ सकता।
पीएच: उनसे पूछिए कि वे किस विश्वविद्यालय से हैं।
टीटी: वह कर्नाटक विश्वविद्यालय की बात कर रहा है।
पीएच: उसका पर्स हटाओ, उसका पूरा नाम देखो। उसका पहला नाम क्या है? उससे पूछो।
टीटी: वह कह रहा है कि उसका पूरा नाम के.आर. राममूर्ति है।
पीएच: (इंटरनेट पर जाँच करने के बाद) ठीक है, क्या उसने चश्मा पहना हुआ है? टीटी: उसने चश्मा नहीं पहना है। अरे, तुम्हारा चश्मा कहाँ है? (वह बंधक से पूछता है)
पीएच: क्या वह सामने से गंजा है?
टीटी: हां, वह मोटा भी है और उसका कहना है कि उसे रक्तचाप की समस्या है। पीएच: बिल्कुल गंजा?
टीटी: ऐ, अपना सिर इधर घुमाओ... हाँ, वह पूरी तरह से गंजा है।
पीएच: उससे पूछो कि क्या वह मद्रास से है।
टीटी: उनका कहना है कि वे बैंगलोर से हैं।
पीएच: ठीक है। आप अभी किस मंजिल पर हैं?
टीटी: हम पांचवीं मंजिल पर हैं। हमने छठी मंजिल पर तीन-चार कमरों में आग लगा दी है। कमरे समुद्र की ओर थे, और देखने में बहुत महंगे लग रहे थे।
पीएच: ठीक है, किसी भी प्रकार की परेशानी की स्थिति में, कोई भी बंधक जीवित नहीं रहना चाहिए।
22. ताज महल होटल, 27 नवंबर 2008 1:37 पूर्वाह्न
पीएच: मुझे उमर से बात करने दीजिए।
टीटी: एक संख्या नोट करें। संख्या है 00437 20880764.
पीएच: यह किसका नंबर है?
टीटी: यह मेरा है। फोन मेरे पास है।
पीएच: एटीएस प्रमुख मारा गया है। आपका काम बहुत महत्वपूर्ण है। अल्लाह आपकी मदद कर रहा है। वज़ीर (मंत्री) को भागने नहीं देना चाहिए। उस जगह को आग लगाने की कोशिश करो।
टीटी: हमने चार कमरों में आग लगा दी है।

पीएच: आग की लपटें देखकर लोग इधर-उधर भागने लगें। हर पंद्रह मिनट में एक ग्रेनेड फेंकते रहें। इससे दहशत फैल जाएगी। बाबा से बात करें।
PH2: पुलिसकर्मियों और नौसेना कर्मियों ने पूरे इलाके को घेर लिया है।
हिम्मत बनाए रखें!
23. ताज महल होटल, 27 नवंबर 2008, प्रातः 3:10 बजे
पीएच: आपके होटल में तीन मंत्री और मंत्रिमंडल के एक सचिव ठहरे हुए हैं।
हमें नहीं पता कि वे किस कमरे में हैं।
टीटी: ओह! यह तो बहुत अच्छी खबर है। यह तो सोने पर सुहागा है।
पीएच: उन तीन-चार लोगों को ढूंढो और फिर भारत से जो चाहो ले लो।
टीटी: प्रार्थना करें कि हम उन्हें ढूंढ लें।
पीएच: एक काम करो। बाहर मौजूद नौसेना और पुलिस टीमों पर एक या दो ग्रेनेड फेंक दो।
टीटी: क्षमा करें, मुझे समझ नहीं आ रहा कि वे कहाँ हैं।
24. ताज महल होटल, समय और तिथि अज्ञात
पीएच: अपना ख्याल रखना। क्या आपने सीढ़ियों को सुरक्षित कर लिया है? सुनिश्चित करें कि कोई भी ऊपर न चढ़े।
टीटी: यहां बिल्कुल भी कोई आड़ नहीं है, हम एकदम ऊपर हैं, मुझे नहीं पता कि बाकी दो कहां चले गए हैं।
पीएच: अल्लाह ओ अकबर। हीरो, सीढ़ियों को अच्छे से संभाल कर रखना, अगर वे आ गए तो तुम अपना फायदा खो दोगे। कमरे की हालत देखो।
टीटी: मैंने उन्हें सौ बार कहा है, लेकिन वे आ ही नहीं रहे हैं।
पीएच: वे दूसरी तरफ तैनात हो गए होंगे। वे कहाँ गए हैं? कितनी दूर हैं? टीटी: मैंने उन्हें पास ही एक जगह पर भेजा था, लेकिन वे शायद और आगे चले गए होंगे।
पीएच: क्या वे नीचे चले गए हैं?
टीटी: उन्हें पता है कि नीचे प्रतिरोध है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है।
25. पीएच: क्या आपके पास ग्रेनेड है?
टीटी: हां।
पीएच: एक फेंक दो, उससे थोड़ी जगह साफ हो जाएगी। एक ग्रेनेड फेंक दो और वे पंद्रह-बीस मिनट के लिए वहीं रुक जाएंगे।
टीटी: ठीक है, मैं कर दूंगा।

26. पीएच: ऊपरी मंजिल के कमरों में आग लगा दो, कमरों को खाली करो और फिर उनमें आग लगा दो, हीरो, तुम जानते हो तुम्हें क्या करना है, सबको नीचे ले आओ। नीचे पुलिस है, सबको नीचे इकट्ठा करो, और जैसा मैंने अभी कहा, हर बीस से पच्चीस मिनट में एक ग्रेनेड फेंको, क्या यह किया जा रहा है?
टीटी: ठीक है, नीचे आते समय हम उन्हें चौंका देंगे।
पीएच: इंशाल्लाह।
27. टीटी: दरवाजे बहुत मोटे हैं, कांच बहुत अच्छा और ठोस है।
पीएच: इसे तोड़ दो।
टीटी: नहीं, यह कमरा ही हमारा गढ़ है।
पीएच: ओह, आपको एक मजबूत गढ़ मिल गया है।
टीटी: यह बहुत ही सुंदर कमरा है। इसमें डबल किचन, एक बाथरूम और एक छोटा स्टोर रूम है।
28. पीएच: क्या वहां पानी है?
टीटी: हां।
पीएच: अपने साथ पानी की बाल्टी और तौलिए रखें। पुलिस द्वारा आंसू गैस के गोले दागे जाने पर आपको इनकी आवश्यकता पड़ेगी।
29. पीएच: अपनी स्थिति बदलें - एक साथ न बैठें, जिस दिशा से वे आ रहे हैं उस दिशा में एक ग्रेनेड फेंकें।
टीटी: उन्हें समझना मुश्किल है। शोएब के गोली चलाने पर वे पीछे हट गए। पीएच: ठीक है भाई, तुम चारों एक साथ मत बैठो, दूर-दूर बैठो, अलग-अलग जगहों पर बैठो, ताकि जब कोई आए तो तुम उसे कवर दे सको जबकि बाकी तीन उसे सबक सिखा सकें।
टीटी: क्या हमें अगले कमरे में जाना चाहिए?
पीएच: क्या बगल में कोई कमरा है, सामने तो कुछ भी नहीं है?
टीटी: नहीं, नहीं, फिर तो हमारे कमरे एक दूसरे के सामने होंगे।
30. टीटी: हर जगह कंप्यूटर हैं, तीस इंच की स्क्रीन वाले कंप्यूटर।
पीएच: आपने अभी तक उन्हें आग नहीं लगाई है?
टीटी: आपको थोड़ी देर में आग दिखाई देगी।
पीएच: हम इंतज़ार करेंगे और देखेंगे। तुम्हें देर हो जाएगी, तुमने अभी तक ग्रेनेड नहीं फेंका? नीचे बहुत सारी गाड़ियाँ खड़ी हैं...

टीटी: हमारे पास एक ही कमरा है, अगर हम उसमें आग लगा दें तो हमारे पास कोई कमरा नहीं बचेगा।
पीएच: ठीक है, आप सबसे ऊपरी मंजिल पर हैं?
टीटी: हां।
पीएच: दूसरी तरफ जाओ और कालीन और पर्दों में आग लगा दो।
टीटी: जी हाँ, भाइयों के आने के बाद हम ऐसा करेंगे।
पीएच: तब तो बहुत देर हो जाएगी, तुमने अभी तक एक ग्रेनेड भी नहीं फेंका है, ग्रेनेड फेंकने में कितना समय लगता है? नीचे इतनी सारी गाड़ियाँ खड़ी हैं...
टीटी: मैं उन्हें बार-बार भेज रहा हूँ, लेकिन वे ग्रेनेड फेंकते ही नहीं, बिना फेंके ही वापस लौट आते हैं – मुझे नहीं पता वे क्या कर रहे हैं। वे कहते हैं कि वे फेंकेंगे, लेकिन फेंकते नहीं हैं।
पीएच: ग्रेनेड फेंकने में इतनी बड़ी बात क्या है? पिन खींचो और फेंक दो, बस इतना ही।
टीटी: हमने जो डिब्बा फेंका, उससे हर जगह भारी मात्रा में धुआं फैल गया. . . . (यह एक रहस्यमय 'डिब्बा' है; ऐसा लगता है कि इसका संबंध एक साथी आतंकवादी की मौत से है, क्योंकि इसे संभालने वाले की प्रतिक्रिया से यही संकेत मिलता है)।
पीएच: इसे भूल जाओ, थोड़ी देर में सब ठीक हो जाएगा। तुम अपना काम करते रहो, इस बारे में चिंता मत करो, जो हुआ सो हुआ। थोड़ी देर में सब ठीक हो जाएगा। (यह ताज दस्ते के नेता के हमले की शुरुआत में ही मारे जाने का संकेत हो सकता है, और यह शायद वहां मौजूद हत्यारे दस्ते के सदस्यों को सांत्वना देने का प्रयास था)।
टीटी: ठीक है।
पीएच: शांत रहो, जब मैं फोन करूं तो उठा लेना। आग लगाने में ज्यादा समय मत लगाओ।
टीटी: आग अब किसी भी क्षण लग सकती है (फोन कट जाता है)।
पीएच (दूसरों से): लेकिन वे इसे आग लगा रहे हैं. . . .
ओबेरॉय-ट्राइडेंट
ओटी – ओबेरॉय-ट्राइडेंट आतंकवादी
27 नवंबर 2008, सुबह 3:53 बजे, उन्नीसवीं मंजिल

31. पीएच: भाई अब्दुल, मीडिया आपके इस कार्य की तुलना 9/11 से कर रहा है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी शहीद हो गए हैं।
ओटी1 (अब्दुल रहमान): हम दसवीं या ग्यारहवीं मंजिल पर हैं। हमारे पास पाँच बंधक हैं।
पीएच 2 (कहाफा): मीडिया द्वारा सब कुछ रिकॉर्ड किया जा रहा है, अधिकतम नुकसान पहुंचाओ। लड़ते रहो। जिंदा मत पकड़े जाना।
PH1: दो मुसलमानों को छोड़कर सभी बंधकों को मार डालो। अपना फोन चालू रखो ताकि हमें गोलीबारी की आवाज सुनाई दे सके।
ओटी2 (फहदुल्लाह): हमारे पास तीन विदेशी हैं, जिनमें महिलाएं भी शामिल हैं।
सिंगापुर और चीन से।
पीएच 1: उन्हें मार डालो।
(फहदुल्लाह और अब्दुल रहमान बंधकों को एक पंक्ति में खड़े होने का निर्देश देते हुए, दोनों मुसलमानों को एक तरफ हटने के लिए कहते हैं।
गोलियों की आवाज। पृष्ठभूमि में जयकारे की आवाजें, खाफा ने फोन ज़ारार को सौंप दिया।)
ओटी3 (ज़रार): फहद, नीचे जाने का रास्ता ढूंढो।

10

32. जब पाकिस्तानी हमलावरों के हाथों से ऑपरेशन फिसलने लगा, तब उनमें से कम से कम एक होटल के कमरा नंबर 1856 में मौजूद था। हैंडलर्स और फहादुल्लाह के बीच टेलीफोन पर हुई बातचीत रिकॉर्ड है:
पीएच: नमस्कार।
एफ: क्या हमें अपनी सुरक्षित स्थिति बनाए रखनी चाहिए या हमला करना चाहिए? पीएच: क्या आप उन्हें देख सकते हैं?
एफ: नहीं। हमारे पास केवल दो ग्रेनेड बचे हैं।
पीएच: आप दोनों के पास सिर्फ दो ही हैं? आप लोग सत्रह ग्रेनेड पहले ही इस्तेमाल कर चुके हैं?
एफ: हां।
(संचालक पाकिस्तान में मौजूद अन्य लोगों से परामर्श करने के लिए कुछ क्षण लेता है और फिर लौटता है।)
पीएच: ठीक है, तो अब ग्रेनेड मत फेंको। तभी फेंको जब तुम उन्हें देख सको। तुम्हारे पास कितना गोला-बारूद है?

□□: □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□, □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□
□□□□: □□□□□ □□□□□□□□□?
□□: □□□□□ □□□ □□-□□ □□□□
□□□□: □□□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□?
□□: □□□, □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□
□□□□: □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□

खंड – IV

आतंक और आतंकवादी

भारत में हमले

नवंबर 2008 में हुए मुंबई हमलों में 170 लोगों की जान चली गई और 304 लोग घायल हो गए, इससे पहले भारत भर में इसी तरह के अन्य हमले हुए थे।
2003 के बाद से हुए कुछ हमलों की संक्षिप्त सूची इस प्रकार है:
1. मुंबई, 25 अगस्त 2003 - 2 विस्फोटों में 46 लोग मारे गए।
2. नई दिल्ली, 29 अक्टूबर 2005 - 3 सिलसिलेवार बम धमाकों में 62 लोग मारे गए।
3. वाराणसी, 7 मार्च 2006 - 3 विस्फोटों में 21 लोग मारे गए।
4. मुंबई, 11 जुलाई 2006 - ट्रेनों में हुए 7 विस्फोटों में 209 लोग मारे गए।
5. मालेगांव, 8 सितंबर 2006 - 2 विस्फोटों में 40 लोग मारे गए।
6. पानीपत, 19 फरवरी 2007 - एक ट्रेन में हुए 2 बम धमाकों में 68 लोग मारे गए।
7. हैदराबाद, 18 मई 2007 - 12 लोग मारे गए।
8. हैदराबाद, 25 अगस्त 2007 - 2 विस्फोटों में 42 लोग मारे गए।
9. जयपुर, 13 मई 2008 - सिलसिलेवार बम धमाकों में 80 लोग मारे गए।
10. बेंगलुरु, 25 जुलाई 2008 - बम विस्फोट में एक व्यक्ति की मौत।
11. अहमदाबाद, 26 जुलाई 2008 - 18 बम धमाकों में 57 लोग मारे गए।
12. नई दिल्ली, 13 सितंबर 2008 - 6 बम धमाकों में 26 लोग मारे गए।
13. नई दिल्ली, 27 सितंबर 2008 - एक बम विस्फोट में 3 लोग मारे गए।
14. मोडासा, 29 सितंबर 2008 - बम विस्फोट के बाद 1 व्यक्ति की मौत।
15. मालेगांव, 29 सितंबर 2008 - बम विस्फोट में 5 लोग मारे गए।
16. अगरतला, 1 अक्टूबर 2008 - सिलसिलेवार बम धमाकों में 2 लोग मारे गए।
17. कानपुर, 14 अक्टूबर 2008 - बम विस्फोट के बाद 8 लोग घायल।
18. इम्फाल, 21 अक्टूबर 2008 - विस्फोट में 17 लोग मारे गए।
19. असम, 30 अक्टूबर 2008 - असम भर में सिलसिलेवार बम धमाकों में 50 लोग मारे गए।
20. मुंबई, 26 नवंबर 2008: 170 लोग मारे गए, 304 घायल हुए।

1993 □□ 2008 □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□

1. 12 □□□□□ 1993 □□ - 12 □□ □□□□□□□, 257 □□□ □□□□ □□ □□ 713 □□□□ □□□□
2. 24 □□□□□ 1997 □□ - □□□□
3. 27 □□□□□ 1998 □□ - □□□□□
4. 2 □□□□□□ 2002 □□ - □□□□□□□ □□□□□□
5. 6 □□□□□□ 2002 □□ - □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□
6. 27 □□□□□ 2003 □□ - □□□□ □□□□□□
7. 13 □□□□□ 2003 □□ – □□□□□□ □□□□□□
8. 14 □□□□□□ 2003 □□ – □□□□□□□
9. On 29 July 2003 – Ghatkopar in a BEST bus
10. 25 □□□□□ 2003 □□ - □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□
11. 11 □□□□□ 2006 □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ 181 □□ □□ 890 □□□ □□□□ □□□ □□□
12. 26 □□□□□ 2008 □□ 29 □□□□□ 2008 □□ □□□, □□□□□□ □□ □□□□□□ 170 □□ □□ 304 □□□ □□□□ □□□ □□□

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted], [redacted] [redacted]

– [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

ट्रेनों पर हमला करके यह आसानी से किया जा सकता है), और हमले का परिणाम भयावह दृश्यों के माध्यम से स्पष्ट होना चाहिए। भयंकर आग के दृश्य रंगीन और डरावने होते हैं, जिन्हें टीवी चैनल हर दो मिनट में बार-बार दिखाते हैं। इससे नुकसान कई गुना बढ़ जाता है। एक अन्य लोकप्रिय रणनीति व्यस्त महानगरों में प्रतिष्ठित इमारतों को उड़ा देना है। मनोवैज्ञानिक रूप से, इन्हें मदद के लिए बेताब पुकार या गुमनाम महसूस करने वाले और इसलिए क्रोधित लोगों के समूह द्वारा ध्यान आकर्षित करने के कृत्यों के रूप में देखा जा सकता है।
ये आतंकवादी शत्रु राष्ट्र का सर्वनाश चाहते हैं, और अगर इसमें असफल रहे तो कम से कम उसकी अर्थव्यवस्था को पंगु बनाने का प्रयास करते हैं। शायद उन्हें इस बात से संतोष मिलता है कि अब 'दूसरा' भी समान रूप से वंचित हो गया है और दोनों के बीच की खाई थोड़ी कम हो गई है।
‘आतंकवादी कौन है?’ और ‘स्वतंत्रता सेनानी कौन है?’ जैसे सवालों के जवाब इन्हीं कारकों पर आधारित हैं।
मेरे विचार से, आतंकवादी वह है जो उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए काम करता है और एक क्रूर व्यक्ति की तरह, दूसरों के अपमान या विनाश को देखकर एक विशेष प्रकार का आनंद प्राप्त करता है। मृत्यु, विनाश, दर्द और पीड़ा उसे विजय का अनुभव कराते हैं। दूसरों को विकृत और अपंग करने में उसे एक विकृत आनंद मिलता है। सीएसटी में कई लोगों की हत्या करने के बाद, टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग के पास एके-47 राइफल लिए हुए कसाब की शैतानी मुस्कान वाली तस्वीर उस युवा हत्यारे की मानसिकता को सबसे सटीक रूप से दर्शाती है। साजिश रचने वाले और उसे अंजाम देने वाले दोनों ही आतंकवादी हैं। आतंकवादी योजनाकार, जिसे यहाँ पाकिस्तानी हैंडलर (पीएच) कहा जा रहा है, ने सैनिकों को प्रशिक्षण देते समय आदर्शवादी और धार्मिक नारों का मिश्रण इस्तेमाल किया (जैसे, 'क्या तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम अपने साथी मुसलमानों को अपमानित होते देख चुपचाप खड़े हो?', इत्यादि); इन और इसी तरह के भड़काऊ सवालों का इस्तेमाल गरीब और हताश भगोड़ों को डराने के लिए किया जाता है, जो छोटे-मोटे अपराधों में लिप्त होने के कारण पहले से ही कानून तोड़ने वाले बन चुके हैं। आतंकवादी योजनाकार का एजेंडा शैतानी और निर्मम है। हालाँकि वह धार्मिक ग्रंथों का ज्ञान तो रखता है, लेकिन उसकी धार्मिक बातों में आध्यात्मिक आयाम का अभाव है। वह उन लोगों को समान मानवीय दर्जा नहीं देता

जो उसके विश्वदृष्टिकोण और/या उसके धर्म की व्याख्या से सहमत नहीं हैं, और साथ ही वह लोकतंत्र जैसी शासन प्रणाली के अन्य रूपों को भी अस्वीकार करता है। स्वाभाविक रूप से, वह अन्य देवताओं और पैगंबरों से घोर घृणा करता है। ऐसा नहीं है कि आतंकवादी सिर्फ संकीर्ण मानसिकता वाला होता है, बल्कि वह सक्रिय रूप से असहिष्णु भी होता है और दूसरे के सभी चिह्नों को मिटाने का प्रयास करता है। इसके अलावा, वह जटिल चिंतन और खुलेपन में असमर्थ होता है; वह दूसरे के साथ वाद-विवाद, संवाद या अंतःक्रिया में शामिल नहीं होता। यदि वह वाद-विवाद करता भी है, तो वह एक ही चक्र में फंस जाता है और कठोर रूप से गोलमोल तर्कों पर अड़ा रहता है। यहाँ, व्यक्ति एक दुष्चक्र में फंस जाता है, जैसे कि...
वेदों/बाइबल/कुरान में लिखा है कि ईश्वर का अस्तित्व है। चूंकि वेद/बाइबल/कुरान ईश्वर का वचन है, और ईश्वर कभी झूठ नहीं बोलता, इसलिए वेदों/बाइबल/कुरान में लिखी हर बात सत्य होनी चाहिए। अतः ईश्वर का अस्तित्व अवश्य है।
यह एक तार्किक त्रुटि है और चाहे उसे इसका एहसास हो या न हो, वह अपनी गलत तर्कशक्ति को स्वीकार नहीं करेगा जो उसकी चक्रीय सोच में फंसी हुई है।
इन घातक अभियानों के साजिशकर्ता जानते हैं कि मानव बलि के बकरों की तलाश कहाँ करनी है; वे युवा सैनिकों को पंथों के कठोर तरीके से प्रेरित करते हैं (परिशिष्ट ए देखें) जहाँ उन्हें समय-समय पर 'लव-बमिंग' की खुराक भी दी जाती है और वे यह भी जानते हैं कि युवक के जीवन के प्रति क्रोध को घृणित 'अन्य' की ओर कैसे मोड़ना है।
रसायनशास्त्री साधारण धातु को सोने में बदल देते हैं, वहीं ये आतंकवादी साधारण धातु को लकड़ी के बुरादे में बदल देते हैं। वे अक्सर गुस्से से भरे और गरीब भगोड़ों को अच्छे कपड़े पहने, भरपेट भोजन पाने वाले, अच्छी तनख्वाह पाने वाले और आत्म-बलिदान करने वाले मानव रोबोट में बदलने में सफल हो जाते हैं। हालांकि मेरी बात थोड़ी अटपटी लग सकती है, लेकिन शायद उच्च आतंकवाद और कम बुद्धि, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक बुद्धिमत्ता के बीच एक विपरीत संबंध भी हो सकता है। आतंकवादी योजनाकार इन युवाओं के दिमाग में हिंसा की शक्ति को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं, क्योंकि वे स्वयं समावेशी, प्रगतिशील और परिष्कृत दृष्टिकोण रखने में असमर्थ हैं। दोनों ही जटिल तर्कसंगतता को समझने और स्वीकार करने में विफल रहते हैं, जबकि सरल

लेकिन पुराने रूढ़िवादी विचार को ही प्राथमिकता देते हैं। आधुनिक हथियारों के इस्तेमाल के अलावा, वे खुद को बहुत अधिक आधुनिक सुख-सुविधाओं से दूर रखते हैं। वैसे तो वे सरल, रैखिक सोच वाले शुद्धतावादी हैं, लेकिन वे अंतरराष्ट्रीय मीडिया का ध्यान आकर्षित करने के लिए तरसते हैं, बदनामी को असली प्रसिद्धि समझ लेते हैं - अपनी किसी उपलब्धि का प्रमाण। वे मीडिया के ध्यान को अपने रुख की पुष्टि के रूप में भी देखते हैं।
जीवन की जटिलताओं और अस्पष्टताओं के लिए उनमें कोई धैर्य नहीं है; वे 'अगर तुम हमारे नहीं हो तो हमारे खिलाफ हो' जैसे नारों में विश्वास रखते हैं। उनकी सोच की कठोरता उनकी गहरी हीन भावना से मेल खाती है। यह हीन भावना एक क्रूर और अहंकारी मुखौटे के पीछे छिपी हुई है। उदाहरण के लिए, कसाब ने पूछताछ के दौरान बताया कि चाचा और उनके जैसे लोग उन्हें भारत की याद दिलाते थे, जहाँ 'काफिर' (हिंदू) अमीर होते जा रहे थे और तरक्की कर रहे थे, और इसे रोकना जरूरी था। इस दिखावे के पीछे पीछे छूट जाने का डर छिपा था। हीन भावना की यह स्वीकारोक्ति स्पष्ट रूप से इन हमलों के पीछे छिपी ईर्ष्या और जलन को दर्शाती है।
दूसरी ओर, स्वतंत्रता सेनानी के इरादे अधिक आदर्शवादी होते हैं। वह उदार मानसिकता वाला होता है और अपने से भिन्न लोगों को हीन नहीं समझता। एक आतंकवादी वरिष्ठ नागरिकों, बच्चों और महिलाओं को मानव ढाल के रूप में इस्तेमाल करने तक की हद तक गिर सकता है, लेकिन एक स्वतंत्रता सेनानी ऐसा सोच भी नहीं सकता।
आतंकवादियों ने 'सम्मान' शब्द को भी विकृत कर दिया है, जिसका अर्थ अब कोई महान चीज़ नहीं, बल्कि संकीर्ण, पुरातन और क्रूर चीज़ बन गया है। स्वतंत्रता सेनानी की सम्मान की अवधारणा महान और प्रेरणादायक है। स्वतंत्रता सेनानी का उद्देश्य किसी सत्ता को उखाड़ फेंकना है, न कि निर्दोषों को डराना-धमकाना और उन्हें अपंग बनाकर कुटिल आनंद लेना। वह महिलाओं और बच्चों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करता है और आतंकवादियों की पितृसत्तात्मक, मध्ययुगीन मानसिकता से बिल्कुल अलग है। वह किसी को डराना, दबाना या अधीन करना नहीं चाहता। उसका लक्ष्य एक अलग राजनीतिक नेतृत्व स्थापित करना है, जो उसके प्रतिनिधित्व वाले लोगों को कम नहीं, बल्कि अधिक स्वतंत्रता प्रदान करे।

हालांकि 'उग्रवादी' शब्द स्वतंत्रता सेनानी और आतंकवादी दोनों को व्यापक रूप से परिभाषित करता है, लेकिन आदर्श रूप से इस शब्द को इस चर्चा से बाहर रखा जाना चाहिए क्योंकि यह मुद्दों को सरल बनाने के बजाय केवल भ्रम को बढ़ाता है। वास्तव में, इस शब्द का प्रयोग उन लोगों द्वारा अधिक किया जाता है जो स्वयं भ्रमित हैं या जो दूसरों को भ्रमित करना चाहते हैं, न कि उन लोगों द्वारा जो स्थिति को स्पष्ट करना चाहते हैं।
खबरों के मुताबिक, मुंबई हमले के दौरान, ताज महल होटल ही एकमात्र ऐसी जगह थी जहां हमलावरों ने आम नागरिकों को मानव ढाल के रूप में इस्तेमाल किया था। हमलावरों के एक सहयोगी ने नरीमन हाउस के आतंकवादी इमरान बाबर को यह भी बताया था कि वह आखिरी दो जीवित बंधकों, यानी दो महिलाओं को तब तक अपने पास रखे जब तक वे उनके काम आ सकें - और जब उसे लगे कि उनका कोई उपयोग नहीं हो सकता, तो उन्हें मार दे।
लश्कर-ए-तैबा और इसी तरह के संगठन आतंकवाद का जीता-जागता उदाहरण हैं। ये आतंकवादी आईएसआई के कुछ सदस्यों के साथ मिलकर डर का माहौल बना रहे हैं, जातीय हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं और अंततः देश को कमजोर और विभाजित करने के लिए कई अन्य साजिशें रच रहे हैं। ये लोग असल में आम नागरिकों के वेश में पूरी तरह से हथियारों से लैस कमांडो हैं, जो बंदूकों और बमों से लैस होकर निहत्थे परिवारों के पुरुषों, महिलाओं और बच्चों पर हमला करते हैं, उन्हें डराते हैं और फिर उनकी हत्या कर देते हैं।
कौन जिम्मेदार है?
मैंने प्रत्यक्ष साजिशकर्ताओं को अलग-अलग अध्यायों, 'साजिशकर्ता', 'दस आतंकवादी', 'कसाब' में सूचीबद्ध किया है, और उनका उल्लेख दिनेश हुकमानी के अतिथि लेख, 'दो भारतीय साजिशकर्ता' में भी मिलता है।
हालांकि, कुछ ऐसे लोग भी थे और हैं जिनका यहां उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन जिन्होंने मुंबई ऑपरेशन के लिए पर्दे के पीछे से भूमिका निभाई थी। नवंबर 2008 के मामले में, क्या लश्कर की मदद करने वाली संस्था केवल जमात-उद-दावा थी या इस हमले में बड़ी ताकतें भी शामिल थीं? इस बात की पूरी संभावना है कि यह मामला सऊदी अरब, अफगानिस्तान, पाकिस्तान से लेकर लंदन, इटली और अमेरिका तक फैल गया है। भारतीय साक्ष्यों पर पाकिस्तान की जानबूझकर की गई प्रतिक्रिया में देरी (देखें 'पाकिस्तान का इनकार' शीर्षक वाला अध्याय) भी इस बात का संभावित प्रमाण है कि इसमें आईएसआई के कुछ

वर्तमान और पूर्व सदस्य शामिल हो सकते हैं, जिनके अल-कायदा और दाऊद इब्राहिम से संबंध होने की जानकारी है।
ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूट के ब्रूस रीडेल समेत कई विश्लेषकों का मानना है कि यह अल-कायदा और लश्कर की संयुक्त साजिश है। लेकिन ओसामा बिन लादेन के 9/11 में एक साथ कई ठिकानों पर हमला करने के लिए मशहूर होने से पहले, इस तरह के इस्लामी हमलों की शुरुआत दाऊद इब्राहिम ने ही की थी। श्री रीडेल कहते हैं, 'इसमें अल-कायदा के सारे लक्षण हैं - एक साथ कई ठिकानों पर बेहद सुनियोजित हमला। अमेरिका, ब्रिटेन और इज़राइल वैश्विक जिहादी निशाने हैं, न कि भारतीय मुजाहिदीन के निशाने... अगर इससे भारत-पाकिस्तान संकट या उससे भी बदतर स्थिति पैदा होती है, तो साजिशकर्ताओं के लिए और भी अच्छा होगा।' आत्म-समर्थन के एक हास्यास्पद प्रयास में, जमात-उद-दावा (अब लश्कर-ए-तैबा का एक प्रतिबंधित धार्मिक संगठन) की वेबसाइट ने कहा कि वे अब एल.के. आडवाणी और बारह अन्य लोगों के प्रत्यर्पण की मांग करने में न्यायसंगत हैं, जिन्हें वे 1947 में जिन्ना की हत्या के प्रयास के मामले में 'फरार' बताते हैं।
यह इस तथ्य को नजरअंदाज करना चुनता है कि जब आडवाणी ने कुछ साल पहले पाकिस्तानी धरती पर कदम रखा और वहां की सरकार ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया, तब इन संगठनों ने कुछ नहीं किया। अगर वह सचमुच 'भगोड़ा' थे, तो पाकिस्तानी हवाई पट्टी पर उनका विमान उतरते ही अदालतों ने उनकी गिरफ्तारी का निर्देश क्यों नहीं दिया? इसके विपरीत, उन्हें एक अतिथि के रूप में पूरा सम्मान दिया गया और उनकी यात्रा ने उन्हें पाकिस्तानी प्रशंसा दिलाई।
आज पाकिस्तानी मानसिकता बदल गई है। भ्रमित, बेरोजगार और हताश मुस्लिम युवाओं की बढ़ती संख्या का मानना है कि दुनिया को इस्लाम में परिवर्तित करने से किसी न किसी तरह उनका जीवन बेहतर हो जाएगा, और उनका मानना है कि उनकी अपनी दुनिया में जो कुछ भी गलत है, उसके लिए काफिर या नास्तिक जिम्मेदार हैं। इन युवाओं को विपरीत दृष्टिकोण वाली सलाह और व्यापक सहानुभूतिपूर्ण शिक्षा की सख्त जरूरत है।
संयुक्त पुलिस आयुक्त राकेश मारिया ने कहा कि मुंबई हमले का मकसद भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ को चोट पहुंचाने के साथ-साथ भारतीयों और विदेशी पर्यटकों के मन में अभूतपूर्व भय और दहशत पैदा करना था। ये हमले आतंकवादी

संगठनों और उनके सहयोगी संगठनों द्वारा भारत के खिलाफ चलाए जा रहे सुनियोजित और अघोषित छद्म युद्ध का ही परिणाम हैं।
अमेरिका, भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान
हालांकि ऐसे हमले युद्ध का ही एक रूप हैं, भारत को उम्मीद है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा चुनाव से पहले किए गए अपने उस वादे को पूरा करेंगे जिसमें उन्होंने आतंकवाद को पूरी दुनिया से मिटाने की बात कही थी। उन्होंने यह भी साफ तौर पर कहा था कि सहायता 'सबूत के आधार पर' दी जाएगी। लेकिन हमें यह जानकर बहुत दुख हुआ कि आतंकवादियों को पनाह देने वाले देश के प्रति अमेरिका की नीति अरबों डॉलर की अतिरिक्त सहायता देने की है। अगर आतंकवादियों को कड़ा संदेश देने का यही उनका वादा था, तो मुझसे ज़रूर कुछ छूट रहा है। 28 मार्च 2009 को ही ओबामा प्रशासन ने पाकिस्तान को 75 लाख अमेरिकी डॉलर की सहायता देने का फैसला किया। कम से कम भारतीयों के लिए, 'सबूत के आधार पर सहायता' वाले उनके बयान के छह महीने से भी कम समय में यह चौंकाने वाला बदलाव है।
इस तरह की सहायता कट्टरपंथी तालिबान को वित्त पोषित करती है, जो फिर अफगानिस्तान और उत्तर-पूर्वी पाकिस्तान में अपनी सेना को और मजबूत करता है। अनजाने में, अमेरिका और उसके पश्चिमी सहयोगी उस फ्रेंकस्टीन को मोटा कर रहे हैं, जिसे वास्तव में लाइपोसेशन की सख्त जरूरत है। आदत के चलते, अमेरिका पाकिस्तान पर और अधिक डॉलर लुटा रहा है, इस उम्मीद में कि वह उन क्रूर और कट्टरपंथियों को लुभा सकेगा, जो इतनी आसानी से नष्ट नहीं होते जितनी आसानी से वे पैदा हुए थे। इस बीच, इस्लामी उद्योग फल-फूल रहा है, यहां तक कि बच्चे भी गोलियां बनाने में भाग लेते हैं, और जैसे ही वे AK-47 पकड़ने लायक होते हैं, उन्हें इसका दुरुपयोग करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। महिलाओं को गर्भनिरोध का अभ्यास करने से रोका जाता है और बार-बार बच्चे पैदा करने से वे उन लोगों के लिए पर्याप्त मात्रा में सैनिक पैदा करती हैं जो बच्चों को युद्ध में जाने और सबसे सस्ते, सबसे आसानी से बदले जाने वाले सैनिकों के रूप में मरने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। बच्चों को किताबों की बजाय बंदूकें आकर्षित करती हैं, जिसका अर्थ है कि उत्साहित बच्चे ऐसे हथियार उठाते हैं जो वास्तव में जल्द ही उनकी मृत्यु का कारण बनेंगे। अपने दिमाग में AK-47 राइफलों और 'इस्लाम खतरे में है' के

विस्फोटक मिश्रण के साथ, बच्चे लड़ते हैं और यहां तक कि स्वेच्छा से वयस्कों के सामने मानव ढाल के रूप में खड़े हो जाते हैं।
यह सुनने में भले ही कठोर लगे, लेकिन इन बच्चों की अपने पिताओं के लिए वास्तव में कोई खास अहमियत नहीं होती।
खुद कसाब ने कहा था कि उसके पिता चाहते थे कि वह लश्कर-ए-तैबा में शामिल होकर लड़ाका बने। चाहे यह सच हो या नहीं (उसके पिता ने जवाब दिया कि उन्होंने अपने बच्चों को नहीं बेचा), कसाब की ऐसी भावना इस बात की दयनीय स्थिति को दर्शाती है कि यह पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में एक विश्वसनीय और आम परिदृश्य है।
इस प्रकार अमेरिका हजारों गरीब और अशिक्षित कबायली मुसलमानों को ऐसे पैसे से सशक्त बनाता है जिसका अंततः दुरुपयोग होता है। उसकी गलती यह है कि वह डॉलर से सद्भावना पैदा करने और उन लोगों को निरस्त्र करने की उम्मीद करता है जो वास्तव में गलत तरीके से डॉलर के बल पर सशक्त हो रहे हैं। यह बात समझ से परे है। रूस की हार के बाद अमेरिका का पीछे हट जाना भी एक बड़ी गलती थी। हथियारबंद अफगानों को अकेला छोड़ देना और उन्हें उनकी गरीबी में अपने हाल पर छोड़ देना एक दुखद गलती थी जिसके दूरगामी परिणाम स्पष्ट हैं। उन्हें जिहादी मानसिकता, हथियार प्रशिक्षण और मादक पदार्थों के व्यापार को आय के स्रोत के रूप में छोड़कर जाना पड़ा। क्या परिस्थितियाँ इससे भिन्न हो सकती थीं?
यह सच है कि पुराने कुत्ते को नए गुर सिखाना मुश्किल है, और इस्लामी दुश्मनों से निपटने के अमेरिकी प्रयासों में यह बात दुखद रूप से सच साबित होती दिख रही है। पुराने तरीके वही पुराने परिणाम देते हैं। आप एक चोर को पकड़ते हैं, फिर उसे पैसे का लालच देते हैं, यह सोचकर कि वह रुक जाएगा, लेकिन ठीक उल्टा होता है। चोर जानता है कि उसे उसकी उपद्रव करने की क्षमता के लिए भुगतान किया जा रहा है और उसने मानो सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को पकड़ लिया है। ब्लैकमेलर शायद ही कभी रुकते हैं; बल्कि वे दांव और बढ़ा देते हैं। अमेरिका भुगतान करता रहता है और अफ़ग़ानिस्तान-पाकिस्तान समूह आतंक फैलाता रहता है। यह वही क्लासिक कैच-22 स्थिति है जिसमें अमेरिका फंसा हुआ है। दुख की बात है कि इस दोषपूर्ण विदेश नीति का खामियाजा भारत को भुगतना पड़ रहा है।

जब तक अमेरिका और भारत अफगानिस्तान-पाकिस्तान या पाकिस्तान के आतंकी मोर्चे पर एक-दूसरे के विपरीत बैठे रहेंगे, तब तक लश्कर-ए-तैबा, आईएसआई, दाऊद इब्राहिम, तालिबान और अल-कायदा जैसे संगठनों को रोकना असंभव होगा। निष्कर्ष
अपनी किताब 'पाकिस्तान' में मैरी ऐन वीवर एक सच्ची घटना का वर्णन करती हैं। 2002 में, परवेज़ मुशर्रफ़ ने पाकिस्तान के चालीस संभ्रांत व्यक्तियों के लिए एक रात्रिभोज का आयोजन किया, जिनमें शीर्ष सीईओ और व्यापारिक नेता शामिल थे। शाम सुचारू रूप से चल रही थी, जब तक कि मिठाई नहीं परोसी गई। तभी एक महिला के जीवनसाथी ने टिप्पणी की कि कराची से आए मेहमान वहाँ की सुरक्षा स्थिति को लेकर चिंतित हैं। मुशर्रफ़ ने स्वीकार किया कि यह एक समस्या थी और सरकार को इस पर काम करना होगा। इसी बीच, उन्होंने उपस्थित मेहमानों से कहा, "मैं इस तरह अपनी रक्षा करता हूँ।" और फिर, अपने बड़े हाथ को घुमाते हुए, पूर्व कमांडो ने अपनी जेब में हाथ डाला और एक चांदी की परत चढ़ी पिस्तौल निकाली और उसे हवा में लहराया। कमरे में सन्नाटा छा गया। किसी भी मेहमान को याद नहीं था कि पाकिस्तान में इससे पहले कभी ऐसा कुछ हुआ था।
पाकिस्तान में आपका स्वागत है, यहाँ तो राष्ट्रपति को भी अपने द्वारा आयोजित रात्रिभोज में बंदूक लेकर जाना जरूरी लगता है।
परिशिष्ट ए
पंथों के बारे में जानकारी एकत्र करने और प्रसारित करने वाली संस्था अमेरिकन फैमिली फाउंडेशन ने विनाशकारी पंथ और उसकी प्रथाओं को पर्याप्त रूप से परिभाषित किया है:
विनाशकारी पंथ वे होते हैं जो सदस्यों की भर्ती और उन्हें अपने समूह में शामिल करने तथा नेता के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए सदस्यों के विचारों, भावनाओं और व्यवहार को नियंत्रित करने हेतु अतिवादी और अनैतिक हेरफेर की तकनीकों का उपयोग करते हैं... ऐसे समूह का नेता अक्सर स्वयं को दैवीय या अलौकिक शक्तियों वाला बताता है। वह अक्सर अनुयायियों से बच्चों जैसी आज्ञाकारिता और अधीनता की मांग करता है। वह सदस्यों को न केवल आध्यात्मिक मामलों में बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी मार्गदर्शन के लिए अत्यधिक निर्भरता के लिए प्रोत्साहित करता है - महत्वहीन व्यावहारिक निर्णयों (उदाहरण के लिए, 'मुझे कौन सा टूथब्रश इस्तेमाल करना चाहिए?') से

लेकर व्यक्तिगत और अंतरंग विकल्पों ('मुझे किससे शादी करनी चाहिए?') तक; नैतिकता के नियमों ('क्या भगवान के लिए चोरी करना ठीक है?') से लेकर राजनीतिक विकल्पों ('मुझे किसे वोट देना चाहिए?') तक।
विनाशकारी पंथ ऐसे विश्वासों और प्रथाओं का प्रचार और प्रचार करते हैं जिन्हें अनुयायियों को पूर्ण सत्य, सांसारिक कानून से ऊपर और मोक्ष, सुख, पूर्णता आदि के लिए अत्यावश्यक बताया जाता है। दुनिया में प्रेम और शांति फैलाने के दिखावटी उद्देश्य के साथ, वे अक्सर एक अत्यंत असहिष्णु 'हम/वे' मानसिकता को बढ़ावा देते हैं। इसका सामान्य परिणाम यह होता है कि पंथ से इतर दुनिया के प्रति संशयपूर्ण दृष्टिकोण और बाहरी लोगों के साथ सतर्क, चालाकीपूर्ण व्यवहार विकसित हो जाता है। विनाशकारी पंथों में, व्यक्तिवाद सामूहिक समूह हितों से दब जाता है। अनुयायियों को अपने व्यक्तित्व को समूह के आदर्शों के अनुरूप ढालने के लिए राजी किया जाता है। . . . अक्सर व्यक्तिगत पूर्णता की अपेक्षा समूह का हित ही निर्णायक कारक होता है।
पंथ सूक्ष्म मानसिक नियंत्रण और विचार सुधार तकनीकों में लिप्त होने के लिए जाने जाते हैं; पीड़ित स्वेच्छा से शामिल होता है और किसी भी प्रकार के दबाव की आवश्यकता नहीं होती; उसे धोखा दिया जाता है और हेरफेर किया जाता है, लेकिन धमकाया या डराया नहीं जाता। वह एक समूह में शामिल हो जाता है और दूसरों के व्यवहार की नकल करना शुरू कर देता है। जीन रिची ने अपने शोध जिसका शीर्षक है, "पंथों की गुप्त दुनिया" में बताया है कि एक नए सदस्य पर यह प्रक्रिया किस प्रकार सावधानीपूर्वक संचालित की जाती है:
जब कोई व्यक्ति किसी पंथ में शामिल होता है, तो नए सदस्य को बहुत स्नेह और स्वीकृति दी जाती है, जिसे 'लव-बॉम्बिंग' कहा जाता है। इस आकर्षक समूह की स्वीकृति बनाए रखने के लिए, पीड़ित को नियमों का पालन करना पड़ता है। यदि वह ऐसा नहीं करता, तो 'स्नेह' वापस ले लिया जाता है... समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो और टेलीविजन या तो प्रतिबंधित कर दिए जाते हैं या उनकी इतनी निंदा की जाती है कि सदस्य उन्हें अनदेखा या अस्वीकार कर देते हैं। इसके बजाय, सदस्यों को पंथ साहित्य, टेप, व्याख्यान और अध्ययन कक्षाओं के संपर्क में लाया जाता है। अक्सर, जानकारी पूरी तरह से झूठी होती है: उदाहरण के लिए, 'गरीबों के लिए' या 'वंचित बच्चों के लिए' धन इकट्ठा करने वाला पंथ सदस्य वास्तव में यह मान सकता है कि पैसा वहीं जा रहा है... विशिष्टता एक

महत्वपूर्ण आकर्षण है। सदस्यों को बताया जाता है कि केवल वही बचाए जाएँगे, केवल वही वास्तविक सत्य जानते हैं, केवल उन्हीं को ईश्वर की स्वीकृति प्राप्त है। यह उनके द्वारा किए गए हर काम को न्यायसंगत बना देता है - लोगों को धोखा देकर अपना पैसा लेना ठीक है क्योंकि लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कोई भी तरीका जायज़ है, अपराध करना, वेश्यावृत्ति करना या समूह के नेता की कोई भी माँग पूरी करना ठीक है। यदि शुरुआत में नए सदस्य तर्कसंगत आलोचना करते हैं या पंथ की शिक्षाओं पर सवाल उठाते हैं, तो उन्हें थोड़ा और इंतजार करने के लिए कहा जाता है और कहा जाता है कि सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। 'यह एक अच्छा प्रश्न है; अगले व्याख्यान में इसका उत्तर दिया जाएगा' एक आम जवाब है, जिससे प्रश्नकर्ता को यह आभास होता है कि उसके प्रश्नों का उत्तर मिल गया है, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं होता। या फिर, उसे बताया जाता है कि उसका संदेह शैतान से प्रेरित है, या सच्चा अनुयायी बनने के लिए उसे तर्क को त्यागना होगा - इस प्रकार उसे प्रश्न पूछने के लिए हीन भावना का अनुभव होता है।
कई पुजारी नए सदस्य को बहला-फुसलाकर उसके कुकर्मों को स्वीकार करवा लेते हैं, यह कहकर कि ऐसा करने पर ही उसका उद्धार होगा; एक बार जब वह ऐसा कर लेता है, तो उस पर दबाव डाला जाता है कि वह 'पवित्र उद्देश्य' में योगदान देकर संघर्ष में भाग लेकर पूरी तरह से पंथ को अपना ले। धीरे-धीरे, वह स्वयं ही दरिद्रता की ओर बढ़ने लगता है, जब तक कि एक दिन उसकी सारी गरिमा छिन नहीं जाती, उस समय वह सचमुच एक कठपुतली मात्र रह जाता है।

[redacted]

Dinesh Hukmani

[redacted]

प्रमुख एक और शाखा बनाता है जिसे 'हब' कहा जाता है, जो गुटों और मॉड्यूल के बीच मध्यस्थ का काम करता है। गुटों और हब की संख्या हर ऑपरेशन में अलग-अलग होती है।
आतंकवादी इस अभियान के दौरान अपना अस्तित्व कैसे बनाए रख सकते हैं? मुंबई हमले जैसे मिशनों पर भेजे गए फिदायीन हमलावरों को मॉर्फिन ले जाने का निर्देश दिया जाता है। मॉर्फिन को आसानी से शरीर में इंजेक्ट किया जा सकता है और इसका उपयोग अक्सर बेहोशी की दवा और दर्द निवारक के रूप में किया जाता है। संभव है कि आतंकवादी बुरी तरह घायल होने के बावजूद केवल मॉर्फिन के कारण ही लड़ना जारी रख सके। मॉर्फिन लेने के बाद व्यक्ति को चक्कर आने लगते हैं और इससे उसे शांत रहने में मदद मिलती है। इन आतंकी रंगरूटों को नशीली दवाओं के उपयोग का प्रशिक्षण देने के लिए एक अलग सत्र आयोजित किया जाता है। उन्हें नशीली दवा लेने का तरीका, सभी आवश्यक सावधानियां और दवा लेने की सही मात्रा सिखाई जाती है।
ताज होटल की लड़ाई में शामिल एक एनएसजी कमांडो ने बताया कि ऑपरेशन के दूसरे दिन एक ग्रेनेड विस्फोट में एक आतंकवादी की दो उंगलियां कट गई थीं। इसके बावजूद वह लड़ता रहा, जिससे शक हुआ कि वे किसी तरह के नशीले पदार्थों का सेवन कर रहे थे। ताज होटल में एनएसजी कमांडो द्वारा मारे गए एक अन्य आतंकवादी की जांघ में गंभीर गोली के घाव थे। इन घावों के कम से कम छह घंटे बाद हुई उसकी मौत कमांडो की गोलियों की बौछार से हुई। आतंकवादी जांघ से अत्यधिक खून बहने के बावजूद लड़ता रहा। यह केवल उसकी लड़ने की प्रेरणा नहीं हो सकती, इस बात की प्रबल संभावना है कि उसे किसी शक्तिशाली दर्द निवारक दवा का सेवन कराया गया था, जिससे वह गंभीर चोटों के बावजूद लड़ता रहा।
संचार
आतंकवादियों ने संचार के लिए सैटेलाइट फोन और मोबाइल फोन का इस्तेमाल किया। सैटेलाइट फोन, जिसे आमतौर पर SAT फोन के नाम से जाना जाता है, एक ऐसा मोबाइल फोन है जो कॉल करने या प्राप्त करने के लिए लैंडलाइन या सेलुलर प्रसारण टावरों के बजाय उपग्रहों का उपयोग करता है। सैटेलाइट फोन से कॉल करने की लागत 7 रुपये से 99 रुपये प्रति मिनट के बीच होती है। हालांकि, लैंडलाइन या मोबाइल फोन से सैटेलाइट फोन पर कॉल करना बेहद महंगा होता है और इसकी लागत 149 रुपये से 699 रुपये प्रति मिनट तक होती है। एक सैटेलाइट

फोन से दूसरे सैटेलाइट फोन पर कॉल करने की लागत लगभग 749 रुपये प्रति मिनट होती है, लेकिन आने वाली कॉल मुफ्त होती हैं। SAT फोन मैसेजिंग सेवा भी प्रदान करता है और इसकी दर लगभग 25 रुपये प्रति संदेश है। इन उच्च दरों के बावजूद, मुंबई पर हमला करने वाले दस आतंकवादियों के लिए सैटेलाइट फोन संचार का पसंदीदा माध्यम था। इन आतंकवादियों ने अपने हमले को अंजाम देने के लिए समुद्री मार्ग का इस्तेमाल किया। अपने साथियों से संवाद करने का एकमात्र तरीका सैटेलाइट फोन ही था, क्योंकि समुद्र में सेलुलर नेटवर्क काम नहीं करते। सैटेलाइट फोन का उपयोग केवल तब किया जाता था जब ये लोग खुले समुद्र में यात्रा कर रहे होते थे। मुंबई में उतरने के बाद आतंकवादियों ने मोबाइल फोन का इस्तेमाल शुरू कर दिया। इन मोबाइल फोनों के सिम कार्ड पश्चिम बंगाल से जाली दस्तावेजों के साथ खरीदे गए थे।
पाकिस्तान में मौजूद आतंकी संचालक पूरे हमले के दौरान मुंबई में हमलावरों के संपर्क में थे... यहां तक कि जब सुरक्षा बल आतंकवादियों से भिड़ रहे थे, तब भी वे मोबाइल फोन के जरिए पाकिस्तान में मौजूद अपने संचालकों से संपर्क में थे। उन्होंने अपने कुछ बंधकों और पीड़ितों के मोबाइल फोन का भी इस्तेमाल किया।
मुंबई पुलिस ने दो मोबाइल फोन नंबरों की पुष्टि की है जो यूसुफ मुज्जमिल के हैं, जिसे लश्कर-ए-तैबा का एक शीर्ष नेता माना जाता है। इन नंबरों का इस्तेमाल मुंबई में कुछ आतंकवादियों से संपर्क करने के लिए किया जाता था। ये दोनों नंबर फहीम अंसारी द्वारा अपने हैंडलर्स के बताए गए नंबरों से मेल खाते हैं, जिससे संकेत मिलता है कि अंसारी और हमले को अंजाम देने वाले दस आतंकवादियों को पाकिस्तान में एक ही लोगों द्वारा प्रशिक्षित और निर्देशित किया गया था। आतंकवादियों से बरामद मोबाइल फोनों के आईएमईआई नंबरों से यह साबित करने में मदद मिली है कि निर्माताओं ने इन फोनों को पाकिस्तान भेजा था।
जैसे ही आतंकवादी अपने घातक कृत्य को अंजाम देने में जुट गए, उनके आकाओं ने, जो दोनों होटलों और नरीमन हाउस में हो रही कार्रवाई की निगरानी कर रहे थे, आतंकवादियों को उन स्थानों पर नज़र रखने के लिए कहा जहाँ से सुरक्षाकर्मी और कमांडो आ सकते थे। पंजाबी में बात करते हुए, गिरोह के सरगनाओं ने उन्हें आगे बढ़ रहे कमांडो पर ग्रेनेड फेंकने और ऐसी जगहों पर तैनात होने के लिए कहा जहाँ से उन पर स्पष्ट निशाना साधा जा सके।

‘आग लगाओ!’ (जगह को आग लगा दो!) - ये निर्देश तीनों जगहों पर आतंकवादियों को उनके सरगनाओं द्वारा बार-बार दिए जा रहे थे, जिनका मकसद ज्यादा से ज्यादा लोगों को मार गिराना और भारतीय सुरक्षा बलों का ध्यान भटकाना था। पाकिस्तान स्थित हैंडलर्स ने नरीमन हाउस में आतंकवादियों को इजरायलियों को मारने का निर्देश दिया। आतंकवादियों को दोनों होटलों में मुसलमानों को बख्शने के लिए भी कहा गया था।
वॉइस इंटरसेप्ट से आतंकी नेताओं की शांत क्रूरता का पता चलता है, जो आतंकवादियों के साथ कुछ हल्की-फुल्की बातचीत करने में सक्षम थे। नरीमन हाउस में मौजूद एक आतंकवादी इमरान बाबर ने एक भारतीय समाचार चैनल को इंटरव्यू दिया। हैंडलर खुश लग रहा था कि कुछ अंग्रेजी शब्दों का इस्तेमाल किया गया था और उसने दूसरों से पूछा, 'तुम भी इंटरव्यू देना चाहते हो?' (क्या तुम भी इंटरव्यू देना चाहते हो?) ये बातचीत जल्द ही गंभीर बातचीत में बदल गई। 'फौज आ रही है, कवर लो।' (सेना आ रही है, कवर लो।) कमांडरों में घबराहट का कोई संकेत नहीं था, वे आश्वस्त लग रहे थे कि एनएसजी आतंकवादियों को खदेड़ने में सफल नहीं होगी। उन्होंने आतंकवादियों को खजूर खाने, न थकने और बारी-बारी से सोने का निर्देश दिया। 'थकना नहीं है' (थकना नहीं है), आतंकवादियों को दिए गए निर्देशों में से एक था। लश्कर-ए-तैबा के नेता जानते थे कि यह दस्ता उनके लिए जान देने को तैयार है।
जब दस्ते के एक सदस्य ने बताया कि वह बुरी तरह घायल हो गया है, तो हैंडलर बिल्कुल भी विचलित नहीं हुआ। पाकिस्तान से शांत स्वर में आवाज़ आई, “आखिरी वक्त आ गया है, नमाज अदा करो।” उसने यह भी पूछा, “क्या कोई आखिरी पैगाम है?” अबू हमजा, जो लश्कर-ए-तैबा का एक आतंकवादी है और 28 दिसंबर 2005 को बेंगलुरु स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान पर हुए हमले का मुख्य आरोपी है, ने दस्ते को यह कहकर प्रेरित किया कि भारतीय सुरक्षाकर्मियों को आसानी से बेवकूफ बनाया जा सकता है। उसने अपने खुद के अनुभव का उदाहरण देते हुए उन्हें भरोसा दिलाया कि वे हमला करके सुरक्षित घर लौट सकते हैं।
समूह ने हमलों के एक दिन बाद मुंबई से निकलने की योजना बनाई थी। पाकिस्तान में उनके संचालकों ने उनके लिए वापसी का मार्ग भी तैयार कर लिया था और उसे उस जीपीएस डिवाइस में सेव कर लिया था जिसकी मदद से वे मुंबई में दाखिल हुए थे। आतंकवादियों ने शायद इस जोखिम भरे मिशन को इस भरोसे के साथ अंजाम दिया था कि वे हत्याओं से बच निकलेंगे। संचालकों को शायद पता था कि वे वापस नहीं

लौटेंगे, लेकिन उन्हें यह भी पता था कि सुरक्षित वापसी का लालच उनमें से सबसे अनिच्छुक लोगों को भी योजना के अनुसार ऑपरेशन को अंजाम देने के लिए मना लेगा।
तकनीकी रूप से कुशल आतंकवादी
लश्कर-ए-तैबा (LeT) 2002 से ही पीओके के मुज़फ़्फ़राबाद में एक विशेष प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला चला रहा है। इसमें एक समर्पित टीम है जो भविष्य के अभियानों के लिए चयनित लोगों को प्रशिक्षण देती है। उनके उपकरणों में कंप्यूटर, ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (GPS), सैटेलाइट फोन, संचार उपकरण और कई अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण शामिल हैं। यह प्रशिक्षण कई आतंकी रंगरूटों के लिए कठिन होता है।
आतंकवादियों को बम बनाना भी सिखाया जाता है। चलते-फिरते बम बनाने की क्षमता पर विशेष जोर दिया जाता है। चूंकि मिशन पर निकलते समय तैयार बम ले जाना खतरनाक होता है, इसलिए उन्हें कम से कम समय में बम तैयार करना सिखाया जाता है। हथियारों और गोला-बारूद के अलावा, आतंकवादियों को आरडीएक्स या अन्य विस्फोटक, ट्रिगर करने वाले उपकरण और बम बनाने के लिए आवश्यक अतिरिक्त सामान भी ले जाना होता है। आतंकवादियों का मुख्य उद्देश्य ऑपरेशन के अंत में बम विस्फोट करना होता है। इसलिए, बम ज्यादातर मौके पर ही तैयार किए जाते हैं।
आतंकी शिविरों में तकनीकी प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अत्याधुनिक तकनीक के इस्तेमाल से भारतीय जांचकर्ताओं के लिए आतंकी नेटवर्क का पता लगाना मुश्किल हो जाता है। मुंबई हमलों के मामले में, आतंकवादियों ने जीपीएस तकनीक का व्यापक रूप से उपयोग किया क्योंकि वे समुद्र के रास्ते शहर पहुंचे थे। सैटेलाइट फोन के इस्तेमाल से कॉल ट्रैक करना मुश्किल हो जाता है क्योंकि भारतीय जांच एजेंसियों के पास उपयुक्त तकनीक उपलब्ध नहीं है। कड़े कानून बनाने के अलावा, भारतीय खुफिया और कानून प्रवर्तन एजेंसियों के उपकरणों को उन्नत करने के लिए बड़े पैमाने पर धन की आवश्यकता है।
जिम्मेदारी स्वीकार करने वाला ईमेल
लश्कर-ए-तैबा ने पहली बार ईमेल के जरिए धमकी भरे संदेश में हिंदी शब्दों का इस्तेमाल किया था। दक्कन मुजाहिदीन के नाम से भेजा गया यह ईमेल 'deccanmujahideen@gmail.com' आईडी से भेजा गया था। यह ईमेल रूस में बनाए

गए एक खाते से भेजा गया था, लेकिन इसे पाकिस्तान स्थित एक कंप्यूटर के जरिए एक्सेस किया गया था। यह ईमेल खाता 26 नवंबर की शाम को विशेष रूप से हमले की जिम्मेदारी लेने के उद्देश्य से बनाया गया था।
ईमेल के लेखक ने ईमेल को बोलकर लिखवाने के लिए वॉइस रिकग्निशन सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल किया था, जिसने इसे देवनागरी फॉन्ट में टाइप किया। आतंकवादियों ने मूल मास्टर सर्वर की पहचान छिपाने के लिए ईमेल को एक सर्वर से दूसरे सर्वर पर भेजा। 26 नवंबर 2008 के आतंकी हमलों की जिम्मेदारी लेने वाला यह ईमेल सबसे पहले पाकिस्तान स्थित एक कंप्यूटर से भेजा गया था। ईमेल भेजने के लिए इस्तेमाल किए गए इंटरनेट प्रोटोकॉल पतों का विश्लेषण करने पर विशेषज्ञों ने पाया कि दस्तावेज़ भेजने के लिए इस्तेमाल किया गया रूस स्थित ईमेल पता 26 नवंबर की सुबह पाकिस्तान के एक कंप्यूटर से खोला गया था। हालांकि यह ईमेल इंडियन मुजाहिदीन द्वारा किए गए पिछले सिलसिलेवार बम धमाकों के बाद मिले ईमेल की तुलना में थोड़ा हल्का था, लेकिन इसका लहजा और विषयवस्तु पहले भेजे गए 'भारत विरोधी' ईमेल से काफी मिलती-जुलती थी। कुछ मीडिया संस्थानों को भेजे गए दो पन्नों के ईमेल का शीर्षक था, 'चेतावनी नहीं हकीकत'। आतंकवादियों ने क्रिया, प्रतिक्रिया और उदाहरण जैसे कुछ विशिष्ट हिंदी शब्दों का इस्तेमाल किया था।
आतंकवाद के लिए गूगल अर्थ का इस्तेमाल किया गया
गूगल अर्थ सातवां सबसे लोकप्रिय इंटरनेट एप्लिकेशन टूल है, लेकिन आतंकी समूह इसका दुरुपयोग कर रहे हैं ताकि संवेदनशील स्थानों की पहली झलक मिल सके और बिना एक इंच भी हिले-डुले हमले की योजना बनाई जा सके। लश्कर-ए-तैबा के आतंकी फहीम अंसारी को लश्कर के कमांडर कहासा या कहफा ने मुंबई के गूगल अर्थ मैप दिखाए और विशिष्ट लक्ष्यों को इंगित करने के लिए कहा।
मुझे गूगल अर्थ पर मुंबई का नक्शा दिखाया गया। कहासा ने मुझसे मुंबई में जगहों को इंगित करने के लिए कहा, जिन्हें उन्होंने नोट किया और नक्शे पर चिह्नित किया। मुझसे सबसे पहले मेरे निवास स्थान और मेरे ससुराल वालों के मुंबई में निवास स्थान के बारे में पूछा गया। पुलिस आयुक्त और डीजीपी के कार्यालय, गेटवे ऑफ इंडिया, नेवी नगर, कोलाबा, ताज महल होटल, मंत्रालय, वानखेड़े स्टेडियम, रेस कोर्स, चर्चगेट रेलवे स्टेशन, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज भवन, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, कलिना आर्मी गेट और कई अन्य संवेदनशील स्थानों को गूगल अर्थ के नक्शे पर चिह्नित किया गया।

गूगल अर्थ मैप ने शहर का विहंगम दृश्य प्रस्तुत किया, जिसमें वास्तविक तस्वीरों के रूप में क्षेत्र की विस्तृत स्थलाकृति दिखाई गई। एप्लिकेशन में दी गई जानकारी इमारतों, सड़कों और गलियों की पहचान करने में उपयोगी थी। कहासा हवाई अड्डे की दीवार, तार की बाड़ की ऊंचाई और निकटतम इमारत से विमानों और रनवे की स्थिति के बारे में भी जानना चाहते थे। उन्होंने निकटतम इमारत से किसी विमान के टकराने की संभावना के बारे में भी पूछताछ की। कहासा डीजीपी कार्यालय के पास टैक्सियों की उपलब्धता के बारे में भी जानना चाहते थे।
अजमल कसाब ने जांचकर्ताओं को बताया कि उनके समूह को सॉफ्टवेयर का उपयोग करके उनके लक्ष्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई थी।
भारतीय खुफिया एजेंसियों ने बातचीत को इंटरसेप्ट किया था।
भारतीय खुफिया एजेंसियों ने कच्छ के जाखौ में पाकिस्तानी सेना के जवानों और कुछ मछुआरों के बीच हुई बातचीत को इंटरसेप्ट किया था, जिससे आतंकी हमले को रोकने में मदद मिल सकती थी। नवंबर के पहले सप्ताह में कई दिनों तक गुजरात के भुज में की गई इंटरसेप्शन से पता चला कि हथियारों की एक भारी खेप पाकिस्तानी जलक्षेत्र से मुंबई की ओर आ रही थी।
यह बातचीत गुजरात के ओखा जिले के उत्तर में स्थित सर क्रीक से मोबाइल फोन पर की जा रही थी। यह सूचना मुंबई हमले से आठ दिन पहले, 18 नवंबर को रक्षा मंत्रालय को दी गई थी। सर क्रीक में पाकिस्तान और भारत दोनों देशों के मछुआरे अक्सर आते-जाते हैं – इसका विभाजन दोनों देशों के बीच विवाद का विषय है। तटरक्षक अधिकारियों ने पुष्टि की कि उन्हें खुफिया जानकारी मिल गई थी, लेकिन वे हथियारों से लदे जहाज का पता लगाने में असमर्थ रहे।

खंड – V

प्रतिक्रियाएं

विश्व के नेता 26/11 के बारे में बात करते हैं

यूएसए
पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश, 28 नवंबर 2008
सभी अमेरिकियों की ओर से, लौरा और मैं भारत के मुंबई में हुए आतंकवादी हमलों से पीड़ित लोगों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं। हम उन सभी लोगों के लिए शोक व्यक्त करते हैं जिन्होंने अपनी जान गंवाई, जिनमें अमेरिकी नागरिक भी शामिल हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि घायल जल्द से जल्द स्वस्थ हो जाएं। हम भारत को इन हमलों की जांच करने, दोषियों को न्याय के कटघरे में लाने और उसकी लोकतांत्रिक जीवनशैली को बनाए रखने में संयुक्त राज्य अमेरिका का पूर्ण समर्थन देने का वादा करते हैं।... इस सप्ताह हमला करने वाले हत्यारे क्रूर और हिंसक हैं, लेकिन आतंक की जीत नहीं होगी। भारत के लोग दृढ़ हैं। भारत के लोग मजबूत हैं। उन्होंने एक जीवंत, बहुजातीय लोकतंत्र का निर्माण किया है जो इस चुनौती का सामना कर सकता है। उनकी वित्तीय राजधानी मुंबई वाणिज्य और समृद्धि का केंद्र बनी रहेगी। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा का बयान
राष्ट्रीय सुरक्षा प्रमुख प्रवक्ता ब्रुक एंडरसन ने कहा, “राष्ट्रपति- निर्वाचित ओबामा मुंबई में हुए आज के आतंकवादी हमलों की कड़ी निंदा करते हैं और पीड़ितों, उनके परिवारों और भारत की जनता के प्रति अपनी संवेदना और प्रार्थना व्यक्त करते हैं। निर्दोष नागरिकों पर हुए ये समन्वित हमले आतंकवाद के गंभीर और तत्काल खतरे को दर्शाते हैं। अमेरिका को आतंकवादी नेटवर्क को जड़ से उखाड़ने और नष्ट करने के लिए भारत और दुनिया भर के देशों के साथ अपनी साझेदारी को मजबूत करना जारी रखना चाहिए। हम भारत की जनता के साथ खड़े हैं, जिनका लोकतंत्र उस नफरत भरी विचारधारा से कहीं अधिक मजबूत साबित होगा जिसके कारण ये हमले हुए।”
कनाडा
कनाडा के प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर

कनाडा भारत के मुंबई में हुए घृणित और कायरतापूर्ण हमलों की कड़ी निंदा करता है। सभी कनाडाई नागरिकों की ओर से, मैं इन जघन्य हिंसात्मक कृत्यों में मारे गए और घायल हुए लोगों के परिवारों और परिजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदना और शोक व्यक्त करता हूँ, जिनमें कनाडा के कई लोग भी शामिल हैं। इन हमलों में भारत और दुनिया भर के लोगों को निशाना बनाया गया था। ये उन मूल्यों पर हमले थे जो हमारे लिए अत्यंत प्रिय हैं, और हम आपके दुख में आपके साथ हैं।
एक साथी लोकतंत्र के रूप में, कनाडा आतंकवाद के खिलाफ आपकी लड़ाई में भारत सरकार और जनता के साथ मजबूती से खड़ा है और जब आप दृढ़ संकल्प के साथ किसी देश के सबसे बुरे दौर में से एक का सामना कर रहे हैं, तो हम आपको व्यवस्था बहाल करने और निर्दोष लोगों के खिलाफ इन कायरतापूर्ण हमलों के लिए जिम्मेदार लोगों को न्याय के कटघरे में लाने के आपके प्रयासों में अपना समर्थन प्रदान करते हैं।
यूके
ब्रिटिश प्रधानमंत्री गॉर्डन ब्राउन
मुंबई में हुए इन घृणित हमलों का करारा जवाब दिया जाएगा। मैंने प्रधानमंत्री सिंह को संदेश भेजा है कि ब्रिटेन उनकी सरकार के साथ मजबूती से खड़ा है और इस जवाबी कार्रवाई में हर संभव सहायता प्रदान करेगा। क्षेत्र में ब्रिटिश नागरिकों को हर संभव सुरक्षा प्रदान करने के लिए तत्काल कार्रवाई जारी है।
जर्मनी
जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल
आपके देश में हुए आतंकवादी हमलों की भयावह खबर सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। मैं न केवल मृतकों की दुखद स्थिति से, बल्कि आतंकवादियों द्वारा बंधक बनाए गए लोगों की भयावह स्थिति से भी बेहद दुखी हूँ। संघीय सरकार इन आपराधिक कृत्यों की कड़ी निंदा करती है। मैं आपको और आपके देश की जनता को अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूँ। इस कठिन समय में हमारी संवेदनाएं पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ हैं। मैं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूँ।
फ्रांस
फ्रांस के राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी

फ्रांस के राष्ट्रपति ने मुंबई में हुए घातक हमलों की निंदा करते हुए खुफिया सहायता की पेशकश की। शनिवार को कतर की राजधानी दोहा में शुरू हुए संयुक्त राष्ट्र प्रायोजित विकास वित्तपोषण पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान सरकोजी ने निंदा व्यक्त की और खुफिया सहायता की पेशकश की। हमलों की कड़ी निंदा करते हुए सरकोजी ने उन्हें 'शब्द के सबसे सटीक अर्थों में बर्बरता' बताया और जोर देकर कहा कि 'कोई भी कारण इसे स्वीकार्य नहीं बना सकता।'
जापान
जापानी प्रधानमंत्री तारो आसो
‘इस तरह का आतंकवाद अक्षम्य, बेहद घृणित और जघन्य है। मैं इस पर गहरा आक्रोश व्यक्त करता हूं और इसकी कड़ी निंदा करता हूं। जापान आतंकवाद के खिलाफ लड़ रहे भारतीय लोगों के साथ है और हम भारतीय सरकार के साथ सहयोग करेंगे।’
पाकिस्तान
प्रधानमंत्री यूसुफ रजा गिलानी की ओर से जारी बयान
पाकिस्तानी सरकार ने एक बयान में कहा, 'प्रधानमंत्री यूसुफ रजा गिलानी ने मुंबई में हुई हिंसा की घटनाओं की कड़ी निंदा करते हुए बहुमूल्य जिंदगियों के नुकसान पर गहरा दुख व्यक्त किया है।'
अफगानिस्तान
अफ़गान राष्ट्रपति हामिद करज़ई
'आतंकवाद एक अत्याचारी शत्रु है जो पूरी मानवता के लिए खतरा है और इसने दक्षिण एशिया क्षेत्र को भी चुनौती के रूप में ले लिया है।'
श्रीलंका
Sri Lankan president Mahinda Rajapaksa
भारत की व्यापारिक और वित्तीय राजधानी मुंबई में प्रमुख होटलों, अस्पतालों और सार्वजनिक परिवहन पर हुए हमले यह दर्शाते हैं कि आतंकवादी भारत में लोकतंत्र को अस्थिर करने के उद्देश्य से भारतीय अर्थव्यवस्था के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र को निशाना बना रहे हैं।
बांग्लादेश
बांग्लादेश के राष्ट्रपति इयाजुद्दीन अहमद ने अपने बयान में कहा कि वे भारत के दुख की इस घड़ी में उसके साथ मजबूती से खड़े हैं। सैन्य समर्थित

कार्यवाहक सरकार के मुख्य सलाहकार फखरुद्दीन अहमद ने एक अन्य संदेश में शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना की। उन्होंने आगे कहा, 'मैं इसे आतंकवाद का एक निरर्थक कृत्य मानता हूं और इसकी कड़ी निंदा करता हूं।' बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के विदेश मामलों के सलाहकार इफ्तिखार अहमद चौधरी ने पड़ोसी देश में हुए नरसंहार की निंदा करते हुए एक बयान में कहा, 'मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि आतंकवाद का कोई उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता।' ऑस्ट्रेलिया
ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री केविन रूड
रुड ने कहा, ‘जिस भी समूह ने यह हमला किया है, वे कायर हैं, घोर कायर और हत्यारे हैं। भारत की स्थिरता, शांति और लोकतंत्र पर यह कायरतापूर्ण हमला हम सभी को याद दिलाता है कि अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद अभी पराजित नहीं हुआ है, और हम सभी को सतर्क रहना चाहिए। हम भारत को इस समय हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर हैं।’
रूस
रूसी राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव
मेदवेदेव ने अनुवादक के माध्यम से कहा, 'हम जानमाल के नुकसान को लेकर चिंतित हैं और मानते हैं कि इस प्रकार के आतंकवादी कृत्य संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए हानिकारक हैं और मानवता के लिए एक चुनौती हैं।'
चीन
चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ ने मनमोहन सिंह को शोक संदेश भेजा और हमलों की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि चीनी सरकार किसी भी रूप में आतंकवाद का कड़ा विरोध करती है। वेन ने चीनी सरकार और अपनी ओर से हमलों के पीड़ितों के प्रति गहरा दुख व्यक्त किया और हिंसा में घायल हुए लोगों और उनके परिजनों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त की।
कजाखस्तान
कजाकिस्तान के राष्ट्रपति नज़रबायेव
मुंबई में हुए आतंकवादी हमलों में शांतिपूर्ण नागरिकों की मृत्यु की खबर सुनकर मुझे गहरा दुख हुआ है। इन भयावह कृत्यों के लिए मैं अपराधियों को पूरी तरह से दोषी ठहराता हूं और कजाकिस्तान राष्ट्र की ओर से तथा अपनी ओर

से, पीड़ितों के परिवारों और भारत की जनता के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं।
सऊदी अरब
सऊदी अरब ने भारत की व्यापारिक राजधानी मुंबई में हुए आतंकवादी हमलों की निंदा की और भारतीय सरकार और लोगों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की।
एक आधिकारिक सूत्र ने कहा, 'मुंबई में हुए आतंकवादी विस्फोटों पर ब्रिटेन ने आक्रोश व्यक्त किया है और इस आपराधिक कृत्य की कड़ी निंदा करता है।' यूएई
यूएई इस क्रूर और भयावह अपराध की कड़ी निंदा करता है और भारत सरकार के साथ पूर्ण एकजुटता व्यक्त करता है। डब्ल्यूएएम समाचार एजेंसी ने अरब संघ के विदेश मंत्री शेख अब्दुल्ला बिन जायद अल नाहयान के हवाले से एक बयान में कहा, "यूए इस आपराधिक कृत्य का मुकाबला करने और इसे हराने में भारत सरकार के साथ खड़ा है।" शेख अब्दुल्ला ने पीड़ितों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की और हमलों और आपराधिक कृत्यों में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।
मिस्र
मिस्र के राष्ट्रपति होस्नी मुबारक ने हमलों की निंदा की और कहा कि उनका देश 'आतंकवाद का मुकाबला करने में नई दिल्ली के साथ खड़ा है,' राज्य समाचार एजेंसी एमईएनए ने रिपोर्ट किया।
संयुक्त राष्ट्र
संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की-मून
बान ने एक बयान में कहा, 'इस तरह की हिंसा बिल्कुल अस्वीकार्य है। महासचिव इस बात पर फिर से जोर देते हैं कि कोई भी कारण या शिकायत नागरिकों पर अंधाधुंध हमलों को उचित नहीं ठहरा सकती।'
ओआईसी
इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) ने हमलों की निंदा करते हुए कहा कि हिंसा का कोई औचित्य नहीं है। ओआईसी के एक प्रवक्ता ने यहां संगठन के मुख्यालय में कहा, 'हिंसा के ये कृत्य सभी मानवीय मूल्यों के विपरीत हैं और इन्हें किसी भी तरह से उचित नहीं ठहराया जा सकता।'

[redacted] [redacted][1]

[redacted] [redacted] [redacted] [

गई जानकारी की पुष्टि की गई और वह सही पाई गई। अपहृत नाव कुबेर को उन सबूतों के साथ बरामद किया गया जो कसाब ने उन्हें बताए थे। गिरफ्तारी के कुछ ही घंटों के भीतर, उसने अपने बारे में और अपने पाकिस्तानी सहयोगियों के बारे में जानकारी भारतीय पुलिस को दे दी, जिसने इसे मीडिया और सरकार के साथ साझा किया।
भारतीय प्रेस और पुलिस ने कसाब के लगभग सत्य बयान को स्वीकार कर लिया, और करकरे, कामते और सालस्कर की मौत की खबर फैलने के तुरंत बाद, विभिन्न स्थानों पर मौजूद आतंकवादियों और पाकिस्तान में उनके संचालकों के बीच मोबाइल पर हुई बातचीत को सुनना शुरू कर दिया था। परिणामस्वरूप, उपलब्ध सबूतों के आधार पर वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह दल पाकिस्तान से भेजा गया था।
भारतीयों के आश्चर्य के बीच, पत्रकारों के एक छोटे समूह को छोड़कर, पाकिस्तानी मीडिया ने देशभक्ति के जोश से भरे, बुद्धिहीन और उग्र बचाव के साथ प्रकाशन शुरू किया। क्या पाकिस्तानी मीडिया का सामूहिक बुद्धि स्तर वास्तव में कम है, या रंगे हाथों पकड़े जाने के बाद पाकिस्तान द्वारा अपनाए गए आक्रामक रुख का यह एक हिस्सा था?
क्या भारत से यह अपेक्षा की जा रही थी कि वह कुबेर जहाज पर मिली सामग्री, रिकॉर्डों और कासाब द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर आगे बढ़ने से पहले अदालत के फैसले का इंतजार करे?
भारतीय मीडिया ने जिस तेज़ी से पाकिस्तान पर आरोप लगाए, उस पर काफी चर्चा हुई है। उन्हीं 'मित्रों' ने भारत को पाकिस्तानी मानसिकता को ठेस पहुँचाने और ऐसी स्थिति पैदा करने के बारे में भी चेतावनी दी थी जो बढ़ सकती है और विश्व शांति के लिए हानिकारक हो सकती है। हालांकि, 22 दिसंबर 2008 को 111 राजदूतों के साथ आयोजित मिशन प्रमुखों के सम्मेलन में, भारतीय विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी ने इन देशों से पाकिस्तान पर और अधिक दबाव डालने की मांग की ताकि वह सच्चाई सामने लाए। एक कड़े शब्दों में चेतावनी देते हुए, मुखर्जी ने कहा, 'पाकिस्तान में मौजूद आतंकवादी ढांचा पूरी दुनिया की शांति और सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा आतंकवादी खतरा है।' ये कड़े शब्द स्टीफन श्वार्ट्ज और इरफान अल-अलावी द्वारा पाकिस्तान की तुलना 'बिना ब्रेक वाली बस' से करने या मैडलीन अलब्राइट की इस टिप्पणी से कहीं आगे जाते हैं कि पाकिस्तान 'एक अंतरराष्ट्रीय सिरदर्द' है।

वही पुराना नाटक चलता रहता है – भारत पाकिस्तान को सबूत पेश करता है (याद कीजिए एल.के. आडवाणी ने दाऊद इब्राहिम के कराची स्थित आवास के बारे में परवेज़ मुशर्रफ को कितने सबूत दिए थे?), पाकिस्तान इस पर आंखें मूंद लेता है और इसकी वैधता को नकार देता है; फिर दुनिया दखल देती है, शांति और सद्भावना की बातें करती है, दो परमाणु संपन्न देशों के बीच एक भयानक युद्ध को रोकने की कोशिश करती है, लेकिन समय के साथ ये सब फीका पड़ जाता है, और कुछ ही महीनों में दोनों देश फिर से हाथ मिलाते हैं, टीवी कैमरों के सामने मुस्कुराते हैं, फिर से शांति की बातें करते हैं और बस और हवाई मार्ग शुरू कर देते हैं।
लेकिन इस बार एक आतंकवादी, कसाब, जिंदा पकड़ा गया है और उसका बयान स्पष्ट है। वह दुनिया को घिनौना सच बताता है कि उनके और उनके नेताओं का मकसद भारत जाकर सिर्फ 200 नहीं, बल्कि 5,000 लोगों की जान लेना था। कसाब के षडयंत्र में नाम, स्थान, तारीखें और तथ्य साफ-साफ लिखे हैं। यह सुनी-सुनाई बात या परिस्थितिजन्य सबूत नहीं है, यह लिखित सत्य है, दस हत्यारों में से एक का कबूलनामा है, जो पाकिस्तान के सत्ता के भूखे और ईर्ष्यालु कट्टरपंथियों में से एक गुमराह इंसान था। इन लोगों को इंसानी जिंदगियों, संपत्ति और संस्थानों को तबाह करने और भारत में मौजूद शांति और सुव्यवस्था को नष्ट करने के लिए भेजा गया था। अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित फरीदकोट जिले का पाकिस्तानी आतंकवादी न केवल भारतीय अधिकारियों के साथ, बल्कि एफबीआई, मोसाद और स्कॉटलैंड यार्ड के साथ और उनके माध्यम से पूरी दुनिया के साथ अपना सच साझा कर रहा है, और अपने कबूलनामे से वह कई इस्लामी पाकिस्तानी लोगों के मन में घर कर चुकी कुरूपता, ईर्ष्या और जलन की तस्वीर पर प्रकाश डालता है।
संक्षेप में कहें तो, उसने अपने राज़ खोलते हुए दूसरों के भी राज़ खोल दिए हैं। कसाब से मिली प्रत्यक्ष जानकारी न केवल उसे दोषी ठहराने के लिए पर्याप्त है, बल्कि उसके साथ-साथ सरकार की अवैध प्रॉक्सी शाखा, लश्कर-ए-तैबा के अन्य सदस्यों को भी दोषी ठहराने के लिए पर्याप्त है। इससे सरकार की वैध शाखा, आईएसआई भी फंसती है। कसाब द्वारा स्वीकार किया गया अपराध 300 पृष्ठों की पुस्तक, 'एन इडियट्स गाइड टू पाकिस्तानी टेररिज्म' (नवंबर 2008) के लिए पर्याप्त सामग्री है, जिसे किसने लिखा है?

कसाब ने आगे खुलासा किया है कि उसे आखिरी सांस तक हत्या करने का निर्देश दिया गया था (इयान गैलाघर, द डेली मेल), और कसाब के मरने का नाटक करने के कारण ही वह बच पाया है। एक बहादुर पाकिस्तानी कट्टरपंथी की तरह मौत का सामना करने के बजाय, कसाब ने नायर अस्पताल के मेडिकल स्टाफ से उसे जीवित रखने की गुहार लगाई। उसने अनुरोध किया कि वह मरना नहीं चाहता, बल्कि उसे सलाइन चढ़ाया जाए। गैलाघर आगे बताते हैं कि कसाब और उसके नौ अन्य साथियों को उनके सरगना ने 'गोरों, विशेषकर अमेरिकियों और अंग्रेजों को निशाना बनाने' का निर्देश दिया था। इससे इस झूठ का पाखंड उजागर होता है कि कश्मीर वह मुद्दा था जिसे वे इस हमले के माध्यम से उजागर करना चाहते थे या भारत में दुर्व्यवहार किए गए मुसलमानों का कल्याण उनकी प्राथमिक चिंता थी। लेकिन यह सच है कि 1989 में जब लश्कर-ए-तैबा का गठन हुआ था, तब उसने कश्मीर को अपना मुख्य केंद्र बनाया था। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में महत्वाकांक्षी लश्कर-ए-तैबा ने अपना दायरा बढ़ाकर दुनिया के अन्य समृद्ध देशों को भी शामिल कर लिया है। लियोपोल्ड कैफे और नरीमन हाउस को निशाना बनाना इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि वे धनी और मध्यम वर्ग के एंग्लो- सैक्सन पर्यटकों और व्यापारियों को निशाना बना रहे थे, जिनमें यहूदी उनके प्रमुख निशाने थे। धनी अमेरिकी, यूरोपीय आदि से आबाद इन दो पांच सितारा होटलों को मुंबई की एक अच्छे व्यापारिक और पर्यटन स्थल के रूप में लोकप्रियता को कम करने के लिए निशाना बनाया गया था। नरीमन हाउस और लियोपोल्ड कैफे को चुनकर, वे दुनिया को आतंक का संदेश दे रहे थे, उन लक्ष्यों के माध्यम से जिन्हें वे 'धर्मयुद्ध-ज़ायोनी-हिंदू' गठजोड़ का प्रतीक मानते थे।
इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि इस ऑपरेशन में अल-कायदा किसी न किसी रूप में शामिल है। ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूशन के ब्रूस रीडेल ने अमेरिका में 9/11 के बाद अल-कायदा के संबंध का पता लगाया था, और भारत में 26/11 की घटना से भी अल-कायदा का संबंध जुड़ता जा रहा है।
जैसे-जैसे 26/11 की साजिश का खुलासा हुआ, यह पता चला कि दस हमलावर अट्ठाईस वर्ष से कम आयु के थे, जिनमें से कम से कम नौ पाकिस्तान के उग्र स्वभाव वाले राज्य पंजाब से थे।
हमलों के बाद, उनके प्रचारकों ने भारत-विरोधी अभियान शुरू कर दिए।
पाकिस्तानी टीवी चैनलों के मेहमान भगवा और लाल रंग की पट्टियों से पूरी

[illegible]
Zaid Hamid huffed and puffed during a talk show on Pakistan’s TV channel News One: ‘Inki shaklen Hinduonwali hain, jis zabaan mein guftagoo kar rahein hain, wo zabaan koi Pakistani istemaal nahin karta hai’ (They have Hindu faces. The language they are employing, no Pakistani uses this lingo). In a hurry to make a fool of himself, he called the Indians fools, ‘9/11 jo Americans ne kiya tha usko bahut khoobsurat camouflage kiya tha. Unhone media mein perception management bahut achha kiya. Indians ne wahi game repeat karne ki koshish ki, lekin akal to hai nahin. In ahmakon ne complete disaster kiya isko handle karne mein.’ (9/11 was caused by Americans, but they camouflaged (sic) the 9/11 attack perfectly. They managed the media very well. Indians tried to play the same game, but since they are short on intelligence, these idiots made a complete disaster of it.)
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

इस संकट के दौरान सबसे चौंकाने वाली बात यह रही कि पाकिस्तान ने कसाब के कबूलनामे और उसके पिता द्वारा उसे अपना बेटा बताने जैसे अकाट्य सबूतों के बावजूद भी दृढ़ता से इनकार किया। इसी तरह, फरीदकोट गांव के लोगों द्वारा कसाब को अपने बीच पले-बढ़े लड़के के रूप में पहचानने की बात को भी पाकिस्तान ने मानने से इनकार कर दिया। राष्ट्रपति आसिफ जरदारी अपनी बात पर अड़े रहे और अधिक सबूतों की मांग करते रहे। एक ब्रिटिश अखबार द्वारा कसाब के माता-पिता के चुनाव कार्डों के सीरियल नंबर प्रकाशित करने के कई दिनों बाद भी (पाकिस्तानी सरकार ने शुरू में कसाब के माता-पिता के अस्तित्व से भी इनकार किया था), जरदारी टस से मस नहीं हुए। कुबेर से मिले सबूतों से भी सभी दस आतंकवादियों की राष्ट्रीयता स्पष्ट रूप से साबित हो गई थी।
परिणामस्वरूप, पाकिस्तानी खंडन दिखने में जितना खतरनाक लगता है, उससे कहीं अधिक भयावह है – यह उदार और लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली के साथ पाकिस्तान के स्वस्थ लेकिन संक्षिप्त जुड़ाव के अंत का संकेत देता है। यह इस बात का भी संकेत है कि पाकिस्तान एक खतरनाक और जोखिम भरे रास्ते पर अग्रसर है।

पाकिस्तान की एक विवेकशील आवाज़ – इरफ़ान हुसैन

इरफ़ान हुसैन ने मुंबई के उन अंधकारमय दिनों में आवाज़ उठाई जब जीवन भयावह रूप ले चुका था। उन्होंने खड़े होकर नील नदी के इस पार सबसे समझदार आवाज़ के रूप में अपनी पहचान बनाई। उन्होंने मुझे अपना लेख यहाँ प्रकाशित करने की अनुमति दी है। पहला लेख पूर्ण रूप से है, उसके बाद दो अन्य विचारोत्तेजक लेखों के अंश दिए गए हैं। ये सभी संपादकीय लेख पाकिस्तान के प्रमुख समाचार पत्र डॉन में प्रकाशित हुए थे।

सत्य का सामना करना (इरफ़ान हुसैन द्वारा) मेरे इस एकांत स्वर्ग में भी दूर-दराज की आपदाओं की खबरें मुझ तक पहुँच रही हैं – श्रीलंका के रेतीले समुद्र तट पर लहरों के टकराने की लगातार आवाज़ के बीच, कई समाचार चैनलों ने मुझे मुंबई पर हुए भयावह हमलों के बारे में बताया। मेरा इंटरनेट कनेक्शन अनियमित और धीमा है, फिर भी मुझे ईमेल की बाढ़ सी आ गई है, जिनमें मुझसे इस ताजा अत्याचार पर मेरी राय पूछी गई है। पिछले कुछ वर्षों में, मैंने चार महाद्वीपों के कई देशों की यात्रा की है। मैं जहाँ भी जाता हूँ, मुझसे पूछा जाता है कि पाकिस्तान अब इस्लामी चरमपंथ और आतंकवाद का केंद्र क्यों बन गया है, और लगातार सरकारों ने इस बुराई को पनपने और बढ़ने की अनुमति क्यों दी है। एक पाकिस्तानी होने के नाते, इस तरह के सवाल का सामना करना स्वाभाविक रूप से शर्मनाक है, लेकिन मैं समझ सकता हूँ कि हर जगह लोग चिंतित क्यों हैं। लगभग हर इस्लामी आतंकवादी साजिश में, चाहे वह सफल हो या न हो, एक पाकिस्तानी पहलू जरूर होता है। अक्सर, विदेशी आतंकवादियों को आदिवासी क्षेत्रों में बने शिविरों में प्रशिक्षण दिया जाता है; कुछ को मदरसों में बहला-फुसलाकर कट्टरपंथी बनाया जाता है; और कई अन्य तथाकथित धार्मिक नेताओं की जहरीली शिक्षाओं से प्रभावित होकर कट्टरपंथी बन जाते हैं।

रहे शेख राशिद अहमद ने टीवी पर खुलेआम शेखी बघारी थी कि उन्होंने कुछ साल पहले रावलपिंडी के ठीक बाहर अपनी ज़मीन पर कश्मीरी लड़ाकों के लिए एक शिविर चलाया था। अगर सेना मुख्यालय से कुछ मील की दूरी पर ऐसे शिविर स्थापित किए जा सकते हैं, तो दूरदराज के इलाकों में इन्हें संचालित होने से कौन रोक सकता है?
कई विदेशी और स्थानीय पत्रकारों ने पाकिस्तान में लंबे समय से पनप रहे आतंकी नेटवर्क के कई पहलुओं को उजागर किया है। नाम, तारीखें और पते प्रकाशित और प्रसारित किए गए हैं। लेकिन हर आरोप का सरकारी अधिकारियों के हर स्तर पर खुलेआम खंडन किया गया है। जिस तरह हमने वर्षों तक अपने परमाणु हथियार कार्यक्रम के अस्तित्व से इनकार किया, उसी तरह हम चरमपंथी आतंकवादियों की मौजूदगी को भी स्वीकार करने से इनकार करते हैं।
कई सालों तक सेना और आईएसआई को पाकिस्तान, कश्मीर और अफगानिस्तान में इन समूहों को गुप्त रूप से पनाह देना और उनका समर्थन करना सुविधाजनक लगा। आधिकारिक तौर पर इन जिहादियों से संबंध होने से इनकार करते हुए भी, गुप्त स्रोतों से नियमित रूप से धन और हथियार उन तक पहुंचते रहे। हमारे खुफिया एजेंसियों द्वारा लगातार इनकार करने के बावजूद, जिहादियों को दिए जा रहे इस गुप्त समर्थन के बारे में पर्याप्त जानकारी सामने आ चुकी है, जिससे पर्दाफाश हो गया है। और, भले ही खुफिया समुदाय ने अब इन आतंकवादियों से अपने संबंध तोड़ लिए हों, लेकिन सच्चाई सबके सामने आ चुकी है।
जब भी मुंबई जैसी कोई भयावह घटना घटती है और पाकिस्तान पर इसमें शामिल होने का आरोप लगता है, तो सरकारी प्रवक्ताओं का एक ही रटा-रटाया जवाब होता है – ‘सबूत दिखाओ।’ हकीकत यह है कि गुप्त रूप से रची गई आतंकवादी गतिविधियों में सबूतों का कोई खास भंडार नहीं बचता। दस में से नौ बार अपराधी अदालत में गवाही देने के लिए जीवित नहीं बचते। लेकिन इस मामले में एक आतंकवादी बच गया, और अजमल आमिर कसाब की कहानी लश्कर-ए-तैयबा की ओर इशारा करती है। हमले की जटिलता सावधानीपूर्वक योजना और कठोर प्रशिक्षण का प्रमाण है।
यह कोई हिट-एंड-रन ऑपरेशन नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य अधिकतम लोगों की जान लेना था।
पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने कहा कि पाकिस्तान भी आतंकवाद का शिकार है।
यह बात बिल्कुल सच है, लेकिन दुनिया यह जानना चाहती है कि हम प्रशिक्षण

शिविरों को जड़ से खत्म करने और इसमें शामिल लोगों को जेल भेजने के लिए और अधिक प्रयास क्यों नहीं कर रहे हैं। खुफिया एजेंसियों द्वारा सरकारी खजाने से ली गई भारी मात्रा में अलेखापरीक्षित धनराशि को देखते हुए, आंतरिक आतंकवाद के खिलाफ अधिक प्रभावी कार्रवाई करने में उनकी विफलता या तो अक्षमता का संकेत है, या आपराधिक मिलीभगत का। बेनजीर भुट्टो की हत्या, जो पहले हुए एक प्रयास और कई चेतावनियों के बाद हुई, इस बात की याद दिलाती है कि हमारी खुफिया एजेंसियां हमें कितनी बुरी तरह से सेवा प्रदान कर रही हैं।
मुंबई हमले के बाद कूटनीतिक तनाव बढ़ता जा रहा है और सशस्त्र संघर्ष में तब्दील होने का खतरा मंडरा रहा है, ऐसे में सबसे बड़ा फायदा उन लोगों को हो रहा है जिन्होंने इतने सारे निर्दोष लोगों का कत्लेआम किया। भारत और पाकिस्तान को आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में समन्वय स्थापित करने से रोकना उनके हित में है। दोनों पड़ोसी देशों के बीच तनाव उन्हें भाता है, जबकि शांति और सहयोग उनके अस्तित्व के लिए ही खतरा है।
दुनिया स्वाभाविक रूप से इन आतंकी समूहों से अन्य देशों को होने वाले खतरे को लेकर चिंतित है। हालांकि, इनसे सबसे बड़ा खतरा खुद पाकिस्तान को है। जब तक पाकिस्तानी इस क्रूर वास्तविकता को नहीं समझते और इन्हें कुचलने के लिए आवश्यक दृढ़ संकल्प नहीं जुटाते, तब तक ये हत्यारे देश को टुकड़ों में बांटते रहेंगे।

एक बहुत बड़ी बात
इरफ़ान हुसैन द्वारा
अक्सर, जब किसी जुआरी के पास चिप्स का आखिरी ढेर ही बचता है, तो वह अपने नुकसान की भरपाई के लिए एक बेकार से दांव पर सारे चिप्स लगा देता है। पाकिस्तान भी कुछ इसी हताश पोकर खिलाड़ी की तरह लग रहा था जब सरकार ने घोषणा की कि अगर भारत अपनी सेना के कुछ हिस्सों को सीमा के करीब भेजता है, तो वह अपने सैनिकों को उस कबायली इलाके से वापस बुला लेगी, जहां वे तालिबान विद्रोहियों से लड़ रहे हैं।
...कई साल पहले, एक पश्चिमी राजनयिक ने लिखा था कि पाकिस्तान दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जो अपने सिर पर बंदूक रखकर बातचीत करता है। सहायता देने वाले देशों को लंबे समय से पता है कि हमारा तर्क कुछ इस तरह है - अगर

आप हमें हमारी ज़रूरत की चीज़ें नहीं देंगे, तो सरकार गिर जाएगी और इससे अराजकता फैल सकती है, और इस्लामी आतंकवादी सत्ता पर कब्ज़ा कर सकते हैं। यहाँ इस बात का ज़िक्र नहीं किया गया है कि ये तत्व वैश्विक स्तर पर कितना बड़ा खतरा पैदा करेंगे, क्योंकि उन्हें पाकिस्तान के परमाणु हथियारों तक पहुँच प्राप्त होगी।
हम लंबे समय से इस तर्क को बेपरवाही से इस्तेमाल करते आ रहे हैं, मुख्यतः इसलिए क्योंकि एक असफल, खंडित पाकिस्तान हर किसी का सबसे बुरा सपना है। आज भी ऐसे पाकिस्तानी मौजूद हैं, चाहे वे वर्दी में हों या न हों, जो गंभीरता से मानते हैं कि भारत गुपचुप तरीके से उनके देश का विभाजन देखना चाहता है। उन्हें वास्तविकता को समझना होगा। कई भारतीयों ने मुझे पत्र लिखकर कहा है कि वे 1947 में भारत के विभाजन से खुश हैं, क्योंकि अब उन्हें कम मुसलमानों से निपटना पड़ता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत अफगानिस्तान के साथ साझा सीमा नहीं चाहता। वहां की अशांति जल्द ही समाप्त होने की संभावना नहीं है, और हमारी सेना उस सीमा पर उग्रवादी खतरे से निपटने में कहीं अधिक उपयोगी साबित होगी।
हाल ही में पाकिस्तान का बचाव करते हुए हमारे विदेश मंत्री ने कहा था कि हम एक 'जिम्मेदार देश' हैं... वास्तव में, एक जिम्मेदार देश जैश-ए-मोहम्मद के मौलाना मसूद अजहर, लश्कर-ए-तैबा के हाफिज सईद और भारतीय अपराधी दाऊद इब्राहिम जैसे लोगों को खुलेआम घूमने की इजाजत नहीं देगा। जब भी पश्चिम किसी भीषण आतंकवादी हमले के बाद हंगामा करता है, तो कुछ आतंकवादी नेताओं और उनके अनुयायियों को गिरफ्तार कर लिया जाता है, लेकिन हंगामा शांत होते ही उन्हें रिहा कर दिया जाता है... ये समूह अफगानिस्तान और कश्मीर में सेना के छद्म युद्धों में महत्वपूर्ण मोहरे रहे हैं। अब, प्रमुखता और वित्तीय सहायता प्राप्त करने के बाद, वे सिर्फ इसलिए हथियार नहीं डालेंगे और घर नहीं लौटेंगे क्योंकि उनका अस्तित्व पाकिस्तानी सत्ता के लिए शर्मिंदगी का कारण बन गया है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अब इन समूहों के खजाने में बहुत सारा पैसा आ रहा है। नेता महंगी एसयूवी में खुलेआम घूमते हैं, जबकि आम सदस्यों को अच्छा खासा वेतन मिलता है। ये सभी ऐसे लोग हैं जो सामान्य परिस्थितियों में सबसे घटिया नौकरी पाने के भी योग्य नहीं हैं। इन खतरनाक समूहों का अस्तित्व और दो दशकों से चली आ रही उनकी बेखौफ गतिविधियां, पाकिस्तानी राज्य के लगातार पतन को रेखांकित करती हैं... कई

पाकिस्तानी अपने देश में आतंकवादी हमलों के इतने आदी हो चुके हैं कि वे भूल गए हैं कि अन्य जगहों पर ऐसा नहीं होता। 'इसमें बड़ी बात क्या है?' पूछने के बजाय, उन्हें खुद को पीड़ितों की जगह पर रखकर देखना चाहिए। अगर, जैसा कि बहुत संभावना है, मुंबई पर हमला करने वाले समूह को पाकिस्तान स्थित लश्कर-ए-तैबा द्वारा प्रशिक्षित और हथियारबंद किया गया था, तो यह वास्तव में बहुत बड़ी बात है।

समानांतर ब्रह्मांड में जीवन यह चिंता का विषय है कि इतने सारे पाकिस्तानी सच्चाई का सामना करने को तैयार ही नहीं हैं। क्योंकि जब तक वे सच्चाई का सामना नहीं करेंगे, तब तक वे उस नीति और दिशा में बदलाव की मांग नहीं करेंगे, जिसके कारण ये आतंकी समूह पनपे। हालांकि, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पाकिस्तानी ही अकेले ऐसे लोग नहीं हैं जो सीधी-सादी घटनाओं को भी जटिल साजिश सिद्धांतों में ढालने में लगे रहते हैं। उदाहरण के लिए, लाखों लोग आज भी मानते हैं कि 9/11 के हमले सीआईए और/या मोसाद के कारण हुए थे। मुझे तो एक ऐसा व्यक्ति भी मिला जिसने कहा कि नागासाकी और हिरोशिमा पर हुए परमाणु बम हमलों का बदला लेने के लिए जापानियों ने ये हमले किए थे।. . . इनमें से अधिकांश मनगढ़ंत बातें उन लोगों के लिए मनोरंजन मात्र हैं जिनके पास बहुत समय होता है।. . .
कई पाकिस्तानी यह भूल जाते हैं कि ये आतंकी समूह दूसरे देशों के मुकाबले हमारे लिए कहीं ज्यादा घातक हैं। उदाहरण के लिए, लश्कर-ए-तैबा ने मुंबई में कमजोर लक्ष्यों पर किए गए अपने क्रूर हमलों से कश्मीर के मुद्दे को किस प्रकार आगे बढ़ाया है? सच्चाई यह है कि विशुद्ध सामरिक दृष्टि से, निर्दोष नागरिकों की हत्या से किसी भी उद्देश्य को कोई समर्थन नहीं मिलता।
एक समस्या जिसका हम पर्याप्त रूप से विश्लेषण नहीं करते, वह यह है कि 1980 के दशक में जिया के विनाशकारी शासन के बाद से, धार्मिक चरमपंथ का माहौल राष्ट्रीय एजेंडा पर हावी हो गया है। इस वातावरण में, पाकिस्तानियों की एक पीढ़ी यह सोचकर बड़ी हुई है कि धार्मिक अल्पसंख्यकों पर अत्याचार करना, महिलाओं को हाशिए पर धकेलना और इस्लाम के नाम पर हत्या करना पूरी तरह से स्वीकार्य है। चरमपंथी मानसिकता की इसी स्वीकृति ने आतंकी समूहों को फलने-फूलने के लिए असीमित अवसर प्रदान किए हैं। इस सोच में कश्मीर के साथ

विवादित सीमा और अफगानिस्तान के साथ अनिश्चित (और विवादित) सीमा को जोड़ दें, तो आपको स्वीकृत हिंसा का एक परिदृश्य मिल जाता है। इस घातक मिश्रण का अंतिम घटक एक लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था है जो लाखों युवा पाकिस्तानियों के लिए लाभकारी रोजगार सृजित करने में असमर्थ है।

आतंकवाद – विफलता की मूर्खता

एम.वी. कामथ
वर्षों से हम धर्मनिरपेक्षता की छत्रछाया में भय के साये में जी रहे हैं। इससे हमें केवल इस्लामी कट्टरपंथियों की घृणा ही मिली है। हमने स्वयं को रीढ़विहीन राष्ट्र साबित कर दिया है, ऐसे लोग जो सांप्रदायिक कहलाने से हमेशा भयभीत रहते हैं, और बिना किसी औचित्य के तथाकथित अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिए हर संभव प्रयास करते रहे हैं। हम इस्लामी आतंकवादियों के लिए हंसी का पात्र बन गए हैं।
अब जबकि साठ घंटे का आतंकी आतंक का भयावह मंजर, उम्मीद है, खत्म हो चुका है, तो अतीत पर नजर डालने और कुछ निष्कर्ष निकालने का समय आ गया है। एक बात स्पष्ट रूप से सामने आती है – खुफिया तंत्र की कोई विफलता नहीं थी। हमले की आशंका काफी पहले से थी और मुंबई पुलिस अधिकारियों ने शहर के व्यापारिक प्रतिष्ठानों और होटल प्रबंधकों से कई बार बातचीत की थी और उन्हें संभावित हमलों के बारे में चेतावनी दी थी, जिसे दुर्भाग्यवश बड़े पैमाने पर नजरअंदाज कर दिया गया। ताज और ओबेरॉइड-ट्राइडेंट होटलों पर हुए बर्बर हमले से ठीक दो दिन पहले तक, अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने मुंबई के अधिकारियों को सतर्क रहने की जरूरत के बारे में सूचित कर दिया था। इसलिए, भारतीय खुफिया ब्यूरो या मुंबई पुलिस की अज्ञानता की आलोचना करना निराधार है।
स्पष्ट है कि न तो नई दिल्ली सरकार ने और न ही मुंबई सरकार ने चेतावनियों को गंभीरता से लिया, और संभवतः ताज और ओबेरॉय होटलों के मालिकों ने भी नहीं। जाहिर है, वे चेतावनियों में उस सुनियोजित हमले को समझने में विफल रहे, जिसने अंततः उन्हें चौंका दिया और भयभीत कर दिया। खबरों के अनुसार, आतंकवादियों के लक्ष्यों की सूची में बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई), छत्रपति शिवाजी रेलवे टर्मिनस, टाइम्स ऑफ इंडिया की इमारत और बांद्रा स्थित लीला केम्पिंस्की होटल शामिल थे। आतंकवादियों द्वारा कोलाबा में एक दो मंजिला अपार्टमेंट में यहूदी निवासियों को मारने की इच्छा उनके

अंतिम उद्देश्य पर सवाल उठाती है, जिसमें विशेष रूप से चिन्हित ब्रिटिश और अमेरिकी पर्यटकों को भी निशाना बनाया गया था।
लश्कर-ए-तैबा द्वारा महीनों तक की गई सारी योजना का विस्तृत विवरण लंबे समय से ज्ञात है और यह चौंका देने वाला है। इन सब बातों के बाद सवाल उठता है – अब आगे क्या? क्या इस हमले में पाकिस्तान सरकार और उसकी अंतर-सेवा खुफिया एजेंसी (आईएसआई) की संलिप्तता है? पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसफ अली जरदारी ने कहा है कि उन्हें भी सभी भारतीयों की तरह गहरा दुख हुआ है, वे स्तब्ध हैं, उन्हें गहरा आघात लगा है और वे मुंबई के लोगों के प्रति सहानुभूति रखते हैं और उनके प्रति उनकी संवेदनाएं हैं।
पाकिस्तान के विदेश मंत्री मखदूम शाह महमूद कुरैशी का दावा है कि उनका देश बेदाग है और उनकी सरकार भारत के साथ अच्छे पड़ोसी संबंधों को सर्वोच्च महत्व देती है। इससे यह सवाल उठता है कि कौन सच बोल रहा है और कौन बेशर्मी से झूठ बोल रहा है। लेकिन दोनों की बातों को सुनकर और देखकर ऐसा लगता है कि वे ईमानदार हो सकते हैं। शायद। भला कैसे पता चलेगा? और यह भी स्पष्ट है कि दोनों ही इस बात से बुरी तरह डरे हुए हैं कि कहीं भारत बदले की भावना से उनके देश पर हमला न कर दे, जबकि ऐसी खबरें भी फैली हुई थीं, जिन्हें बाद में खारिज कर दिया गया, कि भारत भारत-पाकिस्तान सीमा की ओर और अधिक सेना भेज रहा है।
यह याद दिलाना आवश्यक है कि अमेरिका अल कायदा और तालिबान कार्यकर्ताओं को कथित तौर पर पनाह देने वाले कबायली इलाकों पर बमबारी करने के लिए पाकिस्तानी धरती का इस्तेमाल करने में जरा भी संकोच नहीं करता। अगर अमेरिका कानून को अपने हाथ में ले सकता है, तो भारत, जो वर्षों से गंभीर पीड़ा झेल रहा है और जिसके पास इसी तरह की कार्रवाई करने का उचित कारण है, ऐसा क्यों न करे? जो अमेरिका के लिए जायज़ है, वही भारत के लिए भी जायज़ होना चाहिए और वह भी अधिक तर्कसंगत तरीके से। समस्या यह प्रतीत होती है कि पाकिस्तानी सरकार आतंकवादियों और अन्य कट्टरपंथी संगठनों को नियंत्रित करने की स्थिति में नहीं है, चाहे उनमें से कितने भी संगठनों को ब्लैकलिस्ट कर दिया गया हो। लश्कर-ए-तैबा ने सिर्फ अपना नाम बदला है और उसका नेता हाफिज मोहम्मद सईद खुलेआम बेहद हिंसक भाषा में चुनौती भरे और भड़काऊ भाषण दे रहा है। किसी भी लोकतांत्रिक देश में उसे गिरफ्तार कर जेल

है। इसने अपनी अक्षमता साबित कर दी है और सत्ता में बने रहने के अयोग्य है।
इसने जनता के साथ ऐसा विश्वासघात किया है जैसा पहले किसी सरकार ने नहीं किया, जो देश के लिए शर्म की बात है और मुंबई के नागरिकों के लिए पीड़ादायक है।

अंत तक लड़ो

फिल्म निर्देशक विक्रम भट्ट
कुछ दिन पहले मैंने एक खबर पढ़ी जिसमें बताया गया था कि एक राजनीतिक दल ने पाकिस्तान के एक स्टैंड-अप कॉमेडियन को प्रदर्शन करने की अनुमति नहीं दी। आम तौर पर, मैं उदारवादी विचारधारा का समर्थक हूं - संस्कृति और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मेरा दृढ़ विश्वास है।
किसी भी कलाकार के खिलाफ बल प्रयोग करना आम तौर पर मुझे क्रोधित कर देता है। लेकिन आज सुबह, मैंने खुद से कहा, 'उसके साथ बिलकुल सही हुआ। हम उसके चुटकुलों पर हंसना नहीं चाहते!'
सोचने का तरीका
अगले ही पल, मैं अपनी प्रतिक्रिया पर बेहद भयभीत हो गई। यह मेरा स्वभाव नहीं था। मैं आमतौर पर इस तरह प्रतिक्रिया नहीं करती। तो क्या मैं लगातार मीडिया के दबाव का शिकार हो रही थी या यह किसी सुनियोजित दुष्प्रचार का परिणाम था?
मैं बेहद परेशान था। मैं विचारों के भंवर में फंस गया और अपने दिमाग के हर कोने में छानबीन करने लगा, इतना ही नहीं, मैंने नफरत की संरचना और अन्य सांसारिक मामलों पर भी गहराई से विचार नहीं किया। जितना ज्यादा मैं इसके बारे में सोचता गया, उतना ही मेरा गुस्सा और पश्चाताप की भावना बढ़ती गई। फिर मुझे यह बात समझ में आई। मैं गुस्से में था। और मेरा गुस्सा पाकिस्तान की दिखावटी सत्ता से नहीं, बल्कि पाकिस्तान की जनता से था। सरकारें दूसरी सरकारों के साथ संधियाँ, समझौते और करार करती हैं, जबकि दो देशों की जनता के बीच सिर्फ एक भावनात्मक बंधन होता है, जिसमें हम एक-दूसरे की जनता का सम्मान करते हैं, उनसे प्यार करते हैं, उन्हें सहन करते हैं या उनसे नफरत करते हैं।
विरोध में
मुझे गुस्सा इसलिए आ रहा है क्योंकि मेरा शहर, मुंबई, मध्याह्न रेखा के इस तरफ का सबसे स्वागत करने वाला शहर रहा है। वर्षों से इसने सभी कलाकारों और खिलाड़ियों का खुले दिल से स्वागत किया है।

बेशक, मेरा मतलब पाकिस्तान से भी है, और फिर भी, मुझे दूसरी तरफ से एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जो उनकी सरकार से कहे, 'देखो, मुंबई में जो हुआ है उसे सुलझाना होगा। हम वहां गए थे और हमें बहुत अच्छा लगा। हम मुंबई के ऋणी हैं।'
मेरा मानना है कि पाकिस्तान इस समय लोकतांत्रिक दौर में है। तो क्यों न इसके नागरिक एकजुट होकर अपने नेताओं से कहें कि वे अब और टालमटोल न करें और उस नरसंहार के बारे में कुछ करें जिसने उस शहर को अपनी चपेट में ले लिया है जिसने हमेशा उनका स्वागत किया है?
विद्रोह करने की शक्ति
लोगों में यह क्षमता है। हमने अपने देश में बार-बार यह देखा है। हमने जेसिका लाल के लिए लड़ाई लड़ी है, हमने ताज महल के लिए लड़ाई लड़ी है और हम अपनी लड़ाई जारी रखेंगे। लेकिन अगर पाकिस्तान के लोग हमारे लिए नहीं लड़ते, तो वे हमारे दोस्त नहीं हैं।
मुझे पाकिस्तानी क्रिकेटरों को यह कहते हुए मत दिखाओ कि हमें क्रिकेट संबंध जारी रखने चाहिए। इसके बजाय, उन्हें अपने नेताओं को सुधारने के लिए कहते हुए देखो। उस पाकिस्तानी अभिनेता को यहाँ मत लाओ, इससे पहले कि वह अपने लोगों से कुछ कहे।
यह एक साधारण सी लड़ाई है। यह हमारे अस्तित्व की लड़ाई है। जॉर्ज बुश ने एक अच्छी बात कही थी, 'अगर आप हमारे साथ नहीं हैं तो आप हमारे खिलाफ हैं!' जाओ किसी और को हंसाओ! हम शोक मना रहे हैं।

भारतीय मुसलमान

मानेक प्रेमचंद और लता जगतियानी
यह संघर्ष उन लोगों के बीच है जो 'जीओ और जीने दो' के मूल्यों को मानते हैं और उन लोगों के बीच जो मरना और मारना चाहते हैं। पकड़े गए युवा आतंकवादी को जीवन में कोई उम्मीद नहीं थी, बल्कि मृत्यु में ही उसे अपना भाग्य नज़र आता था। यह सभ्य समाज और उन बर्बर ताकतों के बीच की लड़ाई है जो भारत में हिंसा भड़काना चाहती हैं।
– फ़िरोज़ खान, फिल्म 'गांधी, माई फादर' के निर्देशक।
इस्लाम दुनिया का सबसे गलत समझा जाने वाला धर्म है। इस्लाम में सबसे गलत समझा जाने वाला शब्द जिहाद है। कुरान स्पष्ट रूप से कहता है कि यदि आप एक भी इंसान को मारते हैं, तो यह पूरी मानवता को मारने के बराबर है।
– डॉ. ज़ाकिर नाइक
भारत की कुल जनसंख्या में मुसलमानों की संख्या लगभग बारह प्रतिशत या 15 करोड़ रुपये है। इंडोनेशिया (जहां बहुसंख्यक मुस्लिम आबादी 23 करोड़ रुपये है) के बाद पाकिस्तान (लगभग 15 करोड़ रुपये) और फिर भारत का स्थान आता है, जहां दुनिया में मुसलमानों की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या है।
जन्म नियंत्रण, पर्दा प्रथा, महिलाओं के रोजगार आदि जैसे मुद्दों पर भले ही भारत में मुसलमान (आर्थिक स्थिति को छोड़कर) अपने पाकिस्तानी समकक्षों की तुलना में सामाजिक रूप से उतने सहज न हों, लेकिन वे उतने प्रगतिशील नहीं हैं। शहरी परिवेश में, अन्य धर्मों के लोगों से बातचीत करते समय, भारतीय मुसलमान अपनी धार्मिक पहचान बनाए रखते हुए भी उदारवादी और उदारवादी बने रहते हैं, भले ही यह परिस्थितिजन्य अनिवार्यता ही क्यों न हो। यह सच है कि कुछ लोग कट्टर रूढ़िवादी हैं, लेकिन अधिकांश मुसलमान शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के आध्यात्मिक आधार को समझते हैं। सूफी दृष्टिकोण 'मध्य मार्ग' है जो मतभेदों के बावजूद दूसरों को स्वीकार करता है।
जिस इलाके में मैं रहता हूँ, वहाँ पापेती, ईद और दिवाली जैसे त्योहारों पर मेरे हिंदू, पारसी या मुस्लिम पड़ोसी अक्सर हमारे घरों के सामने फर्श पर रंगोली (रंगीन पाउडर से सजावटी आकृतियाँ) बनाते हैं। पास के क्लब में, जब

मैं गुरु नानक जयंती पर लंगर (पवित्र भोज) के लिए बैठता हूँ, तो मुझे पड़ोस का एक मुस्लिम व्यक्ति चम्मच से गुरु-प्रसाद परोसता है। वह नंगे पैर स्टेनलेस स्टील की बाल्टी लेकर आता है, सिर पर रुमाल रखता है, जिसके दोनों कोने सिख परंपरा के अनुसार उसके कानों के पीछे सावधानी से दबे होते हैं। वह न तो नास्तिक है और न ही अनैतिक मुस्लिम; रोजों के दौरान वह उपवास रखता है, दाढ़ी बढ़ाता है और पूरी लगन से नमाज अदा करता है। हममें से अधिकांश को उसकी गुरु सेवा असामान्य नहीं लगती, चौंकाने वाली तो बिल्कुल भी नहीं। न ही हममें से अधिकांश यह सवाल करते हैं कि दिवाली पर एक मुस्लिम डाकिया बख्शीश (टिप) क्यों मांगेगा। इसी तरह, कई हिंदू (मेरे भाई सहित) अपने बैठक कक्ष में सजा हुआ क्रिसमस ट्री लगाते हैं। हमारा मानना है कि दिवाली, महावीर जयंती, रक्षा बंधन, ईद और ऐसे ही महत्वपूर्ण दिन किसी एक समुदाय के लिए ही नहीं हैं; ये सभी भारतीयों के हैं, हमारी समग्र मानसिकता के हैं। बेशक, इसमें हर तरह के कट्टरपंथी शामिल नहीं हैं, हालांकि उनकी संख्या कम ही है। हैरानी की बात नहीं है कि जब वे गणेश चतुर्थी के दौरान सलमान खान को नंगे पैर गणपति की मूर्ति के सामने सिर झुकाकर प्रार्थना करते देखते हैं तो वे भड़क उठते हैं। ऐसे ही कट्टरपंथी 1980 के दशक की शुरुआत में तब भी शोर मचाते सुने गए थे जब अमिताभ बच्चन का परिवार उनके स्वस्थ होने की प्रार्थना के लिए हाजी अली की दरगाह या मुंबई के सेंट माइकल चर्च (आवर लेडी ऑफ परपेचुअल सक्कुर) जैसे कई स्थानों पर गया था। लेकिन यह भारत है, जहां नास्तिकों और अज्ञेयवादियों को भी स्वीकार किया जाता है।
अधिकांश पाकिस्तानियों को भारत में व्याप्त इस अनूठी विचारधारा को समझने में काफी समय लगेगा, जिसमें प्रत्येक विचार और व्यक्ति से सर्वोत्तम चीजें लेना और गहरी आध्यात्मिकता के साथ सभी का सम्मान करना शामिल है। क्या यह सच नहीं है कि इस्लाम शांति का उपदेश देने वाला धर्म है? क्या यह धर्म ईसाई धर्म और यहूदी धर्म को स्वीकार नहीं करता? यह मानता है कि मूसा और याकूब मूसा और याकूब के अरबी नाम हैं और वे भी पैगंबर थे। उनका उल्लेख पवित्र कुरान में है। यह ईसा और मरियम को स्वीकार करता है, और कई अन्य हस्तियों को भी जो यहूदियों और ईसाइयों दोनों के लिए पवित्र हैं। कला जीवन को दर्शाती है, इसलिए कई उर्दू कवि अपनी रचनाओं में इन 'पैगंबरों' को शामिल करते हैं।
ये ग़ालिब की एक क्लासिक ग़ज़ल की शुरुआती पंक्तियाँ हैं:

Ibn e Mariam hua kare koi Mere dukh ki dawa kare koi!
काश, मरियम का पुत्र आता और मेरे दुखों का इलाज करता! And, this from the Mohammed Rafi-rendered naat, referring to Allah, in Parwar digaar-e-aalam, tera hi hai sahaara:
Behti hui nadi mein Moosa ki raah banaayi ….
मूसा के चलने के लिए एक रास्ता खुल गया।
इसके विपरीत, यहाँ हबीब पेंटर की एक रचना है, जो सूफी विचारों को ऐसे शब्दों में प्रतिबिंबित करती है जिन्हें आज के समय में शायद अनुमति न हो: Idhar Kashi mein hai patthar, idhar Kaabe mein hai patthar
Idhar patthar ka poojan hai, idhar patthar ko bosa hai
Agar ye akl par patthar nahin to aur phir kya hai?
Idhar pandit akadte hain ke Wo Kashi mein rehta hai
Idhar Sheikhji naadaan ke Wo kaabe mein rehta hai.
इस पत्थर की पूजा काशी और काबा दोनों जगह की जाती है।
यहाँ एक को प्रणाम किया जाता है, वहाँ दूसरे को चूमा जाता है। यह हमारी बुद्धि का अपमान ही तो है?
हिंदू पुजारी का दावा है कि भगवान काशी में निवास करते हैं।
मुस्लिम धर्मगुरु का मानना है कि ईश्वर काबा में निवास करता है।
– From the qawwali, Sada chakkar mein rehta hai
भारत में मुट्ठी भर कट्टरपंथी मुसलमान संगीत और नृत्य को नापसंद करते हैं। कट्टरपंथी मुस्लिम धर्मगुरुओं के लिए ये चीजें 'गैर-इस्लामी' हैं। कुछ अन्य लोगों के लिए ये समय की बर्बादी हैं। फिर भी, मनोरंजन उद्योग में बड़ी संख्या में मुसलमान कलाकार, संगीत निर्देशक, गायक आदि के रूप में नज़र आते हैं। अगर इन मुसलमानों ने कुरान के आध्यात्मिक संदेश को न अपनाया होता, तो भारत का फिल्म उद्योग और भी गरीब और पंगु हो गया होता।
संगीत की बात करें तो, मोहम्मद रफी, जो एक धर्मनिष्ठ मुस्लिम हैं, ने कुछ बेहद भावपूर्ण हिंदू भजन गाए हैं। उनके गीत हिंदू और सिख सत्संगों में खूब बजाए जाते हैं। हाल के बेहतरीन मुस्लिम भक्ति गीतों में से एक, पिया हाजी अली, को हिंदू मूल के ए.आर. रहमान ने भावपूर्ण ढंग से गाया है। इसमें हमें जरा भी आश्चर्य नहीं है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम प्रतिदिन हिंदू और मुस्लिम धर्मग्रंथ पढ़ते हैं। फारस के पारसियों की तरह, दलाई लामा ने तिब्बत से भागकर यहाँ अपना घर पाया। उनके यहाँ आने के पचास वर्ष बाद भी यह घर जीवंत बना हुआ है। बांग्लादेशी लेखिका तस्लीमा नसरीन, जिन्हें कट्टरता के कारण अपना देश छोड़ना पड़ा, भी कई वर्षों से यहाँ रह रही हैं। यह देश संकीर्णता और प्रतिगामी प्रवृत्तियों का विरोध करता है और सभी को शरण देता है। भारतीय भावना और इसके सर्वव्यापी लोकाचार के ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं।
भारत की यह सच्ची भावना 1947 के बाद ही शुरू नहीं हुई। यह तब भी भरपूर मौजूद थी जब अंग्रेजों ने जिन्ना की अलग मुस्लिम देश की मांग सुनी थी। जिन्ना खुद मुल्लाओं की नज़र में एक सच्चे मुसलमान नहीं थे। वे नमाज़ नहीं पढ़ते थे। वे शराब पीते थे और सूअर का मांस खाते थे; संक्षेप में, वे अक्सर ऐसे काम करते थे जिन्हें इस्लामी धर्म के अनुसार हराम माना जाता है। ये दस्तावेजी ऐतिहासिक तथ्य हैं। आश्चर्य होता है कि जब उन्होंने मुसलमानों के लिए एक अलग मातृभूमि की मांग की थी, तब क्या उन्होंने अपने सबसे बड़े सपनों में भी लश्कर-ए-तैयबा और दाऊद इब्राहिम जैसे लोगों की कल्पना की होगी।
भारत के विभाजन पर लिखी एक किताब को सरसरी तौर पर देखते हुए, मेरी नज़र भारत से पाकिस्तान में पलायन कर चुके इंतज़ार हुसैन की आवाज़ पर पड़ी। विभाजन से पहले के भारत के बारे में उनका वर्णन कुछ इस प्रकार है:
मेरे पिता एक बहुत ही रूढ़िवादी व्यक्ति थे, एक मौलवी। इसलिए, उनका अपने समुदाय के लोगों से अक्सर मतभेद रहता था। अगर किसी से उनके अच्छे संबंध थे, तो वे उस व्यक्ति से थे जिन्हें हम भगतजी कहते थे। उनकी बाजार में एक दुकान थी और हम उनसे ही किराने का सामान खरीदते थे। वे मेरे पिता के सच्चे मित्र थे। भगतजी, मेरे पिता की तरह ही, एक रूढ़िवादी व्यक्ति थे। एक कट्टर हिंदू, वे चोटी रखते थे, नियमित रूप से मंदिर जाते थे, इत्यादि। हैरानी की बात है कि मेरे पिता और वे बहुत अच्छे दोस्त बन गए। दरअसल, मुझे आज भी याद है कि जब मैंने बी.ए. करने के बाद दिबाई वापस जाकर भगतजी से मुलाकात की, तो उन्होंने मुझसे कहा, 'मौलवी साहब ने हापुड़ जाने पर मुझसे सौ रुपये उधार लिए थे। जब तुम्हें नौकरी मिल जाए और तुम कमाने लगो, तो मुझे चुका देना।' तब मुझे एहसास हुआ कि मेरे पिता भगतजी का कितना सम्मान करते थे। वे अपने समुदाय के

किसी भी सदस्य से कभी उधार नहीं लेते। ऐसा करने का ख्याल उनके मन में कभी आया ही नहीं होगा... मेरे जीवन के अनुभवों ने इस बात की पुष्टि की है कि सच्चे, धार्मिक हिंदू और मुसलमानों को एक-दूसरे के साथ रहने में कोई कठिनाई नहीं हुई है... मेरे पिता हमेशा मुझसे कहते थे कि भगतजी बहुत ईमानदार व्यक्ति थे क्योंकि वे बहुत धार्मिक थे... हम (मुस्लिम बच्चे) जानते थे कि हमें अच्छी मिठाई कहाँ मिल सकती है, कभी भी धार्मिक भावनाओं को आड़े नहीं आने देते थे। दिबाई में एक मुस्लिम हलवाई था, लेकिन हम कभी उसके पास नहीं जाते थे क्योंकि वह बहुत अच्छा नहीं था...
ऐसे अनुभव तभी संभव हैं जब धार्मिक अनुयायी खुले विचारों वाले हों। एक बार जब वे अपने विचारों को बंद कर लेते हैं, तो स्थिति अलग हो जाती है। अपनी पुस्तक 'द फ्यूचर ऑफ पाकिस्तान' में प्रोफेसर डी.एच. बुतानी संकीर्ण विचारों वाले मुसलमानों के बारे में टिप्पणी करते हुए कहते हैं, 'वास्तव में, मुस्लिम धर्मनिरपेक्षता-विरोधी भावना ही भारत में धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना में वास्तविक और मूलभूत बाधा है।' उनका कथन सत्य से अधिक दूर नहीं है।
प्रो. बुतानी यह बात तब कहते हैं, जब उन्हें बचपन में अपनी मां की एक निःसंतान मुस्लिम सहेली के साथ बिताए गए घनिष्ठ संबंधों की सुखद यादें हैं। उनकी मां उन्हें उस सहेली के पास भेजा करती थीं क्योंकि उन्हें अपने बच्चे की बहुत तीव्र इच्छा थी। जब वह वहां जाते, तो उनकी मुस्लिम 'मां' उनकी देखभाल करतीं, उन्हें खाना खिलातीं और अपनी गोद में सुलातीं। वे यह भी लिखते हैं, '(विभाजन-पूर्व) सिंध में, अगर आपका कोई मुस्लिम मित्र होता, तो आपको चिंता करने की कोई बात नहीं होती। आप शायद ही कभी किसी हिंदू साथी पर भरोसा कर पाते थे।'
दोनों समुदायों के बीच सौहार्द लगभग असाधारण था। दरअसल, जब युवा बुतानी ने अपने असुविधाजनक शाकाहार को छोड़ने से इनकार कर दिया (वह मांसाहारी परिवार में इकलौता शाकाहारी था), तो उसके भाई ने उसके स्कूल शिक्षक श्री कुरैशी से संपर्क किया ताकि उसे समझाया जा सके। प्रोफेसर बुतानी बताते हैं कि अत्यंत स्नेही और देखभाल करने वाले शिक्षक ने कहा, “देखो दया, मैंने तुम्हें कभी नहीं पीटा,” यह कहते हुए उन्होंने मुझे छड़ी दिखाई, “अब मैं तुम्हें छड़ी से मारना चाहता हूँ। सिंधी परिवार में तुम्हें घास खानी होगी! आज से तुम वही खाओगे जो पका हुआ होगा, और कल सुबह हाजिरी लगाओगे।”

उन्होंने फिर छड़ी लहराई। ज़ाहिर है, कुछ नहीं हुआ, क्योंकि मेरी माँ मेरी मदद के लिए आ गईं, और मेरे भाई को शिकायत वापस लेने के लिए मना लिया गया! यह दोनों समुदायों के बीच सहज और सौहार्दपूर्ण आदान-प्रदान का मात्र एक उदाहरण है।
प्रोफेसर बुतानी, जिन्ना के प्रारंभिक रूप के बारे में बात करते हुए कहते हैं कि वे धर्म के आधार पर भारत को अलग-अलग वर्गों में बांटने के विचार के गांधीजी से भी कहीं अधिक कट्टर विरोधी थे। वे बताते हैं, ‘बंबई के चौपाटी में दिए एक भाषण में, जिन्ना ने गांधीजी के ‘हिंदुओं, पारसियों, ईसाइयों’ को संबोधित करने के तरीके का विरोध किया, जैसा कि गांधीजी अक्सर करते थे। इसके जवाब में जिन्ना के रिकॉर्ड किए गए शब्द थे, “राजनीति में कोई हिंदू, मुसलमान, ईसाई या पारसी नहीं होते; हम सब भारतीय हैं।” यही थे प्रारंभिक जिन्ना।’ विडंबना यह है कि यह वही चौपाटी है जहां 27 नवंबर 2008 की सुबह पाकिस्तानी इस्माइल खान को गोली मार दी गई थी, जबकि अजमल कसाब घायल हो गया था और उसे जिंदा पकड़ा गया था।
सर्व धर्म समभाव (सभी धर्मों के साथ समान सम्मान का व्यवहार) में निहित यह समावेशी दृष्टिकोण, कुछ हद तक, सभी लोगों द्वारा आत्मसात कर लिया गया है – जिसमें अधिकांश भारतीय मुसलमान भी शामिल हैं। इसलिए, कुछ प्रतिनिधि भारतीय मुसलमानों की प्रतिक्रिया का अध्ययन करना और यह विचार करना आवश्यक है कि क्या और किस प्रकार यह सीमा पार के उनके साथी धर्मियों से भिन्न है। 26/11 की घटना पर भारतीय मुसलमानों की प्रतिक्रिया
लखनऊ में मौलाना खालिद राशिद फिरंगी महली ने कहा, 'हम भारतीय हैं। सरकार जो भी कार्रवाई करे, हम उसके साथ हैं। सरकार को यह नहीं सोचना चाहिए कि मुसलमान पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई का विरोध करेंगे।'
उनके साथ मौजूद अन्य लोगों ने कहा कि अब समय आ गया है कि मुसलमान आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में शामिल हों।
मौलाना वहीदुद्दीन खान ने 12 दिसंबर 2008 के टाइम्स ऑफ इंडिया में टिप्पणी की:
बड़ी संख्या में मुसलमान, विशेषकर युवाओं में से कई, इस जुनून में डूब गए हैं... और इस्लाम का राजनीतिक शासन स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं, इसे वे जन्नत का अपना रास्ता समझते हैं। शांतिपूर्ण तरीकों से इस्लामी शासन

स्थापित करने के अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल रहने पर, उन्होंने आत्मघाती बम विस्फोटों का सहारा लेना शुरू कर दिया है।
इसका मूल विचार यह है कि यदि हम गैर-इस्लामी शासन को समाप्त नहीं कर सकते, तो कम से कम उसे (राज्य को) अस्थिर करके इस्लामी शासन का मार्ग प्रशस्त करें। इस्लाम में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। इस्लाम की विचारधारा आतंकवाद को स्वीकार्य मानने की धारणा को पूरी तरह नकारती है। इस्लाम एक पूर्णतः शांतिपूर्ण धर्म है और इस्लामी पद्धति भी शांतिपूर्ण है।
पणजी, गोवा स्थित अखिल भारतीय मुस्लिम परिषद, जो भारत में मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक मंच है और जिसकी अध्यक्षता इकबाल मोहिदीन करते हैं, ने मुखर और दक्षिणपंथी हिंदुत्ववादी नेता बाल ठाकरे का समर्थन किया है। बाल ठाकरे ने सामना पत्रिका में अपने लेख में गिरफ्तार अजमल कसाब के मामले में अदालती सुनवाई का विरोध किया था। इकबाल मोहिदीन ने इस बात से सहमति जताई कि कसाब पर शरीयत के अनुसार मुकदमा चलाया जाना चाहिए, जहां जान के बदले जान ही न्याय है। उन्होंने दृढ़ता से कहा, 'हम पहले भारतीय हैं, फिर मुसलमान।'
समुदाय का आक्रोश सड़कों पर फूट पड़ा। जनवरी 2009 में, अखिल भारतीय शिया पर्सनल लॉ बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना मिर्ज़ा मोहम्मद अथर, जो पचास वर्षों से अधिक समय से समुदाय को उपदेश दे रहे हैं, ने कहा, 'यदि शहादत पाना और स्वर्ग जाना इतना आसान होता, तो इन युवाओं को गुमराह करने वाले ये अपराधी स्वयं क्यों नहीं मर गए?' उन्होंने आगे कहा कि इस हमले को तब तक क्षमा नहीं किया जा सकता जब तक कि एक ओर ये लोग फिलिस्तीनियों पर इजरायल के हमले की निंदा कर रहे हैं और फिर स्वयं इसी तरह के हमलों में शामिल हैं।
लखनऊ के प्रोफेसर कमर अब्बास ने आगे कहा, 'इस्लाम हमेशा यह कहता है कि राष्ट्र जीवन में किसी भी अन्य चीज से ऊपर है और जो कोई भी राष्ट्र के विरुद्ध कार्य करता है वह मुसलमान नहीं है।'
28 नवंबर 2008 के उर्दू अखबार इंकलाब ने अपने पाठकों को कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित किया। फारूक अंसारी ने लिखा, ‘जब तक हम एकजुट नहीं होंगे, आतंकवाद की बुरी ताकतों को हराया नहीं जा सकता। देश एक अभूतपूर्व चुनौती का सामना कर रहा है। इसकी वाणिज्यिक राजधानी मुंबई लगातार निशाने पर है। मुसलमानों को आगे आना चाहिए और यह साबित करना चाहिए कि देश के लिए बलिदान देने में उनका कोई मुकाबला नहीं है।’

चरनी रोड स्थित बड़ा कब्रिस्तान, जिसके कब्रिस्तान का प्रबंधन जामा मस्जिद ट्रस्ट द्वारा किया जाता है और जहां हर साल एक हजार लावारिस शव आते हैं, ने नौ आतंकवादियों को अपने कब्रिस्तान में दफनाने की अनुमति देने से इनकार कर दिया। जामा मस्जिद के एक ट्रस्टी ने कहा, 'पाकिस्तान को संदेश मिलना चाहिए।'
‘उन्होंने निर्मम लोगों की बेरहमी से हत्या कर दी। वे जिहादी नहीं, बल्कि आतंकवादी हैं’, ट्रस्ट के इब्राहिम ताई ने कहा। ‘अगर पुलिस किसी भी कब्रिस्तान ट्रस्ट को शव स्वीकार करने के लिए मजबूर करती है, तो हम आंदोलन शुरू करेंगे,’ उन्होंने चुनौती भरे लहजे में कहा। कई भारतीय मुसलमानों का पाकिस्तानी आतंकी संगठनों को स्पष्ट संदेश है – ‘दफा हो जाओ, हम तुम्हारे शैतानी तरीकों से सहमत नहीं हैं, तुम हमारे धर्म पर कलंक हो।’ भाजपा महासचिव गोपीनाथ मुंडे ने आतंकवादियों के खिलाफ कड़ा रुख अपनाने के लिए ताई को सम्मानित किया। मुंडे ने कहा, ‘हमें इब्राहिम ताई पर गर्व है। उन्होंने दिखा दिया है कि भारतीय मुसलमानों के दिलों में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं है।’
कुछ लोगों द्वारा हिंदू और मुसलमानों को धार्मिक आधार पर बांटने के प्रयासों से तंग आकर, हैदराबाद में जन्मी मशहूर अभिनेत्री वहीदा रहमान ने एक टीवी इंटरव्यू में कहा, 'कृपया हमें अल्पसंख्यक कहना बंद करें। हम अल्पसंख्यक नहीं हैं, हम भारतीय हैं।' फिर उन्होंने एक अखबार को दिए इंटरव्यू में कहा, 'अगर हम सब पहले खुद को इंसान मानें, फिर भारतीय, और उसके बाद धर्म और परिवार को आने दें, तो कोई भी देश को नुकसान नहीं पहुंचा सकता।' मोहम्मद खान, जो एक कुशल विज्ञापन प्रमुख हैं, ने बेबाकी से टिप्पणी की, “भारतीय मुसलमान इस घृणित हमले के प्रति घोर आक्रोश और घृणा व्यक्त कर रहे हैं। मुसलमानों के बीच मौन बहुमत अपनी आवाज उठा रहा है। अब समय आ गया है। मुस्लिम समाज के सभी संप्रदायों और गुटों के शिया, सुन्नी, मौलवी और मौलाना एक स्वर में बोल रहे हैं।”
पटकथा और संवाद लेखक सलीम खान ने आक्रोश व्यक्त करते हुए पूछा, 'हमलावर सिर्फ बम लेकर भाग नहीं गए। उनका मकसद मानवता पर आमने-सामने हमला करना था। उन्होंने हत्याएं कीं और तबाही मचाई। उनकी हिम्मत कैसे हुई खुद को मुसलमान कहने की? इस्लाम के अभिवादन में ही शांति समाई हुई है, आतंकवादी खुद को इस्लाम का अनुयायी कैसे कह सकते हैं? यह हमारा धर्म नहीं है।'

दारुल उलूम ने सुझाव दिया कि मुसलमानों को हिंदू धर्म की धार्मिक मान्यताओं के प्रति सम्मान के प्रतीक के रूप में बकरीद पर गाय की कुर्बानी नहीं करनी चाहिए। इस अपील को मस्जिदों के इमामों के अखिल भारतीय संगठन का भी समर्थन मिला।
विभिन्न सामाजिक-धार्मिक संगठनों को शामिल करने वाली संस्था ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिस-ए-मुशावरत ने पाकिस्तानी मुसलमानों द्वारा दिखाई गई खोखली सहानुभूति की कड़ी आलोचना की है। मुशावरत के एक अधिकारी ने गुस्से में कहा, 'भारतीय मुसलमान न्याय और समानता के लिए अपनी लड़ाई लड़ने में सक्षम हैं... किसी भी बाहरी शक्ति, विशेषकर पाकिस्तान को, हमारे लिए मगरमच्छ के आंसू नहीं बहाने चाहिए।'
हमले के बाद भी राजनीतिक आक्रोश शांत नहीं हुआ। ध्यान का रुख थोड़ा बदलते हुए, दो मुस्लिम विधायकों, यूसुफ अब्राहानी (कांग्रेस) और पाशा पटेल (भाजपा) ने भारतीय संसद पर अफजल गुरु के हमले की फिर से निंदा की।
यह मानते हुए कि वह व्यक्ति मृत्युदंड का सामना कर रहा है लेकिन अभी तक उसे फांसी नहीं दी गई है, उन्होंने टिप्पणी की, 'हम अफजल गुरु को भाई नहीं मानते और न ही उसके प्रति हमारी कोई सहानुभूति है। हम केंद्र से अनुरोध करते हैं कि आतंकवादियों को कड़ा संदेश देने के लिए मृत्युदंड को तुरंत क्रियान्वित किया जाए।'
दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अहमद बुखारी ने आतंकवादियों की निंदा की, लेकिन साथ ही खुफिया चूक के लिए सरकार की आलोचना भी की। प्रख्यात खेल लेखक अयाज़ मेमन ने भारत में मुसलमानों के खिलाफ संभावित प्रतिक्रिया की आशंका व्यक्त करते हुए तुरंत लिखा, 'सबसे महत्वपूर्ण घटना मुंबई के मुस्लिम धर्मगुरुओं का वह रुख है, जिसमें उन्होंने मृत आतंकवादियों को दफनाने से इनकार कर दिया है।' उनका मानना है कि अब एकजुट मुस्लिम समुदाय के कंधों पर कई जिम्मेदारियां हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण है जिहाद से जुड़े मिथकों को दूर करना और आतंकवाद की निंदा करना, शिक्षा पर जोर देना, विशेष रूप से महिलाओं के लिए, एक निष्पक्ष पाठ्यक्रम के साथ, दान स्वीकार करने से पहले दान के स्रोत की जांच करना आदि, और साथ ही अलगाव को कम करना, अन्य धर्मों के साथ जुड़ना और अपने मन से पूर्वाग्रहों को दूर करना।

Ф.ІО. ПРОЦЕС ЗА ЗАКОН-ПРОЦЕС ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ЗА ПРОЦЕС, ПРОЦЕС ЗА ПРОЦЕС ПРЕ ПРОЦЕСИ ПРОЦЕС ЗА ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ПРОЦЕС ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ПРЕ ПРЕ ПРЕ ПРОЦЕС ЗА ЗА ЗА ЗА ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ПРОЦЕС ЗА, ПРЕДСТАВЛЕНИ ПРОЦЕС ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ЗА ПРОЦЕС ЗА ПРОЦЕС ЗА ПРОЦЕС ЗА ПРОЦЕС ЗА ПРОЦЕС ЗА, ЗА ПРОЦЕС ЗА ПРЕ ЗА ЗА, 'ПРОЦЕС ПРЕДСТАВЛЕНИ ЗА ПРЕ ПРОЦЕС ПРОЦЕС ПРЕДСТАВЛЕНИ ПРЕ ПРЕ Г ПРЕ; ПРОЦЕ ПРОЦЕ, ПРОЦЕ ПРОЦЕ ПРОЦЕС ЗА ПРЕДСТАВЛЕНИЕ ПРОЦЕ ПРОЦЕ ПРЕ ЗА ПРОЦЕС ПРОЦЕ ПРЕ'

ПРЕДСТАВЛЕНИ ПРОЦЕС ПРОЦЕС ПРОЦЕС ПРОЦЕС ПРОЦЕС ПРОЦЕС ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ПРЕ ЗА ПРЕ ПРЕ ПРОЦЕ ЗА ПРЕ ЗА ЗА ЗА ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ПРЕ ПРОЦЕС ПРЕ:

26 ПРОЦЕ 2008 ЗА ПРОЦЕ ПРЕ ПРОЦЕ ПРОЦЕ ПРОЦЕ ПРОЦЕ ПРОЦЕ ЗА ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ЗА ЗА ПРЕДСТАВЛЕНИ ПРЕ ПРОЦЕ ПРЕДСТАВЛЕНИ ПРЕДСТАВЛЕНИ ЗА, ПРОЦЕС ЗА ПРЕ ПРОЦЕ ЗА ЗА ПРОЦЕ ПРОЦЕ ЗА ЗА ПРЕДСТАВЛЕНИ ПРОЦЕ ПРОЦЕ ЗА ПРОЦЕ ПРЕ, ПРОЦЕ ЗА ПРЕ ЗА ПРЕ ПРЕ ПРОЦЕС ЗА ПРОЦЕС ПРЕ ПРОЦЕС ПРЕ ПРЕДСТАВЛЕНИ ПРЕ ПРОЦЕ ПРОЦЕ ЗА ПРЕ ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ЗА ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ЗА ПРЕ ПРЕ ЗА ПРЕ ЗА ПРЕ ПРЕ ЗА ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ЗА ПРЕДСТАВЛЕНИЕТО ЗА ПРЕ ЗА ПРЕ ПРЕ ПРЕ ЗА ПРЕ ЗА ПРЕ ЗА ПРЕ ЗА

जब लेखक-पत्रकार एम.जे. अकबर ने शीला भट्ट से बात की, तो उन्होंने 2 दिसंबर 2008 को 'पाकिस्तान को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी' शीर्षक से इस विषय पर लिखा।
बहुत से लोग भूल जाते हैं कि भारत एक कठोर राष्ट्र है। शक्तिहीन नेताओं ने भारत को एक नरम राष्ट्र बना दिया है। लोग भूल जाते हैं कि भारत ने कश्मीर में मुस्लिम आतंकवाद, पंजाब में सिख आतंकवाद, नागालैंड में ईसाई आतंकवाद और असम में हिंदू आतंकवाद का डटकर मुकाबला किया है।
मैं एक भारतीय मुसलमान हूँ और मुझे भारतीय और मुसलमान होने पर गर्व है। मुझे इसमें कोई विरोधाभास नहीं दिखता। यह मेरी भूमि है और मुझे कहीं और जाने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन क्या मैं, क्योंकि मैं एक भारतीय मुसलमान हूँ, यह कह सकता हूँ कि इसमें कोई भारतीय मुसलमान शामिल नहीं है? क्या आप, क्योंकि आप एक हिंदू हैं, यह कह सकते हैं कि इसमें कोई हिंदू शामिल नहीं है? हमें सबसे पहले भारतीयों की तरह व्यवहार करना होगा। न कि मुसलमानों या हिंदुओं की तरह। क्योंकि हमें हिंदू वोटों और मुस्लिम वोटों दोनों की ज़रूरत है और क्योंकि यह सरकार सोचती है कि उसे मुस्लिम वोटों की ज़रूरत है, इसलिए वह पूरी तरह से सच्चाई से मुंह मोड़ रही है।
मैं पाकिस्तान को किसी न किसी बहाने से छूट देते-देते थक गया हूँ। हर कोई कह रहा है कि अगर हम ऐसा करेंगे तो ऐसा होगा, अगर हम वैसा करेंगे तो वैसा होगा।
अगर पाकिस्तान से हमारे संबंध टूटेंगे, तो टूटने दो। हिंसा और आतंक के अलावा पाकिस्तान से हमारे संबंधों से हमें क्या मिला है? पाकिस्तान को बचाने की ज़िम्मेदारी हम क्यों लें? आखिर किसलिए? हर बार वे पलटकर कहते हैं कि उन्हें सबूत चाहिए। अब आखिरकार हमारे पास सबूत है।
मैं 23 साल की उम्र से ही पैंतीस साल से संपादक हूँ। जनरल जिया-उल-हक के ज़माने से ही मैं ये सुनता आ रहा हूँ कि 'पाकिस्तान सबूत माँग रहा है'। हमने उनसे खालिस्तान आंदोलन से अपना समर्थन वापस लेने को कहा, तो उन्होंने कहा, 'हमें तो इसके बारे में कुछ पता ही नहीं।' कश्मीर के मुद्दे पर भी वे यही दोहराते रहे, 'सबूत कहाँ है?' बेनज़ीर भुट्टो आईं, उन्होंने सबूत माँगे। नवाज़ शरीफ़ आए, उन्होंने सबूत माँगे। मुझे लगता है परवेज़ मुशर्रफ़ ने तो कम सबूत माँगे थे। अब फिर से वे सबूत माँग रहे हैं।

मुंबई में एक आतंकवादी पकड़ा गया है और गिरफ्तार किया गया है। आपको और कितने सबूत चाहिए? अगर उसकी कही बात सबूत नहीं है, तो आप और सबूत कैसे जुटा सकते हैं?
ऑपरेशन पूरा होने के दो दिन बाद, 1 दिसंबर 2008 को, आदरणीय आरिफ मोहम्मद खान ने rediff.com पर इस बारे में यह टिप्पणी की:
मुंबई हमले के बाद, हमें इस खतरे की भयावहता को समझना होगा और एकजुट होकर कार्रवाई करने की आवश्यकता है। हमें इज़राइल जैसे देशों की मदद लेने में संकोच नहीं करना चाहिए, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के खतरे से निपटने के लिए एक अत्याधुनिक प्रणाली विकसित की है। हमें पाकिस्तान के सहयोग से या उसके बिना, आतंकी प्रशिक्षण शिविरों को नष्ट करना होगा और पाकिस्तान को यह स्पष्ट कर देना होगा कि उनके क्षेत्र में आतंकी संगठनों के खिलाफ कोई भी कार्रवाई उनकी संप्रभुता का उल्लंघन नहीं है। बल्कि, इससे उन्हें अपनी सत्ता बहाल करने और भारत को हत्या और अराजकता से बचाने में मदद मिलेगी।
शाहरुख खान और आमिर खान जैसी लोकप्रिय फिल्मी हस्तियों से भी इसी तरह की प्रतिक्रियाएं मिलीं, लेकिन वे सभी एक ही भावना के अलग-अलग रूप थे।
यह भारत की स्वस्थ धड़कन है।
ऐसा नहीं है कि पाकिस्तान में समझदार, निष्पक्ष और बुद्धिमान आवाज़ें नहीं हैं। मैं कराची से कम से कम तीन लोगों को अच्छी तरह जानता हूँ, जिनमें डॉ. आमिर अब्बास सूमरो सबसे आगे हैं। उनकी निष्पक्षता हमारे कई बेहतरीन भारतीयों को भी शर्मिंदा कर सकती है। हालांकि, एक घिसी-पिटी कहावत के अनुसार, वे दुर्भाग्य से अपवाद हैं जो नियम को साबित करते हैं। उनका धर्मनिरपेक्षता वास्तव में समावेशी है, न केवल साथी मुसलमानों के लिए बल्कि हिंदुओं के लिए भी। पाकिस्तान के अधिकांश अन्य मुसलमानों के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता, जो परीक्षा की घड़ी में मानवता के मूल्यों को स्वेच्छा से त्याग देते हैं। बेशक, भारत में भी ऐसे चरमपंथी हैं। हालांकि, मेरी राय में, यहाँ वे अपवाद हैं, नियम नहीं।
एक बार हिंदू-ईसाई संवाद के दौरान, एक हिंदू से विवाहित ईसाई प्रतिभागी ने अपने छह वर्षीय बेटे और उसके एक सहपाठी के बीच हुई बातचीत हमारे साथ साझा की। उसके सहपाठी, जो स्वयं भी एक ईसाई था, ने उससे पूछा कि वह घर पर पूजा के

दौरान यीशु मसीह और हनुमान जी की दो मूर्तियों की एक साथ पूजा कैसे कर सकता है, जबकि वे अलग-अलग धर्मों का प्रतिनिधित्व करती हैं।
उस होशियार बच्चे ने जवाब दिया, 'मैं हनुमान जी से प्रार्थना करता हूं कि वे यीशु की रक्षा उसी तरह करें जैसे उन्होंने राम की रक्षा की थी।'
यह बात तो छह साल का भारतीय बच्चा भी आसानी से समझ सकता है।

खंड – VI

भारत और पाकिस्तान

पाकिस्तान – संकटग्रस्त राष्ट्र

इज़राइल के अलावा, पाकिस्तान एकमात्र ऐसा राज्य है जिसकी स्थापना धार्मिक आधार पर हुई थी; हमारा गठन इस्लाम के आधार पर हुआ था। पाकिस्तान में हम इन बातों के महत्व को भूल चुके हैं। इनके बिना, आप समुद्र में फेंके जा रहे तिनके के समान हैं। आप सिंधी हैं, बलूच हैं, पंजाबी हैं, पठान हैं। पाकिस्तान को एकजुट रखने वाली शक्ति हमेशा से इस्लाम रही है। इसके बिना, पाकिस्तान बिखर जाएगा।
– ज़िया-उल-हक
यह समझने का एक प्रयास है कि पाकिस्तान ने अपने राजनीतिक इतिहास के माध्यम से, अपनी पहचान के संकट के परिणामस्वरूप नैतिकता और करुणा के दुखद पतन को कैसे देखा है।
यदि किसी राष्ट्र का मूल्यांकन करने के लिए कोई नैतिक मापदंड होता, तो कई मुस्लिम देश उसमें पिछड़ जाते। अरब, जो इस धर्म का जन्मस्थान है, ने इन राष्ट्रों को लगातार ऐसे अतीत की लालसा में डूबा रखा है जो आज केवल एक अपवाद के रूप में ही मौजूद है। मध्ययुगीन रीति-रिवाजों की चाहत में महिलाओं को घर में ही सीमित रखने की इच्छा, परिवार नियोजन जैसी शहरी आवश्यकताओं को स्वीकार करने की अनिच्छा, शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़कर भाग लेने की अनिच्छा और इक्कीसवीं सदी के बदलावों को पूरी तरह से नकारने की इच्छा शामिल है।
कठोर धार्मिक नियम कई सभ्य और शिक्षित पाकिस्तानी मुसलमानों को गरीबी में धकेल देते हैं और इससे भी बुरी बात यह है कि उन्हें प्रतिगामी विचारों का अनुसरण करने के लिए विवश कर देते हैं। असहिष्णु, संकीर्ण और विशिष्ट मानसिकता (जिसे हीन भावना का एक रूप माना जाता है जो स्वयं को उसके विपरीत प्रस्तुत करती है) राजनीतिक उथल-पुथल से जूझ रहे देशों को पतन की ओर धकेलती है। इसका परिणाम यह होता है कि काफी संख्या में लोग घोर निरक्षरता और गरीबी का शिकार हो जाते हैं। जीवनयापन के लिए संघर्ष करते हुए, निरंतर दानदाताओं या वित्तीय सहायता की तलाश में, पाकिस्तान अपने ही बनाए जाल में फंसा हुआ है।

पाकिस्तान
जब आधुनिक युग के एम.ए. जिन्ना ने भारत के साथ कड़ा रुख अपनाया और यहाँ तक कह दिया, 'हम या तो विभाजित भारत चाहेंगे या तबाह भारत,' तो वास्तव में वे राष्ट्र के भविष्य को दिशा दे रहे थे। पाकिस्तान के सीमा पार आतंकवाद और 26/11 जैसे हमलों के पीछे भी यही मूल प्रेरणा है।
एक विचारधारा यह मानती है कि विभाजन ने पाकिस्तानियों को आलसी और संकीर्ण मानसिकता वाला बना दिया। प्रो. बुतानी ने अपनी पुस्तक 'द फ्यूचर ऑफ पाकिस्तान' में भी यही तर्क दिया है, जहाँ उन्होंने लिखा है, 'सच तो यह है कि पाकिस्तान हमेशा से बिकने के लिए तैयार था - बस हमें इसे खरीदना नहीं आता था। ऐतिहासिक सच्चाई यह है कि पाकिस्तान के नेताओं ने कभी आजादी के लिए संघर्ष नहीं किया। उन्हें यह साम्राज्यवादी शक्ति की साजिशों से मिली; और उन्होंने ऐसा व्यवहार किया मानो उन्हें चोरी की संपत्ति मिली हो। पाकिस्तान बिकने के लिए तैयार था और आज भी है। इसने खुद को संयुक्त राज्य अमेरिका को बेचा; इसने खुद को सोवियत संघ को बेचने का प्रयास किया; यह खुद को चीन को बेचने के लिए तैयार था, और फिर से संयुक्त राज्य अमेरिका को।' अफगानिस्तान में तालिबान द्वारा बामियान की मूर्तियों को उड़ा देना उदारवादी दुनिया के लिए एक संदेश था कि असहिष्णु इस्लामी अपने इस कट्टरपंथी विश्वास को कायम रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं और किसी की नहीं सुनेंगे कि दुनिया में केवल एक ही धर्म का अस्तित्व होना चाहिए। सत्य पर उनका यह एकाधिकार और उनके खुलेआम दिखाई देने वाला क्रोध उन्हें न केवल अपनी ही महिलाओं को अपमानित और नष्ट करने के लिए प्रेरित करता है, बल्कि वहाबी इस्लाम से संबंधित न होने वाली हर चीज का अंधाधुंध विनाश करने के लिए भी प्रेरित करता है। जब तालिबान ने इस्लाम के नाम पर पर्वतीय मूर्तियों को नष्ट किया, तो अपराधियों ने कई मुसलमानों को अनुचित रूप से शर्मिंदा कर दिया। हालांकि उन्होंने इस विनाश की कड़ी निंदा की, लेकिन उनका विरोध व्यर्थ रहा।
तालिबान और अन्य
तालिबान, साफ-सुथरे, इत्र लगाए, रोल्स रॉयस चलाने वाले और बेदाग सफेद कपड़े पहनने वाले सऊदी अरबियों के गंदे, दाढ़ी वाले, बेढंगे और गरीब रिश्तेदार मात्र हैं। उनकी सोच एक जैसी है – वे संकीर्ण हैं और दूसरों के प्रति असहिष्णु हैं। भारत विरोधी आईएसआई की गुप्त शाखा, लश्कर-ए-तैबा, अपने

उद्देश्यों और तरीकों में तालिबान से कुछ खास अलग नहीं है – दोनों की जिहादी मानसिकता है और वे उन लोगों को मारने में विश्वास रखते हैं जिन्हें वे काफिर समझते हैं।
सऊदी अरब का चेहरा थोड़ा सा बदल दें तो तालिबान बन जाता है; तालिबान को थोड़ा सा बदलें तो लश्कर-ए-तैबा बन जाता है; लश्कर-ए-तैबा को थोड़ा सा बदलें तो आईएसआई बन जाता है; आईएसआई को थोड़ा सा बदलें तो आश्चर्य न करें, पाकिस्तान बन जाता है। पाकिस्तान को थोड़ा सा बदलें, और फिर हम वापस सऊदी अरब पर आ जाते हैं। ये सब उसी फासीवादी मानसिकता के अंश हैं, वह मानसिकता जो मानती है कि ईश्वर निर्मम हत्याओं से प्रसन्न होगा, बशर्ते वे धर्म के नाम पर की जाएं।
एक समय था जब पाकिस्तानी चेहरों को भारतीय चेहरों के समान माना जाता था, लेकिन समय के साथ-साथ मदरसे खुलते गए और पाकिस्तान भारत के पड़ोसी देश से सऊदी अरब का उपग्रह देश बन गया।
पाकिस्तान धीरे-धीरे उस मध्ययुगीन सोच की ओर बढ़ रहा है जिसमें तालिबान डूबा हुआ है। पाकिस्तान का तालिबानीकरण (जिसके बारे में खुद जरदारी ने तालिबान द्वारा पाकिस्तान पर कब्ज़ा करने की आशंका जताई है) एक बढ़ती हुई सच्चाई है जिसे पाकिस्तानी अभिजात वर्ग आज भी अनदेखा करना चाहता है या अनदेखा करने का दिखावा कर रहा है। लेकिन स्पष्ट संकेत यह है कि पच्चीस वर्षों में, आज का पाकिस्तान तालिबानीकृत अफगानिस्तान जैसा अधिक दिखेगा, बजाय इसके कि वह तुर्की जैसे विकसित इस्लामी राष्ट्र जैसा दिखे, जिसकी नींव बेहतर कार्य नैतिकता और अन्य कई गुणों पर रखी गई है।
पाकिस्तान के सऊदीकरण/तालिबानीकरण के कारण नैतिकता धुंधली पड़ गई है, जिसके दुष्परिणाम श्रीलंका जैसे मित्र देशों के निर्दोष क्रिकेटरों को निशाना बनाने जैसे मामलों में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इससे यह संदेश मिलता है कि गैर-मुसलमानों का स्वागत नहीं है, भले ही वे सहयोगी हों। जब लोग दुनिया के प्रति असहिष्णु हो जाते हैं, उसे बनाने के बजाय नष्ट करना पसंद करते हैं, तो यह एक संकेत है कि शायद यह कोई अपवाद नहीं है, बल्कि यह केवल कुछ व्यक्ति नहीं बल्कि देश का अधिकांश हिस्सा आत्मघाती सोच रहा है। चूंकि उन्हें लगभग यकीन है कि वे बच नहीं पाएंगे, इसलिए वे हमें भी अपने साथ ले जाना चाहते हैं।

सोवियत संघ द्वारा अफगानिस्तान में किए गए आक्रमणों का मुकाबला करने के लिए तालिबान को पाकिस्तान और अमेरिका द्वारा समर्थन और हथियार दिए गए थे। उस समय नैतिक दुविधा में केवल पाकिस्तान ही दोषी नहीं था, बल्कि ईमानदारी से कहें तो अमेरिका को भी अपनी गलती माननी चाहिए। यदि पाकिस्तान और अमेरिका के बीच प्रेम-घृणा का रिश्ता है, तो इसका कारण अमेरिका द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली आर्थिक सहायता है। दूसरी ओर, पाकिस्तानी जानते हैं कि वे अब एक ऐसी स्थिति में फंस गए हैं जिससे वे आसानी से नहीं निकल सकते। जिहादी सदस्यों और अमेरिका की सत्ता की लालसा (उदाहरण के लिए, इमरान खान जिन्होंने स्वात क्षेत्र में तालिबान का स्वागत किया) के कारण पाकिस्तान के अभिजात वर्ग भी इस तरह की नैतिक दुविधा में पड़ गए हैं। पाकिस्तान को विफल राज्य कहने से पहले, उसे अनिवार्य रूप से एक भ्रमित राज्य कहना होगा - जैसा कि अब स्पष्ट है।
समय में एक संक्षिप्त ऐतिहासिक यात्रा
पाकिस्तान का विचार केवल 1947 में ही आकार नहीं ले पाया, बल्कि इसकी नींव 1936 में ही पड़ गई थी – उसी वर्ष बॉम्बे प्रेसीडेंसी का हिस्सा रहे सिंध प्रांत को बॉम्बे से अलग करके एक स्वायत्त प्रांत बनाया गया था। सिंधी आबादी का अधिकांश हिस्सा इस्लाम धर्म का पालन करता था, हिंदू सिंधी कुल जनसंख्या का केवल बीस से पच्चीस प्रतिशत ही थे। सिंध का विभाजन जिन्ना की मुस्लिम लीग के लिए पहली जीत साबित हुई। एलन कीथ जोन्स के शब्दों में, 'एक तरह से, यह एक दशक बाद ब्रिटिश भारत के दो अलग-अलग संप्रभु राज्यों, भारत और पाकिस्तान में विभाजन का पूर्वाभास था।' कराची के पूर्व महापौर हातिम ए. अलावी ने अपने साक्षात्कार में जोन्स से कहा कि 'यदि सिंध को बॉम्बे से अलग न किया गया होता, तो पाकिस्तान का अस्तित्व में आना असंभव था।'
इसके अलावा, कई इतिहासकारों (जैसे आयशा जलाल) ने भी यही निष्कर्ष निकाला है कि जिन्ना वास्तव में कभी पाकिस्तान नहीं चाहते थे और वे पाकिस्तान की मांग को अपने और मुस्लिम समुदाय के लिए अधिक शक्ति हासिल करने की एक सौदेबाजी की चाल के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे। सच कहें तो, पाकिस्तान एक अनियोजित गर्भधारण का परिणाम था। लेकिन मातृभूमि के निर्माण के बाद, जिन्ना ने अपने परिश्रम के फल का आनंद लेने के लिए एक वर्ष से थोड़ा अधिक समय तक जीवन व्यतीत किया।

मैरी ऐन वीवर के शब्दों में, 'एक मुस्लिम मातृभूमि का विचार कभी पूरी तरह सफल नहीं हुआ है। स्वतंत्रता के बाद से कोई भी नेता इस्लाम के नाम पर लोगों को एकजुट नहीं कर पाया है, क्योंकि पाकिस्तान में आपको यह पूछना होगा, 'किसका इस्लाम?' यहाँ तीन प्रमुख सुन्नी मुस्लिम संप्रदाय हैं, और साथ ही शिया, अहमदी, सूफी, इस्माइली और कई उप-संप्रदाय भी हैं।'
वहीं दूसरी ओर, पाकिस्तान राष्ट्रवाद की नई भावना से सशक्त होकर भी इससे बुरी तरह बोझिल है। वह भारत से अलग अपनी पहचान बनाने के प्रयास में अत्यधिक ऊर्जा और प्रयास लगा रहा है; वह भारत का जुड़वां भाई कहलाना पसंद नहीं करता। इसका कारण स्पष्ट है। भारत से आगे निकलने की कोशिश में पाकिस्तान उसके साथ कदम मिलाकर चलने में भी विफल रहा है; भारत जितनी तेजी से प्रगति न कर पाने के कारण वह अपनी कमियों को स्वीकार करने में असहज महसूस करता है। वह भारत का कम सफल और गरीब भाई कहलाना पसंद नहीं करता। वह इस बात को नजरअंदाज करते हुए खुद को दूसरे शब्दों में परिभाषित करने का प्रयास करता है।
धर्म, जिसे जिन्ना ने एक अलग मातृभूमि के लिए मूल कारण बताया था, पाकिस्तान के नेताओं के लिए एक बैसाखी बन गया, खासकर जिया-उल-हक के बाद, जिन्होंने कई उदार और धर्मनिरपेक्ष मुसलमानों को कट्टरपंथी बना दिया।
घृणा दुनिया में सबसे आसानी से और तेजी से पनपने वाली भावना है – इसके लिए उच्च बुद्धि की आवश्यकता नहीं होती। भ्रष्ट और असंवैधानिक नेताओं के नेतृत्व में जनता ने वह मोड़ ले लिया जो उनके पतन का कारण बना।
हालांकि, जिन क्षेत्रों में भारत के प्रति घृणा का कोई नामोनिशान नहीं था, वहां पाकिस्तान सुस्त रहा। इस्लाम-केंद्रित आबादी में साक्षरता दर बहुत कम थी, साथ ही जनसंख्या वृद्धि दर भी सबसे अधिक थी।
1978 में, जब ज़िया ने पाकिस्तान को बताया कि उन्होंने सपने में एक आवाज़ सुनी थी जिसमें कहा गया था कि चुनाव गैर-इस्लामिक हैं, तो भारत में लगभग हर कोई हंस रहा था। यहां तक कि मुशर्रफ के आत्मसंतुष्ट और आत्म-प्रशंसापूर्ण कार्यशैली ने भी भारतीयों को मुस्कुराने का मौका दिया। एक बार जब उनसे दोनों जनरलों के बीच समानता के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने ज़िया पर कटाक्ष करते हुए कहा, 'वह मुझसे कहीं अधिक धार्मिक थे। ज़िया एक चालाक व्यक्ति थे; उन्होंने अपनी सत्ता सुनिश्चित करने के लिए धर्म का इस्तेमाल किया, और मेरा दृढ़ विश्वास है कि धर्म का इस्तेमाल राजनीतिक लाभ के लिए

नहीं किया जाना चाहिए। साथ ही, पाकिस्तान के लोग शायद वास्तव में ज़िया के साथ नहीं थे, लेकिन वे निश्चित रूप से मेरे समर्थक हैं।'
यह कोई रहस्य नहीं है कि पाकिस्तानी तानाशाह अहंकार और पूर्ण आत्म-भ्रम से ग्रस्त होते हैं। आपातकाल के बाद की इंदिरा गांधी की तरह, मुशर्रफ को भी बाद में अपनी अलोकप्रियता का एहसास तब हुआ जब राष्ट्रीय चुनावों में उन्हें करारी हार का सामना करना पड़ा।
पाकिस्तान की लेखिका मैरी ऐन वीवर ने टिप्पणी की कि अपने दावों के विपरीत, मुशर्रफ भी मुल्लाओं के सामने घुटने टेकते थे, 'फिर भी, जब भी उन्हें (मुशर्रफ को) पाकिस्तान के उग्रवादी मुल्लाओं द्वारा चुनौती दी गई, तो वे पीछे हट गए।'
पाकिस्तान में, धर्म का इस्तेमाल लगभग हर जघन्य कृत्य को जायज़ ठहराने के लिए किया जा सकता है। एक शहरी शिक्षित भारतीय को एक शहरी पाकिस्तानी रहस्यमय लगता है: वह अपने सामने मौजूद विरोधाभास को सुलझाने की कोशिश करता है। एक ओर, वह भावुक होकर जीवन से मानवता के लुप्त होने का शोक व्यक्त करने वाले शेर पढ़ता है, वहीं दूसरी ओर, वह अपनी पत्नी के सिर से पैर तक पर्दा करने का समर्थन करता है। वह उसके लिए कमतर, कम दिखाई देने वाली और कम महत्वपूर्ण है। वह बेपरवाही से अपनी चचेरी बहन से शादी कर लेता है; वह मानता है कि यह एक ऐसी परंपरा है जो 'तर्कसंगत' है। मैं यह भी कहना चाहूँगा कि बेशक कुछ पाकिस्तानी महिलाएं भी स्कर्ट पहनती होंगी, लेकिन वे लाहौर या कराची की सड़कों पर यूं ही टहलती हुई नहीं दिखाई देंगी। कुछ साल पहले तक, साड़ी पहनी महिला को भी तिरस्कार की नज़र से देखा जाता था।
ऑनर किलिंग और वट्टा सट्टा (जहां भाई-बहन की जोड़ी की शादी दूसरी भाई-बहन की जोड़ी से करा दी जाती है) जैसी प्रथाएं शिक्षित और धनी पाकिस्तानी लोगों में भी आम हैं। महिलाओं का सिर कलम करना उन्हें चौंकाता नहीं है (हाल ही में 12 फरवरी 2009 को अमेरिका के बफ़ेलो में, एक पाकिस्तानी अप्रवासी, 44 वर्षीय मुज़म्मिल हसन, जिसके तलाक की कार्यवाही चल रही थी और जिसके खिलाफ निषेधाज्ञा जारी थी, ने अपनी पत्नी आसिया, जो उसके चार बच्चों की मां थी, के पास जाकर उसका सिर कलम कर दिया। वह कोई साधारण टैक्सी ड्राइवर नहीं था; वह स्थानीय मुस्लिम समुदाय का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था, साथ ही उसने एक स्थानीय टीवी स्टेशन, 'ब्रिजेस टीवी' की स्थापना भी की थी। उसकी पत्नी उसके कार्यालय में उसके साथ काम करती थी।)

यह सुनकर भले ही हैरानी हो, लेकिन ऐसा लगता है कि यही मानसिकता थी जिसने कुबेर काल में डेनियल पर्ल का सिर कलम किया और अमरसिंह सोलंकी का गला काटा था। इस बात को मानवतावाद के साथ जोड़ना मुश्किल है, चाहे इसे सही ठहराने और समझाने के लिए कितनी भी सावधानी से कोशिश की जाए।
पाकिस्तानी मुसलमानों की मध्ययुगीन मानसिकता अन्य धर्मों के लोगों ('नास्तिकों') और महिलाओं को निम्न श्रेणी में रखती है, उन्हें सच्चे मुस्लिम पुरुषों के बराबर दर्जा देने से इनकार करती है। ड्राइंग रूम में रहने वाला पाकिस्तानी मानवतावाद वास्तविक जीवन में नहीं उतरता। सूफीवाद भी केवल घर के अंदर ही सीमित है, लेकिन इसे उदार जीवनशैली का समर्थन मानना मूर्खतापूर्ण नहीं तो खतरनाक जरूर होगा। पाकिस्तान का पुरुष प्रधान रवैया भी संकीर्ण है, जो महिलाओं की हीनता की धारणा पर आधारित है, न कि उनकी समानता पर। अपने स्वरूप में यह अक्सर संरक्षणवादी होता है, लेकिन वास्तव में प्रगतिशील कभी नहीं होता।
भारत जैसे शक्तिशाली पड़ोसी को हराने की धुन में डूबा पाकिस्तान, कश्मीर को उससे छीनने की उम्मीद में पूर्व की ओर निशाना साधे खड़ा है। विभाजन के तुरंत बाद, पश्चिमी पाकिस्तान ने पूर्वी पाकिस्तान के विरोध को अनसुना कर दिया, जो भारी कर तो चुकाता था लेकिन बदले में उसे कोई विकास नहीं मिला। वंचित पूर्वी पाकिस्तानी विद्रोह कर बैठे और अंततः भारत जैसे पाकिस्तानी शत्रुओं की मदद से अलग हो गए। इस हार ने पाकिस्तानी मानसिकता को और भी गहरा आघात पहुँचाया, जो लंबे समय से अपने क्षेत्र को बढ़ाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन अंततः पाया कि वास्तव में उसका क्षेत्र घट गया है।
परिणामस्वरूप, कश्मीर के लिए युद्ध की मांग और भी प्रबल हो गई। एक बार फिर, इसने आत्मनिरीक्षण के बजाय 'भारत से नफरत करो, काफिरों से नफरत करो' का नारा अपनाया। भारत के साथ हुए तीनों युद्धों में पराजित होकर, इसने महसूस किया कि यह भारत को केवल परोक्ष युद्ध के माध्यम से ही नुकसान पहुंचा सकता है, न कि पारंपरिक युद्ध के माध्यम से। भारत को हजारों घावों से लहूलुहान करना था, उसे इतना छोटा करना था कि दोनों देशों के बीच किसी प्रकार की समानता संभव हो सके।
मंदी से भी पाकिस्तान को कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि अमेरिका हमेशा अरबों डॉलर की आर्थिक मदद देकर उसे चुप कराने के लिए तैयार रहता है।

पाकिस्तान का खुद को एक ऐसे देश में तब्दील कर लेना जिसकी महज़ एक उपद्रवी भूमिका है, उसके लोगों की बदहाली और सुशासन के अभाव को दर्शाता है।
युद्ध भड़काने वाली और उग्र पंजाबी पाकिस्तानी आवाज़ पूरे देश की धड़कन बन गई, जिससे सिंधी जैसे अन्य लोग बेहद नाराज़ हुए, जो बांग्लादेशियों की तरह खुद को ठगा हुआ महसूस करते हैं। उनकी तरह, अन्य लोग भी पाकिस्तानी राजनीति, प्रशासन, व्यापार, रक्षा और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में पंजाबी वर्चस्व से आज भी आक्रोशित हैं। आईएसआई, जिसे पाकिस्तान नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता, ने सभी नागरिक सरकारों को पंगु बना दिया है।
एक बड़े पेड़ के नीचे ज्यादा कुछ नहीं उग सकता।
ऐसा कहा जाता है कि आतंकवाद का केंद्र पाकिस्तान में है। यह बात कितनी हद तक सच है, यह मैरी ऐन वीवर की पुस्तक 'पाकिस्तान' में दिए गए आंकड़ों से भी स्पष्ट होता है, जहां वे बताती हैं कि, '1987 में ही, विश्व स्तर पर दर्ज 777 आतंकवादी घटनाओं में से नब्बे प्रतिशत पाकिस्तान में घटी थीं। देश में बम विस्फोटों या आतंकवादी हमलों की घटनाएं चिंताजनक दर से जारी रहीं। अफगानिस्तान युद्ध के फलस्वरूप पनपे नशीले पदार्थों और हथियारों का प्रचलन अफगानिस्तान से सटे उत्तर पश्चिमी अफगानिस्तान (एनडब्ल्यूएफपी) क्षेत्र में चरम पर था। सीआईए द्वारा आपूर्ति की गई एके-47 राइफलों से लैस डकैत या लुटेरे, जो मुजाहिदीन के लिए थीं लेकिन काला बाजार में बेची गईं, कबायली बलूचिस्तान और सामंती सिंध में बेखौफ घूमते थे।'
जब अमेरिका ने रूस द्वारा अफगानिस्तान पर कब्ज़ा करने के प्रयास का मुकाबला करने के लिए गरीब, आदिवासी और निरक्षर लोगों की बढ़ती संख्या को हथियारबंद किया, तो उसने वास्तव में उन लोगों को हथियारबंद किया जो एक दिन अमेरिका और यहाँ तक कि भारत के खिलाफ भी पलटवार करेंगे। बाबरी मस्जिद का विध्वंस बाद में हुआ; भारत में हिंदू राष्ट्रवाद भी तब तक इतना शक्तिशाली नहीं था। आज भी, छोटे पाकिस्तानी लड़के स्कूल छोड़कर गोलियां बनाने में मदद करते हैं; जब वे थोड़े बड़े हो जाते हैं, तो उन्हें बंदूक चलाना सिखाया जाता है। मदरसों (जमात-उद-दावा जैसे मदरसों) में दी जाने वाली शिक्षा में इसे बढ़ावा दिया जाता है, जहाँ बच्चों को नफरत की आसान कला सिखाई जाती है। इस्लामी अभिजात वर्ग
हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि पाकिस्तान के कट्टरपंथी जिहादी संगठनों को मिलने वाला समर्थन अधिकतर धनी अभिजात वर्ग, शहरी शिक्षित, पश्चिमी

वेशभूषा वाले मुसलमानों से आता है। इस्लामी समाज का यह वर्ग दो स्तरों पर जीता और काम करता है – एक ओर तो वह दूसरों के लिए मुस्कुराता हुआ सूफी मुखौटा पहनता है, और दूसरी ओर उसका असली चेहरा, वह रूढ़िवादी व्यक्ति जो मानता है कि अन्य धर्मों के लोग वास्तव में काफिर या नास्तिक हैं।
उदार शिक्षा के बावजूद पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को रंग, पंथ या धर्म की परवाह किए बिना समान दर्जा देने वाली समावेशी नैतिकता के साथ उन्हें समाहित करने में विफलता यह दर्शाती है कि पाकिस्तान की शिक्षा के समक्ष चुनौतियाँ बहुत बड़ी हैं।
इस दोहरे व्यक्तित्व का एक उदाहरण सफल तैंतीस वर्षीय मिस्र के पायलट और इंजीनियर मोहम्मद अट्टा हैं, जिन्होंने अपने द्वारा अगवा किए गए विमान को वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के उत्तरी टावर में दुर्घटनाग्रस्त कर दिया था। उन्होंने इस दोहरे जीवन को पूरी तरह से जिया। शराब के आदी, अब आमतौर पर यह बताया जाता है कि वे कभी-कभी कोकीन का सेवन भी करते थे, लेकिन जब उनकी अमेरिकी प्रेमिका अमांडा केलर सार्वजनिक रूप से शराब पीती थीं, तो उन्हें यह बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं था! उनके दोहरे मापदंडों के अलावा, छुट्टियों के दौरान अमांडा और एक स्ट्रिपर के साथ एक ही कमरे में रहने में भी उन्हें कोई हिचक नहीं थी। यह मिस्रवासी फैशन के प्रति सजग था और माफिया सरगनाओं की तरह सोने के गहने दिखाने का शौकीन था। उनकी वसीयत के कुछ हिस्सों में, जिसे उन्होंने 'मृत्यु प्रमाण पत्र' कहा था, यह भी सामने आता है कि वे स्त्री-द्वेषी थे। मैं उद्धृत करता हूँ,
मैं नहीं चाहता कि कोई गर्भवती महिला या कोई अपवित्र व्यक्ति आकर मुझे अंतिम विदाई दे, क्योंकि मैं इसे स्वीकार नहीं करता।... मैं नहीं चाहता कि कोई महिला मेरे घर आकर मेरी मृत्यु के लिए क्षमा याचना करे।... जो लोग मेरे शरीर को शुद्ध करेंगे, वे अच्छे मुसलमान होने चाहिए।... मैं नहीं चाहता कि मेरे जनाज़े के दौरान या उसके बाद किसी भी अवसर पर कोई महिला मेरी कब्र पर आए।
अपनी पुस्तक 'माई जिहाद' में, आयरिश-अमेरिकी औकाई कॉलिन्स, जिन्होंने इस्लाम धर्म अपना लिया था और एफबीआई और सीआईए के लिए मुखबिर के रूप में काम करते थे, ने इस समूह को 'हैंकी-पैंकी अरब' बताया है। उन्होंने कहा कि ये लोग, हनी हंजूर (9/11 के अपहरणकर्ताओं में से एक जिसे वह जानते थे) की तरह, गुप्त रूप से 'शराब पीना, नशीली दवाओं का सेवन करना, हॉटडॉग खाना और अय्याशी करना

जैसी निषिद्ध गतिविधियों में लिप्त रहते हैं।' हालांकि 'हैंकीपैंकी' का यह समूह वास्तव में विश्व की कुल मुस्लिम आबादी का एक छोटा सा अल्पसंख्यक हिस्सा है, चिंताजनक तथ्य यह है कि अक्सर यही समूह सबसे बड़ा खतरा होता है, क्योंकि वे उन आतंकी संगठनों को वित्त पोषण करते रहते हैं जो उस उदार समाज पर हमला करते हैं जिसका वे इस्तेमाल करना पसंद करते हैं, लेकिन जिससे वे नफरत भी करते हैं।
ये धनी और शक्तिशाली कारोबारी इन हत्यारे संगठनों को वित्त पोषित करते हैं, और दुनिया भर में अंधाधुंध रक्तपात जारी रहने के दौरान वे सावधानीपूर्वक पर्दे के पीछे बने रहते हैं।
मैरी ऐन वीवर कहती हैं, 'अब जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ और पिछले कुछ वर्षों में मिले सभी पाकिस्तानी इस्लामिस्टों को याद करती हूँ, तो वे आंदोलन की तरह ही विविध थे। कुछ मदरसों से आए थे और मुश्किल से पढ़े-लिखे थे। अन्य प्रोफेसर, जनरल, डॉक्टर और अर्थशास्त्री थे।... मेरे लिए वर्तमान आंदोलन की सबसे डरावनी बात इसकी गुमनामी है। इसका एक सिपाही कोई साधारण दिखने वाला, बिना दाढ़ी वाला नौजवान हो सकता है जो आपके बगल में हवाई जहाज में, रेस्तरां में या सिनेमा में बैठा हो - एक शांत स्वभाव का व्यक्ति, जो एक शांत जीवन जी रहा हो।...'
शिक्षित मुसलमानों के हिंसा की ओर जाने की इस नई प्रवृत्ति के अलावा, गरीब मुसलमानों का एक अधिक सामान्य प्रकार भी है जो पैसे से गलत तरीके से प्रभावित हो रहे हैं और एक सुनियोजित घेराबंदी की मानसिकता विकसित कर रहे हैं।
वीर संघवी ने उस हद तक ब्रेनवाशिंग पर टिप्पणी की, जिसके कारण एक उग्र युवक नए कपड़ों के लिए अपने परिवार को छोड़ने को तैयार हो गया; ब्रेनवाशिंग के बाद, जिहाद के मार्ग में अपनी सारी सांसारिक संपत्ति और यहां तक कि अपना जीवन भी त्यागने को तैयार हो गया। उन्होंने आगे कहा,
इससे हमें पाकिस्तान में जिहाद की ताकत का कुछ अंदाजा मिलता है। युवा लड़कों को चुनकर उकसाया जाता है कि वे जिहाद के लिए अपनी जान दे दें... आप कह सकते हैं कि इससे पाकिस्तानी मुसलमानों की स्थिति के बारे में कुछ पता चलता है। लेकिन इससे भारतीय मुसलमानों की स्थिति के बारे में कुछ पता नहीं चलता। इसलिए, मुंबई हमलों को भारत के मुस्लिम अल्पसंख्यकों के तथाकथित गुस्से से जोड़ने के सभी प्रयास केवल आलसी और सतही पत्रकारिता हैं।

ढोंग करने वाले अधिकांश मुल्लाओं ने अपने अनुयायियों को केवल उन लोगों के प्रति असहिष्णु बना दिया है जो उनके विचारों से सहमत नहीं हैं। पाकिस्तानी क्या मानते हैं
इस घृणा, असीम ईर्ष्या और क्रोध के कारण लोगों के मन में पैदा हुई विचारधारा के परिणामस्वरूप, पाकिस्तान में अब एक ऐसी आबादी है जो अलग तरह से सोचती है।
जून 2008 में दो अमेरिकी थिंक-टैंकों द्वारा पाकिस्तान इंस्टीट्यूट फॉर पब्लिक ओपिनियन के सहयोग से किए गए एक सर्वेक्षण में यह निष्कर्ष निकला कि पचास प्रतिशत लोग अल-कायदा के साथ बातचीत करने के लिए तैयार थे। यह पाकिस्तान की वास्तविकता और उस देश के लोगों की मानसिकता है जो हिंसा का शिकार होने की शिकायत करते हैं। कराची और लाहौर के उत्तरदाताओं को शामिल करने वाले एक अन्य सर्वेक्षण में, बावन प्रतिशत लोगों ने महसूस किया कि जम्मू और कश्मीर पाकिस्तान का हिस्सा होना चाहिए, और यदि भारत के साथ युद्ध होता है, तो नब्बे प्रतिशत लोग रक्षा बलों में शामिल होने के लिए तैयार होंगे यदि सरकार उनसे उनकी भागीदारी के लिए कहती है। दिलचस्प बात यह है कि उसी सर्वेक्षण में, सड़सठ प्रतिशत लोगों ने महसूस किया कि भले ही भारत अपने परमाणु हथियार छोड़ दे, पाकिस्तान को ऐसा नहीं करना चाहिए। अंत में, एक प्रश्न के उत्तर में, 'आप क्या सोचते हैं कि नवंबर में मुंबई में हुए आतंकी हमलों के असली अपराधी कौन हैं?'; छियालीस प्रतिशत लोगों ने महसूस किया कि भारतीय सरकार जिम्मेदार थी; ग्यारह प्रतिशत लोगों का मानना था कि यह 'भारतीय गैर-सरकारी तत्वों और निजी संगठनों' का काम था। इकत्तीस प्रतिशत लोगों ने 'पता नहीं या जवाब देने से इनकार' किया, जबकि मात्र चार प्रतिशत लोगों का मानना था कि यह पाकिस्तान के गैर-सरकारी तत्वों का काम था, और तीन प्रतिशत लोगों ने कहा कि यह पाकिस्तानी सरकार का काम था। क्या आप हैरान हैं? खैर, इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि चार प्रतिशत लोगों का मानना था कि इसके लिए अमेरिका जिम्मेदार था।
और अंत में, लाहौर और कराची जैसे शहरी शहरों में, पाकिस्तान के खतरनाक आत्म-भ्रम के चौंकाने वाले प्रमाण मिलते हैं; सर्वेक्षण में, शहरी पाकिस्तानी आबादी के कम से कम 65 प्रतिशत लोगों ने महसूस किया कि भारत पाकिस्तान में आतंकवाद का समर्थन कर रहा है।

मुझे पूरा यकीन है कि समय आने पर उनके पास यह मानने का कारण होगा कि तालिबान, ओसामा बिन लादेन, बैतुल मुजाइदीन और आईएसआई सभी भारत से जुड़े एजेंट हैं जो पाकिस्तान को अस्थिर करने की कोशिश कर रहे हैं।
यह तो तर्कसंगत लगता है, है ना?

क्या हम काफी हद तक एक जैसे हैं?

मानेक प्रेमचंद
हमें बताया जाता है कि हम एक ही लोग हैं, जिन्हें धूर्त राजनेताओं ने बाँट दिया है। हम एक ही सोचते हैं, एक ही खाना खाते हैं, एक ही कपड़े पहनते हैं, हम एक हैं।
लेकिन क्या हम हैं?
पाकिस्तान ने कहीं न कहीं गलती की है; जबकि अपनी अनगिनत खामियों के बावजूद, भारत ने कमोबेश सही रास्ता अपनाया है।
वे अपना खुद का राष्ट्र, एक इस्लामी राज्य चाहते थे, जिसका मार्गदर्शन मोहम्मद अली जिन्ना करते थे। तो फिर समस्या क्या है? पहले दस वर्षों के बाद हालात इतने बिगड़ क्यों गए? आइए इस बात को नज़रअंदाज़ कर दें कि 1948 में ही, बाबा-ए-कौम (राष्ट्रपिता) जिन्ना की मृत्यु के तुरंत बाद, उनके खिलाफ गैर-इस्लामी होने का आरोप लगाते हुए एक मामला दर्ज किया गया था। आखिर जिन्ना तो मांस खाने वाले, शराब पीने वाले, पश्चिमी तौर-तरीकों को अपनाने वाले और शानदार सूट पहनने वाले व्यक्ति थे। लेकिन इस छोटी सी परेशानी को नज़रअंदाज़ करते हुए, अगले ही वर्ष, पाकिस्तानी लोग ऐसे अनैतिक कार्यों में लिप्त होने लगे, जैसे कि विमानों को तब भी उतरने की अनुमति न देना जब उनमें ईंधन भरा हो।
उन्होंने सैन्य तानाशाही और तख्तापलट देखे हैं, और लोग गुस्से को लगभग एक पेशे की तरह इस्तेमाल करते हैं। अगर आप शिया हैं, तो सुन्नी भड़क उठते हैं और कभी-कभी स्थिति उलट जाती है। नतीजा? पूजा स्थलों पर और नमाज़ के समय आत्मघाती बम धमाके, सब कुछ कथित तौर पर ईश्वर के नाम पर। मुहाजिर (भारत से आए प्रवासी) वतानी (स्थानीय) को अपने खिलाफ भड़काते हैं, और इसका उल्टा भी होता है। पंजाबी खुद को श्रेष्ठ समझते हैं और सिंधी को तुच्छ समझते हैं। सिंधी पंजाब को एक ऐसा राज्य मानते हैं जो सिंध की सारी दौलत हड़प लेता है। मुल्ला शिक्षित मुसलमानों से नाराज़ हैं। पठान और बलूची, जिनके पास देश की आधी ज़मीन है, वैसे भी मुख्यधारा में नहीं हैं, इसलिए वे एक अलग ही दुनिया में रहते हैं। उन्होंने सोवियत संघ को खदेड़ने में हिस्सा लिया, फिर वे

ओसामा को एक तरह का हीरो मानने लगे। ज़रा हकीकत पर गौर कीजिए। अगर नशा करना गलत है, तो नशा करने वाली चीज़ें उगाना कैसे सही हो सकता है? दशकों से ये समूह बंदूकें बनाने और अफीम के लिए पोस्त की खेती करने में व्यस्त हैं। क्या नशीले पदार्थों का सेवन गलत है? तो फिर नशीले पदार्थों से अर्जित आय कितनी सही है? यदि यह सही है, तो यह कहने जैसा है कि स्विस बैंक खातों में जमा धन गलत है, लेकिन उस पर अर्जित ब्याज सही है।
पाकिस्तान की कार्यप्रणाली को समझने के लिए आपको मणि शंकर अय्यर की पुस्तक 'पाकिस्तान पेपर्स' पढ़ने की आवश्यकता नहीं है, या वास्तव में यह देश इतना अनियमित क्यों है, यह समझने के लिए और भी कई कारक ध्यान देने योग्य हैं। ऊपर बताई गई बातों के अलावा, इस बात पर भी गौर करें कि देश को राष्ट्रमंडल से एक बार नहीं, बल्कि दो बार निष्कासित किया गया; पहली बार 1999 में और फिर (पुनः प्रवेश की अनुमति मिलने के बाद) 2007 में। यह वाकई शर्मनाक है। राजनीतिक प्रतिशोध में, राजनेताओं ने सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को पद से हटा दिया, लेकिन जब ऐसा लगा कि इससे उनके लिए भी मुसीबत खड़ी हो सकती है, तो उन्हें फिर से बहाल कर दिया गया। पाकिस्तान विदेशी दान पर फलता-फूलता है, और उसने दानदाता देशों के प्रमुखों के नाम पर सड़कों और स्टेडियमों का नामकरण किया है, जैसे कि कराची की एक प्रमुख सड़क 'शारा-ए-फैसल' (सऊदी अरब के राजा के नाम पर), या लाहौर का कर्नल गद्दाफी स्टेडियम (लीबियाई नेता के नाम पर), इत्यादि।
अमेरिका से अरबों डॉलर की सहायता राशि प्राप्त करने के बावजूद, वे अमेरिकी नेताओं के नाम पर सड़कों का नामकरण नहीं करते हैं। लेकिन अरब शेखों के लिए, पाकिस्तानी दुल्हनें, बाज़ के शिकार के ठिकाने और अन्य सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं।
उन्होंने लंबे समय से, शायद कुछ निराशा के साथ, अन्य लोकतांत्रिक देशों के कई नेताओं को समय-समय पर इस बात पर बहस करते देखा है कि क्या उनके देश को एक असफल राष्ट्र की तरह माना जाना चाहिए। इंग्लैंड में रहने वाले उनके प्रवासी 'पाकिस्तानी घर जाओ!' के नारे से परेशान हैं, जो काफी समय से प्रचलित है - यह न केवल नस्लवाद और कट्टरता का कार्य है, बल्कि आंशिक रूप से इन नागरिकों में से कई लोगों द्वारा अंग्रेजी जीवन शैली में घुलने- मिलने से इनकार करने की हताश प्रतिक्रिया भी है।

आप दुबई जाएँगे तो यह देखकर दंग रह जाएँगे कि एक आम पाकिस्तानी टैक्सी ड्राइवर कितना बेवजह गुस्सैल हो सकता है – हमेशा जल्दी गुस्सा हो जाता है। एक सलाह – जून से सितंबर तक के गर्म महीनों में उससे दूर रहें। अगर फ्रांस में आपकी मुलाकात किसी पाकिस्तानी से हो जाए, तो सबसे पहले वह आपसे यही पूछेगा, ‘क्या आप मुसलमान हैं?’ इस तरह की सोच आज पाकिस्तानी समाज का ताना- बाना बुनती है।
अब उन अनेक फिल्मी और साहित्यिक हस्तियों पर विचार कीजिए जो (अलग-अलग समय पर) पाकिस्तान चले गए। उन सभी के मन में कोई न कोई शिकायत थी; उनका कहना था कि भारत में मुसलमानों को गुलामी में जीना पड़ेगा; उर्दू भाषा खतरे में है, इत्यादि। उनकी कुछ आशंकाएँ ही निराधार थीं। इस श्रेणी के कुछ जाने-माने नाम हैं - जोश मलिहाबादी, नूर जहाँ, नशाद, फ़िरोज़ निज़ामी, गुलाम हैदर, ज़िया सरहदी, मीना शोरे, शेख मुख्तार, खुर्शीद, आदि। अफसोस की बात है कि नूर जहाँ जैसी हस्तियों को छोड़कर, इनमें से अधिकांश प्रवासियों को अपने इस कदम पर बहुत पछतावा हुआ। ज़िया सरहदी को जेल हुई और फिर उन्होंने अपने अंतिम पंद्रह वर्ष इंग्लैंड में बिताए, इस भारी गलती पर उन्हें गहरा अफसोस था। लेकिन केवल उन्हीं को क्यों? पाकिस्तान के मूल निवासी, असाधारण प्रतिभा के धनी फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ को भी राजनीतिक प्रतिशोध के कारण जेल जाना पड़ा और उन्होंने चार साल से अधिक समय जेल में बिताया। रिहा होने पर उन्होंने खुद को बेरूत में निर्वासित कर लिया। किसी भी लेखक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की उम्मीद नहीं हो सकती थी। अगर आप सत्ता में बैठे किसी व्यक्ति के करीबी थे, तो सत्ता में आने पर विपक्ष का नेता आपसे पूरा फायदा उठाता था। यह बात जितनी सच है, उतनी ही दुखद भी। हालांकि, यह कहना जरूरी है कि उनके मीडिया (खासकर जियो टीवी) ने किसी तरह कुछ बेहतरीन काम किया है।
अब इसकी तुलना उन लोगों से कीजिए जो यहाँ आए और यहीं बस गए। इस सूची में मोहम्मद रफी, शमशाद बेगम, सुरैया, साहिर लुधियानवी, दिलीप कुमार, खय्याम जैसे नाम शामिल हैं। इनमें बी.आर. चोपड़ा, आई.एस. जौहर, गुलज़ार, प्राण, ओ.पी. नैयर, राज कपूर, संगीतकार विनोद (एरिक रॉबर्ट) और कई अन्य गैर-मुस्लिम भी थे। 1980 के दशक की शुरुआत में ही युवा बलदेव मतलानी सीमा के इस पार आए, अपना घर, परिवार, सब कुछ बसाया और अब मुंबई विश्वविद्यालय में सिंधी विभाग के प्रमुख हैं। इनमें से अधिकांश लोगों को न केवल उनके पेशेवर समर्पण और

उत्कृष्टता के लिए, बल्कि एक बहुलवादी समाज में पूरे दिल से योगदान देने के लिए भी सम्मान दिया जाता है। केवल एक मूर्ख ही यह दावा करेगा कि हमारा देश समस्याओं से मुक्त है, लेकिन हमने सफलता और असफलता दोनों से सीखते हुए प्रगति की है। उतार-चढ़ाव के बावजूद हमारा ग्राफ ऊपर की ओर बढ़ता रहा है। धार्मिक संघर्षों के बावजूद, हम आज भी शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम हैं। आध्यात्मिक आधार के बिना किसी मौलवी की बात अनसुनी कर देना ही बेहतर है, और भारतीय मुसलमानों ने अपनी कलात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने के साथ-साथ आध्यात्मिक पहलू को भी बरकरार रखा है।
इसके अलावा, संगीतकार नाम और शोहरत कमाने के लिए सीमा पार से भारत आते हैं। प्रतिभाशाली अदनान Sami यहीं रहना पसंद करते हैं। गुलाम अली भी काफी सफल हैं और भारत और पाकिस्तान दोनों जगह बराबर समय बिताते हैं।
कुछ समकालीन संगीतकार भी यहीं रहना और तरक्की करना पसंद करते हैं। लेकिन प्रख्यात भारतीय गायक सोनू निगम ने कहा कि जब हमले हुए, तो सीमा पार से किसी भी संगीत हस्ती की ओर से कोई महत्वपूर्ण आवाज नहीं उठी।
पाकिस्तानी क्रिकेटरों के साथ भी यही हाल था, जो भारतीय विज्ञापनों से अच्छी खासी कमाई करते हैं और पृष्ठ तीन पर दिखाई देते हैं। यह उनके चरित्र के पक्ष में कोई तर्क नहीं देता।
अगर साठ साल पहले हम एक जैसे थे, तो दोनों देशों की उपलब्धियों और जीवन के बुनियादी ढांचे में इतना अंतर क्यों है? ज़रा सोचिए, जब आप पाकिस्तानियों से मिलते हैं, तो भले ही वे निजी तौर पर यह महसूस करते हों कि भारत में मुसलमानों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता, फिर भी वे भारतीयों द्वारा किए गए महान कार्यों की प्रशंसा करते हैं। वे जानते हैं कि हम अंतरिक्ष में रॉकेट भेजते हैं, गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित पाकिस्तानी रोगियों का इलाज करने में सक्षम हैं, और हमने कभी भी सेना को सत्ता हथियाकर हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों का अपमान नहीं करने दिया। हमने एक खुले समाज और अच्छे लेखन, सहिष्णुता और प्रगति, और सहानुभूति और उत्कृष्टता के बीच संबंध स्थापित किया है।
इसीलिए हमने कभी ऐसी आलोचना नहीं सुनी जिसमें भारत को 'एक विफल राज्य' कहा गया हो, जैसा कि अक्सर पाकिस्तान के लिए कहा जाता है। हम न तो 'खतरनाक राष्ट्र' हैं और न ही 'दुनिया का सबसे खतरनाक राज्य' (पाकिस्तान में पूर्व

अमेरिकी राजदूत रॉबर्ट ओकले)। भारतीय न तो ऐसे लेबल आकर्षित करते हैं और न ही अफीम का उत्पादन और बिक्री करने के लिए पोस्त उगाते हैं।
भारतीयों और पाकिस्तानियों के बीच इस काल्पनिक 'समानता' के खिलाफ तर्क देते हुए, वीर संघवी ने हिंदुस्तान टाइम्स में लिखा:
...भारतीयों और पाकिस्तानियों के बीच की खाई अब इतनी चौड़ी हो गई है कि हम किसी भी महत्वपूर्ण अर्थ में एक ही लोग नहीं रह गए हैं...
तीन भारतीयों ने ऑस्कर जीता – ए.आर. रहमान, रसूल पुकुट्टी और गुलज़ार। उनकी जीत से पूरे देश में खुशी की लहर दौड़ गई। हमें अपने देशवासियों पर गर्व था। हमें खुशी थी कि भारत के मनोरंजन उद्योग और उसके दिग्गजों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान मिली। और, ये तीनों पहले से भी कहीं ज़्यादा बड़े हीरो बन गए। लेकिन बात ये है: इनमें से एक भी हिंदू नहीं है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि पाकिस्तान में ऐसा हो सकता है? क्या आप ऐसी स्थिति की कल्पना भी कर सकते हैं जहाँ पूरा देश दो अल्पसंख्यक समुदायों के तीन सदस्यों की जीत का जश्न मनाए? बल्कि, क्या आप ऐसी स्थिति की कल्पना भी कर सकते हैं जहाँ अल्पसंख्यक समुदायों के लोग अपने-अपने क्षेत्रों में शीर्ष पर पहुँचें और इसलिए अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों की दौड़ में शामिल हों? एक ओर पाकिस्तान शरिया कानून लागू कर रहा है, तालिबान से निपट रहा है, मदरसों में नफरत फैला रहा है, दुनिया पर जिहाद का ऐलान कर रहा है और निर्दोष श्रीलंकाई क्रिकेटरों को जान से मारने की कोशिश कर रहा है। दूसरी ओर, भारतीय धर्मनिरपेक्षता की जीत है।
उन्होंने अपने निबंध का समापन अपने खास अंदाज में किया, 'वही लोग? मुझे हंसाओ मत।'

उपसंहार

2007 के मध्य में, दो इंडोनेशियाई मुस्लिम मुंबई के होटल प्रेसिडेंट में ठहरे। उन्होंने चुपके से उसी कफ़ परेड इलाके में एक अपार्टमेंट किराए पर लिया और उसका नवीनीकरण कराया। वे एक काली एसयूवी में घूमते थे। उन्होंने दाऊद इब्राहिम से संपर्क किया और बाद में पता चला कि वे समुद्री मार्ग से अमेरिकी दूतावास पर हमला करने की योजना बना रहे थे। उनकी योजना ईंधन से भरे एक जहाज को तेज गति से समुद्र के सामने स्थित दूतावास भवन तक ले जाने की थी, जिससे विस्फोट हो जाता। वे मुंबई में ही रहना चाहते थे, और उनमें से एक की यहाँ एक भारतीय से शादी करने की योजना थी। उनके संपर्क में रहे स्थानीय व्यक्ति ने यह जानकारी खुफिया एजेंसी (आईबी) को दे दी। दोनों को चुपचाप भारत से निर्वासित कर दिया गया, और उनकी पत्नी के संपर्क में रहे स्थानीय व्यक्ति की उनके बारे में जानकारी देने के बाद एक रहस्यमय सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। किसी को नहीं पता कि उन्हें जाने की अनुमति क्यों दी गई और उनकी तलाश क्यों नहीं की जा रही है।
नवंबर में हुए हमलों में दाऊद इब्राहिम की भूमिका एक महत्वपूर्ण कारक है, क्योंकि समुद्र के रास्ते भारत में प्रवेश करने वाले इराक से चुराए गए पेट्रोलियम उत्पादों में उसका बड़ा हिस्सा है। इस हमले में कई स्थानीय लोगों की संलिप्तता से भी इनकार नहीं किया जा सकता है और यही चिंता का विषय है।
इस हमले की खासियत यह है कि दस पैदल सैनिकों ने मुंबई पर हमला करने का फैसला उन वीडियो और भाषणों को देखने और सुनने के बाद किया, जिनमें भारत के साथी मुसलमानों के साथ लगातार हो रहे दुर्व्यवहार और अपमान का ब्योरा दिया गया था। कश्मीर और वहां की स्वतंत्रता की कमी उन वीडियो में से एक थी, जिसका इस्तेमाल इन युवकों को भड़काने के लिए किया गया था।
कश्मीर और 26/11
चाबाद सेंटर का कश्मीरियों से क्या लेना-देना है? अमेरिकियों, अंग्रेजों और ऑस्ट्रेलियाइयों को अलग-थलग करने का कश्मीर से दूर-दूर तक क्या संबंध है? अगर कश्मीर ही असली वजह थी, तो उन दस लोगों को हिंदू वेश में क्यों रखा

गया, उन्हें भगवा और लाल रंग की कलाई पट्टियाँ और हिंदू पहचान पत्र क्यों दिए गए?
भारत अभी भी पाकिस्तान के आतंकी समूहों और सरकार की आईएसआई के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। आईएसआई के कुछ सेवानिवृत्त अधिकारियों के इन आतंकी हमलों में शामिल होने की खबरें हैं, लेकिन आईएसआई की सक्रिय संलिप्तता अभी तक साबित नहीं हुई है। एक बार (और अगर) यह साबित हो जाता है, तो इससे दोनों देशों के बीच एक भीषण युद्ध छिड़ सकता है, जो एक भयावह स्थिति होगी।
पाकिस्तान 26/11 हमले से खुद को दूर करने की पूरी कोशिश कर रहा है और इसके लिए वह हमले का आरोप 'गैर-सरकारी तत्वों' पर लगा रहा है, जबकि पाकिस्तानी सरकार की इसमें कोई संलिप्तता नहीं है। लेकिन दुनिया भर की खुफिया एजेंसियां इस हताशा भरी कोशिश को सच नहीं मान रही हैं।
अल्लाह के नाम का दुरुपयोग करते हुए, ये संगठन धर्म की भावना का पालन किए बिना उसका गलत इस्तेमाल करते हैं; इनका मकसद सिर्फ सत्ता और धन की लालसा है। ये धर्म का इस्तेमाल सभ्य देशों से सत्ता छीनने के लिए करते हैं। इस सच्चाई को स्वीकार करने को तैयार नहीं कि मध्ययुगीन सोच केवल गरीबी और अभाव की ओर ले जाती है, इसलिए ये प्रगतिशील देशों को दोष देना पसंद करते हैं, उनसे नफरत करते हैं क्योंकि वे खुद पीछे छूट गए हैं, जबकि असल में अतीत में जीने की इनकी अपनी इच्छा ही इनकी इस दयनीय स्थिति के लिए जिम्मेदार है। अमेरिका और सऊदी अरब जैसे धनी देशों, उपग्रह देशों या चीन से मिलने वाली सहायता के आदी हो चुके ये देश बिगड़े हुए हैं। अपने डॉलर के लिए मेहनत करने को तैयार नहीं, ये देश धनवान बनने के शॉर्टकट ढूंढ रहे हैं और साथ ही भारत जैसे आत्मनिर्भर देशों के बराबर सम्मान और बराबरी की उम्मीद रखते हैं।
दुख की बात है कि इन आतंकी संगठनों को सऊदी अरब और अन्य मध्य पूर्वी देशों के धनी लोग आर्थिक सहायता देते हैं। समृद्ध देशों के ये तानाशाह अपने देश में किसी भी अपराध को बर्दाश्त नहीं करते, लेकिन वे खुशी-खुशी पाकिस्तानियों को दूसरे देशों में निर्दोषों के खिलाफ अपराध करने के लिए उकसाते हैं। ये लोग भी इन हमलों में भागीदार हैं। वे चुपचाप सुर्खियों से दूर रहते हैं, लेकिन गरीब और हताश पाकिस्तानी मुसलमानों के दिमाग में जहर

चिंता करने के बजाय, एक बार पाकिस्तानियों को यह देखने दें कि हम क्या सही करते हैं, न कि केवल अपनी गलतियों पर ध्यान केंद्रित करें।

उपसंहार

भारत जागृत
नवंबर 2008 में हुए मुंबई आतंकी हमले ने आखिरकार उन चुनिंदा लोगों को जगा दिया, जो तब तक एक अलग ही दुनिया में जी रहे थे। मुंबई के आम आदमी या औरत को चाहे यहाँ ट्रेन में धमाका हो या वहाँ टैक्सी में विस्फोट, इन लोगों को कोई खास फर्क नहीं पड़ता था। उस भयावह घटनाक्रम को अपनी आँखों के सामने घटते देख, ये लोग जाग उठे और हैरानी की बात यह है कि उन्हें गेटवे ऑफ इंडिया और ताज महल होटल के बीच गंदे फुटपाथ पर नारे लगाते हुए देखा गया।
शायद उनमें से कुछ के लिए धरती माता पर यह उनका पहला वास्तविक कदम था। रातों-रात, ये अनिच्छुक भारतीय देसी लड़कियाँ और देसी लड़के बन गए। वे आसानी से राजनीतिज्ञ-विरोधी अभियान में शामिल हो गए, क्योंकि यही चलन में था। अचानक पनपा राष्ट्रवाद या तो एक सनक था या डर। शायद उन्हें यह एहसास हो गया था कि वे आतंकवादियों की गोलियों के उतने ही निशाने पर थे जितने कि सड़क पर खड़ा मोची।
उनका महंगा सपना टूट गया था, और उसी सपने जैसी जिंदगी भी खत्म हो गई थी। वे जानते थे कि इसके लिए कौन ज़िम्मेदार है – वे धनी लोग जिन्हें वे इतने सालों से पालते-पोसते आ रहे थे और जिन्होंने उन्हें धोखा दिया था। यह बात कि कोई भी समूह पलक झपकाए करोड़पतियों को मार सकता है, इतनी बेशर्मी से हत्या कर सकता है (बिना फिरौती मांगे), उनके गुस्से का कारण बनी। यह गुस्सा इस एहसास से उपजा था कि ऐसे हमले में उनका पैसा किसी काम का नहीं था – वह उन्हें मौत से नहीं बचा सकता था। नवंबर की उन तीन रातों में वे इसी नींद से जागे।
इस बार निशाना पांच सितारा होटल थे। तख्तियों पर लिखा था, 'इस बार मामला अलग है', और वे सही थे। क्या यह एक अलग तरह का हमला था या ऊंट की पीठ पर आखिरी तिनका? सच्चाई यह है कि नवंबर 2008 में मुंबई पर हुआ हमला इसलिए अलग था क्योंकि हमलावर अलग थे!

से, शहर के हर उपलब्ध मंच पर अपनी आवाज उठानी होगी। केवल हम ही किसी सांसद के लिए मूर्खतापूर्ण बयान देना या चालाकी भरे बयानों से बच निकलना असंभव बना सकते हैं। सरकार की अक्षमता का मजाक उड़ाने के लिए ईमेल प्रसारित किए जा रहे थे, और इस प्रयास ने सरकार को गृह मंत्री और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को पद से हटाने के लिए मजबूर कर दिया। हम यह कर सकते हैं और हमें करना ही होगा। यह भी हमारी ज़िम्मेदारी है कि खुफिया जानकारी सरकार को जो भी बताए, उसे एक ठोस सुराग मानकर आगे बढ़ाया जाए, सभी सुरागों और लीक को असली माना जाए, न कि उन्हें 'कार्रवाई योग्य खुफिया जानकारी' समझा जाए। हम ही सरकार को सही दिशा दिखा सकते हैं, जो ब्रह्मा चेलानी के शब्दों में, 'अगले नए हमले को रोकने की बजाय पिछले हमले की पुनरावृत्ति को रोकने की कोशिश कर रही है।' आतंकवादी शायद एक ही रास्ता और तरीके न अपनाएं, वे भारत को पंगु बनाने के नए-नए तरीके खोजेंगे। फिलहाल, पाकिस्तान को कोई सज़ा नहीं मिली है; पाकिस्तान में भारतीय दूतावास को बंद करने या पाकिस्तान से आने-जाने वाली उड़ानों को रद्द करने जैसा कोई सांकेतिक कदम भी नहीं उठाया गया है। अमेरिका पर राजनयिक दबाव डालने जैसे उपायों के अलावा कुछ भी नहीं किया गया है। यह गंभीर मामला है। भारतीयों को तीखे सवाल पूछने होंगे और उनके जवाब में कार्रवाई करानी होगी।
इस बीच, पाकिस्तान से 6,000 से अधिक हिंदू सीमा पार कर चुके हैं। कुछ का कहना है कि उन पर इस्लाम धर्म अपनाने का दबाव डाला जा रहा था, जबकि अन्य का दावा है कि स्थानीय लोग उन्हें 'काफ़िर' कहते थे और उन्हें अपने साथ बैठने नहीं देते थे। यहां तक कि उनके बच्चों को भी स्कूल में नमाज़ पढ़ने के लिए मजबूर किया जाता था। टाइम्स ऑफ इंडिया ने भारत में बेबस हिंदुओं के इस नए आगमन का विस्तृत विश्लेषण करते हुए बताया है, 'प्रवासियों की कहानियों में डर ही बार-बार सामने आता है।' स्वात क्षेत्र पर तालिबान के कब्ज़े के बाद पाकिस्तान में हिंदुओं का जीवन और भी तनावपूर्ण हो गया है।
लेकिन ज़िंदगी हमेशा की तरह चलती रहती है; वाशिंगटन ने पाकिस्तान को फिर से आर्थिक सहायता देना शुरू कर दिया है – अब तक की सबसे बड़ी सहायता, और यकीन मानिए, यह 26/11 और बुश के बाद हो रहा है। यह तब हो रहा है जब उसे पता है कि यह सहायता गलत लोगों तक पहुँच सकती है और इसका इस्तेमाल 9/11 और 26/11 जैसे घातक मिशनों के लिए किया जा सकता है। हममें से जिन लोगों ने ओबामा के साथ बदलाव की उम्मीद की थी, उन्हें इस सहायता के बारे में जानकर

इतना बड़ा धोखा कभी महसूस नहीं हुआ। जितना ज़्यादा बदलाव होता है, उतना ही वह वैसा ही रहता है।
भारत को भीतर से ही अपनी रक्षा करनी होगी, क्योंकि यह अकेले ही आग के घेरे में रहकर, विफल राज्यों से घिरा हुआ है। भारत किसी भी तरह से विफल राज्य नहीं है, लेकिन वह सशस्त्र शत्रु को हल्के में लेने का जोखिम नहीं उठा सकता। हमारे पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के पास मुश्किल से कांटे और चाकू थे, जबकि बंदूकधारियों के पास एके-47 राइफलें थीं।
अगली बार स्थिति और भी बदतर हो सकती है।
या फिर, बहुत देर हो चुकी हो।

एंडनोट

भाग 1 हमले की संरचना अध्याय 1: पाकिस्तान से यात्रा
1. पाकिस्तान के गृह मंत्री रहमान मलिक ने 12 फरवरी 2008 को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि अल-फौज को बाद में फिर से रंगा गया, उसका जीर्णोद्धार किया गया और उसका नाम बदलकर माशाल्लाह कर दिया गया। इस बात की खबर बाद में 13 फरवरी 2008 को टाइम्स ऑफ इंडिया ने प्रकाशित की।
2. भारत सरकार द्वारा पाकिस्तान को दी गई रिपोर्ट, जिसका शीर्षक है 'मुंबई आतंकवादी हमले, 26-29 नवंबर 2008', जिसे द हिंदू ने प्रकाशित किया था।
हालांकि, ऐसी खबरें हैं कि नाव वास्तव में दाऊद इब्राहिम की है।
3. द हिंदू द्वारा प्रकाशित डॉसियर 'मुंबई आतंकवादी हमले, 26-29 नवंबर 2008'।
4. ‘कुबेर को पकड़ने वाले चार लोगों की पहचान हुई’; डीएनए; 27 फरवरी 2009।
5. ‘मोहम्मद अजमल आमिर कसाब का कबूलनामा’; मिड-डे; 19 दिसंबर 2008; और मुंबई के पुलिस अधिकारियों द्वारा समाचार पत्रों में प्रकाशित कई लेख।
6. वही।
7. द हिंदू द्वारा प्रकाशित डोजियर ‘मुंबई आतंकवादी हमले, 26-29 नवंबर, 2008’।
अध्याय 2: कुबेर
1. ‘लापता कुबेर क्रू के शव देखे गए, पुलिस का कहना है’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 16 दिसंबर 2008।
2. ‘मलिक ने सादिक को साजिशकर्ता बताया’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 13 फरवरी 2008।
3. वही।
4. मतीन हाफ़िज़; ‘26/11 के आतंकवादियों ने समुद्री मार्ग अपनाया’; द टाइम्स ऑफ़ इंडिया; 28 फ़रवरी।
5. ‘लापता कुबेर क्रू के परिजनों ने अंतिम संस्कार किया’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 23 दिसंबर 2008।

6. द हिंदू द्वारा प्रकाशित डॉसियर 'मुंबई आतंकवादी हमले, 26-29 नवंबर 2008'।
7. आशीष, खेतान; 'कराची से मुंबई: कदम दर कदम आतंक'; 26/11 मुंबई हमला।
8. ‘आतंकवादी फर्जी पहचान पत्रों के सहारे भाग निकले’; हिंदुस्तान टाइम्स; 2 दिसंबर
9. ‘हां, सुरक्षा में चूक हुई थी’; मुंबई मिरर; 3 दिसंबर 2008।
10. ‘आतंकवादी फर्जी पहचान पत्रों के सहारे भाग निकले’; हिंदुस्तान टाइम्स; 2 दिसंबर 2008।
11. केतन रंगा; ‘आतंकवादियों ने अपहृत पांच बकरियों का वध किया’; मिड-डे; 2 दिसंबर 2008।
टाइम्स ऑफ इंडिया ने 6 दिसंबर को इस बातचीत को अलग-अलग तरह से उद्धृत किया: पाकिस्तान के समुद्री क्षेत्र से बात कर रहे कॉलर ने कहा, ‘हमने तुम्हारे चार बकरे कुर्बा कर दिए हैं’। बकरे कुबेर नामक ट्रॉलर के चार मछुआरों को संदर्भित करते हैं। दूसरी ओर, भारतीय जलक्षेत्र में घुस आए आतंकवादी ने पूछा, ‘इस बकरे का क्या करें?’ वह कुबेर के कप्तान अमर नारायण सोलंकी का जिक्र कर रहा था। दूसरी ओर से जवाब आया, ‘बराबर वक्त पर तुम भी कुर्बा कर दो’। इसका मकसद पीड़ितों को अमानवीय बनाना और उन्हें जानवरों के नाम देना था, जिससे इंसानों की हत्या को बलि के मेमनों या बकरियों की हत्या के बराबर माना जा सके। बकरी ईद के दौरान, मुसलमानों का एक वर्ग एक मोटे बकरे का गला काटकर उसके मांस का भोज करता है।
12. आशीष खेतान; 'कराची से मुंबई: कदम दर कदम आतंक'; 26/11 मुंबई हमला; रोली बुक्स.
13. एस. अहमद अली; ‘कुबेर के कप्तान ने आतंकवादियों का विरोध नहीं किया: पुलिस’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 6 जनवरी 2009।
14. वही।
15. ‘मछली पकड़ने वाली नाव के चालक दल को हिरासत में लिया गया’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 2 दिसंबर 2008।
16. 'कुबेर पर नशीली दवाओं के निशान'; मुंबई मिरो; 5 दिसंबर 2008.
17. ‘लापता कुबेर दल के सदस्यों के शव देखे गए, पुलिस का कहना है’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 16 दिसंबर 2008।

18. ‘आतंकवादियों ने भारतीय जलक्षेत्र में ईंधन नहीं भरा’; टाइम्स ऑफ इंडिया; 14 फरवरी 2009। अखबार द्वारा दी गई कंपनी का पता है: गल्फ केमिकल्स, प्लॉट नंबर 8, सोलेज औद्योगिक क्षेत्र, कराची, पाकिस्तान। 13 फरवरी 2009 को अदालत ने मुंबई पुलिस को डीजल को नीलामी के माध्यम से बेचने का आदेश दिया क्योंकि इसे भंडारित करना खतरनाक था। पुलिस खुद डीजल खरीदकर इस्तेमाल करने की योजना बना रही है।
19. Ashish Khetan; ‘Karachi to Mumbai’; 26/11 Mumbai Attacked.
20. भारत द्वारा पाकिस्तान को दी गई फाइल, अनुलग्नक vii: ताज महल होटल में मौजूद एक आतंकवादी और पाकिस्तानी हैंडलर के बीच हुई कॉल का प्रतिलेख। ‘कॉलर: क्या आपने नीचे पानी के ताले नहीं खोले? रिसीवर: नहीं, उन्होंने ताले नहीं खोले। हमने जल्दबाजी में उन्हें वैसे ही छोड़ दिया। हमसे बहुत बड़ी गलती हो गई।’
कॉल करने वाला: क्या बड़ी गलती हुई?
रिसीवर: जब हम नाव में चढ़ रहे थे, तब लहरें काफी ऊंची थीं। एक और नाव आई। सबने शोर मचाया कि नौसेना आ गई है। सब जल्दी से कूद पड़े। इसी अफरा-तफरी में इस्माइल का सैटेलाइट फोन पीछे छूट गया।
21. इसका अनुवाद यह है, 'हमें तनाव मत दो, हम पहले से ही बहुत तनाव में हैं।'
22. अदिति राजा; ‘अफसोस से भरी हुई’; पीपल्स मैगज़ीन; दिसंबर 2008।
23. ‘उन्होंने कोलाबा में आतंकवादियों को उतरते देखा’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 17 दिसंबर 2008।
24. 'मछुआरे कहते हैं कि उन्होंने चार और आतंकवादी देखे'; मुंबई मिरर; 8 दिसंबर 2008।
25. अदितिराजा; ‘अफसोस से भरी हुई’; पीपल्स मैगजीन; दिसंबर 2008’।
26. शाहकार आबिदी; ‘हमलों से 40 दिन पहले तटीय पुलिस को गश्त से हटा लिया गया था’; हिंदुस्तान टाइम्स; 24 दिसंबर 2008।
27. वही।
28. ‘पुलिस ने मछुआरों को फंसाया’; हिंदुस्तान टाइम्स; 16 दिसंबर 2008।
अध्याय 3: लियोपोल्ड कैफे और बार
1. ‘आतंकवादियों ने जीत हासिल नहीं की है, हमने की है’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 1 दिसंबर 2008।
2. ‘जीवन चलता रहता है’; बॉम्बे टाइम्स; 3 दिसंबर 2008।

3. ‘लियोपोल्ड कैफे में गोलीबारी आकस्मिक थी’; मुंबई मिरर; 4 दिसंबर 2008।
4. http://www.mumbaivoices.com/
5. http://www.theaustralian.news.com.au/story/0,25197,24737994-5013404,00.html
6.

timesofindia.indiatimes.com/Cities/Patna/Wedding_thatd_never_take_place/articleshow/3767222.cms: ‘रांची निवासी और अपने माता-पिता की इकलौती संतान, आईआईटी-खड़गपुर के पूर्व छात्र की शादी पटना की ही आईआईटी छात्रा खुशबू से 6 दिसंबर को होनी थी। मेहमानों को निमंत्रण पत्र भेजे जा चुके थे।’
7. श्री शानबाग का ब्लॉग देखें: http://arunshanbhag.com/2008/11/26/mumbai-blasts-taj-is-burning/
8. निचेनमेटिया प्रसाद की रिपोर्ट; हिंदुस्तान टाइम्स; 10 दिसंबर 2008।
9. किंजल डागली; ‘मैंने बहुत अच्छाई देखी है’; हिंदुस्तान टाइम्स; 25 दिसंबर 2008।
10. ‘लियोपोल्ड फिर से कारोबार में लौट आए हैं’; इंडियन एक्सप्रेस; 4 दिसंबर 2008।
अध्याय 4: नरिमन हाउस
1. शाल्वा वेइल; कार्मिक मार्ग: भारत में इज़राइली छात्रवृत्ति।
2. ‘शहर में यहूदियों की संख्या घट रही है’ - शर्मिला गणेशन द्वारा उद्धृत एज्रा मूसा; द टाइम्स ऑफ इंडिया, 23 दिसंबर 2008।
3. नरिमन हाउस पीड़ितों की तस्वीरें http://www.all4israel.org/index.cfm?...Page&pageID=55 पर उपलब्ध हैं।
4. भारत रक्षक, भारतीय रक्षा वेबसाइटों का संघ: http://forums.bharat-rakshak.com/viewtopic.php?f=3&t=4691
5. रेडिफ – कृष्णकुमार पी और विक्की नानियाप्पा द्वारा 30 नवंबर को प्रकाशित लेख ‘बंधकों पर हुए अत्याचार से डॉक्टर स्तब्ध’: http://www.rediff.com/news/2008/ nov/30mumterror-doctors-shocked-at-hostagess-torture.htmff: ‘एक अन्य डॉक्टर, जिन्होंने पीड़ितों का पोस्टमार्टम भी किया था, ने कहा: ‘सभी शवों में से, इजरायली पीड़ितों के शरीर पर सबसे अधिक यातना के निशान थे। यह स्पष्ट था कि उनकी हत्या 26

तारीख को ही की गई थी। यह साफ था कि उन्हें मारने से पहले बांधकर यातना दी गई थी। यह इतना भयानक था कि मैं उन विवरणों को अपने दिमाग में भी दोबारा याद नहीं करना चाहता,’ उन्होंने कहा। यातना के बारे में डॉक्टरों के दावों की पुष्टि खुफिया ब्यूरो के पास आतंकी योजना के बारे में मौजूद जानकारी से हुई। एक आईबी सूत्र ने बताया, ‘पूछताछ के दौरान, अजमल कमाल ने कहा कि उन्हें विशेष रूप से विदेशियों, खासकर इजरायलियों को निशाना बनाने के लिए कहा गया था।’ यह भी कहा जाता है कि इजरायली बंधकों को पहले ही दिन मार दिया गया क्योंकि उन्हें लंबे समय तक बंधक बनाकर रखने से अंतरराष्ट्रीय ध्यान उन पर केंद्रित हो जाता। उन्होंने तर्क दिया, 'शायद उन्हें इस बात का भी डर था कि इजरायली सुरक्षा एजेंसियां नरिमन हाउस में संचालन का जिम्मा अपने हाथ में ले सकती हैं।'
6.
http://www.mumbaimirror.com/article/15/200812252008122502250817316 35eb98/Terrorists-sexually-Humiliated-guests-before-killing-them. इस लेख के साथ चित्र भी संलग्न किया गया है।
7. ‘रब्बी की पत्नी छह महीने की गर्भवती थीं’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 3 दिसंबर 2008।
8. ‘नरिमन हमला इजरायल पर हमला’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 2 दिसंबर 2008।
9. ‘नरिमन हाउस के अंदर’। टाइम्स ऑफ इंडिया; 15 दिसंबर 2008।
10. '26/11 को ताज होटल नहीं, बल्कि नरिमन हाउस मुख्य निशाना था'; डीएनए रिपोर्ट; 5 जनवरी 2009।
11. वही
12. सी. उन्नीकृष्णन; ‘नरिमन हाउस पर हमले के बारे में एजेंसियों को जानकारी नहीं’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 8 दिसंबर 2008
13. अभिषे शरण; ‘नरिमन हाउस आतंकवादियों का कमांड और कंट्रोल हब था’; हिंदुस्तान टाइम्स; 2 दिसंबर 2008।
14. वही।
15. डीएनए इंडिया; http://www.dnaindia.com/report.asp?newsid=1209852
16. दीप्तिमान तिवारी; ‘26/11 के आतंकवादियों ने शहर में 4 नहीं बल्कि केवल 2 टैक्सियों का इस्तेमाल किया’; मुंबई मिरर; 5 जनवरी 2009।

17. Rahul Shivshankar; ‘The fight for Nariman House’; 26/11 Mumbai attacked.
18. [illegible]: 26/11 [illegible], [illegible] 26.
19. [illegible]; [illegible]; 26 [illegible] 2008.
20. [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible]) www.cbc.ca/world/story/2008/11/28/Mumbai-attacks.html.
21. [illegible], http://timesofindia.indiatimes.com/Mumbai_locals_helped_us_terrorist_tells_cops/articleshow/3774106.cms
22. http://www.guardian.co.uk/world/2008/nov/27/mumbai-terror-attacks-india4
23. http://news.bbc.co.uk/2/low/south_asia/7752625.stm
24. [illegible]: 26/11 [illegible], [illegible] 27.
25. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] 4 [illegible] 2008 [illegible] [illegible]; '[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] '[illegible]?' [illegible] [illegible] [illegible]'
26. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] 6 [illegible] 2009 [illegible]
27. http://www.mumbaivoices.com/
28. [illegible]; ‘[illegible] [illegible] [illegible] [illegible],’ [illegible]; 3 [illegible] 2008।
29. [illegible]: 26/11 [illegible], [illegible] 24.
30. ‘[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]’; [illegible] [illegible]; 3 [illegible] 2008।
31. [illegible], [illegible] [illegible]; 6 [illegible] 2008।
32. [illegible] [illegible] 6 [illegible] 2008 [illegible]: '[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]' http://www.expressbuzz.com/edition/story/
33. ‘[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]’; [illegible] [illegible]; 12 [illegible] 2008।
34. ‘[illegible] [illegible] [illegible]’; [illegible] [illegible]; 25 [illegible] 2009।
35. ‘[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]’ [illegible] [illegible]; 1 [illegible] 2008।

36. ‘26/11 मुंबई हमला’; रोली बुक्स, पृ. 29.
37. हिंदुस्तान टाइम्स; 1 दिसंबर 2008; मनीष प्रसाद, इंडिया टीवी।
38. ‘नरिमन हाउस के आतंकवादी वापस जाने वाले थे’; मुंबई मिरर; 5 दिसंबर 2008।
39. अभिजीत साठे; 'फोन टैपिंग से एनएसजी को मदद मिली'; मुंबई मिरर; 3 दिसंबर 2008.
40. ‘शहर के यहूदियों ने आतंकी पीड़ितों को अंतिम विदाई दी’; हिंदुस्तान टाइम्स; 2 दिसंबर 2008।
41. चित्तरंजन टेंभेकर; 'राज्य ने पोस्टमार्टम को माफ कर दिया।' टाइम्स ऑफ इंडिया; 2 दिसंबर 2008.
42. नाओमी कैंटन; 'चाबाद हाउस के पुनर्निर्माण के लिए दुनिया भर से दान आ रहे हैं'; हिंदुस्तान टाइम्स; 12 दिसंबर 2008।
43. ‘नरिमन हाउस का पुनर्निर्माण करें।’ टाइम्स ऑफ इंडिया; 14 फरवरी 2008।
44. राघवेंद्र राव, ‘यह आधिकारिक है, एनएसजी का कहना है, मीडिया बीच में आ गया’; इंडियन एक्सप्रेस; 1 दिसंबर 2008।
अध्याय 5: ओबेरॉय-त्रिशूल
1. ‘ट्राइडेंट को प्रधानमंत्री पद के लिए मंजूरी मिल गई’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 20 दिसंबर 2008।
2. ‘पर्यटक के पहनावे ने एनएसजी को भ्रमित कर दिया।’ मुंबई मिरर; 5 दिसंबर 2008।
3. http://www.thaindian.com/newsportal/world-news/gunfire-still-rages-as-seven-terrorists-dead-13-at-large-lead_100124427.html
4. मुझे ओबेरॉय-ट्राइडेंट के जनसंपर्क विभाग से प्रेस विज्ञप्ति प्राप्त हुई है।
5. ‘मणिपुर से जयपुर तक, यह एक भारतीय त्रासदी है।’ हिंदुस्तान टाइम्स, 1 दिसंबर 2008। http://www.hindustantimes.com/StoryPage/Print.aspx? Id=2c94443b-9d9e-4445-b401-894bdde93b3eMumbaiunderattack_Special
6. http://www.telegraph.co.uk/news/worldnews/asia/india/3530130/ Mumbai-attacks-British-eyewitness-frantically-tried-to-escape-Bombay-India.html.

7. http://www.telegraph.co.uk/news/3536066/List-of-those-known-to-have-died-in-the-Mumbai-attacks.html
8. द एम्बॉय टाइम्स; 28 नवंबर 2008; http://amboytimes.typepad.com/the_amboy_times/2008/11/say-a-prayer-for-mumbai.html
9. ‘कर्तव्य की पुकार से परे’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 6 दिसंबर 2008।
10. दीपा सूर्यनारायण; ‘मैंने परिणामों के बारे में नहीं सोचा: स्टीवर्ड’; डीएनए; 4 दिसंबर 2008।
11. पूरा साक्षात्कार इस लिंक पर उपलब्ध है: http://www.razor.tv/site/servlet/segment/main/news/15536.html
12. http://www.asiaone.com/News/AsiaOne%2BNews/Singapore/Story/ A1Story20081130-104414.htm
13. ब्लॉग का एक भाग http://swimskinny.blogspot.com/2008/11/mumbai-terror-attacks.html, जो एक भारतीय समाचार चैनल की रिपोर्ट करता है।
14. पाकिस्तान को भेजी गई भारतीय फाइल अनुलग्नक vii पृष्ठ 53.
15.
http://news.asiaone.com/News/The%2BNew%2BPaper/Story/A1Story200812 01-104757.html
16. http://thedfwdesi.blogspot.com/2008/12/first-hand-account-ofthe-carnage-at.htm. रोहन पारिख द्वारा 29 नवंबर 2008 को एक मित्र को भेजा गया ईमेल। वही ईमेल मुझे भी भेजा गया।
17. http://www.rediff.com/news/2008/dec/09mumterror-lawyer-argued-forhostagess-lives.htm
18. ‘फ्रॉम द पवेलियन एंड’ सीसीआई की एक समाचार पत्रिका, वर्ष 2008 में समाप्त; प्रदीप विजयकर द्वारा लेख; श्री बोनी राजपाल के सौजन्य से।
19. ओबेरॉय-ट्राइडेंट द्वारा मुझे दी गई रिहाई से।
20. एक अन्य उत्तरजीवी का वृत्तांत, जोनाथन द्वारा 28 नवंबर 2008 को मुझे भेजा गया ईमेल।
21. अभिजीत साठे; ‘फोन टैपिंग ने एनएसजी को आतंकवादियों को घेरने में मदद की’; मुंबई मिरर; 3 दिसंबर 2008।

22. ‘अमेरिकी मैराथन धावक ने ओबेरॉय के बुरे सपने को पीछे छोड़ा’; मुंबई मिरर; 2 दिसंबर 2008।
23. ‘कनाडाई अभिनेता ने मृत होने का नाटक किया’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 2 दिसंबर 2008।
24. डीएनए, 22 फरवरी 2009; '14 वीं मंजिल डरावनी थी'; डीएनए, 22 फरवरी 2009; http://www.dnaindia.com/report.asp?newsid=1233167
25. वही।
26. राहुल सिंह; ‘त्रिशूल की लड़ाई कैसे जीती गई’; 26/11 मुंबई पर हमला
27. ‘22 दिन के मैराथन प्रयास ने ट्राइडेंट को फिर से खड़ा किया’; मुंबई मिरर; 21 दिसंबर 2008
28. वही।
29. ‘26/11 पीड़ितों के लिए दान की बाढ़ आ गई’; डीएनए; 6 मार्च 2009। अध्याय 6: सीएसटी, कामा अस्पताल, मेट्रो सिनेमा और चौपाटी
1. ‘दो परिवारों ने 26/11 के पीड़ित के शव पर दावा किया’; मुंबई मिरर; 11 दिसंबर 2008।
2. ‘पीड़ित जीविका कमाने के लिए शहर छोड़ रहा था’; इंडियन एक्सप्रेस; 4 दिसंबर 2008।
3. http://www.hindu.com/2008/11/29/stories/2008112953240400.htm
4. हिंदुस्तान टाइम्स
http://www.hindustantimes.com/StoryPage/Print.aspx?Id – 2c94443b-9d-e-4445-b401-894bdde93b3eMumbaiunderattack_ special
5. वही।
6. हिंदुस्तान टाइम्स
http://www.hindustantimes.com/StoryPage/Print.aspx?Id – 2c94443b-9d9e-4445-b401-894bdde93b3eMumbaiunderattack_ Special
7 सावली उदास मानकीकर; 'वह अपने चैट मित्र से मिल रही थी'; हिंदुस्तान टाइम्स.
8 सुभांगी स्वरूप; 'एक अज्ञात भारतीय की श्रद्धांजलि'; ओपन; 10 अप्रैल 2009 अंक।
9. गल्फ न्यूज़: http://archive.gulfnews.com/world/India/10263428.html
10. वही।

11. ‘अनाथ किशोर के लिए मदद की बाढ़ आ गई।’ टाइम्स ऑफ इंडिया, 12 दिसंबर 2008।
12. पुलिस रिकॉर्ड। हालांकि, पीटीआई का दूसरा संस्करण http://www.thehindubusinessline.com/blnus/14281981.htm पर पाया जा सकता है।
13. ‘तीन महीने की बच्ची आतंकी हमले की सबसे कम उम्र की शिकार’; मुंबई मिरर; 2 दिसंबर 2009।
14. 26/11: शहर ने दिल और बटुए खोल दिए, 11 दिसंबर 2008, 0611 बजे IST, TNN
15. वही
16. वही
17. वही।
18. हिंदुस्तान टाइम्स; 26 दिसंबर 2008।
19. वही।
20. मुंबई मिरर; 3 दिसंबर 2008, मुखपृष्ठ।
21. हिंदुस्तान टाइम्स; 26 दिसंबर 2008।
22. पूरी कहानी http://www.dnaindia.com/report.asp?newsid-1210887 पर देखी जा सकती है। आतंकवादियों को चेतावनी देने की कोशिश में उनकी मृत्यु हो गई। - निखिल एस दीक्षित द्वारा
23. भावना खान और चौधरी, ‘आतंकवाद के समय में अस्पताल कोई शरणस्थल नहीं’ - हिंदुस्तान टाइम्स की एक रिपोर्ट, 28 नवंबर 2008।
24. जॉर्ज कोशी; ‘सीएसटी पर नरसंहार’; 26/11 मुंबई हमला
25. ‘गोलीबारी के बीच जन्मे चमत्कारिक बच्चे का नाम क्रांति रखा जाएगा’; हिंदुस्तान टाइम्स; 5 दिसंबर 2008।
26. ‘कामा के डॉक्टरों ने बच्चे को वापस गर्भ में धकेल दिया’; मुंबई मिरर; 4 दिसंबर 2008।
27. जिनाल शाह की रिपोर्ट; इंडियन एक्सप्रेस; 3 दिसंबर 2008।
28. सुमित्रा देब रॉय की रिपोर्ट; डीएनए; 4 दिसंबर 2008.
29. http://samachaar.in/Mumbai/An_encounter_with_merchants_of_death_ 68858/ पूरी कहानी http://www.dnaindia.com/report.asp?newsid-1210887 पर देखी जा सकती है। आतंकवादियों को चेतावनी देने की कोशिश में उनकी मृत्यु हो गई।

30. इंडियन एक्सप्रेस, 4 फरवरी, 2009: http://www.indianexpress.com/news/26-11-hijacked-terror-car-handed-over-to-owner/419164/
31. ‘मुंबई एट वॉर’; डीएनए; 2 दिसंबर 2008।
32. ‘सीएसटी में देशमुख का आरडीएक्स से सामना।’ डीएनए; 4 दिसंबर 2008।
33. ‘अक्षय परोपकारी कार्यों में जुट गए।’ मुंबई मिरर; 28 जनवरी 2009। अध्याय 7: ताजमहल महल और मीनार
1. लता जगतानी; सिंधी चिंतन; पृ. 113.
2. http://www.hindu.com/2008/11/29/stories/2008112959030900.htm
3. यूएनआई रिपोर्ट; बैंगलोर; 28 नवंबर 2008; http://news.webindia123.com/news/Articles/India/20081128/1116007.html पर उपलब्ध।
4. प्रेम रामचंदानी मार्ग पर स्थित ताज महल होटल के बाहर, गेटवे ऑफ इंडिया के निकट स्थित स्मारक पट्टिका।
5. मुंबई पुलिस हताहत और घायल सूची; जनवरी 2009।
6. http://aajtak.itgo.in/index.php?option=com_registration&exist=yes&t ype=1&task=videopage&assignedvideoid=4116&sectionid=21&seci d=0
7. http://ia.rediff.com/www/news/2009/feb/27-a-taj-survivors-untold-story.htm
8. मुंबई हमलों में एक बेल्जियम-डच व्यक्ति की मौत हो गई www.7sur7.be/7s7/fr/1505/Monde/article/detail...
9.

http://www.telegraphindia.com/1081130/jsp/frontpage/story_10185753.jsp 10.
http://thestar.com.my/news/story.asp?file=/2008/11/30/nation/2684733&sec =nation
11. पीटर हॉकिन्स; 'सैकड़ों ने मुंबई पीड़ितों के लिए शोक व्यक्त किया'; द एज; 12 दिसंबर 2008।
12. एम. राजाध्यक्ष और राजीव शर्मा; द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया; 2 दिसंबर 2008.
13. ले मौरिसिएन; 30 नवंबर 2008; http://www.lemaurien.org/weekend/081130/ac.htm

14. मॉरीशस टाइम्स; 5 दिसंबर 2008; http://mauritiustimes.com/051208rajiv.htm
15. एएफपी; 27 नवम्बर 2008; http://www.asiaone.com/News/Latest %2BNews/Asia/Story/A1Story20081127- 103825.html
16. ‘मैं अब इस देश का नहीं हूँ।’ मुंबई मिरर; 6 दिसंबर 2008
17. http://www.theaustralian.news.com.au/story/0,25197,24719274-12377,00.html
18. फ़ाइल; पृष्ठ 54.
19. वर्व; 1 जनवरी 2009;
http://www.verveonline.com/69/features/survivors.shtml
20. टाइम्स ऑफ इंडिया; 28 नवंबर 2008; गोवा संस्करण; 'मुंबई के ताज होटल में 23 वर्षीय जूनियर शेफ की गोली मारकर हत्या कर दी गई; प्रीतु नायर द्वारा; टीएनएन।
21. निचेनमतिया प्रसाद; ‘मुझे खुशी है कि वह एक नायक की तरह मरे।’ हिंदुस्तान टाइम्स; 10 दिसंबर 2008।
22. रिया कार्था; ‘मारे गए प्रशिक्षु शेफ के लिए ताज उनका दूसरा घर था’; द इंडियन एक्सप्रेस; 1 दिसंबर 2008।
23. मैन्स वर्ल्ड; जनवरी 2009; http://www.mansworldindia.com/newsite/articles/features/jan09/taj01.asp
24. जिया हक; ‘42 घंटे बाद सांसद ताज होटल से बाहर निकल गए’; हिंदुस्तान टाइम्स; 29 नवंबर 2008।
25. सौजन्य: राज लालचंदानी।
26. http://www.telegraph.co.uk/news/worldnews/asia/india/3529976/ Mumbai-attacks-Eyewitnesses-describe-horror-of-terrorist-raids-Bombay-India.html
27. वही।
28. ‘ईश्वर मुझ पर और मेरे परिवार पर बहुत मेहरबान रहा है: पीड़ित’ - मानसी चोक्सी को बताया गया। टाइम्स ऑफ इंडिया; 1 दिसंबर 2008।
29. कई दोस्तों से ईमेल प्राप्त हुआ
30. ‘पुलिसकर्मी की बहादुरी की कीमत उसे अपनी इज्जत गंवानी पड़ी।’ टाइम्स ऑफ इंडिया; 13 दिसंबर 2008।

31. ‘ब्रिटेन विश्वविद्यालय ने 26/11 के बाद मुंबई छात्रवृत्ति दोगुनी की’; मुंबई मिरर; 13 दिसंबर 2008।
32. सभी लाभार्थी और दानदाता tpswtrust@tajhotels.com पर संपर्क कर सकते हैं।
33. ‘26/11 पीड़ितों के लिए दान की बाढ़ आ गई;’ डीएनए; 5 मार्च 2009;
34. ताज महल होटल का पूर्ण पृष्ठ विज्ञापन; हिंदुस्तान टाइम्स; 5 दिसंबर 2008।
35. ‘ताज के बहुमूल्य सामान जलाए गए’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 20 दिसंबर 2008।
36. Ravikiran Desmukh; ‘24 points that Taj ignored.’ Mumbai Mirror; 4 Dec 2008.
37. Zeenews; 28 Nov 2008; http://www.zeenews.com/nation/2008-11-29/487116news.html
38. डीएनए; 2 दिसंबर 2008; http://www.dnaindia.com/report.asp? newsid=1210907
39. डीएनए; 2 दिसंबर 2008; http://www.dnaindia.com/report.asp? newsid=1210907
40. ‘होटलों को पाकिस्तानियों को बाहर रखने के लिए कहा गया’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 5 दिसंबर 2008।
41. वीर संघवीर; ‘26/11 को रोका जा सकता था’; हिंदुस्तान टाइम्स; 2 दिसंबर 2009।
42. ‘26/11 पर मौखिक युद्ध’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 18 दिसंबर 2008।
अध्याय 8: दस/ग्यारह बम
1. ‘पुलिस लापता बम की तलाश में है।’ टाइम्स ऑफ इंडिया; 6 दिसंबर 2008।
2. ‘एक गलती से दूसरी गलती तक।’ टाइम्स ऑफ इंडिया; 14 फरवरी 2009।
3. देबाशीष पाणिग्रही; 'बीच के घंटे'; हिंदुस्तान टाइम्स; 20 दिसंबर 2008.
4. ‘तो वहां कितने बम थे?’ हिंदुस्तान टाइम्स; 5 दिसंबर 2008।
5. हिंदुस्तान टाइम्स; 5 दिसंबर 2008: अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (रेलवे), के.पी. रघुवंशी ने बताया, 'आतंकवादी हमले के बाद रेलवे स्टेशन पर 400-500 से अधिक बैग बरामद हुए। जिस बैग में बम रखा गया था, वह स्कूल बैग जैसा दिखता था, इसलिए यह अनुमान लगाया गया कि वह किसी यात्री का था।'

6. ‘किसी ने भी सीएसटी पार्सल रूम में 8 किलो आरडीएक्स पड़े हुए नहीं देखा’; मुंबई मिरर; 3 दिसंबर 2008।
7. ‘कसाव ने सीएसटी में बम लगाया’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 4 दिसंबर 2008।
8. ‘बम क्यों नहीं फटा’; हिंदुस्तान टाइम्स; 5 दिसंबर 2008।
9. ‘पुलिस लापता बमों की तलाश में’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 6 दिसंबर 2008।

खंड 2 पीड़ितों की सूची
अध्याय 3: आतंकी हमलों में मारे गए लोगों की पूरी सूची
1. सर जे.जे. ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स से संबद्ध ग्रांट मेडिकल कॉलेज में फोरेंसिक मेडिसिन विभाग के डॉ. एस.डी. नानंदकर ने मुंबई मिरर के मनोज आर. नायर को दिए एक साक्षात्कार (6 दिसंबर 2008) में कहा, ‘चोटों और सड़न के कारण कई शवों की पहचान करना मुश्किल था… पहचान दर लगभग 97 प्रतिशत थी… इसका कारण यह था कि ड्यूटी पर मौजूद प्रत्येक 5 डॉक्टरों में से 4 ने शव परीक्षण किया, जिनमें से एक डॉक्टर को विशेष रूप से शव पर पहचान चिह्नों की तलाश करने के लिए नियुक्त किया गया था। इन डॉक्टरों द्वारा एकत्रित जानकारी को परिजनों द्वारा दी गई जानकारी के साथ समन्वयित करके शवों की पहचान की गई। हालांकि मैंने अपने 22 साल के लंबे करियर में 8000 से अधिक शव परीक्षण किए हैं, लेकिन पिछले सप्ताह की घटनाओं ने मुझे सबसे ज्यादा विचलित किया।’
अध्याय 1: दस आतंकवादी
1. मैडलीन अलब्राइट, संयुक्त राज्य अमेरिका की पूर्व विदेश मंत्री।
2. एस. प्रसन्नराजन; 'बुराई का गणराज्य'; इंडिया टुडे; 8 दिसंबर 2008।
3 http://www.outlookindia.com/pti_news.asp?id – 644460 पीटीआई की 9 दिसंबर, 2008 की रिपोर्ट।
4 देबाशीष पाणिग्रही; 'कसाब सब बताता है।' हिंदुस्तान टाइम्स; 25 दिसंबर 2008.
5 वही।
6. ‘26/11 हमले का नेता हमले से दो साल पहले भारत में था’; मुंबई मिरर; 23 फरवरी 2009।
7. ‘अमेरिकी विशेषज्ञ का कहना है कि हमलावर हमले में बच गए होंगे’; हिंदुस्तान टाइम्स; 6 दिसंबर 2008।

8. 'दिल्ली ने 26/11 पर पाकिस्तान के बेतुके सवालों को टाला'; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 18 मार्च 2009।
अध्याय 2: मोहम्मद अजमल आमिर कसाब
1. सोमेंद्र शर्मा; ‘अजमल को ‘सम्मान’ की लालसा है’; डीएनए; 24 मार्च 2009।
2. ‘द कन्फेशन’; मिड-डे; 19 दिसंबर 2008।
3. दीप्तिमान तिवारी; ‘मानव ढाल लेकर समुद्र में जाओ,’ मुंबई मिरर; 2 दिसंबर 2008।
4. ‘पुलिस ने कसाब को बताया कि उसके दोस्तों को लॉक-अप में मार दिया गया’; मुंबई मिरर; 18 दिसंबर 2008।
5. कंचन चौधरी; 'कसाब अलम, रचित'; हिंदुस्तान टाइम्स; 2 दिसंबर 2008.
6. आशीष खेतान; 'कराची से मुंबई तक आतंक, कदम दर कदम'; 26/11 मुंबई हमला।
7. वही।
8. सी.उन्नीकृष्णन की रिपोर्ट; द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया; 5 जनवरी 2009.
9. आशीष खेतान ‘कराची से मुंबई, कदम दर कदम आतंक’; 26/11 मुंबई हमला।
10. ‘सरकार ने कसाब का पत्र सौंपा।’ टाइम्स ऑफ इंडिया; 23 दिसंबर 2008।
11. http://dawn.com/2008/12/12/top6.htm
12. ‘कलाई पर लाल पट्टियाँ धोखा देने के लिए थीं।’ हिंदुस्तान टाइम्स; 11 दिसंबर 2008।
13. टाइम्स ऑफ इंडिया ‘आतंकवादी सरगनाओं ने ऐसे लोगों को चुना जिनका कोई भावनात्मक जुड़ाव नहीं था’ एस अहमद अली, टीएनएन।
14. ‘आतंकवादियों ने पारंपरिक सैन्य रणनीति का इस्तेमाल किया।’ हिंदुस्तान टाइम्स; 19 दिसंबर 2008।
15. आनंद होला की रिपोर्ट; मुंबई मिरर; 5 दिसंबर 2008।
16. बलजीत परमार; 'अजमल अब नमाज नहीं पढ़ते'; डीएनए; 30 जनवरी 2009.
17. निखिल एस. दीक्षित और पूर्णिमा स्वामीनाथन की रिपोर्ट; डीएनए; 6 जनवरी 2009।
18. सिंधीशान; अक्टूबर-दिसंबर 2008 अंक।
अध्याय 4: षड्यंत्रकारी
1. मतीन हाफ़िज़; ‘पुलिस ने फ़हीम और उसके सहयोगी को हिरासत में लिया’; द टाइम्स ऑफ़ इंडिया; 19 दिसंबर 2008।

2. आरोपपत्र, फरवरी 2009, मैं उद्धृत करता हूँ: 'गिरफ्तार आरोपी फहीम मोहम्मद यूसुफ अंसारी मूल रूप से कमरा नंबर 2409, चॉल नंबर 303, मोतीलाल नगर नंबर 2, एम.जी. रोड, गोरेगांव (पश्चिम), मुंबई 400062 का निवासी है। हालांकि, दिसंबर 2007 और जनवरी 2008 के दौरान साहिल पावस्कर के छद्म नाम से उसने बड़वार पार्क में लीव एंड लाइसेंस पर एक कमरा किराए पर लेने का प्रयास किया; लेकिन सफल नहीं हो सका। दक्षिण मुंबई में लक्षित स्थानों से निकटता को ध्यान में रखते हुए, बड़वार पार्क का स्थान साजिश की योजना के लिए महत्वपूर्ण था। इस तथ्य की पुष्टि इस तथ्य से भी होती है कि आतंकवादियों ने 26-11-2008 की दुर्भाग्यपूर्ण शाम को भारतीय तट पर उतरने और वहां से अपने-अपने गंतव्यों की ओर जाने के लिए बड़वार पार्क, मच्छीमार कॉलोनी को चुना था।' अंततः, उसने मुंबई – 400008 स्थित पट्ठे बापूराव मार्ग पर, बटाटावाला चॉल के भूतल पर, कमरा नंबर 14, 98-बी में एक कमरा किराए पर लिया, जहाँ से उसने मुंबई के प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण स्थानों की विस्तृत रेकी की। संचार के उद्देश्य से, उसने साहिल पावस्कर के फर्जी नाम से रिलायंस का मोबाइल नंबर 9322504557 प्राप्त किया। अपनी कुटिल गतिविधियों को छुपाने के लिए, उसने मुंबई समाचार मार्ग, मुंबई – 400001 स्थित बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज के सामने, इंजीनियर परिसर में स्थित सॉफ्ट प्रो कंप्यूटर एजुकेशनल काउंसिल में प्रवेश लिया।
3. टाइम्स ऑफ इंडिया; 19 दिसंबर 2008।
4. हिंदुस्तान टाइम्स; 18 दिसंबर 2008; 'लश्कर के एक ऑपरेटिव ने ताज होटल और सीएसटी के वीडियो शूट किए थे।'
5. ‘26/11 का नेता भारत में था’; मुंबई मिरर; 23 फरवरी 2009
6. एस. अहमद अली; ‘26/11 के पीछे लश्कर-ए-तैबा के सईद का दिमाग’ एस. अहमद अली की एक रिपोर्ट। द टाइम्स ऑफ इंडिया, 17 फरवरी 2009।
7. जेरेमी आर. हैमंड, ‘मुंबई हमलों में कथित सीआईए एजेंट की भूमिका को कम करके आंका जा रहा है’, फॉरेन पॉलिसी जर्नल, 10 दिसंबर 2008
8. टाइम्स ऑफ इंडिया, 1 जनवरी 2009।
9. इंडिया टुडे, 22 दिसंबर 2008।
10. टाइम्स ऑफ इंडिया, 27 फरवरी 2009: 'लश्कर-ए-तैबा के ज़रार शाह का पता लगाने में कोलोन की भूमिका अहम है।'

11. देबाशीष पाणिग्राही; 'पुलिस का कहना है कि सेलफोन कॉल पाकिस्तानी सेना के जवान से जुड़े हैं।' हिंदुस्तान टाइम्स, 26 फरवरी 2009।
12. सोमेंद्र शर्मा; ‘क्राइम ब्रांच ने 26/11 ईमेल आईडी की जांच की’, डीएनए, 28 फरवरी, 2009।
13. मुंबई मिरर।
14. अभिषेक सरन; ‘ईमेल में और हड़तालों की चेतावनी’; हिंदुस्तान टाइम्स।
15. दिनेश हुकमानी की अप्रकाशित पुस्तक, 'आतंकवाद का साक्षी'।
16. ऑपरेशन के दौरान मारे गए और गिरफ्तार किए गए कर्मियों से बरामद हथियार और गोला-बारूद इस प्रकार थे: एके-47 राइफलें: 11 (जिनमें एक पुलिस अधिकारी की राइफल भी शामिल है जिसे आतंकवादियों ने जब्त कर लिया था), एके-47 की गोलियां: 838 (जिनमें 28 पुलिस की थीं), एके-47 की मैगज़ीन: 65 (जिनमें 2 पुलिस की थीं), .62 मिमी पिस्तौल: 10, 7.62 मिमी पिस्तौल की मैगज़ीन: 21, 7.62 मिमी पिस्तौल की गोलियां: 66, हैंड ग्रेनेड: 9, आरडीएक्स बम: 2 (प्रत्येक का वजन 8 किलोग्राम), जिंदा गोलियां: 3
17. ‘मलिक ने सादिक को मुख्य षड्यंत्रकारी बताया।’ टाइम्स ऑफ इंडिया, 13 फरवरी 2009।
18. मुंबई मिरर; 11 फरवरी 2009।
19. ‘जम्मू-कश्मीर में लखवी के बेटों की गोली मारकर हत्या कर दी गई’ मुंबई मिरर; 14 फरवरी 2009।
अध्याय 7: पाकिस्तान और भारत के बीच हुई कॉलों के प्रतिलेख
भारत से पाकिस्तान को भेजे गए दस्तावेज़ के कुछ अंश।
आजतक और आज की सुर्खियां: 'आतंक के टेप।'
3 http://indiatoday.intoday.in/content_mail.php? option=com_content&name=print&id=30259
4. पाकिस्तान को भेजी गई फाइल, अनुलग्नक
आशीष खेतान द्वारा लिखित "होटल ताज में 5 अंधेरे घंटे", मुंबई में 26/11 के हमले के दौरान
6 वही
7 वही।
8 (यह रिक्त स्थान है)
आज की 9 प्रमुख खबरें और आजतक।

भारत द्वारा पाकिस्तान को भेजी गई 10 फाइलें।

खंड IV: आतंकवाद और आतंकवादी
अध्याय 2: आतंकी नेटवर्क
1. शुभाजित रॉय की रिपोर्ट; द इंडियन एक्सप्रेस; 9 दिसंबर 2008।
2. ‘लहिस्तान प्रांत के विंग ने कहा, आडवाणी को सौंप दो’; मुंबई मिरर; 6 दिसंबर 2008।
3. देबाशीष पाणिग्रही; हिंदुस्तान टाइम्स; 26 फरवरी 2009.
4. हस्तलिखित कृति 'टुवर्ड्स लाइट' में लता जगतानी द्वारा रचित 'ब्लाइंड फेथ'।

खंड V प्रतिक्रियाएँ
अध्याय 2: पाकिस्तान का इनकार
1. यह लेख दिसंबर 2008 के मध्य में लिखा गया था।
अध्याय 6: भारतीय मुसलमान
1. जावेद एम. अंसारी द्वारा रिपोर्ट किया गया; डीएनए; 18 मार्च 2009।
2. आलोक भल्ला; ‘पार्टिशन डायलॉग्स’; पार्टिशन, एक्सी और मेमोरीज; पृ.82.
3. प्रो. डी.एच. बुतानी द्वारा लिखित ‘पाकिस्तान का भविष्य’ (1984)।
4. वही।
5. वही।
6. ‘मस्जिदें आतंकवाद विरोधी संदेश भेजती हैं।’ हिंदुस्तान टाइम्स; 6 दिसंबर 2008।
7. ‘बिना मुकदमे के कसाब को फांसी दो: मुस्लिम मंच’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 18 दिसंबर 2008।
8. वही।
9. वही।
10. ‘आतंकवादियों को शहर में दफनाने की जगह नहीं मिलेगी’; मुंबई मिरर; 3 दिसंबर 2008।
11. वही।
12. ‘भाजपा ने मुस्लिम कार्यकर्ता की सराहना की।’ हिंदुस्तान टाइम्स; 19 दिसंबर 2008।

13. सेनगुप्ता, नंदिता, ‘आतंकवादी विरोध प्रदर्शनों को गति मिल रही है।’ द टाइम्स ऑफ इंडिया; 6 दिसंबर 2008।
14. वही।
15. ‘बकरीद को सादगी से मनाएं’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 6 दिसंबर 2008।
16. अरशद, समीर, ‘मुस्लिम समूह पाकिस्तान पर बंदूकें ताने’; द टाइम्स ऑफ इंडिया; 6 दिसंबर 2008।
17. हिंदुस्तान टाइम्स; 19 दिसंबर 2008।
18. हिंदुस्तान टाइम्स; 10 दिसंबर 2008।
19. ‘भारतीय मुसलमानों के लिए नया एजेंडा’; डीएनए; 7 दिसंबर 2008।

खंड VI भारत और पाकिस्तान
अध्याय 1: पाकिस्तान – संकटग्रस्त राष्ट्र
1. मार्गरेट बोर्के; व्हाइट की पुस्तक, हाफवे टू फ्रीडम: ए रिपोर्ट ऑन द न्यू इंडिया।
2. एलेन कीथ जोन्स; सिंध में राजनीति 1907-1940: मुस्लिम पहचान और पाकिस्तान की मांग।
3. बशारत पीर, ‘रिपब्लिक ऑफ डिवाइड्स’; ‘ओपन’ अंक, 10 अप्रैल 2009।
4. वही।
अध्याय 3: सारांश
1. सी. उन्नीकृष्णन द्वारा लिखित 'अमेरिकी वाणिज्य दूतावास पर हमले की घातक साजिश की अंदरूनी कहानी।'

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

किताबें
1. जिहाद और अफगानिस्तान की छाया में पाकिस्तान - मैरी ऐन वीवर द्वारा।
2. विभाजन संवाद: आलोक भल्ला द्वारा एक खोए हुए घर की यादें।
3. ब्लैक फ्राइडे: बॉम्बे धमाकों की सच्ची कहानी, लेखक: एस. हुसैन जैदी।
4. सिंध में राजनीति 1907-1940, मुस्लिम पहचान और पाकिस्तान की मांग - एलन कीथ जोन्स द्वारा।
5. 26/11 Mumbai Attacked Edited By Harinder Baweja.
6. 26/11 मुंबई पेंगुइन और हिंदुस्तान टाइम्स पर हमला।
7. डी.एच. बुतानी द्वारा लिखित पाकिस्तान का भविष्य।
अन्य संदर्भ
इसके अलावा, विभिन्न पत्रिकाओं, टेलीविजन चैनल की रिकॉर्डिंग, समाचार पत्रों और वेबसाइटों का भी संदर्भ दिया गया है, जिनका उल्लेख पुस्तक के अंत में टिप्पणी के रूप में किया गया है।